यह वियावान उद्यान फेर, शत्रु चहु ओर घूमते हैं ।
पता सिया का लो जल्दी, वनचर जन फिरें सूंघते हैं ।।

दोहा

रामचन्द्र वापिस चले, पहुँचे निज स्थान ।
सिया नजर आई नहीं, लगे अति पछतान ।।

उड़ गये अक्ल के सब तोते, हृदय पर वज्रापात हुआ ।
वह दु ख कहा नहीं जा सकता, जिस काठिन्य से दिल मे घात हुआ ।।
इधर उधर को रहे घूम, नैनो से, नीर बरसता है ।
विना नीर मछली जैसे, सीता बिन राम तरसता है ।।

दोहा

पंख विना पक्षी पड़ा, देखा जब सुखधाम ।
सीता को कोई ले गया, यही विचारा राम ।।

बना सहायक ये सीता का, इस कारण यह हाल हुआ ।
टूटे पंख तभी है समझो, इसका भी अत्र काल हुआ ।।
फिर राम ने मूल मंत्र सुना. पक्षी का कार्य संवारा है ।
कर्त्तव्य पाल अपना पक्षी, फिर चौथे स्वर्ग सिधारा है ।
यदि भक्ति हो तो ऐसी हो, प्राणों को अर्पण कर डाला ।
स्वामी हों तो ऐसे हों, जिन विहङ्ग का भी दुख टारा ।।
राम ढूंढ़ रहे सीता को, पक्षी स्वर्गों में जा पहुँचा ।
वीर विराध भी मौके का, इच्छुक रण मे आ पहुँचा ।।

दोहा

रणभूमि में त्रिशिरा, लक्ष्मण ने दिया मार ।
वीर विराध ने लखन को, आकर किया जुहार ।।

चन्द्रेश्वर का पुत्र हूँ, अनुराधा अगजात।
खरदूषण शत्रु मेरे, करी पिता की घात॥
पाताल लंक को छीन लिया, अब शरण आपकी आता हूँ।
आज्ञा दो मुझ सेवक को, कुछ सेवा करना चाहता हू॥
महाराज इशारा कर दीजै, दो हाथ यहाँ पर दिखलाऊँ।
कुछ सेवा आपकी हो जावेगी, पिता का बदला मै पाऊँ॥

दोहा

इसी काम के वास्ते, संग्रह किया सामान।
प्रभु हमारे पर करो, आप यही अहसान॥
कुछ मुस्कराय लक्ष्मण बोले, सुन योद्धा वीर विराध जरा।
जो रहे भरोसे औरो के, वह आज नहो तो काल मरा॥
अपने बल से बलवन्त कहावे, पर बल नित्य अधूरा है।
जो कष्ट पड़े पर घबरावे, विद्वान् नहीं ना शूरा है॥

दोहा

भाव आपके हृदय के, मैंने लिए पहचान।
आराम जरा यहाँ पर करो, देखो रण मैदान॥
यदि राज की इच्छा आपको है तो, राम पास जा अर्ज करो।
वह तुम्हें औषधि देवेंगे, जैसी भी जाहिर मर्ज करो॥
विषधर नाग समान विराध की, खर के दल पर नजर पड़ी।
हथियारबंद यहाँ विराध की सेना, जितनी थी सब तनी खड़ी॥

दोहा

देख विराध को विरोधी खर, भभक उठा तत्काल।
शक्ति जो थी लगा दई, नेत्र करके लाल॥
गरज मेघ समान घोर कर, शक्ति वार भरपूर किया।
पर एक सुमित्रानन्दन ने, बहु दल का चकनाचूर किया॥

फेर झपट कर खर मारा, दूषण ने कदम बढ़ाया है।
बस एक बाण से लक्ष्मण ने, उसको परभव पहुंचाया है॥

दोहा

ज्यों सहस्रांशु केउदय से, तारागण छिप जाय।
ऐसे ही बाकी शूरमा, भागे जान बचाय॥
प्राचीपति निज मार्ग पूर्ण कर, अस्ताचल पर जाने लगा।
इधर सहित विराध अनुज भी, पास राम के आने लगा॥
अब चलत समय श्री लक्ष्मण जी का, बॉया नेत्र फड़क रहा।
यूं समझ लिया हो गया विघ्न, कोई दिल अन्दर से धड़क रहा॥

दोहा

रामचन्द्र को आनकर, करी अनुज प्रणाम।
रंग फ़ीका श्रीराम का, मन मे आर्तध्यान॥
भाई के दुःख को देख लखन, नेत्रों मे जल भर लाया है।
श्रीराम के चरणों मे गिर कर, लक्ष्मण ने वचन सुनाया है॥
यह तो मुझको सूझ गया कि, सिया नजर नहीं आती है।
और देख तुम्हारा अशुभ ध्यान, मेरी तबियत घबराती है॥

दोहा

यदि और कोई बात है, सो भी कहो उच्चार।
जिस कारण से आपको, आर्तध्यान अपार॥
अय भ्राता कैसे कहूँ, दु ख मेरु आकार।
पता नहीं कैसे कहाॅ, समा गई सिया नार॥

(श्री राम व० त०)

आज भाई कहूँ क्या मैं दिल की व्यथा,
न इधर का रहा न उधर का रहा।

शरणागत सिया पक्षी की रक्षा न की,
अब यह तू ही बता मै किधर का रहा ॥१॥
बन में दिल को जटायु से बहलाती थी,
ना तमन्ना उसे राजधानी की थी।
अब खबर ना कहाँ वह मुसीबत मे है,
मै इधर का रहा न उधर का रहा ॥२॥
मुझे यह तो है निश्चय ना तोड़े धरम,
कर दे प्राणों का त्याग न मुझे यह भ्रम।
कहाँ क्षत्रापन है मेरा शर्म है शर्म,
मै इधर का रहा न उधर का रहा ॥३॥
सम्मुख लाखो के उसने वरा था मुझे,
रक्षा करना उमर भर कहा था मुझे।
कैसे दुनियां मे मुख अपना दिखलाऊंगा,
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥४॥
अय कर्म तूने कब का यह बदला लिया,
इस विपिन में प्यारी जुदा कर दई।
मेरी इज्जत तो खाक क्या गर्द कर दई,
ना इधर का रहा न उधर का रहा ॥५॥
अय भ्राता यही कारण अशुभ ध्यान का,
कोई ग्राहक बना सिया की जान का।
बस मैं इच्छुक सिया के शुक्ल ध्यान का,
मै इधर का रहा ना उधर का रहा ॥६॥

दोहा (लक्ष्मण)

भाई क्या तुमको कहूँ, अपनी खोल जबान।
गई ना जायगी कभी, सरल नरम की बान॥

आपकी नरमी से मिथिला मे, जनक भूप के वचन सुने ।
फेर आपकी नरमी से, सीता ने वन में दुःख चुने ॥
कई बार नरमाई से, जानी शत्रु तक छोड़ दिये ।
सब विजय किये वह राज पाट, तुमने निज कर से मोड़ दिये ॥

दोहा

अब उसी सरल स्वभाव का, मिला नतीजा आन ।
नीति के प्रयोग बिन, सिया गई और शान ॥
जो होना था सो हो गुजरा, अब दिल मे जरा विचार करो ।
सर्वज्ञ देव का कथन जरा, उस पर भी तो कुछ ध्यान धरो ॥
सोच गये का आगम वाञ्छा, शूर वीर नहीं करते हैं ।
यदि वर्तमान पर ही पुरुषार्थ, करें तो कार्य सरते है ॥

दोहा

समय देख कर विराध ने, करी सेव चित्त लाय ।
वन खंड मे चारो तरफ, दिये सवार दौडाय ॥
जितने कितने जवान दिली, सब सेवा करना चाहते हैं ।
वे बुद्धिमान बलवान सभी, वन खण्ड छानते जाते हैं ॥
महा गिरि गुफा दुर्गम नदियॉ, सब तरफ झाकते जाते है ।
अपनी अपनी तुलना करके, फिर उसी जगह पर आते हैं ॥

दोहा

युवक सभी कहने लगे, निज बुद्धि प्रमाण ।
इस वन मे तो है नहीं, सिया का नामोनिशान ॥
फिर बोले लक्ष्मण वीर विराध की, भाई अर्जी सुन लीजे ।
जो आशा करके आया है, पहले इस पर करुणा कीजे ॥
जो वीर विराध का शत्रु है, बस वही हमारा भी होगा ।
यह आया शरण लेने को, इसको शरण देना होगा ॥

दोहा

देख इशारा लखन का, बोले वीर विराध ।
प्रभु अर्ज सुन लीजिये, फिरूँ हुआ बरबाद ॥
घाव लगा जो हृदय मे, सो आपको चीर दिखाऊं क्या ।
अब दुखित हुआ खुद के दुख से, मै सो रघुवीर सुनाऊं क्या ॥
मार पिता को लंक लई, माता ने यह दरसाया है ।
ले बदला तब हूं पुत्रवती, यदि नहीं बाँझ फरमाया है ॥

दोहा

बहुत आप से क्या कहूं, आप है बुद्धिमान ।
मैं चरणों का दास हूं, करूं जो हो फरमान ॥
ढूढ लिया वन खंड गहन भी, सिया का पता न पाया है ।
यह काम नीच शत्रु का अन्तिम, यही समझ मे आया है ॥
इक सिर्फ आपके चरणों से, निज राज ताज पा सकता हूँ ।
फिर नभ तो क्या पाताल तलक, सीता की सुध ला सकता हूं ॥
जहाँ गिरे पसीना आपका वहां मै अपना खून बहाऊंगा ।
आयु पर्यन्त करूं सेवा, उपकार ना कभी भुलाऊंगा ॥
महान् पुरुष ही दुनिया में, दुःखियों के दुःख को हरते हैं ।
चाहे अपना काम बने न बने, दूजे का कार्य करते है ॥

दोहा

वृक्ष नदी गौ सत पुरुष, इनका यही है सार ।
अपने पर सब दुख सहे, करते पर उपकार ॥
वह कल्प वृक्ष सम रामचन्द्र, दुख सह सह कर फल ही झरते ।
फिर यह तो था सच्चा सेवक, क्यों नहीं काम इसका करते ॥
सत्य पक्ष के पालन मे, तल्लीन हर समय रहते थे ।
उनके लिये वैसा करते थे, जैसा कि मुख से कहते थे ॥

दोहा

दुखिया के दुःख को सुना, दुखिया ने ला कान ।
संतोष दिलाने के लिये, बोले खोल जबान ॥
अय विराध मनोरथ जो तेरा, उसको हम पूरा कर देंगे ।
पाताल लंक का राज्य दिलाकर, ताज शीष पर धर देंगे ॥
अब रात रही थोड़ी बाकी, कुछ देर यहाँ आराम करें ।
अर्चिमाली के चढ़ते ही, सब लड़ने का सामान करें ॥

दोहा

पा आज्ञा श्री राम की, पहुचे निज निज धाम ।
निद्रा मोचने के लिए. करने लगे आराम ॥
सुख निद्रा चिन्तातुर को कहा, यूं बुद्धिमान् फरमाते हैं ।
हाँ जिस्म रहे शय्या ऊपर, मन घोड़े दौड़ लगाते हैं ॥
फिर सर्द श्वास भर उठ बैठे, श्रीराम को अति बेचैनी है ।
इस समय कहां दुःख भोग रही, होगी हा ! कोकिल बैनी है ॥

दोहा

देखा हाल श्रीराम का, बोले लक्ष्मण लाल ।
अय भाई तुम किस लिए, होते यूं बेहाल ॥

गाना—(लक्ष्मण का व० त०)

अय भाई जरा दिल सबर कीजिए,
तेरी बातें ये मुझ को सुहाती नहीं ॥
क्या कहूँ अपने दिल की व्यथा इस घड़ी,
होना जाहिर जबाँ पर वो चाहती नहीं ॥१॥
देख हालत तुम्हारी फटे है जिगर,
क्या करूं इस समय पेश जाती नहीं ।

धीरज धरके उपाय कहो सो करूं,
क्योंकि मेरी अक्ल काम आती नही ।।२।।
आज असह्य कष्ट है छाया मुझे,
मै कहूँ क्या अक्ल मेरी मारी गई ।
दई छोड़ अकेली वियाबान मे,
अबला इतनी न मुझ से विचारी गई ।।३।।
जिस पुरुष ने दिया धोखा सिंहनाद का,
बस उसी कर से है सिया नारी गई ।
कैसे दुनिया मे अपना दिखाऊंगा मुंह,
एक औरत न मुझ से संभारी गई ।।४।।
[लक्ष्मण]—तुमको अब तक पता ना है अफसोस ये,
जीते लक्ष्मण को दुनिया मे नर ही नहीं ।
फिरते लाखों दनुज इस बियाबान में,
जीती है या कि मुरदा खबर ही नहीं ।।५।।
माता पूछेगी मुझको कहां है सिया,
क्या बताऊंगा दिल को सबर ही नहीं ।
मेरे होते हो ऐसी तुम्हारी दशा,
मुझसा पापी भी कोई बशर ही नहीं ।।६।।
[राम]--जब से भाई सुना शब्द सिंहनाद का,
तब वह नैनों से आंसू बहाने लगी ।
आज शत्रु की सेना ने घेरा लखन,
जावो जावो ये हरदम सुनाने लगी ।।७।।
मैंने समझाई लेकिन वह मानी नहीं,
उलटे ताने फिर मुझको लगाने लगी ।
तुम हो लक्ष्मण के विश्वास घाती बलम,
मै चला जब वह आखिर सताने लगी ।।८।।

अय भाई अगरचे ना सीता मिली,
तो मरने मे मेरे न समझो भ्रम ।
शरणागत फिर सीता का मै दुःख न हरूं,
तो फिर क्षत्रिय का भाई कहाँ है धर्म ॥९॥
इसमें नहीं है दोष किसी का विरन,
कोई पिछला उदय आया खोटा करम ।
क्षत्रापन भी गया और धर्म भी गया,
कैसे दिखलाऊंगा मुख मुझे ये शरम ॥१०॥

दोहा

लक्ष्मण जी कहने लगे. भाई दिल मत गेर ।
जनक सुता मिल जायगी, है कोई दिन का फेर ॥
जिसने की अपहरण सिया, यह समझ काल ने घेरा है ।
शत्रु के प्राण सहित सीता लाऊ यह प्रण बस मेरा है ॥
माता सुमित्रा का नन्दन, अय भ्रात तभी कहलाऊगा ।
यदि नहीं तो फिर धिक्कार मुझे, जीते मुख ना दिखलाऊगा ॥

दोहा

दृढ प्रतिज्ञा अनुज ने, लई इस तरह धार ।
यदि यह पूरी ना करूं, तो मुझ नाम निस्सार ॥
इधर प्रतिज्ञा करी उधर, रजनी ने पीठ दिखाई है ।
दिनकर ने जब फेंकी मरीचि, तो फौजी बिगुल बजाई है ॥
सदा सुनी जब बाजे की, आ जमा झुण्ड के झुण्ड हुये ।
और सेनापति के पद पर भी, श्री लक्ष्मण जी आरूढ़ हुये ॥

दोहा

पाताल लङ्क को चल दिये, कर धावा तत्काल ।
शूरवीर योद्धा बली, रूप अति विकराल ॥

पाताल लङ्क मे खर के पद पर, सुन्द नरेश सुहाया है।
पर चैन कहां था उसको भी, दल बल ले सम्मुख आया है॥
जब आन अनी से अनी मिली, तब शूरवीर ललकारे हैं।
तब वीर विराध ने भी अपने, दिल के गुब्बारे निकाले हैं॥

दोहा

फौरन ही रणभूमि मे, हुआ रक्त का कीच।
कायर जन गश खा गिरे, लिए नैन दो मीच॥

टङ्कार शब्द जब किया अनुज ने, मानो विद्युत कड़क पड़ी।
फिर बाण बरस रहे लक्ष्मण के, जैसे श्रावण की लगी झड़ी॥
कइयों ने शस्त्र डाल दिये, कुछ वीर विराध से आन मिले।
और सुन्द भाग लंका पहुंचा, सब छोड़ दिये सामान किले॥

दोहा

शूर्पणखा ने यूं किया, श्वसुर गृह का नाश।
अब पहुंची लंकापुरी, करने कुमति प्रकाश।



विराध को ताज

दोहा

अधिकार जमाया सब जगह, रामचन्द्र ने आन।
जो मुख से कहा विराध को, पूरी करी जबान॥

अनुराधा रानी के दिल मे, खुशी का ना कुछ पार रहा।
मनोकामना सिद्ध हुई, गद्दी पर शोभ कुमार रहा॥
मात-पुत्र ने रामचन्द्र की, सेवा खूब बजाई है।
हम रहे बने चाकर इनके, सबके दिल यही समाई है॥

दोहा

औदार चित्त ने कर दिया, दूजे का उद्धार।
अब सीता का हुआ, दिल पर दुःख सवार ॥
इस तरफ राम को सीता बिन, खाना पीना नहीं भाता था।
उस तरफ लंका मे रावण भी, वैदेही का गुण गाता था ॥
अब सुनो हाल किष्किन्धा का, जहाँ नया माजरा और हुआ।
असली नकली दो सुग्रीवों का, रियासत भर मे शोर हुआ ॥

दोहा

रूप धरा सुग्रीव का, सहसगति ने आन।
पार कहो कैसे पड़े, दो खाँडे एक म्यान ॥
चित्रांग भूप का राजकुंवर, जो सहसगति कहलाता था।
ज्वलनसिंह की पुत्री तारा को, तन-मन से चाहता था ॥
सहसगति की ज्योपियों ने, स्वल्पायु बतलाई थी।
इस कारण ज्योतिप पुरपति ने, सुग्रीव नरेश को व्याही थी ॥

दोहा

सहसगति को था लगा, यही नशैला तीर।
मन वाञ्छित औषधि बिना, मिटे ना मन की पीर ॥
जिसने पुरुपार्थ किया अति, फिर उसको था सन्तोप कहां।
जहां तारा थी सुग्रीव के यहां, था सहसगति का मन भी वहां ॥
पर जोर नहीं कुछ चलता था, तब यही समझ मे आया था।
रूप परिवर्तन विद्या साधन, प्रारम्भ लगाया था ॥
थी रावण को जैसे सीता, यहां सहसगति को तारा थी।
नेक को देवी माता सी, कामी को काम कटारा थी ॥
थी सीता यदि धर्म शशि, तो ये भी नेक सितारा थी।
थी सहसगति को ये बिजली, रावण को सीता आरा थी ॥

असली नकली सुग्रीव

दोहा

रूप परिवर्त्तन लई, शक्ति जिस दम साध ।
तारा ही तारा रहा, हृदय मे कर याद ॥

अब चला वहां से खुशी खुशी, किष्किन्धा मे जा कयाम हुआ ।
सुग्रीव चला वन सैर काल, जब समझा शोभन श्याम हुआ ॥
यहां सहसगति ने भी अपना, सुग्रीव रूप झट धारा है ।
असली से पहिले आकर के, नकली ने वचन उचारा है ॥

दोहा

सावधान होकर रहो, जितने पहरेदार ।
यदि शिथिलता कुछ हुई, लेऊं शीश उतार ॥

समय आजकल ऐसा है, कई रूप बदल आ जाते है ।
हैं डाकू चोर उच्चके सब, राजाओं तक बन जाते है ॥
फिर आगे वढ़ के महलों का, जो था नकशा सब खेंच लिया ।
ऊपर से प्रेम दिखाता था, पर अन्दर से था कैंची लिया ॥

दोहा

नकली बैठा असल के, शयन महल में जाय ।
चाह जिसकी थी मन बसी, करने लगा उपाय ॥

इतने में आगया असली, तो संतरियों ने रोक दिया ।
और भाग भी ये न जाय कहीं, चहुं ओर से पहरा ठोक दिया ॥
सुग्रीव और सब अधिकारी, यह बात देखकर घबराये ।
यह रचा किसी ने षड्यन्त्र, लक्षण ये सभी नजर आये ॥

दोहा

देख हाल कपि पति किये, अपने नेत्र लाल ।
गर्ज तर्ज कहने लगे, मस्तक पर बल डाल ॥

बने बावले सबके सब, क्या नशा आज कोई पिया है ।
या काल ने परभव मे जाने का, आज सन्देशा दिया है ॥
या पागलखाने मे तुम, निज को जकड़ाना चाहते हो ।
या तुम आयु पर्यन्त जेल में, पड़कर सड़ना चाहते हो ॥

दोहा

देख तेज सुग्रीव का, गये बहुत से कॉप ।
कई होगये सामने, जैसे फणिधर सॉप ॥

बोले बस ज्यादा बक बक न कर, क्या भेप बदल कर आया है ।
महाराज महल मे विराजमान, तैंने प्रपञ्च रचाया है ॥
जो कष्ट हमें बतलाता है, तेरे ऊपर ही बरसेगा ।
और याद रहे स्वतन्त्रता को, स्वप्नमात्र मे तरसेगा ॥

दोहा

यदि है तू बहुरूपिया, सो भी दे बतलाय ।
बदले कभी इनाम के, जान मूल की जाय ॥

यह हाल देख कर भूपति का दिल, उथल-पुथल सा होने लगा ।
जो साथ गये थे सैर करन, फिर उनके दिल को टोहने लगा ॥
वे सबके सब अपने पाये, उनके कारण कई आन मिले ।
असली की ओर होगये बहुत, कुछ नकली के संग जाय रले ॥

दोहा

नकली को असली कहे, असली को नक्काल ।
मति ज्ञान मे पड़ गया, सबके भरम कमाल ॥

प्रसंग देख हर एक विचारों का, सागर बन जाता था।
किये उपाय अनेक परन्तु, पता नहीं कुछ पाता था॥
रंग ढग यहां तक बिगड़ा, सेना तक भी यह हाल हुआ।
आधीन बनाऊं परिस्थिति, यह चन्द्ररश्मि का ख्याल हुआ।

दोहा

वाली सुत बलवान था, चन्दरश्मि तसु नाम।
आधीन किये अधिकार सब, मुख्य मुख्य जो काम॥

महल चची के सबसे पहले, पहरा दृढ़ लगाया है।
यह झगडा दो सुग्रीवों का, महारानी ने सुन पाया है॥
जब खबर एकदम फैल गई, तो उसी समय दरबार हुआ।
असली से पहिले नकलो आ, सिंहासन पर असवार हुआ॥
उस तरफ से आ पहुंचा असली, था मस्तक पर बल पड़ा हुआ।
वह तेज प्रताप महाराजा का, देख सभी दल खड़ा हुआ॥
अनिमेष दृष्टि से रहे देख, कुछ फर्क नजर नहीं आता है।
जो कुछ पूछे असली से बात, नकली भी वही बताता है॥

दोहा

भेद कुछ भी नहीं खुला, हो अन्तिम लाचार।
बुद्धिमान एकत्र हो, करने लगे विचार॥

अन्तिम निश्चय किया यही, कि जब तक यह न भेद मिले।
तब तक हैं बन्द लिये दोनों के, महल हकूमत फौज किले॥
सब राज्य काज का अधिकारी, चन्द्ररश्मि होना चाहिये।
और इन दोनों को पृथक्-पृथक्, रखकर रहस्य टोहना चाहिये॥
वहां नियत किया जो भी कुछ था, सब अमल उसी पर होने लगा।
और सहसगति प्रतिकूल कपि, के बीज फूट का बोने लगा॥

दोनों ही थे आर्तध्यानी, करते थे ढेर विचारों का।
तारा का दुःख था नकली को, असली को दुःख था सारों का॥

दोहा

एक बार सुग्रीव ने, बुलवाया हनुमान।
अजनीसुत का बहु किया, नकली ने सम्मान॥
पवनकुंवर की अक्ल भी, देख हुई हैरान।
हस्ताक्षर तक तुल्य है, एक बाण एक शान॥

भूतकाल की बात सभी, दोनो इकसार बताते हैं।
अपने अपने अनुकूल सही, सब तुल्य भाव दर्शाते हैं॥
जैसे तैसे किया परन्तु, असली रहस्य न पाया है।
फिर परीक्षा कारण दोनों का, आपस मे युद्ध कराया है॥

दोहा

डट गये दोनो शूरमा, क्रोध हृदय मे धार।
दाव पेच करने लगे, इक दूजे पर वार॥

वह दोनों ही बलवीर शूरमा, दोनों ही विद्याधर थे।
और दोनों ही उस समय, समझलो एक म्यान के अन्दर थे॥
अनुमान से आयु मे सम थे, थे बब्बर शेर नहीं कायर थे।
शस्त्र कला के जानकार क्या, बहत्तर कला मे माहिर थे॥

दोहा

नकली कुछ हँसकर लगा, असली को यूं कहन।
शाबाश तुझे बहुरूपिया, स्वॉग उतारा अयन॥
अब तक मैं देखा नहीं, तेरे जैसा स्वांग।
देऊंगा वो ही तुझे, जो ले मुख से मॉग॥

मांगो मुख से दान, रही ना कसर तेरे इस फन में ।
अब आगे मत तान, क्योंकि मुश्किल होगी फिर रण में ॥
यह सर धड का खेल, खेलते क्षत्रिय खेल मगन मे ।
क्या तेरी औकात तीर से, फेकूं तुझे गगन मे ॥

सहसगति का गाना

समर का खेल मत हाँसी गिनों बहुरूपिया भाई ।
मै अब भी तरस खाता हूँ सुनो बहुरूपिया भाई ॥१॥
किया अनुचित भी जो तूने उसे मैं माफ करता हूँ ।
झुकाओ शीश मत ज्यादा तनो बहुरूपिया भाई ॥२॥
प्राण अपना गंवा करके, करावोगे मेरी निन्दा ।
मिलो बच्चों से ताना मत बुनों, बहुरूपिया भाई ॥३॥
अभी तो शात कर रक्खा है, मैंने अपने गुस्से को ।
एक सौ एक यह मुहरे, चुनो बहुरूपिया भाई ॥४॥

दोहा

नकली का व्याख्यान सुन, जल बल हो गया ढ़ेर ।
कपि पति बोला गर्ज कर, जैसे बन में शेर ॥
दम्भी प्रपञ्ची यहा, करता क्या खर नाद ।
भेष बनाने का अभी, तुझे मिलेगा स्वाद ॥

अभी मिलेगा स्वाद काल, भक्षण तुझ को आता है ।
नकली बनकर आप धौंस, खर हम को दिखलाता है ॥
अवकाश नहीं है बचने का, क्या मन में पछताता है ।
मरने के डरसे अब, क्यो पीछे हटता जाता है ॥

सुग्रीव का गाना

काल तेरा उठा लाया, तुझे मैं आज कहता हू ।
न छोड़ूं अब तुझे चिड़िया, आगया बाज कहता हूं ॥१॥

कहाँ आकर के फैलाई है, तूने अपनी यह माया ।
चलेगी पेश न तेरी सरे, सामाज कहता हूँ ॥२॥

चला जा अब भी सम्मुख से, फटक ना सामने मेरे ।
नहीं तो मौत का तुझ को, मिलेगा ताज कहता हूं ॥३॥

सम्भल कर आ खड़ा होजा, देख यह चोट क्षत्रिय की ।
भँवर मे डूबने वाला तेरा, है जहाज कहता हूं ॥४॥

दोहा

फिर जुट गये मैदान मे, होकर के विकराल ।
शस्त्र कला में शूर मे, सम विद्या सम काल ॥

था यही दाव और यही ध्वनि, इसको किस पेच से मार धरूं
जो काँटा है मिट जायेगा, निष्कंटक हो आराम करूं ॥

था सहसगति अतुलित योद्धा, सुग्रीव भूप जग जाहिर था
एक था नीति के अन्दर, दूजा नीति के बाहिर था ॥

दोहा

लड़ते लडते हो गये, थक कर दोनो चूर ।
पास उपस्थित थे उन्हें, किये हटा कर दूर ॥

देख असल के जौहर को, नकली दिल घबराय ।
मन ही मन मे सोचता, फँसा कहां पर आय ॥

मैं राज पाट को छोड, विपत्ति, महा कठिन मे आन फँसा ।
वह सुख कहा स्वतन्त्रता के, वर्त्तमान कहा आज दशा ॥

कष्ट सहे जिस कारण इतने, उस प्यारी के दर्शन कहां ।
और प्रेम बदरिया बरसे बिन, फिर यह हृदय भी सर्द कहां ॥

दोहा

मैंने भी तेरे लिए, धुनी दई रमाय ।
घर बेघर तो हो गया, प्राण रहे चाहे जाय ॥

सहसगति का गाना (स्वगत)

प्यारी सितारा तूने मुझको रुला के मारा,
फिरता हूं तेरे दर पै, दिन रात मारा मारा ॥१॥
भाता न खाना पीना, उस राग के नशे मे ।
इक तीर से ही तूने, मेरा कलेजा फारा ॥२॥
परवश हुआ हूँ लेकिन, मुझ को ये गम नहीं है ।
असली को अपने जैसा नकली बना ही डारा ॥३॥
अर्पण यह अपना सिर धड़, सब तुमको कर चुका हूं ।
इस भव नहीं तो परभव, होगा हिसाब सारा ॥४॥
वर्षों तलक तो मैंने, पर्वत पै दुःख उठाया ।
तेरे लिए ही प्यारी, ये रूप आके धारा ॥५॥

दोहा

सहसगति यूं कर रहा, आर्तध्यान अपार ।
वानरपति भी सुस्त हो, करने लगा विचार ॥

वार सभी खाली गये, मुश्किल बनी लाचार ।
दुष्ट आत्मा ये कोई, है पूरा मक्कार ॥

क्या दोष किसी का बतलावे, जब अपनी किस्मत लौट गई ।
मात-पिता और भ्रात बली, बाली की सर से ओट गई ॥
करे न्याय जो यथा तथ्य, ना कोई नजर के अन्दर है ।
यदि है तो कुछ रावण समझो, पर सो भी कामी बन्दर है ॥

दोहा

मुर्दे को मुर्दा कहे, सब अनादि की रीत।
मैं जिन्दा मुर्दा बना, है कैसा विपरीत ॥

कैदी मुझ से अच्छे क्योंकि, मजावार दुःख भरते हैं।
रोगी जन भी मुझसे बेहतर, अपना इलाज तो करते हैं ॥
पर यह व्याधि ऐसी चिपटी, जिसकी कोई दवा न पाई है।
अब यही नहीं या मै ही नहीं, अन्तिम दिल बीच समाई है ॥

सुग्रीव जी का गाना

अय कर्म क्या तुझको, अभी आया सबर नहीं।
क्या क्या दिखायेगा, मुझे कोई खबर नहीं ॥१॥
माता-पिता की अय कर्म, तूने जुदाई कर दई।
शरणा बली बाली का भी, आता नजर नहीं ॥२॥
खो दई सारी हकूमत, तूने मेरे हाथ से।
यह जान भी जाने मे, अब कोई कसर नहीं ॥३॥
करके मुकाबला कर्म, दुनिया मे सारे देखले।
दुखिया हमारे जैसा, कोई बशर नहीं ॥४॥
अनन्त शक्ति आत्मा, अरिहन्त ने तुझ मे कही।
कर हौसला तुझ से कर्म, कोई जबर नहीं ॥५॥
हर चीज की सिद्धि लिये, उद्यम ही सब का मूल है।
निश्चय 'शुक्ल' मुझको हुआ, अब इसका सिर नहीं ॥६॥

दोहा

हाँ एक और उपाय है, आया मुझ को ख्याल।
जो कि लक पाताल मे, हुआ माजरा हाल ॥

दशरथ नन्दन राम लखन, जो महापुरुष कहलाते हैं।
लेख और भाषण द्वारा, हम भी ऐसा सुन पाते हैं ॥

सत्य पक्ष के हैं पालक, और काल रूप दुश्मन के हैं।
निग्रन्थ गुरु के है सेवक, जो कि प्यारे सुर जन के हैं॥

दोहा

खरदूषण ने था लिया, चन्द्रोदर का राज।
वापिस वीर विराध को, दिलवा या वही ताज॥

अब वही कृपानिधान कृपा, कुछ मेरे ऊपर भी कर देंगे।
अब उन्हे दिखाऊ यह नाड़ी, दे औषधि व्याधि हर लेंगे॥
क्या अच्छा हो रहस्य पुरुष से, पहिले पता मंगालूं मैं।
और वीर विराध के द्वारा ही, अपना सब काम बनालूं मैं॥
रहस्य पुरुष को भूप ने, समझाया सब हाल।
लंक पाताल में जा सभी, करो काम तत्काल॥
उसी समय कर जोड़ उठा, और खुशी से चेहरा लाल हुआ।
करके प्रणाम बोला स्वामी, अब शत्रु का भी काल हुआ॥
किष्किन्धा से चले आय, झट लङ्क पाताल में आया है।
श्रीराम लखन के सहित. विराध को झुककर माथ नवाया है॥

दोहा

वीर विराध ने अति किया, स्वागत और सत्कार।
समय देखकर दूत ने, खोला दु.ख पिटार॥

शायद आपको मालूम हो, जो हाल हुआ किष्किन्धा में।
वह सारा हाल बयान करूं, ना समय ना शक्ति बन्दा में॥
महाराजा ने फरमाया है, बस नैया है मझधार पड़ी।
इस समय आपके चप्पू से, है पार नहीं निराधार खड़ी॥
आयु पर्यन्त आपका यह, उपकार रहेगा मेरे पर।
अब क्या वृत्तान्त कहूँ अपना, बन बैठा हूं बेघर बेजर॥

बस एक आप की कृपा से, श्रीराम यहां आ सकते हैं।
जो उलट पेच यह आन फंसा, वो ही आ सुलझा सकते हैं॥

दोहा

रहस्य पुरुष से जब सुनी, कपि पति की अरदास।
सन्तोष जनक श्री विराध जी, बोले नम्र सुभाष॥

जो सेवा मुझको फरमाई, उनका कहना सिर मस्तक पर।
श्रीराम का वहां आना होगा, तो होगा आपके आने पर॥
जो व्याधि तुमको चिपटी है, उन पर भी इक दुख आन पड़ा।
सिया जनक दुलारी को वन से, कोई दुष्ट पुरुष ले गया उड़ा॥
इस समय अर्ज पर अर्ज करें, सो भी बुद्धि से बाहिर है।
कभी लेने के पड जाये देने, यह भी मिसाल जग जाहिर है॥
हाँ इतना निश्चय है मुझको, यदि आप यहाँ पर आ जावें।
और इनके दुःख में हो शामिल, अपना भी दुःख मिटा जावे॥

दोहा

रहस्य पुरुष ने जा कहा, बीतक मालिक पास।
उसी समय कपि पति चला, करने को अरदास॥

वीर विराध किष्किन्धा पति, श्रीराम पै कर के आश गये।
फिर करी चरण प्रणाम सामने, बैठ पास ही पास गये॥
सुग्रीव बड़ा ही दाना था, नीतिज्ञ और मरदाना था।
अब उसी तर्ज पर चला जिस, तरह अपना काम बनाना था॥

दोहा

दुखिया के जिस दम उठे, दुखित भरे दो नैन।
देख नैन श्रीराम ने, मन में सोचा ऐन॥

है यह भी दुखिया कोई, कुछ शरण लेने आया है।
पर आप ही रसना खोलेगा, जो भी कुछ कहने आया है॥
जब नेत्र मिले फिर बात चलन मे, कहो देर क्या लगती है।
जैसे ग्रीष्म के लगते ही, पर्वत पर हिम पिंघलती है॥

दोहा

दया दृष्टि के जिस समय, देखे नृप ने नैन।
सोच सोच श्रीराम से, लगा इस तरह कहन॥
किस्मत ने मुझको दिया, धोखा दीनानाथ।
रत्न और राढा मणि, एक समान दिखलात॥

क्या कहूं व्यथा अपनी तुमको, सो यहीं छोड़ना चाहता हूं।
कुछ सेवा मुझको फरमाइये, तन-मन से करना चाहता हूं॥
यह सोच लिया कि चन्द दिनों का, दुनिया रैन बसेरा है।
जो भी कुछ तन से बन आये, सेवा का ही फल मेरा है॥

दोहा

दुख में दुख यह और भी, हुआ मुझे महाराज।
इस कारण मै क्या कहूं, अपने दिल का राज॥

सीता का पता लगाने में, जैसा हूँ वैसा हाजिर हूँ।
कैसा भी क्यों ना हूँ चश्मों का, दुख हरने मे काजर हूँ॥
मैं सेवक हूं तैयार खड़ा, प्रभु सेवा कोई बता दीजे।
जो व्याधि मुझको लगी हुई, फिर उसको आप हटा लीजे॥

दोहा

देख चतुर की चतुरता, बोल उठे श्रीराम।
अपनी आप बताइये, दुख की व्यथा तमाम॥

यही फरक इन्सानों मे, जो महापुरुष कहलाते हैं ।
वह अपना दुख कहे ना कहे, दूजे का दुख मिटाते है ॥
अपना उदर कहो दुनिया मे, कौन नहीं भर लेते है ।
बला दूसरों की अपने सिर, महापुरुष धर लेते है ॥

दोहा

सुने जिस घड़ी राम के, अमृत झरते बैन ।
लगा कहन सुग्रीव तब, गीले करके नैन ॥

महाराज कहूं क्या आपसे मैं, इक उलट पेच मे आन फसा ।
है एक और सुग्रीव बना, और इसी म्यान मे आन धसा ॥
क्या कहूं शर्म आती कहते, बिन कहे बि रहा न जाता है ।
दिन रात यही दु.ख लगा हुआ, खाना पीना नहीं भाता है ॥
हो गया मुझे विश्वास आपकी, कृपा मेरे ऊपर होगी ।
निज अहोभाग्य समझूंगा, आपकी इस तन से सेवा होगी ॥
कुछ रहा नहीं अधिकार मुझे, फिर कहो तो क्या कर सकता हूँ ।
इस व्याधि से निवृत्त होकर, सीता की सुध ला सकता हूँ ॥

दोहा

वीर विराध कहने लगा, सुन सुग्रीव सुजान ।
इसी वचन पर आपको, रखना होगा ध्यान ॥

प्राण तलक चाहे अर्पण हों, यह काम अवश्य करना होगा ।
यदि काम कहीं पर आन पड़ा, तो समझो वहा सिर ना होगा ॥
अब सेवक हो तो सच्चा हो, सर्वस्व तलक लाना होगा ।
तुम निश्चय करलो मित्र, भार अपने शीश उठाना होगा ॥

दोहा

उत्तर मे कहने लगे, किष्किन्धा नृप राय ।
अपने मुख मे क्या कहूं, देऊं कर दिखलाय ॥

हम वह बादल है मौके पर, गड़बड़ बिन किये बरसते हैं।
आपत्ति हजारों हों तो भी, सेवा के लिए तरसते है ॥
तीन खंड मे फिरा हुआ, फिर विद्याधर कहलाता हूं ।
आप देखते रहे सिया का, कैसे पता लगाता हू ॥
सर्वस्व लगा कर भी सीता, माता का पता लगा दूंगा ।
मैं गुप्तचरों का भूमण्डल पर, मानो जाल बिछा दूंगा ॥
नगर नगर क्या गिरि गुहर, सब जगह विमान दौड़ा दूंगा।
राष्ट्र भर का बच्चा बच्चा, इस काम में सभी लगा दूंगा ॥

दोहा

परोपकारी चल दिये, किष्किन्धा की ओर ।
धन्यवाद की ही सदा, गूंज रही बाजोर ॥

देख दृश्य किष्किन्धा का, श्रीराम लखन हर्षाये हैं ।
सामन्त मत्री अधिकारी सब, स्वागत करने आये है ॥
था दृश्य एक अद्भुत सुन्दर, आवास जहां पे उतारे हैं ।
असली नकली सुग्रीव यहा, फिर दोनों आन पुकारे है ॥

दोहा

करी परीक्षा राम ने, मिला नहीं कुछ भेद ।
तन मन मे होने लगा, जरा जरा सा खेद ॥

फिर समझ लिया कि इन, दोनों में है कोई एक दुराचारी ।
यह भेद प्रकट करने को फिर, वज्रावर्तज पर दृष्टि डारी ॥
उधर जुटा दिये वह दोनों, और इधर धनुष लिया कर धारी ।
टङ्कार शब्द घनघोर किया, लरजाया फलक जमीं सारी ॥

दोहा

इश्क, मुश्क, खासी, खुरक द्वेष खून मद पान ।
अष्ट छिपाये ना छिपे, प्रकट होंय मैदान ॥

सब नीर क्षीर का भेद खुले, जब हँस चोंच अपनी डारे ।
शुद्ध हेम पिछाना जाता है. जिस समय कसौटी हो प्यारे ॥
सच्चे जौहरी के आगे, क्या लाल रलाये रलता है ।
बबर शेर का चर्म पहन, कभी गधा सिंह नहीं बनता है ॥

दोहा

सहसगति की टंकार से, विद्या हुई काफूर ।
चित्रांग पुत्र पर उस समय, लगी बरसने धूर ॥

यह हाल देख श्रीरामचन्द्र को, रोष एक दम आया है ।
धिक्कार शब्द चहुं ओर, महल क्या भूमण्डल गुञ्जाया है ॥
बोले राम अहो सहसगति, क्यों आर्तध्यान लगाया है ।
यह फल तेरे दुष्कर्मों का, अब सम्मुख तेरे आया है ॥

दोहा

सहसगति कहने लगा, अर्ज सुनो महाराज ।
दर्श उसी का चाहिये, जो दिल रही विराज ॥

मात पिता रानी जिस कारण, छोड़ दिये सब राज किले ।
कष्ट सहे गिरि उद्यानो में, दर्श मिले तो वही मिले ॥
निर्मल व्योम शशि जैसे, मुख मुद्रा शोभा पाता है ।
सहसगति भी अन्त समय, तारा का दर्शन चाहता है ॥

दोहा

सहसगति के वचनसुन, क्रोधित हुये रघुराय ।
बोले बस अब चुप रहो, आगे सुना न जाय ॥

जल्दी अब संभल खडा होजा. मम इषु सम्मुख आता है ।
ऐसे पापी हृदय का यह रक्त, शोषण चाहता है ।
जो जो तूने कर्त्तव्य किये, वे चित्र बाण की बन आये ॥
इसमें दोष क्या बना मेरा. तेरे दुर्भाग्य उदय आये ।

दोहा

सहसगति के राम ने, मारा कस कर तीर ।
उसी बाण ने दुष्ट का, दिया कलेजा चीर ।

चक्कर खा धरणी गिरा, सहसगति मुरझाय ॥
नर नारी चहुँ ओर से, झूम झाम गये आय ।

चित्रांग सुत को रघुपति, लगे इस तरह कहन ।
अंत समय सुनले जरा, शिक्षाप्रद दो बैन ॥

जो खिला बाग में फूल समझ, वह भी इक दिन कुमलायेगा ।
जो जन्मा सो भी मनुष्य मात्र, क्या इन्द्र भी मर जायेगा ॥
जो अंत गति सो मति, श्री अरिहंत देव फरमाते हैं ॥
कान लगा कर सुनो जरा, उसका भी रहस्य सुनाते है ।

दोहा

सुमति छोड़ कुमति ग्रहे, फेर सुमति ले धार ।
उसका भी संसार से, होता बेडा पार ॥

अब तजो सभी दुर्ध्यान, जिन्हों ने यह दुर्दशा कराई है ।
जो होना था सो हो बीता, समता में तेरी भलाई है ॥
यदि इसी ध्यान में प्राण गये, तो नीच गति जा परना है ।
अनमोल रत्न नर-तन खोकर, चौरासी का दुख भरना है ॥

दोहा

इतना कह सीता पति, बैठ गये निज स्थान ।
सहसगति के भी जरा, दिल में आया ध्यान ॥
बिना पुण्य कैसे गहे, ठीक-ठीक सब वैन ।
पर कुछ दिल मे सोचकर, लगा इस तरह कहन ॥

गाना (सहसगति का)

चलना जरा संभल कर, पर नारी नागिनी है।
मेरी तरफ ही देखो, हालत ये क्या बनी है॥
रखती हजारों फन ये, रग रग में गरल कातिल।
खावे जिगर को पहिले, ऐसी ये डाकिनी है॥
चलती है चाल बांकी, लहरा के जब जमीं पर।
सुध-बुध सभी भुलावे ऐसी यह शाकिनी है॥
पड़ता नहीं है दिल में, दिन रात चैन उसके।
जिसके चश्म कटारी, मारे यह पापिनी है।
किंपाक फल के सदृश लगती, मनुष्य को प्यारी।
विष से मिली मिठाई नित्य चाहिये त्यागिनि है॥
इस लोक हो ख्वारी पर नरक देने हारी।
नर-जन्म को है आरी ऐसी अभागिनी है॥
लख कर के हाल मेरा, शिक्षा ग्रहो अय मित्रो।
नर भव वृथा गँवाया, पर नारी बाघिनी है॥
परभव को यह पखेरू लेता है अब उडारी।
शुभ 'शुक्ल' ध्यान ध्याओ कह कर यह रागिनी है॥

दोहा (राम)

सहसगति यह वचन कह, परभव गया सिधार।
कपिपति के होने लगा, आनन्द मंगलाचार॥
पूर्ववत् निज पाट पर, कपिपति रहा विराज।
शूरवीर बांका बली, चन्द्ररश्मि युवराज॥
रामचन्द्र से कपिपति, लगा कहन यूं बात।
पुत्री ब्याहने की प्रभो, मेरी है दरख्वास्त॥

कहा श्री रघुराय ने, कपिपति वचन सभाल।
जनक सुता की सुध बिना, दिल का हाल बेहाल॥
अब इधर सिया के शोधन मे, हुए एकत्र परामर्श करने को।
उस तरफ लंका मे शूर्पणखा, पहुंची अपना दुख रोने को॥
पर वहां रंग कुछ और खिला, था नशा भूप को चढ़ा हुआ।
जिस भंवर से कोई बचा नहीं, था उसी चक्कर मे फंसा हुआ॥

दोहा

जो विलासिता मे पड़ा, गया मनुष्य भव हार।
चार गति मनुष्यत्व बिन, मिले दुःख ससार॥
लग रही ध्वनि एक सीता की, कुछ खान-पान नहीं भाता है।
बस नाम एक सीता के बिन, कुछ और न सुनना चाहता है॥
निदान कर्म के उदय कोई, चारित्र पाल नहीं सकता है।
विषयानुरागी परोपकार की, शक्ति कभी न रखता है॥

शूर्पणखा का जाल

दोहा

शूर्पणखा कहने लगी, अय बन्धु जगताज।
प्रीतम सुत देवर मरे, गया हमारा राज॥
तुम देख रहे दुर्दशा हमारी, यही तो सबसे दुःख बड़ा।
जिस तख्त पै तेरा बहनोई था, उस पर वीर विराध चढ़ा॥
अब सुंद की आप सहाय करें, इस समय यदि ना ध्यान दिया।
तो यही नजर में आता है कि, गढ़ लंका भी आन लिया॥

दोहा

रावणके था चढ़ रहा, इश्क मजीठी रंग।
विचार शक्ति रहती कहाँ, जिसको डसे भुजंग॥

वह बना असन्नी बैठा था, मन सीता में था लटक रहा।
या यों कहिये कि मन भंवरा था, इसी फूल पर भटक रहा॥
फिर बोला बेमन होकर बस इस, व्याख्या को रहने दे।
और चन्द दिनों तक उनको भी, इस बात का लावा लेने दे।
अब किष्किन्धा में निश्चय, उनको काल बुला कर लाया है।
जो खरदूषण को मार विराध को, राज ताज दिलवाया है॥
क्या हैं वन के दो भील बिचारे, महादुःख में पड़े हुए।
इस दशकन्धर के सन्मुख तो, महायोद्धा भी ना खड़े हुए॥

दोहा

शूर्पणखा कहने लगी, रावण को यूं भाष।
कभी कभी वह ले रही, लम्बे लम्बे श्वास॥

शूर्पणखा का गाना—रावण के प्रति

आपकी भूल है भाई, समझते उनको विचारे।
सहस्र चौदह समर में एक ने, सब खाक कर डारे॥१॥
क्या शक्ति दामिनी की, भ्रात उनके धनुष के आगे।
हाय देवर पति सुत के, कलेजे तीर से फारे॥२॥
असर करता नहीं उन पर, कोई भी अस्त्र या शस्त्र।
खबर नही कैसे वज्र के, बने है गजब के मारे॥३॥
सबर तब ही मिले मुझको, उन्हों का सिर कतर लाओ।
मार कर विराध शत्रु को, सुन्द फिर ताज सिर धारे॥४॥
बने हो शून्य चित्त क्योंकर, करो ये काम जल्दी से।
नहीं तो 'शुक्ल' यहाँ पर भी, बजेंगे उनके नक्कारे॥५॥

रावण का गाना—भगिनि के प्रति

बहिन जो ख्याल है तेरा, वही मैं कर दिखाऊगा।
इसी शमशेर से दोनो का, सिर धर से उड़ाऊँगा ॥१॥
बहुत कहने से क्या मतलब. क्योंकि खुद ख्याल है मेरा।
विराध को मार कर ले ताज, सुन्द के सिर सजाऊंगा ॥२॥
चाहे हो धनुष विजली सा, चाहे खुद भी हो वज्र के।
स्वाद इस बात का अच्छी तरह, उनको चखाऊंगा ॥३॥
जो होना था सो हो बीता, तजो ये ख्याल अब मन से।
उन्हीं की तो है शक्ति क्या, जमीं तक को हिलाऊंगा ॥४॥
जमाना थरथराता है, नाम सुनकर के रावण का।
चन्द दिन ठहर जा तुझको, सभी कुछ कर दिखाऊंगा।

दोहा

टालमटोला कर दई, शूर्पणखा को धीर।
उसी ध्वनि मे फिर लगा, जो बैठा दिल तीर ॥

सीता आत्म-निन्दा

रागान्धा वहाँ से चला, पहुँचा सीता पास।
जनक सुता थी ले रही, गम में लम्बे श्वास ॥

सिर हिला हिला अपने मस्तक, पर हाथ मारती जाती थी।
निज आत्म निन्दा कर करके, नैनों से नीर बहाती थी ॥
कभी मन मे ऐसा आता था, इस तन से अभी विहार करू ं।
यह सोच सोच रह जाती थी, थोड़ा सा और विचार करू ं ॥

दोहा

क्या आज्ञा सर्वज्ञ की, कौन गुरु महाराज।
किसकी हूँ मै कुलवधू, कौन मेरे सिरताज ॥

सिद्धान्त कौनसा है मुझको, जिसने यह ज्ञान बताया है।
और धर्म कौनसा है मेरा, जिसने बलवान् बनाया है ॥
किसकी राजदुलारी हूँ, और क्या मुझको करना चाहिये।
बेशक ये प्राण रहें ना रहे, परमेष्ठी का शरणा चाहिये ॥

दोहा

तन की खातिर धन तजो, दोनों तज रख लाज।
धर्म हेत तीनों तजो, कहा श्री जिनराज ॥

शिष्य पाच सौ खदक के, सब धर्म हेतु बलिदान हुए।
सम दम खम हृदय मे धारा, दुख चक्र छोड़ निर्वाण हुए ॥
वह चीज कौन-सी दुनिया में, जो सग जीव के जाती है।
बस एक शुभाशुभ करनी है, जो संग न तजना चाहती है ॥
निष्कलक हैं देव गुरुजन, पाच महाव्रत के धारी।
सर्वज्ञ कथित शास्त्र होता, प्राणी मात्र को हितकारी ॥
दया धर्म में श्रद्धा है, कुलवधू मै दिवाकर वंश की हू।
हरिवशी वास व केतुजनक, नृप मुख्य मे पुत्री उसकी हूं ॥
निष्कलंक जैसे ये सब, मै भी निर्मल कहलाऊंगी।
शील धर्म नही जाने दूँ, इस तन की बलि चढ़ाऊंगी ॥
महा शक्तिमान् उसे जग में, अरिहन्त देव फरमाते हैं।
जो धर्म बलि देने के लिये, मस्तक सहर्ष चढ़ाते है ॥
जो रागद्वेष के वशीभूत हो, मरे तो आत्म-हत्या है।
फिर अज्ञानी दो अशुभ ध्यान, ना धर्म की जिसमें सत्ता है ॥

अन्तिम शस्त्र शील रत्न का, रक्षक यह बतलाया है।
जिसने भी इसको दिया अंग, इसने वह पार लगाया है॥

दोहा

यही नियत मैंने किया, अपने दिल दरम्यान।
यदि समय कोई आ गया, तज देऊंगी प्राण॥

दुःख में दुःख है मुझे कोई, तो दुख एक श्रीराम का है।
श्री रामचरण की रज बिन, मेरा जीना भी किस काम का है॥
उधर कहाँ फिरते होंगे, प्रीतम हा मेरी तलाशी मे।
इस तरफ विरहनी चकवीवत्, प्रीतम दर्शन की प्यासी मैं॥

दोहा

इतने में ही आ गया दशकन्धर भूपाल।
पीठ फेर बैठी सिया नीची गर्दन डाल॥
सीता के थे बह रहे जल झरने दो नैन।
देख हाल ये भूपति लगा इस तरह कहन॥

प्रलोभन

दोहा

अय सीता कुछ तो करो, दिल मे सोच विचार।
किस कारण तन खो रही, रो रो गुले अनार॥

रोकर क्यो विष घोल रही, ये दिन है आनन्द मंगल के।
कहाँ ये स्वर्णमयी लंका, और कहां वे सुख थे जंगल के॥
जंगली सा भेष बना करके, फिरती थी संग अधीरो के।
यह हेम जड़ित साड़ी आभूषण, पहिनो सच्चे हीरों के॥
दाने दाने पर हीरा है, यह चम्पाकली निहारो तो।

बिछियों का तो क्या कहना है, यह हार गले में डारो तो ॥
यह सुन्दर कर्ण फूल देखो, कुण्डलों की झलक निराली है ।
और सच्चे मोती जड़े हुए, नथ भी यह मछली वाली है ॥
यह कड़े तोड़िये छैल कड़े, झांझन पहनो सब चरणों मे ।
क्या देख आरसी बाजूबन्द, पौंहची पहिनो कर कमलों में ॥
ये शीर्षमणि देखो अद्भुत, है जवाहरात से जड़े हुए ।
मनमोहन माला पंचरंगी, दाने जिसमे है अड़े हुए ॥
ये देवरमण उद्यान अहो, दुनिया मे ऐसा और नहीं ।
सब तरह की मेवा लगी हुई, तुम खाती हो किस तौर नहीं ॥
फिरते-फिरते उस जंगल मे, भीलों के पीछे मर जाती ।
गुलबदन मुझे तू बता, फेर कैसे ये ऋद्धि सब पाती ॥
देखो क्या शोभन जलाशय, वृक्षों की पक्ति लगी हुई ।
और मन्द मन्द सुगन्ध मरुत, शोभन क्या लेकर बगी हुई ॥
क्या वर्णन करूं आवासों का, चित्राम जवाहिर के सारे ।
हैं फर्श सब जगह रत्नों के, और झाड़ फानूस सजे भारे ॥
अब त्रिखंडी नृप की पटराणी, सीता तुम कहलावोगी ।
यह राजपाट सब कुछ तेरा, मनमानी मौज उड़ावोगी ॥
पुण्य सितारा उदय हुआ, ऊपर को नजर उठावो तो ।
जैसा भी दिल में ख्याल, और सो भी मुख से फरमावो तो ॥

दोहा

रावण का व्याख्यान सुन, बोली सीता नार ।
जैसे गर्जे शेरनी, गिरी गुफा मझार ॥

सीता जी का गाना

बसी है मेरे हृदय मे भानुकुल राम की सूरत ।
बिसर गई सुध सभी जो, देखी शोभाधाम की सूरत ॥१॥

वह अद्‌भुत गुण भरी सूरत, मेरे नेत्रों मे फिरती है ।
समाई सारी रग रग मे, मेरे पति राम की सूरत ॥२॥
रूप क्या सद्‌गुणो का सौन्दर्य है, त्रिलोकी का जिसमे ।
कि लज्जा से मलिन हो जाय, कोटी काम की सूरत ॥३॥
देवगण नाचते है मगन होकर, प्रेम से जिनके ।
दुःखीजन ढूंढते फिरते, छवि श्री राम की सूरत ॥४॥
तेरी तो हस्ती क्या है, सुरपति अन्तक को ले आवे ।
बिसारूँगी नहीं मन से, मैं अपने स्वामी की सूरत ॥५॥
'शुक्ल' अज्ञान में फँसकर, फिरे भवचक्र में प्राणी ।
खरों को क्या खबर, होती कहाँ आराम की सूरत ॥६॥

दोहा

दुष्ट अश्व को चाहिए, कांटेदार लगाम ।
मूढ़ काल खर नीच से, नरमी का क्या काम ॥

हृदय आँख दोनो के अन्धे, चपर चपर क्या लाई है ।
मानिन्द भांड दुर्भाषण की, किसने यह तर्ज सिखाई है ॥
अदर्शनीक बस पीठ दिखा, यह पाप जनक व्याख्यान न कर ।
आभूषण वस्त्र फूक सभी, निर्लज्ज कहीं जाकर के मर ॥
मुझ पुत्री सम जो पुत्री तेरे, उसको पटनार बना रावण ।
यह हीरे पन्ने जवाहरात के, आभूषण पहना रावण ॥
उन सबको महलो देवरमण, बागों की सैर करा रावण ।
एक रामचन्द्र से अन्य मनुष्य, सब पिता भ्रात मेरे रावण ॥
यह स्वर्णमयी लंका मुझको, मरघट मानिन्द दिखाती है ।
श्री राम चरण रज बन में मेरा, हृदय कमल खिलाती है ॥
यह क्षत्रिय का कर्त्तव्य नहीं, तू मुझे चुराकर लाया है ।
निष्कारण अय नीच सती को, और सताने आया है ॥

दोहा

सती शील भुजंगमणि, शेर मूंछ ऋषि शाप ।
आयु तक देते नहीं, अन्त न कछु संताप ॥

शुद्ध देव गुरु और धर्म शास्त्र के, जो प्राणी विपरीत चले ।
तो समझ लेवो कि उसके, उड़ने वाले हैं सब कोट किले ॥
श्रेष्टों को वही सताते हैं, अवसान जिन्हों के पुण्य हुए ।
फिर नीच गति जा पड़ते हैं, शुभ ज्ञान ध्यान से शून्य हुए ॥

दोहा

कान लगा करके सुना, सीता का व्याख्यान ।
कुछ तेजी मे आन यो, बोला खोल जबान ॥
करुणा आती है मुझे, देख सौम्य मुख दीन ।
नहीं तो कर देता अभी, टुकड़े तेरे तीन ॥

दुष्ट शब्द कहना यह सब, बुद्धिमानी से बाहर हैं ।
सब तीन खड मे तेज मेरा, बाकी दुनियाँ सब कायर हैं ॥
कुछ दोष नहीं इसमे तेरा, क्योंकि शिक्षा जब ऐसी है ।
और जैसी थी सगति तुझको, चतुराई भी तुझको वैसी है ॥
इसलिए मुझे कुछ खेद नहीं, जो भी कुछ मर्जी सो कहले ।
अवशेष और दुःख रोने का, बाकी कुछ है सो भी रोले ॥
कई भाग्यहीन अच्छी वस्तुके, प्राप्त होने पर रोते हैं ।
और दुष्ट शब्द कहने से अपना, रहा सहा भी खोते हैं ॥
हीरे और पत्थर मे तुझको, रचक ना पहचान रही ।
यह सुने वचन तेरे कोई तो, बता मेरी क्या शान रही ॥
बस छोड़ो पिछला ध्यान सिया, अब भी मन को समझालो तुम ।
जो भी कुछ गुज्जार खुशी से [illegible] । [illegible] ॥

दोहा

ऐसा कह दशकन्धर ने, लिया मौन कुछ धार।
सीता ने फिर इस तरह, दई उसे फटकार॥
धन्य तुझे शिक्षा मिली, धन्य विद्या अरु शान।
धन्य तेरी यह शूरता, मात किया हैवान॥

धन्य तेरी यह जीभ श्वान के, मानिन्द भौंक रहा है।
गपड़ सपड़ कर मान बड़ाई, अपनी ठोक रहा है॥
अति आश्चर्य इतर लगाना, खर को भी शौक रहा है।
किस कारण यह जान, काल के मुख मे झोंक रहा है॥

दौड़

बताता है त्रिखंडी, मगर तू है पाखंडी,
याद रख वचन हमारा।
इस लका मे राम लखन का, बजेगा तेग दुधारा॥

सीता का गाना (रावण के प्रति)

किसी कुगुरु कुसंगत से, यही तालीम पाई है।
चुरा कर और की नारी, खौफ से दुम दबाई है॥१॥
करेगा क्या मेरे टुकडे, तू अपने ही करायेगा।
चन्द दिन में ही लंका की, देख होगी सफाई है॥२॥
तेरी ऋद्धि को काटन में, करूंगी काम आरी का।
मुझे क्या धौंस अबला को, यहाँ आकर दिखाई है॥३॥
मैं उस केहरी की नारी हूं, जिन्हों की तेग जग जाहिर।
तेरा यह सिर उड़ाने को, उन्हां संग अनुज भाई है॥४॥
दिखाता भय क्या मरने का, मैं खुद मरना ही चाहती हूं।
करो उपकार मेरे पर यह, लो गर्दन झुकाई है॥५॥

दोहा

सती शील भुजंगमणि, शेर मूंछ ऋषि शाप।
आयु तक देते नहीं, अन्त न कछु संताप॥

शुद्ध देव गुरु और धर्म शास्त्र के, जो प्राणी विपरीत चले।
तो समझ लेवो कि उसके, उड़ने वाले हैं सब कोट किले॥
श्रेष्टों को वही सताते हैं, अवसान जिन्हों के पुण्य हुए।
फिर नीच गति जा पड़ते हैं, शुभ ज्ञान ध्यान से शून्य हुए॥

दोहा

कान लगा करके सुना, सीता का व्याख्यान।
कुछ तेजी मे आन यों, बोला खोल जबान॥
करुणा आती है मुझे, देख सौम्य मुख दीन।
नहीं तो कर देता अभी, टुकड़े तेरे तीन॥

दुष्ट शब्द कहना यह सब, बुद्धिमानी से बाहर हैं।
सब तीन खंड में तेज मेरा, बाकी दुनियाँ सब कायर हैं॥
कुछ दोष नहीं इसमें तेरा, क्योंकि शिक्षा जब ऐसी है।
और जैसी थी संगति तुझको, चतुराई भी तुझको वैसी है॥
इसलिए मुझे कुछ खेद नहीं, जो भी कुछ मर्जी सो कहले।
अवशेष और दुःख रोने का, बाकी कुछ है सो भी रोले॥
कई भाग्यहीन अच्छी वस्तु के, प्राप्त होने पर रोते हैं।
और दुष्ट शब्द कहने से अपना, रहा सहा भी खोते हैं॥
हीरे और पत्थर में तुझको, रंचक ना पहचान रही।
यह सुने वचन तेरे कोई तो, बता मेरी क्या शान रही॥
बस छोड़ो पिछला ध्यान सिया, अब भी मन को समझालो तुम।
जो भी कुछ गुब्बार खुशी से, सारा आज सुनालो तुम॥

बात वो ही करी तूने; डराती ऊंट छन्ने से।
यहाँ तो बज चुके धौसे, मुझे तू क्यों डराती है ॥३॥
किया है नियम उसका जो, मुझे दिल से नहीं वाँछे।
इसलिए दीन वन कहता, मुझे तू क्यों सताती है ॥४॥
तेरे रोने के पानी से, कभी मैं बह नहीं सकता।
प्रेम तजदे सभी पिछला, उसे तू क्यों दौहराती है ॥५॥
खूब सोचे जरा मनमें, समय कुछ और देते हैं।
भुला बैठा खुदी को मै, सग दिल क्यो बनाती है ॥६॥

दोहा

जनक सुता तैयार थी, कुछ कहने को और।
रावण लंका को चला, उदय कर्म का जोर ॥

प्रकरण मंदोदरी

था नशा भूप को चढ़ा हुआ, कुछ खान पान नहीं भाता था।
दिन रैन मन्दोदरी राणी के भी, महल तलक नहीं जाता था ॥
मन्दोदरी ने एक समय, चपला दासी बुलवाई है।
एकान्त पास बैठा उसको, यों कोमल गिरा सुनाई है ॥

दोहा

अय चपला सुन तो जरा, मेरे दिल का राज।
किस कारण आते नहीं महलो में महाराज ॥

कई दिवस बीते महलों मे, महाराज कभी नहीं आये हैं।
तरस रहे हैं नैन युगल, नहीं दर्श पिया के पाये है ॥
क्या है उसका हाल बता, जो नई नार वे लाये हैं।
और महलों मे अब तक उसको, क्यों नहीं लाना चाहे हैं ॥

गधों को भी सुंघाते हैं, कोई क्या इत्र फुलवाड़ी ।
उन्हों के वास्ते कुदरत ने, इक कुरड़ी बनाई है ॥१॥
वचन पटुता इशारे सब, लिये है बुद्धिमानों के ।
गधे, सूअर व मूर्ख को, अक्ल सोटे से आई है ॥२॥

दोहा

रावण को वे वचन थे, जैसे तीक्ष्ण शूल ।
किन्तु रागान्धा भ्रमर, काट सके ना फूल ॥
बस बस बस अब चुप रहो, लम्बा करके हाथ ।
बड़े जोश में आन के, बोल उठे नरनाथ ॥
आशायें तेरी सभी, व्योमकुसुमवत् जान ।
क्या शक्ति उनकी यहां, कॉपे सकल जहान ॥

कॉपे सकल जहान सिया तुम आप समझ जावोगी ।
अब आयु पर्यंत राम के, दर्शन नहीं पावोगी ॥
देख रहा मै हाल सभी क्या, करके दिखलावोगी ।
सता सता इस भँवरे को, अयि कामिन पछतावोगी ॥

दौड़

जले को और जलाले, दुखी को और सताले ।
क्या उलट पुलट वकती हो, वन्दे के फन्दे से,
अब क्या सहज निकल सकती हो ॥

गाना (रावण का)

खुल गये भाग्य तेरे क्यों, आज ठोकर लगाती है ।
तरसती है जिसे दुनियाँ, उसे तू क्यों ना चाहती है ॥१॥
तेरा यह निष्ठुर भाषण तो, मुझे फूलों बराबर है ।
मगर बेहाल तन का कर मुझे, तूं क्यों दिखाती है ॥२॥

(दासी)

तो मै जल्दी से जाकरके महाराज को,
राणी साहिबा बुलाकर के लाऊं अभी।
जैसी आज्ञा है वैसी मै पालन करूं,
चाहे खाने तलक को भी खाऊं कभी ॥३॥
आना जाना तो उनके ही स्वाधीन है,
मैं तो आने की बाते बताऊं सभी।
कहीं देरी यदि मुझको लग भी गई,
सजा उल्टी न तुमसे मैं पाऊं कभी ॥४॥

दोहा

ऐसा कह दासी चली, करने को यह काज।
पहुँची बंगले मे जहां, लेट रहे महाराज॥

मन में अति उचाट लगा, शय्या पर पड़े हुए हैं।
ध्यान प्रथम दो पायो मे, और नेत्र चढ़े हुए है॥
मुरझा रहा बदन मस्तक, पर वल कुछ पड़े हुए हैं।
कुछ ऐसे कि रोगग्रस्त, कुछ मानो लड़े हुए है॥

दौड़

देख दासी घबराई, आज आपत्ति आई,
करूं क्या सोच रही है, पराधीन स्वप्ने।
सुख नाहीं, सत्य यह बात कही है।

दोहा

अनुमान नजर यह आ रहे, यदि बोली इस बार।
गुस्से मे गुस्सा चढ़े, लेवें शीश उतार॥

क्षुधातुर शठ और तीसरा, जो गुस्से मे भरा हुआ।
दस अन्धों में अन्धा चौथा, पंचम हो जो लड़ा हुआ॥

दोहा

जैसा तुमको ज्ञान है, वैसा मुझको ज्ञात ।
मगर एक अफवाह जरा, सुनी आज की रात ॥

दशरथ नृप की कुलवधू जानकी, रामचन्द्र की नारी है ।
दण्डकारण्य मे देख अकेली, दशकन्धर अपहारी है ।
तज देवेगी प्राण तजे ना, सत को जनक दुलारी है ।
इस कारण महाराणी जी, लाये नहीं महल मंझारी है ॥

दौड़

हर घडी समझाते हैं, बाग नित्य प्रति जाते है,
बात यह ठीक कही है ।
प्रेम तमाचा लगा जिन्हों के, सुध बुध कहाँ रही है ॥

दोहा (मन्दोदरी)

अच्छा तुम जाओ अभी, महाराज के पास ।
महल बुलाने की करो, प्रीतम से अरदास ॥

गाना राणी का (दासी के प्रति)

जा चली जा अभी देर लाना मती,
साथ महलों मे लेकर के आना वहन ।
इन्हीं वातों मे सारी उमर खो दई,
अपना दुखडा ये किसको सुनाऊं वहन ॥१॥
हाय गजव है सितम कैसा अधेर है,
पर नारी चुरा करके लाना वहन ।
रो रो तन को यह खोती ननद सामने,
इसका दुख भी जरा न पिछाना वहन ॥२॥

(दासी)

तो मैं जल्दी से जाकरके महाराज को,
राणी साहिबा बुलाकर के लाऊं अभी।
जैसी आज्ञा है वैसी मैं पालन करूं,
चाहे खाने तलक को भी खाऊं कभी ॥३॥
आना जाना तो उनके ही स्वाधीन है,
मैं तो आने की बाते बताऊं सभी।
कहीं देरी यदि मुझको लग भी गई,
सजा उल्टी न तुमसे मैं पाऊं कभी ॥४॥

दोहा

ऐसा कह दासी चली, करने को यह काज।
पहुँची बंगले मे जहां, लेट रहे महाराज ॥

मन में अति उचाट लगा, शय्या पर पड़े हुए हैं।
ध्यान प्रथम दो पायो मे, और नेत्र चढ़े हुए है ॥
मुरझा रहा बदन मस्तक, पर बल कुछ पड़े हुए हैं।
कुछ ऐसे कि रोगग्रस्त. कुछ मानो लड़े हुए है ॥

दौड़

देख दासी घबराई, आज आपत्ति आई,
करूं क्या सोच रही है, पराधीन स्वप्ने।
सुख नाहीं, सत्य यह बात कही है।

दोहा

अनुमान नजर यह आ रहे. यदि बोली इस बार।
गुस्से मे गुस्सा चढ़े, लेवे शीश उतार ॥

क्षुधातुर शठ और तीसरा, जो गुस्से मे भरा हुआ।
दस अन्धों में अन्धा चौथा, पंचम हो जो लड़ा हुआ ॥

सब शिक्षक रागी के शत्रु, बुद्धिमानों का कहना है।
इसलिये इसे कुछ कह करके, क्यों कष्ट मौत का सहना है।

दोहा

यही सोच वहाँ से चली, पहुंची राणी पास।
मन्दोदरी कहने लगी, चेहरा देख उदास॥

(मन्दोदरी का गाना)

अरी क्यों क्यों दासी क्या हालत है तेरी,
छवि तन की सब मुर्झाई हुई है।
खिलखिलाती हुई तू गई थी यहां से,
बता क्या किसी की सताई हुई है॥१॥
बता कहाँ प्रीतम पता क्या तू लाई,
उदासी क्यों चेहरे पर छाई हुई है।
हो करके निर्भय कहो सब कहानी,
सुना सुनने की दिल मे समाई हुई है॥२॥

दोहा (चपला)

महारानी के हुक्म से, गई मैं थी जिस काज।
बंगले में थे पलंग पर, पड़े हुए महाराज॥

(चपला का गाना)

बताऊँ मै क्या तुमको वहां की कहानी,
खबर किस मर्ज के सताये हुए हैं॥१॥
ना सेवक ही कोई देखा पास उनके,
खड़े सब बाहर घबराये हुए हैं॥२॥
बिना नीर मछली तड़फते थे ऐसे,
कहीं अपने मन को फंसाये हुए हैं॥३॥

कहाँ मेरी शक्ति करूं उनसे बाते,
चश्म दोनो मस्तक चढ़ाये हुए है ॥४॥

दोहा

दासी के जिस दम सुने, मन्दोदरी ने बैन ।
यान बैठ पति पास जा, लगी इस तरह कहन ॥
तल्लीन आप किस ध्यान मे, हुए पति महाराज ।
मुझको भी बतलाइये, दुःख का कारण आज ॥

दुःख का कारण कहो आपके, मन मे कौन फिकर है ।
दिल मे अति उचाट उदासी, कैसी चेहरे पर है ॥
हाल आपका देख मेरे, इस दिल में नहीं सबर है ।
पल पल मे शय्या पर पलटे, खाते इधर उधर हैं ॥

दौड़

छीन छवि हुई तुम्हारी, कौन दुःख ऐसा भारी,
भेद सब ही बतलाइये, अर्धाङ्गी से
प्राणनाथ ना बात छिपानी चाहिए ॥

दोहा

प्राण प्रिया मैं क्या कहूँ, अपने दुःख की बात ।
पराधीन तन मन हुआ, नींद नहीं दिन रात ॥

नींद नहीं दिन रात हो सके, तो यह दुःख मिटादे ।
देवरमण उद्यान अभी जा, सीता को समझादे ॥
यही रोग बस जनक सुता से, प्रेम औषधि लादे ।
या इस तन से छुटा, जीव नाता परभव पहुंचादे ॥

दौड़

तुम बनो सहायक मेरी, करो मत इसमें देरी,
तुम्हे यदि प्रेम हमारा । प्रथम करो यह काम,
नहीं बस यहां से करो किनारा ॥

दोहा

हैं हैं है महाराज ये, फेर ना लेना नाम ।
तीन खण्ड के ताज बन, क्या करते हो काम ॥

हे नाथ आप कुछ सोच करो, क्या नीच कर्म चित्त लाते हो ।
है निर्मल कुल ये कीर्ति धवल से, बट्टा आज लगाते हो ॥
यहाँ एक एक से बढ़ करके, राणी है आपके कमी नहीं ।
जो परनारी से राग करे, उसकी जड़ जग मे जमी नहीं ॥
पाताल लंक खुस गई हाथ से, जिस दिन से यह लाये हो ।
नित्य शूर्पणखा रोती फिरती, उसका ना हित कर पाये हो ॥
खरदूषण चौदह हजार, खेचर जिनसे रण मे हारे ।
यदि आ पहुंचे वे लंका में, कबहूं ना टरेगे फिर टारे ॥
क्या लाभ उठाया बतलाइये, सुन्दर तन का क्या हाल हुआ ।
सूर्य की तरह चमकता था, वह काला आज निडाल हुआ ॥
परनारी विष बेल पिया जिसने, अपने घर बोई है ।
क्या राजपाट ऋद्धि सम्पत्ति, निश्चय सब उसने खोई है ॥

दोहा (रावण)

वाह वाह वाह बस पंडिता, रहने दे उपदेश ।
ढ़ाई अक्षरी बात थी, खोले ग्रन्थ विशेष ॥

दोहा (मन्दोदरी)

प्राणनाथ यह आपको, दिया नहीं उपदेश ।
देखो तो इसमे नहीं, नीति का लवलेश ॥

हे नाथ ध्यान धर सुन लीजे, इक बात और बतलाती हूं ।
अविनय न कहीं आपकी हो, कहती कहती रुक जाती हूँ ॥
जिस देश या घर क्या नगरों में, सत्पुरुष सताये जाते हों ।
जहां मांस मद्य चोरी यारी, पतिव्रता नार सताते हों ॥
जिस जगह शील का लेश नहीं, उस जगह दरिद्रता वास करे ।
जहाँ मुनि सताये जाते हो तो, कुल का सत्यानाश करे ॥
कामाग्नि यदि शान्त न हो तो, राजकुमारी और वरो ।
हे नाथ हमारे कहने से तुम, इस व्याधि को दूर करो ॥

दोहा (रावण)

बस बस बस चल हट परे, रसना करले बन्द ।
ऐसे वचन विशेष का, यहां कौन सम्बन्ध ॥

हम चलते हैं पूर्व को तो, यह पश्चिम को जाती है ।
हम कहते हैं तू ऐसे कर, यह उल्टे गीत सुनाती है ॥
चल तू अपने रस्ते लग, क्यों मुझे सताने आई है ।
गुद्दी पीछे मति जिसकी, वह अक्ल बताने आई है ॥

दोहा (मन्दोदरी)

वार बार कहती पिया, पछतावोगे फेर ।
एक नार के वास्ते, कटे शूरमे ढेर ॥

हे नाथ जरा सी कांजी रत्न, पदार्थ पय का नाश करे ।
सिक्के की संगति से सोना, क्या गौरव की आश करे ।
बिगड़े गति दुष्ट विचारों से, पद उच्च कुसंगति से बिगड़े ।
ग्रन्थों मे ऐसा लिखा हुआ, जगताज अनीति करे बिगड़े ॥

दोहा (रावण)

समझ लिया हमने सभी, लाज विनय दई तार ।
गुरुणी बन कर आगई, करने को प्रचार ॥

चाहे सर्वस्व हो नष्ट मेरा, मुझको इस बात का ध्यान नहीं।
इक प्राण प्यारी सीता बिन, इस तन में बाकी जान नहीं॥
खरदूषण की बात ही क्या, चाहे सारा जग मारा जावे।
यह प्राण जायें तो जायं मगर, नहीं जनक सुता जाने पावे॥
जब सुर सुन्दर आदि विद्याधर, राजे मिलकर आये थे।
वह समय याद होगा तुमको, मैंने सब मार भगाये थे।
वैदेही तो एक ही है, वे कितनी राजकुमारी थीं।
और सहस्रांशु इन्द्र नरेश की, कैसी गति कर डाली थी॥

दोहा

क्या मेरा वह कर सके, दुखिया वन के भील।
अष्टापद के सामने, कौन विचारी चील॥

बड़े-बड़े रण जीते हम एक, बबर सिंह वह बन्दर हैं।
दोनों को नाच नचाने में, हम भी तो गुरु कलन्दर हैं॥
क्यों समय नष्ट करती ज्यादाह, सब कुछ निस्सार ही बकती है।
हृदय में जिसने वास किया, अब निकल नहीं वह सकती है॥

दोहा

जो इच्छा मुझको कहो, दो सौ सौ धिक्कार।
पुण्य हमेशा जीव का, रहे नहीं इकसार॥
अनुमान हमारे मे स्वामी, वह समय वही था बीत गया।
सब राजों को जो जीत गया, वह पुण्य आपका जीत गया।
वह काम तुम्हारा कुछ नीति के, अन्दर बहुता बाहिर था।
और पुण्योदय से सर्व जगत्, दृष्टि गोचर मे कायर था॥

दोहा

इसमें तो प्रीतम कहीं, नीति का नहीं अंश।
गंज छिपे कैसे जहाँ, नहीं केश का वंश॥

किस कुल की वह वधू सिया, और किसकी राजदुलारी है।
राज्य महल के सभी सुखों पर, बांई ठोकर मारी है ॥
जिन पिता वचन पूरा करने को, आपत्ति सिर धारी है।
हे नाथ हृदय मे सोच करो, यह उसी पुरुष की नारी है ॥

दोहा

भानु पश्चिम को चढ़े, भूले अपनी राह।
सीता सत को ना तजे, पड़े लंक पर आह ॥

किस लिये लंक मे अय प्रीतम, बारूद लगाना चाहते हो।
क्यों गौरव हीन वश को करके, दुर्गति बँध लगाते हो ॥
जिस जगह उपद्रव होते हैं, समझो कि वहां का पुण्य घटे।
वह देश दुखी हो जाता है, जिस जगह पिया व्यभिचार बढ़े ॥

दोहा

सुन करके व्याख्यान ये. जल बल हो गया ढेर।
भृकुटि सहित निडाल कर, बोला जैसे शेर ॥
तू है कायर की सुता, बोल रही जिम श्वान।
अब यदि कुछ आगे कहा, लेऊ खेच जबान ॥

लेऊं रसना खींच किसलिये, तू मरना चाहती है।
चपर-चपर चल रही जीभ, सिर पर चढ़ती आती है ॥
क्या चरित्र फैलाया और, हमको छलना चाहती है।
किस लिये बनी शत्रु मेरी, तू जला रही छाती है ॥

दौड़

पेच क्या चला रही है, दुखी को सता रही है।
आई क्या प्रेम दिखाने मारूँ चाबुक चार,
अक्ल सारी आजाय ठिकाने ॥

इस रूप तेज को देख ईर्षा, रवि शशि को आती है।
और नेत्र कटीलों की शोभा, मृगो का मान गलाती है॥
नेत्रों मे स्वभाविक सुरमाँ, रंग जैसा कपोत की गर्दन में।
मतवाली छवि निराली है, वह आज अद्वितीय नर तन में॥
फिर भी सरल स्वभावी ऐसे है. जो भी मर्जी कुछ करवालो।
त्रिखंडी है पर मान नहीं, चाहे चरणों मे सिर धरवालो॥
यह लो कुछ खाना खालो, फिर चलेंगी दोनो महलों में।
यह राजपाट सब कुछ तेरा, नित्य रहो बहन आवासों मे॥

छन्द

मन्दोदरी ने टहलनी को, कुछ इशारा कर दिया॥
थाल भर पकवान का, दासी ने लाकर धर दिया।
सब तरह के मिष्ट और, नमकीन खुशबूदार थे॥
फल फूल मेवादिक वहाँ, पहले से ही तैयार थे।
मौन बैठी थी सिया, पाँचों पदों मे ध्यान था॥
उसके लिए वह बाग क्या, इक शोक का स्थान था।
सीता सती को बात ये, तलवार सी लगने लगी॥
कुछ कर बढ़ा मन्दोदरी, सीता को यों कहने लगी।

दोहा

रहो सिया रस रंग मे, भोगो सुख भरपूर।
तू सबकी सरदार है, मैं चरणों की धूर॥

बुद्धिमान् वह नर नारी जो, द्रव्य काल अनुसार चले।
शुभ धन्य घड़ी धन्य भाग्य, सिया तुमको यह पूर्ण सुख मिले।
अब छोड़ो पिछला ख्याल, जरा ऊपर को मुख उठावो तो।
स्वीकार विनती कर मेरी, फल फूल मिठाई खावो तो॥

दोहा

कायर जन व दिल गिरे, औरों की ले ओट।
शीलवान दक्ष शूरमा, करे लक्षों मे चोट ॥
अनुचित्त इस बर्ताव का, सुनना भी महापाप।
गर्ज तर्ज बोली सिया, रह न सकी चुपचाप ॥
हट पीछे को दूतिया, बिछा रही क्या जाल।
कूदलालिका यहाँ तेरी, गलेना बिल्कुल दाल ॥

गले ना तेरी दाल, किसलिये बाते बना रही है।
जली हुई को क्यों आकर, अब वृथा जला रही है ॥
मानिन्द विष्टा सम्मुख मेरे, जो कुछ दिखा रही है।
क्यों दुर्गति का बन्ध पापिनी, अपने लगा रही है ॥

दौड़

मिलाई कुदरत ने जोड़ी, तू अन्धी रावण कोढ़ी।
भांड था पहले आया, उसी तर्ज का, अय भांडन
तैंने भी राग सुनाया ॥

(सीता का गाना)

बड़ी निर्लज्ज तू ने, लाज सारी बेच खाई है।
रागान्धी तू कामान्धे की, क्या कीर्ति सुनाई है ॥१॥
चोर कामी है गौरव हीन, वो रावण दुराचारी।
किया सिंहनाद का धोखा, मुझे लाया चुराई है ॥२॥
तुझे मैं रांड करने को, यहा आई न मिलने को।
मिलाऊं धूल में लंका, करूँ सबकी सफाई है ॥३॥
पीठ यहां से दिखा जल्दी, सूरत तेरी ना भाती है।
दनादन देखना यहाँ पर, अभी देगा सुनाई है ॥४॥

दोहा

देख तेज उस सती का, विस्मित हुइ अपार ।
दशकन्धर आया तभी, उसी बाग मंझार ॥

सीता के सुन वचन मन्दोदरी, लज्जित होकर बैठ गई ।
चक्षु रोगी ने मानों निज, दृष्टि सूर्य से खींच लई ॥
कर पॉच पदों मे ध्यान सिया ने, मौन वृत्ति मन लाई है ।
यह ध्यान देख दशकन्धर ने, फिर ऐसे बात चलाई है ॥

दोहा

अब दृष्टि ऊंची करो, छोड़ो आर्तध्यान ।
क्या सोचा फिर आपने, सत्य करो व्याख्यान ॥

अय सीता किसलिये मुझे तू, सता सता कर मार रही ।
यह मेरा रक्त बरसता है, जितने तू ऑसू डार रही ॥
घाव लगा कर हृदय मे, क्यो ऊपर नमक लगाती है ।
कर शान्त हृदय औषधि यही, क्यों नहीं किंचित मुस्काती है ॥
यह देख मन्दोदरी रानी भी, तेरी दासी है बनी हुई ।
और कैसा प्रेम दिखाया इसने, फिर भी तू है तत्ती हुई ॥
एक यही इच्छा मेरी हॅसने का, दृश्य दिखा दे तू ।
हृदय की तप्त बुझे ऐसा कोई, शीतल वचन सुनादे तू ॥
यह दासी और मै दास तेरा, बस और बता क्या चाहती है ।
सारांश सोच इन बातों का, फिर क्यों नहीं भोजन पाती है ॥
और बता क्या कहूं आसरा, इन प्राणों का तू ही तो है ।
राजपाट क्या महल कोप, इन सबकी मालिक तू ही तो है ॥

दोहा

देख ढीठ को ढीठता, बोली हो लाचार ।
वचन तीर मम भूप पर, बरसन लगे अपार ॥

ऐ मूढ़ कमलिनि दुनिया में, सूर्य के दर्शन चाहती है।
पर जुगनु चाहे हजार चढ़े, फिर भी नहीं दर्श दिखाती है॥
और देख पुरुष के दर्शन को, लज्जावन्ती मुरझाती है।
शुद्ध कुलवन्ती परपुरुषों की, छाया से लज्जा खाती है॥
जिस समय चढ़ेगे राम रवि, लंका रजनी पै आकर के।
उस समय कमलिनी आँख मेरी, खुल जायेगी स्वामी पा कर के॥
वे प्रबलसिंह है रामलखन, तू कायर दुर्बुद्धि खर है।
क्या मान करे ये लका तुझको, होने वाली यम घर है॥
कुरीति तुम्हारे कुल मे ये, प्रत्यक्ष आज दिखलाती है।
जो बहन तुम्हारी शूर्पणखा, वह पति दूसरा चाहती है॥
व्याधि जो उसको लगी हुई, सो ही तुमको बीमारी है।
क्या नुस्खा वैद्य सभी, घर में कट जाये मर्ज तुम्हारी है॥
क्या ठीक ऊंट की शादी में, खरदेव ने शङ्ख बजाया है।
आपस में ध्वनि रूप दोनों ने, मिलकर खूब सराह्या है॥
यह देख इशारा शुनी ने भी, सुरसांगीत उचारा है।
कौवों ने बांधा अलंकार, सब आकर राग सुधारा है॥
यह सभी तुम्हारे पर घटता, आपस में सोच समझ लेवो।
जो काल बुलावा दे आये, पैयार चबीना कर लेवो॥
आज नहीं तो कुछ दिन में, यह सिर भी उड़ने वाला है।
फिर सोचो एक चिता में, किस किस का सिर जुड़ने वाला है॥

—***—

क्रुद्ध रावण

दोहा

सुना काट करता हुआ, सीता का व्याख्यान।
रावण को भी चढ़ गया, गुस्सा बे प्रमान॥

पर शीलवान का मस्तक भी, कुछ जादू का सा होता है।
और बुन्दवा असली चन्दन का, तैजस शक्ति* को खोता है॥
दशकधर ने लिया खैंच, शस्त्र और हाथों पर तोला।
भय दिखलाता हुआ सिया को, लकापति ऐसे बोला॥

दोहा

बस बस बस अब चुप रहो, बोलो वचन सम्भाल।
दुष्ट शब्द कह कर वृथा, बजा रही क्यों गाल॥

अब याद रहे तू इस फन्दे से, निश्चय निकल नहीं सकती।
क्यों खाली गाल बजाती है, तू मुझको निगल नहीं सकती॥
हम जितनी करते नरमाई, तू उतनी सिर पर चढ़ती है।
हम हृदय से हित चाहते है, तू उलटी और अकड़ती है॥
यदि अबके अनुचित कहा तो, निश्चय धड से शीश उड़ा दूंगा।
जो आशा करके बैठी है, मिट्टी में उसे मिला दूंगा॥
बस बहुत सुनी मैंने तेरी, अब जल्दी मान वचन मेरा।
नहीं तो काल बली ने, अब तेरे सिर पर लाया डेरा॥

दोहा

कहते कहते भूप ने, शस्त्र लीना हाथ।
मन्दोदरी तब यूं लगी, कहन जोड़ कर हाथ॥

(मन्दोदरी का गाना)

त्रिखंडी नाथ यों ही क्रोध मे आया न करें।
निर्बलों को प्रबल शक्ति दिखाया न करें॥१॥
तेज प्रतापी नहीं आप सा जग में कोई,
अपनी कृपा मे इन्हें दूर हटाया न करें॥२॥

*तेजु लेश्य

दोऊ कर जोर के नम्र विनती यही है मेरी,
कभी निर्दोषों पै तलवार उठाया न करें ॥३॥
पति विरहिनी पतिव्रता विदेशिनी दुखिया,
शस्त्र अबला को दिखा पाप कमाया न करे ॥४॥
क्षत्रिय का धर्म ही नहीं स्त्री वध करने का,
"शुक्ल" कर्मों से डरो पाप कमाया न करें ॥५॥

दोहा (सीता)

समझ लिया मैंने सभी, है तू प्राणी नीच ।
फँसे चोरवत् म्यान से, शस्त्र दिखाया खींच ॥
ज्ञान शून्य तू हो रहा, बुद्धि महा मलीन ।
प्रकट वीरता हो गई, अय ढौंगी मति हीन ॥

धिक्कार तेरी शूरमताई, किस पै तलवार उठाई है ।
भगिनी भ्राता की कुदरत ने, जोड़ी क्या खूब बनाई है ॥
वह अन्य पुरुष को ले भागे, यह परनारी ले दौड़ता है ।
गीदड़ छिपकर खेले शिकार, और मूछे बहुत मरोडता है ॥
कायर पिंजरे मे फसी शेरनी, को तलवार दिखाता है ।
क्या यही शौर्य शक्ति तुझ में, जिस पर गाल बजाता है ॥
इस मेरी अमर आत्मा को, तलवार काट नहीं सकती है ।
देवेन्द्र कुछ नहीं कर सकता, क्या तुच्छ तुम्हारी शक्ति है ॥
इस कलधौत की लंका पर, जूती की ठोकर लाती हूँ ।
यह शक्ति एक शील की है, जिससे उत्साह बढ़ाती हूँ ॥
सर्वज्ञ देव ने धर्म बली पै, सिर देना बतलाया है ।
और धन्य घड़ी धन्य भाग्य, आज यह समय अपूर्व पाया है ॥
उपकार आपका मानूंगी, मुझको परभव पहुंचा रावण ।
तलवार जो हाथ मे तेरे है, ग्रीवा पै शीघ्र चला रावण ॥

पहले इसे रक्त पिला मेरा, फिर खून आपका पीवेगी ।
जब तक दुनिया मे जैन धर्म, बस कीर्ति मेरी जीवेगी ॥
फिर रक्तपात मेरा शोभन सच्चा इतिहास कहायेगा ।
यह बने सहायक सतियों का, मम हृदय कमल खिल जायेगा ।
अब छुड़ा मुझे दुख से रावण, हेतु वन पहुंचूं स्वर्गों में ।
जहाँ-अवधि ज्ञान से देखूंगी, तू दुख भोगेगा नरकों में ॥
वह रवि चला अस्ताचल को, तू भी अब चलने वाला है ।
क्या मान करे इस राज्य का, सब कुछ धूल में मिलने वाला है ॥
सच्ची सतवंती कुलवंती, लिये धर्म के जान गमाती है ।
यदि नल कुबेर भी चल आवें, उसको भी ठोकर लाती है ॥

दोहा

मौन धार रावण खड़ा, दिल में करे विचार ।
मरने को तैयार है, पड़े किस तरह पार ॥

अधिक और कुछ कहा इसे तो, अपने प्राण गवांवेगी ।
इसलिये समय देना चाहिये, अपने मन को समझावेगी ॥
यह सहज सहज कम होवेगा, क्योंकि पिछला मोह ताजा है ।
यह मन अन्तिम गिर जावेगा, जो इसके तन का राजा है ॥

—***—

नम्र रावण

दोहा

फिर बोला बस अय सिया.
तुम तो [illegible] ं, जैसे [illegible]

किस कारण [illegible] न,
[illegible]

नरम गर्म वचनों से तुमको, बार बार समझाता हूं।
इसका भी तो एक कारण है, सो तुमको आज सुनाता हूं ॥

दोहा

मैं एक समय मुनिराज से, लई प्रतिज्ञा धार।
जो मुझको चाहे नहीं, त्यागी वो पर नार ॥

जो हृदय से नहीं चाहे, उस पर नारी का त्याग मुझे।
बस केवल नियम रुकावट, करने वाला है मैं कहूं तुझे ॥
इस बात पै आप विचार करे, कुछ समय और भी देते हैं।
इस पत्थर दिल को मोम बना, हम तेरे हित की कहते हैं ॥

दोहा (कवि)

अस्ताचल भानु गया, लंका मे लंकेश
दासी जन को कर गया, चलते यह उपदेश ॥

—०॥०—

सीता को परिसह

सुनो सभी तुम दासियो, जरा लगा कर कान।
यदि समझाई तुम ने सिया, पावो की सम्मान ॥

अयि त्रिजटा सब में चतुर, अनुभवी तर्क अवतार है तू।
यह काम अवश्य करना होगा, क्योंकि सबकी सरदार है तू ॥
जैसे भी हो सके सिया को, अपने पंजो मे लावो।
नरमाई या गरमाई से भय, महाभयानक दिखलावो ॥
सब यन्त्र मन्त्र टूणे टवे, सिद्ध मन्त्र कोई चलाओ तुम।
मैं आज्ञा तुम को देता हूं, सीता को खूब सतावो तुम ॥

इस काम में आप सफल होंगी तो, मन चिन्तन धन पावोगी ।
और दासीपन भी करूं दूर, स्वतन्त्र आनन्द उड़ावोगी ॥

दोहा

समझा कर सब बात यह, पहुंचा महल मंझार ।
दासी भी करने लगी, अब अपना उपचार ॥

कोई नम्र मोम की तरह बनी, कोई तेजी लगी दिखाने को ।
कोई लगी भूतनी सी नचने, कोई मन्त्र लगी चलाने को ॥
कोई दाँत फाड़ अट अट हँसती, लगी कोई उपहास उड़ाने को
यन्त्र मंत्र मे लगी कोई, और कोई विषय जगाने को ॥

दोहा

मूल मन्त्र सत्यशीलता, जिस पर हो हथियार ।
उस पर कुछ चलता नहीं, करलो यत्न हजार ॥

अज्ञानी कायर भर्मी भय, इनका अधिक मानते हैं ।
वह दुनिया से नहीं भय खाते, जो जिनवाणी को जानते हैं ॥
कर पांच पदों मे ध्यान सिया, निज कर्मों को धिकारती है ।
श्री राम के प्रेम की लहर उठे. तब मस्तक पर कर मारती है ॥

दोहा

जनक सुता को इस समय, दुःख मेरु आकार ॥
कर्मों का यूं कर रही, सीता निजी विचार ॥

गाना (सीता)

सभी जन फेरलें आखे कि, जब तकदीर फिरती है ।
न धीरज धर्म ही होता यह, जब वेपीर फिरती है ॥१॥
घृणा हो विश्व भर को, मृत्यु भी तो दूर रहती है ॥
खबर ना काल के सिर पर भी, क्या शमशीर फिरती है ॥२॥

कोई कहता हमे कि, तुम हमारे संग मे चल दो।
किन्तु हृदय हमारे, बात ये ज्यो तीर चुभती है ॥४॥
कर्म बेशक सताते हैं, मगर सन्तोष है इतना।
यह चेतन आत्मा मेरी प्रबल मशहूर फिरती है ॥४॥
कर्म मैने किये पैदा, इन्हें अब तोड़ना भी है।
'शुक्ल' सीता कर्म का, करती चकनाचूर फिरती ॥५॥

दोहा

सीता के सन्नाम की सुनी विभीषण बात।
सत्यवादी पहुंचा वहीं, होते ही प्रभात ॥
था ज्ञान विभीषण को सभी, है यह सीता नार।
फिर भी यूं कहने लगा, वचन अति सुखकार ॥
कहो बहिन तुम कौन हो, कैसा आर्त ध्यान।
कौन यहां लाया तुम्हे, करो सभी व्याख्यान ॥

किस की हो कुलवधू और, किसकी तुम राज दुलारी हो।
और अतुल कष्ट क्या पड़ा आप पर, कौन भूप की नारी हो ॥
तुम साफ साफ कह दो सब ही, इसमे क्या बात शर्म की है।
कुछ बनूं सहायक मै तेरा, तू मेरी बहिन धर्म की है ॥

दोहा

अमृत झरते जब सुने, सत्य पुरुष के वैन।
जो भी कुछ बीतक हुआ, लगी इस तरह कहन ॥
क्या कहदूं मै कौन हूं, क्या बतलाऊं हाल।
कौन सहायक यहां मेरा, जो काटे दुःखजाल ॥

क्या बतलाऊं अपना भाई, तुमको मै कौन कहां की हूं।
जब थी तब तो मै थी किन्तु, अब यहां की हूं न वहां की हूं ॥

परिवर्त्तनशील संसार सभी, सर्वज्ञ देव फरमाया है।
जो भी कुछ पूर्व कर्म किया, मैंने उसका फल पाया है॥
मै जनक भूप की पुत्री हूं, भामण्डल मेरा भाई है।
दशरथ नृप की कुलवधू, नाम सिया मात विदेहा माई है॥
लक्ष्मण जी देवर मेरे, श्री रामचन्द्र को व्याही हूं।
वनवास मे साथ रघुपति की, मैं सेवा करने आई हूं॥

दोहा

दण्डकारण्य के गिरी मे निश्चल ठहरे आन।
आगे भी सुन लो जरा, इधर लगा कर कान॥

जहां करते करते भ्रमण दूर, जा निकले लक्ष्मण उस बन मे।
थी वंश वृन्द मे लटक रही, तलवार देख हुए खुश मन में॥
वट वृक्ष गहन द्रुम छाया थी, जहां नजर नहीं कुछ आया था
परीक्षा कारण वशजा में, खड्ग अनुज ने वहाया था॥

दोहा

विद्या था वहां साधता, शूर्पणखा का लाल।
सिर नीचे था लटकता, पांव वंधे थे वट डाल॥

वहां वंश जाल के सहित कटा, शम्बुक का सिर पड़ा नजर।
खेद किया लक्ष्मण जी ने, निर्दोष मरा कोई राजकुंवर॥
जो वीता वहां लक्ष्मण जी ने श्री राम को आकर वतलाया।
जव सुना हाल करुणा सागर को, लक्ष्मण पर गुस्सा आया॥

दोहा

रवुदिनेश कुल मुकुट ने, दी लक्ष्मण को फटकार।
खेद प्रकट करते हुए, वोले कर्मावतार॥

विना विचारे किया काम, तुमने अति ही नादानी का।
निरपराधी विद्या सावक, का शीश उतारा प्राणी का॥

खेद प्रकट किया श्री राम ने, और कहो क्या करना था ।
कारण बन गये श्री लक्ष्मण जी मरने वाले ने मरना था ॥

दोहा

ऐसी बाते कर रहे, थे वह दोनों वीर ।
शूर्पणखा आई इधर, वंशजाल के तीर ॥

यह तो मुझको भी ज्ञान नहीं, क्या किया वहां पर जा करके ।
पर देख अनुज के चरण चिन्ह, गई पास हमारे आकर के ॥
वह रूप देख श्री राम का वश, मोह काम राग मे लीन हुई ।
सब प्रेम भूल गई पुत्र का, जब बुद्धि महा मलीन हुई ॥

दोहा

जो भी कुछ उसने कहा, मन घड़ सभी असत्य ।
सुनते ही श्री राम जी, समझे जो था तथ्य ॥
बोली विद्याधर कोई, ले गया मुझे चुराय ।
देख रूप मोहित हुआ, और दूसरा आय ॥

दोनों विद्याधर मरे परस्पर, इसी रूप पै लड़ करके ।
अतिरिक्त मेरे संसार में, और नहीं कोई भी बढ़ करके ॥
फिर करी प्रार्थना विवाह करन की, राम लखन को चाह करके ।
स्वीकार किया नहीं दोनों ने, फटकार दई धमका करके ॥

दोहा

पूरी ना उसकी हुई, मन की चाही आश ।
गुस्से मे भर कर गई, खरदूषण के पास ॥

खरदूषण त्रिशिरा आदिक, दल बल ले बन मे आये थे ।
इस तरफ़ अनुज भी धनुष बाण, ले कर मे सम्मुख धाये थे ॥

गुरुजन मे भक्ति ना हो, बद श्रेष्ठों की पहिचान नहीं।
चोरी यारी जहाँ करते हों, पर नारी मात समान नहीं॥
विश्वास न जिनको आपस मे, सन्तोष कान मर्यादा नहीं।
भूपाल स्वयं अन्याय करे, होता सब कुछ बर्बाद वहीं॥

दोहा

प्रत्यक्ष आज यह लक मे, घटती सारी बात।
आने वाली है यहाँ, महा दुखों की रात॥

मै नारी नहीं नागिनी हूँ, रावण की मौत निशानी हूँ।
या यों कहिये दुष्कर्त्तव्यों के पीलन वाली घानी हूँ॥
जैसे भी होगा वैसे मैं, अपना धर्म बचाऊंगी।
नहीं अन्तिम यह तो होगा ही, इस तन की बलि चढ़ाऊंगी॥
यहाँ तुमने तो कुछ पूछा भी, और कौन पूछने वाला है।
अब निश्चय मुझको हुआ, लक से पुण्य रूसने वाला है॥
पूछा तो हमने बतलाया, और श्रेष्ठ पुरुष जाना तुमको।
इक धर्म सहायक है सबका, यह भी विश्वास हुआ मुझको॥

दोहा

वीर विभीषण ने सुना, सीता का व्याख्यान।
मीठे स्वर से इस तरह, बोला खोल जबान॥

गाना

कर्म रेखा है अमिटे, कैसे मिटाये कोई।
भाग्य चक्र से कहाँ, भाग के जाये कोई॥१॥
सर्वस्व लगा जिसके लिये गौरव से लाये घर में।
आज उस घर मे उसे कैसे टिकाये कोई॥२॥

फिर कहा राम ने कष्ट पड़े तो, भाई मुझे बुला लेना।
संकेत शब्द सिंहनाद मेरे, कानों तक जरा पहुँचा देना॥

दोहा

शूर्पणखा ने बात सब, कही रावण को आन।
जाल बिछाया इन्होंने, लिया सभी अब जान॥

संग्राम ओर छिप करके कहीं, रावण ने था सिंहनाद दिया।
उसी समय चल दिये लखन को, करन सहाई राम पिया॥
इस दुष्ट दुराचारी ने फिर, खेला शिकार मुझ अबला का।
कुदरत ही सर्वस्व हर लेगी, ऐसे दुर्भागी कंगला का॥

दोहा

धर्म बिना यहाँ कौन है, मेरा लंका मांय।
बात न कोई पूछता, जो देता दुख आय॥

जिस जगह दुखी को दुख मिलता, वह देश दुखी हो जाता है।
करुणा दिल में न रहे तो, प्राणी जन्म जन्म दुख पाता है॥
ईर्ष्या रूपी जहाँ पवन चले, और द्वेषानल जहाँ जगती है।
वहाँ की प्रजाए सुख तो क्या, खाने से भी कर मलती है॥
समवेदना सत्य एकता और, जहाँ प्रेम का नाम निशान नहीं।
सद्ज्ञान धर्म प्रचार लिये, जहाँ करते हो कुछ दान नहीं॥
जो काम समाज का करते हों, उनकी इज्जत चाहते न हों।
वह नष्ट भ्रष्ट हो जाते जो, औरों को अपनाते ना हों॥
जो स्वार्थ में होकर अन्धे, अन्याय रात दिन करते हैं।
वह स्याही अपने मुख पर, मलकर अंत नरक दुख भरते हैं॥
कहने करने में है फरेब, लेना देना सब खोटा है।
वहाँ पर कहिए सुख प्रेम कहाँ, जहाँ पेट भरन में टोटा है॥

अब थोडा कष्ट रहा बाकी, अपने मन का सन्ताप हरो।
सर्वज्ञ देव का लो शरणा, और पांच पदों का जाप करो॥
पहरे पर जो हैं तेरे यहां, उन सबको समझा जाता हूं।
कोई ना कष्ट तुम्हे देगा, सुमति पर उन्हे लगाता हूं॥

छन्द

विश्वास दे वहां से चला, दासी खड़ी सिर नाय के।
प्रेम से सबको विभीषण ने, कहा समझाय के॥

दोहा

त्रिजटा आदि सभी, छोटी बड़ी विशेष।
आगे करना काम वह, जैसा दूं उपदेश॥

तुम भी सोचो अपने मन मे, प्रथम तो यह परनारी है।
फिर सती धर्म के लिये महा, ऋद्धि पर ठोकर मारी है॥
यदि आज नहीं तो काल यहा. पर झगड़ा होने वाला है।
जो सीता को दु:ख देवेगा, उसका होना मुंह काला है॥
कर्त्तव्य सभी का मुख्य यही, दुखिया को सुख देना चाहिये।
फिर देखो कैसी सती हमे, यह भी तो गुण लेना चाहिये॥
बस यही हमारा कहना है, तुम लगों सिया की सेवा में।
अज्ञान दूर कर दोगी तो, बस हाथ रहेगा मेवा में॥
दशकन्धर की आज्ञा को भी, निश्चय पालन करना चाहिये।
पर योग्य अयोग्य कार्य का तो, ध्यान सदा धरना चाहिये॥
नीति की रक्षा करने मे, प्राणों तक दे देना चाहिये।
अन्याय अधर्म कार्य में, कोई भाग नहीं लेना चाहिये॥
महाराजों की यही औषधि है, बस हॉ जी हॉ जी कर देना।
और समय देख इन लोगों का, कुछ बातों से घर भर देना॥

शय्या फूलों की थी कल, सुख के साधन थे अतुल।
आज बन खण्ड तड़फ, वक्त बिताये कोई ॥३॥
जो जगदम्बा कहलाती थी कल, आज वह दुख मे फंसी।
धैर्य बंधाने के लिये, पास न आवे कोई ॥४॥
पुण्य अपकर्ष में "शुक्ल" आँख चुरावे सब ही।
कर्म का मारा व्यथा, किसको सुनाये कोई ॥५॥

दोहा

बुरा किया दशकन्धर ने, लाया तुम्हे चुराय।
अच्छा मैं जाकर अभी, देऊंगा समझाय॥
धन्य तेरे मा बाप को, धन्य तुम्हे सौ बार।
होना भी यह चाहिये, धर्म तत्व जग सार॥

जो यथातथ्य पतिव्रत धर्म, तूने क्षत्राणी पाला है।
शील रत्न जैसा दुनियाँ मे, और ना कोई उजाला है॥
पति के हित राजमहल छोड़ा, वन मे आ कष्ट सहे भारी।
तीन खण्ड की ऋद्धि पर भी, तूने है ठोकर मारी॥
प्रवल सिंह के पंजे में, फंस करके भी निर्भय रहना।
विना पता पति से विरह हुआ, और आपत्ति सिर पर सहना॥
यहाँ दुख समूह में पड़कर भी, तुमने समता रस पिया है।
पूरण होंगी सब आशाएं, जो भी दृढ़ निश्चय किया है॥
हे जनक सुता अब धीर धरो, क्यों इतनी व्याकुल होती हो।
हृदय से सहायक वनूं तेरा, अब क्यों अपना तन खोती हो॥
सब अर्पण करे धर्म पै, जिसके दिल मे यही समाई है।
फिर उसको कौन असाध्य चीज, इस दुनिया मे वतलाई है॥
महा कष्ट सदा शुभ ज्ञान दर्श, चारित्री पर ही पड़ते हैं।
वह प्राण तलक अर्पण करते, पर दुनिया से नहीं डरते हैं॥

आज तलक यह वंश हमारा, भाई शुद्ध कहाता है।
कुछ दाग लगाया भगिनी ने, तू बट्टा आज लगाता है॥

हो तीन खण्ड के नाथ आप, कोई भी तेरे समान नहीं।
यह गौरव नष्ट-भ्रष्ट हो रहा, क्या इस पर आया ध्यान नहीं॥

क्यों क्षत्रापन को धूर मिलाया, सीता नार चुरा करके।
शुभ धर्म वृक्ष की जड़ काटी, यह खोटा कर्म कमा करके॥

सुख सम्पत्ति रूपी वृक्ष लिये, पैनी परनार कुल्हाड़ी है।
यह नारी नहीं नागिनी या, समझें विष बुझी कटारी है॥

जो भी कुछ तेरी इच्छा है, वह कभी नहीं फल लावेगी।
गौरव राज्य कोष शक्ति क्या, सब कुछ धूल बनावेगी॥

वह महा पवित्र महिला है, नहीं हवा तलक आने देगी।
न्यौछावर कर देगी तन को, नहीं गौरव को जाने देगी॥

दोहा

भानु पश्चिम को चढ़े, भूले अपनी राह।
सीता तजे ना शील को, देवे प्राण गॅवाय॥

काछी माछी की नहीं पुत्री, वह जनक सुता क्षत्राणी है।
कुलवधू श्रेष्ठ दशरथ नृप की, श्री रामचन्द्र की नारी है॥

पाताल लंक को छीन लिया, खरदूषण और दल को मारा।
हैं महाबली श्री राम लखन, संग वीर विराध योद्धा भारा॥

वह किष्किन्धा में आ पहुंचे, यहां आने में कुछ देर नहीं।
प्रभात हुई तो भानु चढ़ने में, विलम्ब कुछ फेर नहीं॥
जिसकी नारी यहां बैठी है, उनको बतलाइये चैन कहाॅ।
सूर्य वंशी कहलाते हैं, ऐसे अपमान का सहन कहाँ॥

अब जावो निज निज काम लगो, बस यही हमारा कहना है।
परभव संग शोभन धर्म चले, बाकी सब यहां पर रहना है॥

दोहा

बात विभीषण की सभी, हृदय गई समाय।
अमल वही होने लगा, कुमति दई भगाय॥
क्षमा याचने को गई, सब ही सीता पास।
जनक सुता निज कर्म को, बोली ऐसे भाष॥

(सीताजी का गाना)

जा जा निर्दयी कर्म अबलाओं पै, बल आजमाया न कर।
जन्म से दुखियां सदा, उन पै बाण चलाया न कर॥
दु:ख शोक के बादल बरस रहे, हम आजादी को तरस रहे।
किसी अन्य का दोष नहीं है कर्म, दुखियों को और दुखाया न कर।
बदनसीबों के हम चक्र में फँसी, दुर्गम निर्जन बन में धँसी॥
निर्दोष दुखियों को निठुर, तेग की धार दिखाया न कर॥
अब ये और बुरे दिन आये हैं, श्रीराम ने आहे भुलाये है।
आहार है रंजो गम ही सदा, जी जलों को अधिक जलाया न कर॥
सुख वृक्ष का देखा मूल नहीं, लखा स्वप्नमात्र फल फूल नहीं।
बस क्षमा ही कर अय कर्म अरी, विकराल स्वरूप दिखाया न कर॥

विभीषण की शिक्षा

दोहा

वीर विभीषण चल दिया, पहुचा लंका जाय।
रावण को कहने लगा, ऐसे मस्तक नाय॥
कीर्ति धवल कुल मणि मुकुट अय भाई रणधीर।
नम्र निवेदन आपसे, करने आया वीर॥

दोहा

रत्न मिला चिंतामणि, पुण्ययोग से आन।
इसे छोड़ कर क्या कहो, बन जाऊं अनजान ॥

आज नहीं तो कल सिया, अपने मन को समझावेगी।
क्या शक्ति होती अबला की, कब तक निज पॉव जमावेगी।
जो वहम तुम्हारा झगडे का, सो भी निर्मूल निकम्मा है ॥
सब तीन खण्ड की ला रक्खी, इस रावण ने परिकम्मा है ॥

दोहा

आज नही संसार मे, दिखलावे दो हाथ।
दशकन्धर के नाम से, थरथर कांपे गात ॥

मैं बड़े-बडे दल मोडे क्या वह, रंक यहॉ कर सकते हैं।
हॉ इतनी उन्हे स्वतन्त्रता यहॉ, आकर के मर सकते हैं ॥
ना सेना कोई विमान पास, ना दारू गोला शस्त्र है।
अस्त्रों का तो वहॉ नाम कहॉ, मामूली धनवा वस्त्र है ॥
फिर क्या शक्ति सुग्रीव की है, जो उनके सग मिल जायेगा।
यदि मिल भी गया तो भी क्या है, वह भी निज प्राण गवांवेगा
जो रण की चोटे सहे शूरमे, वही जागीरी पावेंगे।।
यदि तुझ जैसे कायर जीये, तो भी क्या धूल उड़ायेगे।
अब याद रहे ऐसी बाते, मेरे सग फेर नहीं करना ॥
जो होगा देखा जावेगा, तू हृदय फिकर नहीं धरना ॥
यह जानकी जानकी साथिन है इसमे ना फरक जरा होगा।
जायेगी जनक सुता तब जब, रावण का नाम मरा होगा ॥

दोहा (विभीषण)

मैंने कर्त्तव्य पालन किया आगे तेरा ध्यान।
कहते हैं अनुमान सब आ पहुंचा अवसान ॥

दोहा

अच्छा है कुव्यसन के सिर पर डारो धूर।
यही विनती आपके, चरण कमल में भूर॥

इस एक नार के पीछे क्यों, शत्रु की शक्ति बढ़ा रहे।
सुग्रीव भी उनके साथ मिला, क्यों अपनी ताकत घटा रहे॥
अन्तिम यह नम्र निवेदन है, कि सीता को वापस कर दो।
यदि आप नहीं जाते तो यह, सब भार मेरे सिर पर धर दो।

दोहा

सहसा तेजी आ गई, सुन कर यह व्याख्यान।
दशकन्धर कहने लगा, मस्तक त्यौरी तान॥
बस बस बस अब मौन हो, करो जरा आराम।
जनक सुता वापिस करो, फेर न लेना नाम॥

जितना समय लिया मेरा सब तूने निष्फल खोया है।
किन बातों में यह बात कही, जो कहा सभी कुछ रोया है॥
क्या अच्छा होता कहीं शूद्र. वैश्य के यहां जन्म लेता।
कोई देता कष्ट तुझे तो मेरी, आन के यहां शरण गहता॥

दोहा

क्षत्राणी का दूध भी, खोया सब नादान।
शृगालों से डरने लगा, होकर सिंह महान्॥

प्रथम तो यह बात ग्रही, वस्तु नहीं छोड़ा करते हैं।
तन धन चाहे न्यौछावर हो, नहीं बात को मोडा करते हैं।
और छल माया प्रपंच सभी, होती नीति महाराजा की।
फिर बात तीसरी जो अच्छी, वस्तु होती सिरताजों की॥

दोहा

दशकन्धर फौरन उठा, हुआ चलने को तैयार ।
रोक विभीषण ने लिया, लम्बी भुजा पसार ॥

रंग ढंग सब देख कर, हुआ मुझे विश्वास ।
होनी ने अब लंका पर, किया आन कर वास ॥

जो मर्जी सो करे आप, शिक्षाप्रद वचन हमारा है ।
मर्जी रखे भेजे सीता को, जैसा ख्याल तुम्हारा है ॥
मन में सोच विचार करो, अन्तिम यह नम्र निवेदन है ।
अब चलते हैं इस लिये कहा, कि आपस में संवेदन है ॥

दोहा

सत्य पुरुष वहाँ से चला, पहुँचा निज स्थान ।
रावण ने त्रिजटा को, कहा इस तरह आन ॥
सीता को अय त्रिजटा, करवाओ नित सैर ।
प्रकृति के सन्मुख लगें, धर्म कर्म सब जहर ॥

सब केलि गृहे क्या अन्तरोदक, वह रत्नो के घर दिखलाओ ।
जिस तरह सिया का दिल पलटे, वह दृश्य महाशर दिखलाओ ॥
आदर्श जहां आकर्षण हों, ऐसे धामो पर ले जाओ ।
मरना है सबको एक रोज, बुद्धि का परिचय दे जाओ ॥

दोहा

स्वीकार वचन करके चली, पहुँची सीता पास ।
जनक सुता के सामने, किया प्रेम से भाष ॥
जनक सुता तेरा हुआ, अद्भुत कृश शरीर ।
दिल मे दु.ख मेरे बढ़े, देख तुम्हारी पीर ॥

विभीषण का गाना

समझले अब भी नहीं, सिर धुन के पछतायेगा तू।
श्रेष्ठा चारित्र को सता कर, नरक मे जायेगा तू ॥१॥
स्वल्प आयु के लिये बदनाम क्यों होने लगा।
मनुष्य तन खोकर कुगति में, ठोकरे खायेगा तू ॥२॥
धूल में गौरव मिलाता, आज खोटे कर्म से।
संसार सागर का सदा, महमान कहलायेगा तू ॥३॥
चक्री तीर्थंकर व गणधर, काल ने खाये सभी।
राज लक्ष्मी छोड़ लका, यमपुरी पायेगा तू ॥४॥
जैसी करनी वैसी भरनी, दृष्टान्त यह प्रसिद्ध है।
जैसा बोया बीज तूने, वैसा फल पायेगा तू ॥५॥
हैं तेरे यदि कर्म खोटे, तो "शुक्ल" फिर क्या करे।
इस कर्म खोटे का फल, ये शीश कटवायेगा तू ॥६॥

दोहा (रावण)

क्यों मेरा शत्रु बना, भाई होकर ढीठ।
मैं तेरी सुनता नहीं, दिखा यहाँ से पीठ ॥

दिखा यहाँ से पीठ जल्द, क्यों मुझको सता रहा है।
बना नपुंसक आप, पाठ हमको वही पढ़ा रहा है॥
मिला-मिला करके समास, विद्वत्ता जता रहा है।
एक नहीं मानूं तेरी, क्यों बातें बना रहा है॥

दौड़

क्षमा मुझको बतलाइये, आप बस चले जाइये।
नहीं सुनना चाहता हूं, यदि नहीं तुम जाते तो मैं
आप चला जाता हूं।

उच्च भाव लख सती के, त्रिजटा हुई हैरान।
अपने दुष्कर्तव्य पर, आंसू लगी बहान॥

चरणों मे मस्तक डाल दिया, रो रो कर क्षमा मांगती है।
शुभ कर्मोदय से प्राणी की, यो शोभन दशा जागती है॥
स्पर्श लोहे का हेम करे, पर निज दर्जा नहीं देता है।
पर महापुरुष महा पतितों को, भी अपने सम कर लेता है॥
बोली दुनिया में यही एक, परतन्त्रता बीमारी है।
इस रहस्य को जिसने समझ लिया, निर्वाण का वह अधिकारी है॥
इस लंका में हे जनक सुता, तू मुझको तारन आई है।
सर्वस्व समर्पण सेवा मे, करदूं मन यही समाई है॥
अब तो रावण का बातों से, मुझको घर भरना होगा।
अन्याय में जो कोई लीन होवे, तो अन्तिम सिर धुनना होगा॥
व्यवहार मे दासी रावण की, निश्चय में आपकी बन ही चुकी।
अय जनक सुता क्या बतलाऊं, बस आपके प्रेम में सन ही चुकी॥

दोहा

नमस्कार कर त्रिजटा, पहुंची रावण पास।
पटुताई से भाव फिर, लगी करन प्रकाश॥
तडित केशकुल मणि मुकुट, दुखी जन के सिरताज।
हुक्म आपका सब तरह, बजा दिया महराज॥

किन्तु अभी तो इन फूलों में, महक का नामो निशान नहीं।
यदि ज्यादह तङ्ग किया सीता को, आपकी इसमे शान नहीं॥
नाम सैर का सुनते ही, प्राणों को तजना चाहती है।
जिस दिन से लाये उस दिन से, ना पीती ना कुछ खाती है॥
मेरी तो अर्ज यही चरणों मे, अभी ना कुछ कहना चाहिये।
जो भी कुछ बोले जनक सुता. शांति से सब सहना चाहिये॥

इसलिये चलो कुछ सैर कराऊं, स्वास्थ्य ठीक हो जावेगा।
जलवायु के परिवर्त्तन से, कुछ खून भी दौरा पायेगा॥
ऐसे नित प्रति करने कारण. दुबलापन नहीं रहने का।
मन की प्रसन्नता होने से, नेत्रों से जल नहीं बहने का॥

दोहा

प्रात: और सायं समय, रहो नित्य तैयार।
देखो क्या क्या दृश्य है, लंका द्वीप मंझार॥

कहीं केलि गृहे कहीं अन्तरोदक, भवनों में हीरे जड़े हुए।
नन्दन बन सम जैसा अद्भुत, फल फूल श्री से भरे हुए॥
कहीं जल झरनों से गिरता है, और हँसों का कुछ पार नहीं।
कोयल पंचम स्वर बोल रही, मृगों की फिरे कतार कहीं॥
चहुं ओर से है शोभाशाली, शुभ दृश्य बाग का बना हुआ।
सब ऋतुओं के फल-फूल खिले, हैं जाल सामने तना हुआ॥
खेल खेलकर कहीं बालक जन, दिल अपना बहलाते हैं।
अमित शक्ति सौन्दय पाकर, सुखप्रद स्वास्थ्य बढ़ाते हैं॥
कोई घूम रहा एकान्त बैठ, कोई विद्या अध्ययन मे लगा हुआ।
और अपना श्वास पकाने को, कोई फिरे बाग में भगा हुआ॥
देख देख जनता इनको, मन फूली नहीं समाती है।
पर वैदेही श्रीराम बिना, कुछ भी नहीं सुनना चाहती है॥
क्या सारा वृतान्त कहें, दासी समझा कर हार गई।
और अपनी सब चालाकी के, औजार वहाँ पर डार गई॥

दोहा

हँस सरोवर ना तजे, तजे न मणि भुजंग।
सती तजे ना शील को, तज देवे निज अंग॥

विभाषण मन्त्री विचार

दोहा

वीर विभीषण ने लिया, मन्त्री बड़ा बुलाय ।
सत्यवादी अति प्रेम से, यूं बोला समझाय ॥
अय मन्त्री क्या अभी, तलक रही घुमेरी छाय ।
होनी ने चहुं ओर से, लंका घेरी आय ॥

पुण्य रवि लंका का मन्त्री, जल्दी छिपने वाला है ।
सुख रूप चन्द्रमा को देखो, अब राहु ग्रसने वाला है ॥
आलस निद्रा दूर करो, और सोचो अपनी हस्ति को ।
अब गौरव दबने वाला है, रोको इस हेम बरसती को ॥

दोहा

पतिव्रता सीता सती, रामचन्द्र की नार ।
ज्ञात सभी कुछ है, तुम्हें फिर क्या कहूं उचार ॥

क्या सोचा बतलाओ तुमने, क्योंकि मन्त्रीश कहाते है ।
सब भार तुम्हारे सिर पर ये, किस बात मे गौरव चाहते है ॥
क्या कर्त्तव्य आपका है, और किसकी जुम्मेवारी है ।
फिर क्या फल निकलेगा इसका, इस समय जो कर्त्तव्य जारी है ॥

दोहा

पाताल लंक श्रीराम ने, अपनी लई बनाय ।
वीर विराध सुग्रीव भी, बन गये सेवक जाय ॥

प्रत्यक्ष आज सुग्रीव नरेश्वर, पक्ष राम का करता है ।
और पवन पुत्र श्री हनुमान, उनके चरणों में पड़ता है ॥
और बाकी सब जितने राजे, रावण पर दाँत पीसते हैं ।
मति भंग हुई दशकन्धर की, वो अपनी तान खींचते हैं ॥

रहस्य समझ कर रावण ने, कुछ समय के लिये मन मोड़ लिया।
यहां मूल मन्त्र में जगदम्बा ने, अपने मन को जोड़ लिया ॥
रावण निज आवास गया, था शोक धुनी में जला हुआ।
और इधर विभीषण भाई भी, अपने विचार मे लगा हुआ ॥

दोहा

अय होनी तूने किया, कैसा समय तलाश।
चढ़े हुये इस पुण्य पर, सहसा किया निवास।

छन्द

क्या था क्या होने लगा, क्या दैव उठाया धनुष है।
इससे बचा संसार मे कहो, कौनसा वह मनुष्य है ॥

घात परदारा के कारण, होवे ज्ञानी ने कहा।
रावण के मरने का वही, तैयार नक्शा हो रहा ॥
मैंने तो अपनी ओर से थे, बीज छेदन कर दिये।
होनी हमारी ने वही विष, वृक्ष सन्मुख धर दिये ॥
जिनका सहायक पुण्य और, आयु कर्म का जोर है।
कापे उन्हों से सुरपति, मारे मनुष्य किस तौर है ॥
इस तरफ यह अन्धा हुआ, और बात कुछ सुनता नहीं।
तैयार है उस तरफ भी, शत्रु न आ जावे कहीं ॥
पानी से पहले पाल बांधो, ये बड़ों का कहन है,
उद्यम ही सबका सार है, बाकी सभी कुछ वहम है।
शुरू अब कर्त्तव्य मम, मन्त्रीश को बुलवाय लूं,
सारे सभासद् मेलकर, प्रबन्ध सब करवाय लूं।



खरदूषण का सहस्रांशु से, हनुमान ने बन्ध कटाया था।
और नाग फांस से अजनी सुत ने, रावण को छुटवाया था॥
प्रत्यक्ष सभी यह दीख रहा कि, दोनों शक्ति टूटेगी।
और विरुद्ध हमारे हो करके, लंका के ऊपर ऊठेगी॥

दोहा

सबसे श्रेष्ठ उपाय यह, सीता को दे भेज।
नहीं तो कुछ संशय नहीं, बने रक्त की सेज॥

सभासदों को बुला अभी से, नियत शीघ्र कुछ कर लेवे।
या करवा दे सीता वापिस, या चुस्त सभी को कर देवे॥
हैं सूर्यवंशी राम लखन, सर्वस्व तलक लाने वाले।
हैं दलबल सबल विमान सहित, समझो यहा पर आने वाले॥

दोहा

बात बड़े मन्त्रीश की, हृदय मे गई समाय।
सभासदों को बुलायकर, करने लगे उपाय॥

अन्त में सबने नियत किया, कि इन्तजाम सारा करदो।
और भरती खोलो सेना की, उल्टी सतोयें सीधी करदो॥
सन्धि के सब मार्ग रोको, कुछ भेजो फौज समुद्र पर।
सारे उद्यमशील बनो, भय मार्ग और सरहद्दी पर॥
अब लंकापुरी पर आशाली का, कोट शीघ्र करना चाहिये।
और वज्रमुखा पहिरे पर हो, दारू गोला धरना चाहिये॥
गुप्तचरों को फैलादो कोई, अन्य न अन्दर आ जावे।
है भेदी कपि पति छलिया कोई, भेद न यहां से ले जावे॥
फिर सीता को वापिस करने की, करो विनती राजा से।
कितनी शक्ति शत्रु की है, यह भी देखो अन्दाजा से॥

दोहा

कमी नहीं मैंने करी समझाने में आज।
रावण को सीता विना, और नहीं कुछ काज॥

इसलिये बुलाया मैंने यहाँ, सम्मति आपकी लेने को।
और दशकन्धर का कहूँ हाल, क्या मन नहीं चाहता कहने को।
तुम बुद्धिमान और श्याने हो, नीतिज्ञ चतुर मर्दाने हो।
अब बतलावो क्या करना है, क्योंकि तुम अनुभवी दाने हो॥

दोहा

जो कुछ भाषा आपने, सभी यथार्थ ठीक।
सीता रावण के लिये, है कांजी की छींट॥

वह एक दूध का नाश करे, पर यह सर्वस्व हरायेगी।
वो जरने में कुछ वने सहायक, सीता दिक हो जायेगी॥
यदि महाराजा से करें निवेदन, इतना हममें साहस कहाँ।
पर हृदय से मै चाहता हूँ, यह व्याधि भेजी जाय वहाँ॥

दोहा

जिस दिन से लाये सिया, खुशी ना देखे भूप।
क्रोध हर समय जिस तरह, वना इस तरह रूप॥

अव लिये वीर दशकन्धर के, यह नारी नहीं नागिनी है।
या यों कहिये महाराजा को, चिपटी यह एक शाकिनी है॥
और व्यन्तरनी का साया भी, मन्त्रादिक से जा सकता है।
जो मोह नशे मे चूर हुआ, शिक्षा कैसे पा सकता है॥
हां युद्धस्थल में शूर वीर, निश्चय महाराज कहाते हैं।
जो पड़े विलासिता मे वह प्राणी, शीघ्र नष्ट हो जाते हैं॥
सुग्रीव पवन क्या हनुमान, इनके चरणो में पडते थे।
जहा पर भी जंग जुड़ा पहिले, अपना सिर आगे करते थे॥

दोहा

और यदि देरी हुई, सिया तजेगी प्राण ।
निष्फल सब प्रयत्न हो, करो जरा कुछ ध्यान ॥
सुने वचन श्री राम के, हृदय गये समाय ।
जल्द उठे कर धनुष ले, बोले मस्तक नाय ॥
गर्माई की हाकिमी, नर्मी का व्यापार ।
इससे जो उल्टा चले, पड़े किस तरह पार ॥

इस समय हमारी नरमाई, गौरव का नाश करायेगी ।
जा रहे भरोसे औरों के, तो सीता हमें ना पायेगी ॥
बस आज्ञा आपकी चाहता था, देखो क्या कर दिखलाता हूँ ।
तलवार के आगे धर सबको, सीता का पता लगाता हूँ ॥

दोहा

उसी समय लक्ष्मण चले, तुर्त निवाकर माथ ।
रक्त नयन डोरे खिंचे, धनुषबाण लिया हाथ ॥

सूर्यहांस तलवार बगल में, लक्ष्मण के शोभाती है ।
प्रबल सिंह के मस्तक पर, लाली की दमक दिखाती है ॥
शूरवीर सहसा पहुँचा, वहाँ मुख्य सभा थी लगी हुई ।
और नेत्रों की ज्योति भी थी, मानिन्द मशाल के जगी हुई ॥

दोहा

काल रूप लक्ष्मण पडा, नजर सामने जाय ।
वानरपति कंपित हुआ, गिरा चरण मे आय ॥
सबके सब हो गये खड़े, और दिल अन्दर से धड़क रहा ।
गुस्से में चेहरा लाल अनुज का, दक्षिण भुजबल फड़क रहा ॥

जब तक ना रण प्रारम्भ हुआ, तब तक झगड़ा मिट सकता है
मिथिलेश कुमारी लिये बिना, श्री राम नहीं हट सकता है ॥

दोहा

नियत किये प्रस्ताव जो, सबको दिये सुनाय।
अब निज निज कर्त्तव्य पर, लगे सभी जन जाय ॥

अब लगा सभी दारू गोला, सामान इकट्ठा होने को।
और मुख्य मुख्य स्थानों पर, सब योग्य सामग्री ढोने को ॥
क्या हाथी घोड़े विकट गाड़ियां, संग्रामी रथों का पार नहीं।
हैं संग्रामी विमान गगन में, चहुँ ओर विस्तार कहीं ॥

दोहा

तैयारी होने लगी, लंका मे इस तौर।
अब सब ध्यान करो जरा, किष्किंधा की ओर ॥
पल पल छिन छिन राम को, बीते वर्ष समान।
सुग्रीव लगा निज काम में, कर्त्तव्य भूल महान् ॥
राम अति व्याकुल हुए, आर्तवन्त उदास।
लक्ष्मण को कहने लगे, बैठाकर निज पास ॥

—७×०—

राम लक्ष्मण विचार

राम—किसकी आशा पर यहां, बैठा लक्ष्मण वीर।
सीता की सुध बिन लिये, अब दिल को नहीं धीर ॥

किसकी आशा पर भाई, हमने यहा डेरा डाला है।
सुग्रीव लगा अपने सुख में, कर्त्तव्य नहीं कुछ पाला है ॥
सुखिया सोवे दुखिया जागे, प्रत्यक्ष आज हम पर बीती।
काम काढ़ चुप हो बैठा, कपि पति ने क्या खेली नीति ॥

तूने वृथा हमारा समय खो दिया, झूठे नैनों से आँसू
बहाता रहा ॥१
मारा वृथा ही सहसगति राम ने, वह बिचारा दुखी
अरडाता रहा ।
तेरी युक्ति मे कोई कसर ना रही, फुलझड़ी जैसी
बाते झड़ाता रहा ॥२॥
अब नहीं तुझको कोई भी चाहना रही,
जो खटकता था काँटा वो जाता रहा ॥२॥
अब तू तोते चश्म बनकर बैठा यहाँ, हमको बातों
का शरबत चटाता रहा ॥३॥
क्यों तू विश्वास देकर लाया यहाँ, बगुला भक्ति से
हमको फंसाता रहा ।
क्या शर्म तुझको अब तक भी आई नहीं,
खाना पीना ही हमको सुनाता रहा ॥४॥
क्या तूने यह समझा कि मेरे बिना, बस पता
इनको सीता का पाता नहीं ।
तुम यहाँ बैठ अपना नशा पीजिये, कृतघ्नों को
लक्ष्मण भी चाहता नहीं ॥५॥

दोहा

सुने वचन जब लखन के, घबराया सुग्रीव ।
गिरा चरण कर जोड़ कर, बोला बन कर दीन ॥
नम्र निवेदन कृपा कर, सुनलें आप जरूर ।
जो मर्जी फिर कीजिये, निकले यदि कसूर ॥

निकले यदि कसूर मेरा तो, शीश अलग कर देना ।
सेवा में हाजिर हुआ नहीं, यह भी कारण सुन लेना ॥

मौन चित्रवत खड़े सभी, मुँह से नहीं बोल निकलता है।
समय देख नरसाई से, कपि पति यों गिरा उचरता है॥

दोहा

सिंहासन पे विराजिये; हे प्रभु दीन दयाल।
सेवक हाजिर चरण में, आप क्यों आये चाल॥

हे नाथ आपके गुण गाऊं, वह जिह्वा नही मेरे मुख मे।
है धन्य पिता और माता को, जिसने तुम धारे हो कुख मे॥
आज्ञा जो सेवक लायक हो, कृपया पहले सो बतलाइये।
स्वामिन कुछ अन्न जल पान करो, पुण्यरूप चरण अन्दर लाइये॥

दोहा (लक्ष्मण)

कहने मे कुछ और है, करने मे कुछ और।
आकृति मे और है, मन में है कुछ और॥

मन मे है कुछ और, सभी यह धूर्तों के लक्षण हैं।
किन्तु निश्चय समझ, अनुज के वाणों के भक्षण हैं॥
काम पड़े पर करे मित्रता, निकले पर दुश्मन है।
कष्ट आपको कौन, यहाँ बैठे आनन्द अमन है॥

दौड़

मित्र वानर हैं किसके, काम काढ़ा और खिसके,
सुखों में भूल रहा।
सहसगति के पास पहुँचा दूंगा, क्या भूल रहा है॥

गाना लक्ष्मण जी का (बहरतबील)

तेरी बातों ने धोखे मे डाला हमें,
अब भी थोथी सफाई जिताता रहा।

ऋण जो आपका है आयु, पर्यन्त नहीं दे सकता हूँ।
हाँ सिया सुधि के बाद आप, दोगे सो ही ले सकता हूँ॥
जब तक सीता ना पायेगी, तब तक मुझको आराम नहीं।
हूं इसी बात में लगा हुआ, कोई और दूसरा काम नहीं॥

दोहा

सुनी बात सुग्रीव की, खुशी हुए सुखकन्द।
मिष्ट वचन से यूं लगे, कहने दशरथ नन्द॥
तू मेरी दक्षिण भुजा, इन्दुमालिनी फरजन्द।
बाईं भुजा मेरी समझ, वीर सुमित्रानन्द॥

तेरा ही यह काम मित्र, सब तूने ही तो करना है।
यदि कहीं पर पड़ा काम, वहां पर तूने ही लड़ना है॥
अन्तिम ताज सुयश का भी तो, तेरे ही सिर धरना है।
कौन फिकर उनको जिनको, श्री जिनवाणी का शरना है॥

दौड़

ध्यान जब स्वयं है तुमको, फिकर फिर कौन है मुझको।
काम जल्दी करना है, सीता हरने वाले के गले पर शस्त्र धरना है॥

दोहा

कृपा आपकी चाहिए, मुझ पर कृपानिधान।
सीता की सुध के लिए, करूं अभी सामान॥

श्री हनुमान को बुलवा लूं. क्योंकि वो बुद्धि वाला है।
वह शूर वीर अनुभवी योग्य, उसका कुछ ढंग निराला है॥
एक एक दो ग्यारह हम और, आपकी सिर पर छाया है।
अरिहन्त देव का शरणा लेकर, बीड़ा आज उठाया है॥

—***—

बिगड़ा जो था काम सभी, सो भी कर मैं था ना।
आप से अधिक ख्याल सीता का, मुझे समझ सत्य लेना॥

दौड़

गुप्तचर भेज दिये हैं, और तैयार किये हैं, वचन पूरा कर दूंगा
वैदेही के शोधन में चाहे अपना सिर दे दूंगा।

सुग्रीव जी का गाना (वहर तवील)

दृष्टि चुराऊं प्रभु आपसे, ऐसा स्वप्ने में भी ख्याल लाया नहीं।
भूल जाऊँ बड़े भारी उपकार को, मैं कमीनों व नीचों
का जाया नहीं॥१॥
ऐसे तानो की गोली न मारो मुझे, मैंने कर्त्तव्य अपना भुलाया नहीं
देखलो कर रहा क्या यही सामने, अब तक खाने तलक को भी
खाया नहीं॥२॥
मेरी इच्छा है हनुमत को बुलवाय लूं, यह खड़ा दूत आज्ञा
सुनाई नहीं।
सीता माता का जो न लगाऊं पता, तो मै जन्म सुर राजा क
पाया नहीं॥३॥
बन चुका हूँ मैं चाकर सियाराम का, विषय ऐसों में दिल का
फंसाया नहीं।
लो चलो मैं भी चलता हूँ रघुवीर पै, क्योंकि दर्शन भी कल से
है पाया नहीं।

दोहा

फिर दोनों वहां से चले, पहुंचे रघुवर पास।
प्रणाम बाद सुग्रीव जी, ऐसे बोले भाप॥
मैं चरणों का दास हूं, हे स्वामी सुखधाम।
राज पाट सब आपका, करूं बताया काम॥

कुछ हालत थी कमजोरी की, तन पर थे बेढ़व घाव पड़े।
महाकष्ट देख उस व्यक्ति को, रहे पूछ हाल यों पास खड़े ॥

दोहा

अय भाई तू कौन है, क्या है तेरा नाम।
क्या हालत तेरी यहाँ, गिरा किस तरह आन ॥

गिरा किस तरह आन, छवि तन की मुरझाय रही है।
और लगे घाव किस तरह, कमर तेरी बल खाय रही है ॥
तृषा तुझको लगी हुई मुख, जिह्वा बता रही है ॥
होता है मालूम तुझे, क्षुधा भी सता रही है। ॥

दौड़

सभी वृत्तान्त सुनावो, भय ना कुछ मन्न में लावो, योग्य सेवा बतलावो, नहीं सांच को आच, सभी बेखटके हाल सुनावो।

दोहा

हे स्वामिन् सुन लीजिये, मेरी व्यथा तमाम,।
अर्कजटी का पुत्र हूं, रत्नजटी मम नाम ॥

जनक सुता को लंकपति, हरके लकामें ले जाता था।
उस तरफ सैर करता करता, मैं भी विमान से आता था ॥
रावण के विमान बीच, आंवाज रुदन की भारी थी।
दशरथ नृप की कुलवधू 'सिया' वह रामचन्द्र की नारी थी ॥
हा लक्ष्मण देवर तुम्हीं, सुनलो मेरी पुकार।
दुष्ट मुझे ले जा रहा, सुनो राम भर्तार ॥
इस तरह सिया चिल्लाती थी, दुखिया की कोई सहाय करो।
कभी कहती थी हे जनक पिता, तुम ही मेरा सन्ताप हरो ॥
सीता के रुदन भयानक थे, पत्थर का कलेजा छनता था।
कभी हा कार के सहित वीर, भामंडल नाम निकलता था ॥

सीता की खोज

दोहा

आज्ञा पा श्रीराम की, किया एक दरबार ।
जिसके जैसा योग्य था, दिया सभी अधिकार ॥
एक दूत आदित्यपुर, भेजा हनुमत पास ।
अमल वही होने लगा, किया जिस तरह पास ॥

गुप्तचरों को भेज दिया सब, ग्राम ग्राम क्या नगरों मे ।
और दूर दूर सज गये रिसाले, जगल वन खण्ड गहनों मे ॥
पैदल पल्टन फिरे कहीं, फिरते विमान आकाशों पर ।
सब वैदेही को देख रहे 'दूरदर्शक यंत्र' आँखों पर ॥

दोहा

सुग्रीव भूप खुद भी चला, ताण्डिल बैठ विमान ।
कम्बूद्वीप नग पर रहा, शोध सभी स्थान ॥
गिरिकन्दर में था पड़ा, रत्न जटी लाचार ।
फिरे विमान आकाश मे, देखा नजर पसार ॥

ना मार्ग कोई निकलने का, चहुं ओर से पर्वत घिरा हुआ ।
ऊपर को भी नहीं चढ़ सकता, ऐसे स्थल पर था गिरा हुआ ॥
मन मे ऐसा खटका था, विमान न हो दशकन्धर का ।
इसलिये विचार था छिपने का, आश्रय ग्रहण कर पत्थर का ॥

दोहा

जब देखा सुग्रीव ने, नीचे नजर पसार ।
रत्नजटी आया नजर, गिरि गुफा मंझार ॥

सुग्रीव नरेश ने इसी समय, विमान तले को झांक दिया ।
इस हालत ने फिर रत्नजटी को, छिपने से भी रोक दिया ॥

चलो मित्र यह पता खुशी का, रामचन्द्र को देवेंगे।
मिले पूर्ण सुयश तुमको, हम जरा दलाली लेवेंगे ॥

दोहा

दाबी कला विमान की, पहुंचे रघुवर पास।
माथ निवा कपिपति ने, किया वचन प्रकाश ॥

महाराज सिया का रत्नजटी से, हाल सभी कुछ सुन लीजे।
फिर आगे क्या करना चाहिए, सो भी हमको आज्ञा दीजे ॥
अब है नाहर के पंजे में. सीता यह भी मन ध्यान धरो।
पहले सुनलो सब बात तोल शक्ति, फिर सोच के काम करो ॥

दोहा

आदित्य नगर से आगये, उधर वीर हनुमान।
वनरपति करने लगे, स्वागत अरु सम्मान ॥
रत्नजटी को राम ने, लिया हृदय से लगाय।
लगे प्रेम से पूछने, अपने पास बिठाय ॥
कष्ट उठा करके कहो, रत्नजटी वृत्तान्त।
सीता का और स्वयं का, आदि अन्त पर्यन्त ॥
कथन सिया का क्या कहूँ, जलता हृदय तमाम।
यही शब्द थी कह रही, हा लक्ष्मण हा राम ॥

लंकपति हर सीता को, ईशान कोण मे लाता था।
और कम्बू द्वीप गिरि ऊपर, मैं भी उत्तर से आता था ॥
जब सुना रुदन वैदेही का, मै रावण के सम्मुख धाया।
इस तरफ उठाया मै शस्त्र, उस तरफ बाण उसने उठाया ॥

दोहा

भामंडल का नाम सुन, मुझे आगया जोश।
क्योंकि मेरा मित्र था, रह न सका खमोश॥

वहिन मित्र भामंडल की, सीता मेरी भी भगिनी है।
और ज्ञात मुझे यह पहले था, यहाँ पेश न मेरी चलनी है॥
क्षत्रापन का धर्म नहीं, इस हालत में देऊँ टारा।
इसलिए काढ़ शस्त्र मैं, जा रावण के सम्मुख ललकारा॥

दोहा

हुआ परस्पर व्योम मे, देर तक संग्राम।
रावण ने विमान फिर, तोडा मेरा तमाम॥

हे नाथ फेर बेपर हो कर, मैं गिरा गिरि पर आ करके।
फिर होनहार लाई मुझको, इस कन्दरा मे खिसका करके॥
कुछ अपने दुःख का ख्याल नहीं, यदि है तो ख्याल सिया का है।
धिक्कार मेरी यह जिन्दगानी, इस जीने का फल लिया क्या है।

दोहा

उसी समय सुग्रीव ने, लिया विमान बैठाय।
रत्नजटी को पथ्य और, औषधि दई पिलाय॥
रत्नजटी को फिर दिए, शुद्ध वस्त्र पहनाय।
धन्यवाद उस वीर को, देते हैं हर्षाय॥

सुग्रीव कहे हे रत्नजटी, तुमने सुयोग्य कर्त्तव्य किया।
सब दु:ख हमारा मिटा दिया, श्रीराम को भी जीतव्य दिया॥
दिन रात जिसे लिए फिरते थे, तूने सो सफलीभूत किया।
दुष्कर था यह जो काम हमें, मित्र तूने सब सूत किया॥

सिया शुद्धि ने राम लखन का, हृदय कमल खिलाया है।
फिर पास बुला श्रीराम ने यों, सुग्रीव को वचन सुनाया है॥

दोहा

अय भाई सुग्रीव अब, आलस्य देवो निकाल।
असली नक्शा लंक का, दिखलावो तत्काल॥
हाँ स्वामिन् देखे सभी, नक्शा आप जरूर।
किन्तु कार्य सिद्धि, यहाँ होनी नहीं हजूर॥

होनी नहीं हजूर क्योंकि, वह अतुल बली नाहर है।
तीन खंड मे पुण्य प्रचण्ड, आज जिसका जाहिर है॥
सहस्र एक साधी विद्या, और नीति का माहिर है।
लगे कांपने सब दुनियां, जब निकले वो बाहिर है॥

दौड़

वीर बली कुम्भकर्ण है, भुजा जिसकी दक्षिण है, विभीषण शूरा नामी, हे स्वामिन् रावण की उसको, भुजा समझलो बायीं।

दोहा

इन्द्रजीत है सुत बड़ा, मेघवाहन लघु जान।
जिनके तेज प्रताप से, कांपे सकल जहान॥

शक्ति रावण की देखने मे, यहाँ सारी उमर बिताई है।
सब तीन खंड की परिक्रमा, उनके संग मैंने लाई है॥
और सहस्रांशु नृप का घमंड, रावण ने सभी उतारा था।
और इन्द्रभूप इन्द्र समान को भी, निज कैद में डारा था॥

दोहा

शक्ति तोड़ी वरुण की, जो था बड़ा नरेश।
मधुकभूप चरणन गिरे, साधे सेव विशेष॥

दोहा

कुछ देर तलक आकाश मे, हुए वार पर वार।
उधर सिया थी हो रही, रो रो कर लाचार ॥

हे नाथ दृश्य वह याद करने से, हृदय कमल उछलता है।
क्या करू' सिवा कहने के मेरा, जोर नहीं कुछ चलता है॥
वज्र बाण से रावण ने, विमान मेरा झट तोड़ दिया।
और बेपर समझ व्योम ने भी, गिरितल पर मुझको छोड़ दिया॥

दोहा

पता देन की आशा पर, रहे अब तलक प्राण।
घृणा आती है मुझे, क्या दिखलाऊँ शांन ॥

क्या दिखलाऊँ शान दुष्ट, पापी जन गया न मारा।
घोर दु.ख में फँसी सिया को, कुछ न दिया सहारा ॥
क्षत्राणी का दूध सभी मैंने, हराम कर डारा।
अब यही मेरे मन आता है, मर जाऊँ मार कटारा ॥

दौड़

पता कर भामडल को, तजूं फिर गन्दे तन को, क्योंकि
मन घबराता है; देख सिया का दुःख खाना, नहीं हलक तले जाता है

दोहा

हृदय विदारक जब सुनी, खबर सिया की राम।
नेत्रों मे आसू चले, परिषद् दु.खी तमाम ॥
रत्नजटी की प्रशंसा, करी बहुत श्रीराम ॥
धन्यवाद के शब्द से, गूंज उठा सब धाम ॥

फिर भामडल पर इसी समय, सीता हरने की खबर गई।
और रत्नजटी की लगे चिकित्सा, करने वहाँ पर वैद्य कई।

सिया शुद्धि ने राम लखन का, हृदय वमल खिलाया है।
फिर पास बुला श्रीराम ने यों, सुग्रीव को बचन सुनाया है॥

दोहा

अय भाई सुग्रीव अब, आलस्य देवो निकाल।
असली नक्शा लंक का, दिखलावो तत्काल॥
हाँ स्वामिन् देखें सभी, नक्शा आप जरूर।
किन्तु कार्य सिद्धि, यहाँ होनी नहीं हजूर॥

होनी नहीं हजूर क्योंकि, वह अतुल बली नाहर है।
तीन खंड मे पुण्य प्रचण्ड, आज जिसका जाहिर है॥
सहस्र एक साधी विद्या, और नीति का माहिर है।
लगे कांपने सब दुनियां, जब निकले वो बाहिर है॥

दौड़

वीर बली कुम्भकर्ण है, भुजा जिसकी दक्षिण है, विभीषण शूरा नामी, हे स्वामिन् रावण की उसको, भुजा समझलो बायीं।

दोहा

इन्द्रजीत है सुत बड़ा, मेघवाहन लघु जान।
जिनके तेज प्रताप से, कांपे सकल जहान॥

शक्ति रावण की देखने मे, यहाँ सारी उमर बिताई है।
सब तीन खंड की परिक्रमा, उनके संग मैने लाई है॥
और सहस्रांशु नृप का घमंड, रावण ने सभी उतारा था।
और इन्द्रभूप इन्द्र समान को भी, निज कैद मे डारा था॥

दोहा

शक्ति तोड़ी वरुण की, जो था बड़ा नरेश।
मधुकभूप चरणन गिरे, साधे सेव विशेष॥

नृप सुरसुन्दर भी नाथ उन्हीं के ही, दम में दम भरता है।
और नल कुबेर सुत दुर्लघपुर का, उनकी सेवा करता है॥
सुर संगीत का मय नरेश, जामाता है जिसका लंकपति।
तीन खण्ड में आज अद्वितीय, रावण की है पुण्य रति॥

दोहा

अष्ट महा ये शक्तिये, है दशकन्धर के पास।
बाकी भी सब समझलो, हैं रावण के दास॥

रावण की सेना की शक्ति, निज मुख से क्या वर्णू मैं।
दो हनुमान सुग्रीव इधर, हाजिर हम आपके चरणों मे॥
खुद देखो नजर पसार सभो, योद्धाओं का फक चेहरा है।
दशकन्धर के भय का 'इन' सब के हृदयों पर डेरा है॥

दोहा

कायरता सुग्रीव की, देख सुमित्रा लाल।
शूरवीर बांका बली, बोल उठा तत्काल॥
वाह जी वाह क्या कर रहे, गीदड़ के गुणगान।
चोरों ने भी क्या कभी, मारा है मैदान॥

मारा है मैदान कहा, चोरों ने बताइये साहिब।
आप न चलिये संग वहाँ, निर्भय हो जाइये साहिब।
निगल न जाये 'दशकन्धर' पुर, में छिप जाइये साहिब।
डरपोकों की भरती हमको भी, ना चाहिये साहिब॥

दौड़

बात क्या कही अनोखी, प्रसंशा करी गधों की, अकेला मैं जाऊँगा
पहले प्राण हरूँ रावण के, फिर सीता लाऊँगा।

गाना (लक्ष्मण जी का)

चलाई तेग भेड़ों पर, न देखा शूरमा अब तक।
झपट शेरे बबर की में, कभी आया नही अब तक ॥१॥
करोड़ा करोड़ तारेगण, चमक कब तक दिखाते हैं।
रवि ने अपनी किरणों को, वहाँ फैका नहीं जब तक ॥२॥
रंगा रङ्ग में जिस्म, बना अ.फसर दुरिन्दो का।
मगर तब तक कि नाहर ने, सुनी भाषा नहीं जब तक ॥३॥
जो माता चोर बकरे की, शकुन कब तक मनायेगी।
उन्हो का सिर उड़ाने का, मिला मौका नहीं जब तक ॥४॥
जरूरत थी सिया सुध की. शुक्ल लाचार बैठा था।
तड़फता था मैं जिस दिन को, मिला मौका न था अब तक ॥५॥

दोहा

कुछ कहने को और था, वीर सुमित्रानन्द।
श्रीराम ने ला दिया, खामोशी का बन्ध ॥
गर्म नर्म दोनों मिले. काम तुरन्त हो जाय।
नर्मी से सुग्रीव को, बोले यों रघुराय ॥
तुम दोनों मेरी भुजा, बायीं दक्षिण जान।
भरत तुल्य तू है मुझे, सुन सुग्रीव सुजान ॥

मत फिकर करो अपने मन में, तुम मेरे धर्म के भ्राता हो।
किस मुख से मैं गुणगान करूं, तुमतो मुझको सुखदाता हो।
आभारी हूँ सबका ही मै, तुमने महाकष्ट उठाया है।
दुष्कर था हमको सीता का, सब आपने पता लगाया है ॥

दोहा

यहां आने से भरत को, दिया हमीने रोक।
ऐसे ही तुम भी, रहो किष्किन्धा सब लोक ॥

जनक सुता को ले आने की, शक्ति हम मे काफी है।
पर आशा करे सो नित्य अधूरा, श्री जिनवाणी भाषी है॥
आग्रह हम नहीं करते हैं, लंका मे तुम्हे ले जाने का।
रखता है साहस एक लक्ष्मण, रावण का शीश उड़ाने का॥

दोहा

चोर उच्चकों ने कहाँ, मारा है मैदान।
सन्मुख आ सकते नहीं, भगें बचाकर जान॥

खुल गया ढ़ोल का पोल सभी, जिस दिन से सिया चुराई है।
रावण ने क्षत्रापन कुल की, मर्यादा धूल मिलाई है॥
अष्टा पद के उठते ही, सिंहों का पता न पाता है।
अब देखो लक्ष्मण वीर लंक मे, क्या करके दिखलाता है॥

गाना

तर्ज—चुरा कर ले गया कोई

सभी हम शक्तियें रावण की, मिट्टी मे मिला देगें।
धरणी की तो है शक्ति क्या, स्वर्ग को भी हिलादेगें ॥१॥
जो मन में ठान ठानी है, वही करके हटेगे हम
समर की धूर मे रावण का, सर धड़ से उड़ादेगे ॥२॥
अरुणावर्त के आगे, बनेगी धूर सब शक्ति।
वज्रावर्त से सबका कलेजा, हम हिला देगे ॥३॥
'शुक्ल' शरणा श्री जिनका, हमे परवाह किसकी है।
सिया को चन्द ही दिन मे, यहाँ लाकर दिखादेगे॥४॥

दोहा

देखा जब सुग्रीव ने, हैं बिल्कुल तैयार।
हाथ जोड़ कहने लगा, ऐसे गिरा उचार॥

हे नाथ बिना कारण हमको, ऐसे क्यों लज्जित करते हैं।
हम जनक सुता को छुड़वाने, में पीछे पांव न धरते है ॥
जहाँ गिरे पसीना प्रभु आपका, अपना रक्त बहावेंगे।
बन चुके आपके दास, दासपन का कर्त्तव्य निभावेंगे ॥

००=००

सम्मतियें

पवन पुत्र तुम भी कहो, अपने दिल का ख्याल।
फिर जितने बैठे यहाँ, पूछे सबसे हाल ॥
नाथ कही कपिराज ने, सभी यथार्थ बात।
निश्चय ही दशकन्धर के, अतुल ताकते साथ ॥

किन्तु जो पाकर के गौरव, अन्याय के ऊपर तुलते हैं।
तो जगह चमर के उस व्यक्ति पर, मोची पत्र ढुलते है ॥
जो काम नीच भी नहीं करते, वह काम किया दशकन्धर ने ॥
तो समझ लेवो अब कूच किया, लका से पुण्य सिकन्दर ने ॥

दोहा

चन्द्रोदर को मार के, खर लई लंक पाताल।
क्या नीति वर्ती वहाँ, करो जरा कुछ ख्याल ॥

क्योंकि रावण को निज बहनोई की, खातिर थी मंजूर सभी।
यह तो कुछ बात पुरानी है, यह नया पोल खुल गया अभी ॥
सम्मति हमारी तो यह है, इस शक्ति को कमजोर करो।
क्या समय अनुपम मिला हुआ, और सीता का संताप हरो ॥

दोहा

मनुष्य जन्म पाकर यदि, करे न कुछ विचार।
तो समझो नर जन्म को, खोते सभी निस्सार ॥

गाना (हनुमान जी का)

तर्ज—करो प्रचार दुनियां

यदि हम में ना इक दूजे पै, कोई महरवाँ होगा।
ठिकाना फेर दुनिया मे, धर्मियों का कहाँ होगा ॥१॥
यदि अन्याय कुशक्ति से, डरके मुंह छिपावोगे।
भला फिर कौनसी जा पर, यह क्षत्रापन अदां होगा ॥२॥
चाहे सर्वस्व भी लाकर, शीश अन्याय का तोड़ो।
यहाँ कर्त्तव्य पालन मोक्ष, या 'सुरपुर' मकां होगा ॥३॥
मुझे निश्चय सचाई पर, डटोगे बागवा होकर।
यहाँ फल-फूल और लका, समझलो वियांवां होगा ॥४॥
हवावत् वैक्रिय होगा, हमारी वीरता का जव।
उड़ेगा खुश्क पत्तोंवत, लका दल जो जमा होगा ॥५॥
सचाई पर डरे क्षत्री नहीं, डरते हैं अन्त से।
यहाँ इतिहास परभव मे, जगत हितकर सखा होगा ॥६॥
लखो मत शक्ति रावण की, शुक्ल अन्याय को देखो।
तुम्हारी पुण्य शक्ति से ही, शत्रु नीमजा होगा ॥७॥

दोहा

हम हैं पक्षी सत्य के, रहे कुसग से दूर।
बाकी सब बैठे यहाँ, पूछें आप हजूर ॥
मिथिला नगरी से तभी, भामडल गये आय।
स्वागत और सम्मान दे, लिया पास बैठाय ॥
आज्ञा आपको दे चुके, अहो अजनी लाल।
आप सभी से पूछले, जो कुछ जिसका ख्याल ॥
मिथिलेश कुमार भी बैठे हैं. और विराजमान हैं विराध यहां।
गवगवक्ष सरभ नगवाय हैं. जामवन्त शुभनाद यहाँ ॥

विद्यु त और यह गन्धमादन, योद्धा नल नील विराज रहे ।
अंगद मेदश्लील वीर रणवांके सन्मुख राज रहे ॥

दोहा

यथायोग्य लेने लगे, सम्मति पवन कुमार ॥
शक्ति रावण की बड़ी, सबका यही विचार ॥
वीर विराध कहने लगे, सुनो सभी कर गोर ।
असली क्षत्रिय समय पर, दिखलाते हैं जौहर ॥

गाना

चाहे कुछ हो ईंट का उत्तर तो, अब होगा पत्थर से ।
हमें कुछ भय नहीं रावण के, किसी तलवार अस्त्र से ॥
अन्ध अन्याय शक्ति से, कभी क्या क्षत्री डरते हैं ।
[illegible]कलते हैं वह पहले ही, बांध कर सिर कफन घर से ॥२॥
[illegible]ं निश्चय सही वह दिन, भी इक दिन आने वाला है ।
[illegible]सको परभव पहुँचावेंगे, मार उसके ही चक्कर से ॥३॥
[illegible]ण्य काफूर अब उसका, हुवा सीता चुराने से ।
[illegible]ड़ेगी तृण सम शक्ति, बकाया वायु अस्त्र से ॥४॥
[illegible]ान में ही रहे अन्धे, नजर आता नहीं कुछ भी ।
[illegible]क मस्तक बना देंगे, सिर्फ हम एक नस्तर से ॥५॥
[illegible]शुक्ल" अब कूच लंका पर, करेंगे कह दिया हमने ।
[illegible]दि चलना है ! जिसने सब, सजो हथियार बख्तर से ॥६॥

दोहा

वीर विराध के, कथन से फैला एकदम रोश ।
क्षत्रिय वीरों को लगा, आने अद्भुत जोश ॥

[illegible]म्मति परस्पर टकराई, कुछ देर तलक यह हाल रहा ।
[illegible]ाकी तो सब कुछ नियत हुवा, इक रावण का ही ख्याल रहा ॥

जामवंत यों उठ बोले, ऐसा योद्धा होना चाहिये।
जो शक्ति रोके रावण की, और इतमिनान होना चाहिये॥

दोहा

जामवन्त की राय में, मिल गई सबकी राय।
अंजनी सुत फिर राम से, यों बोले मुस्काय॥
बहुत काम तो हो गया, निश्चय से प्रभु ठीक।
एक कसर को मेट कर, ठोको इनकी पीठ॥

वह कसर जौनसी है स्वामिन्, श्री जामवन्त बतलाते हैं।
इस बात को आप भी, समझ गये कुछ परीक्षा लेना चाहते हैं॥
प्राय: है भी ठीक क्योंकि, सबके हृदय मे खटका है।
यदि आप इसे पूरा करदे, तो लंक तख्त का तकता है॥

दोहा

इतना कह वज्रांग जी, बैठ गये निज ठौर।
जामवन्त उठ सामने, बोला दो कर जोड़॥
दास आपके बन चुके, हे प्रभु दीन दयाल।
भय इनके दिल का सभी, देवे आप निकाल॥

यह सुना मुनिजन ज्ञानी से, जो कोटि शिला उठायेगा।
वही मारे दशकंधर को, और वासुदेव कहलायेगा॥
यह कोटि शिला उठाने से, सब दल निर्भय हो जावेगा।
तैयार लंक में जाने को एक से एक आगे पावेगा॥
ये शिला अहिल्या भी कहलाती है ग्रामीणी भाषा मे।
या यूँ समझें ये वासुदेव की ही रहती है आशा में॥
काल अनादि से ऐसी यह परम्परा चली आती है।
वासुदेव के बिना और कोई शक्ति नहीं हिलाती है॥

दस करोड़ा-करोड़ सागरोपम में नौ बार हिलाई जाती है।
इस के अतिरिक्त अहिल्या यही शिला कहलाती है।
प्रथम शिखर, दूसरा सिर तक, तीसरा ग्रीवा तक लाता है॥
चौथा स्कंध, पंचम छाती, हृदय तक छटा पहुँचाता है।
पसली सप्तम कटी अष्टम नवां नीचे कुछ रहता है॥
परीक्षा की यही कसौटी है इतिहास यह निश्चय कहता है।

दोहा

वज्रमयी यह है शिला सदा अखण्डित जान।
इसे उठावेगा वही रावण से बलवान॥
खुश होकर सहसा उठा, वीर सुमित्रानंद।
बोला यों श्री राम से, बांका वीर बुलन्द॥
कोटि शिला क्या चीज है! तोड़ूं गिरि तमाम।
क्षत्राणी का पुत्र हूँ, लक्ष्मण मेरा नाम॥

आज्ञा दीजे भ्रात लता सी, फेंक शिला को दूंगा।
चलो अभी यह भ्रम तुम्हारा आज सभी हर लूंगा॥
कितनी शक्ति है रावण के, भुज बल में देखूंगा।
पहले खोज मिटा रावण का, फिर जगदम्बा लूंगा॥

दौड़

चलो अब देर न लावो, वृथा क्यों समय बिताओ।
मुझे पल-पल भारी है, क्योंकि उधर दुःखों की चलती,
सीता पर आरी है!

दोहा

आज्ञा पा श्रीराम की बैठे तुरत विमान।
पहुँचे जहां पर थी शिला सहित वीर हनुमान॥

मूल मंत्र का ले शरणा जब हाथ शिला के लाया है।
जैसे मुद्गर ऐसे लक्ष्मण ने, शिला को वहां उठाया है॥
फिर लगी पुष्प वृष्टि होने, सुर जय जय शब्द सुनाये हैं।
फिर बैठ विमान में खुशी सहित. किष्किन्धा नगरी आये हैं॥

दोहा

उसी समय सुग्रीव ने, किया खास दरबार।
लंका चढ़ने के लिये, होने लगा विचार॥

गण नायक कोई बना कोई, सेनापति पद पर नियत किया।
निज निज सेना तैयार करो, सुग्रीव ने सबको हुक्म दिया॥
और जंगी भरती खोल दई, दारू गोलों का पार नहीं।
जंगी बेड़े जंगी जहाज, अद्भुत है वायुयान कहीं॥

—❋❋❋—

दूत हनुमान

दोहा

वृद्ध मन्त्री कहने लगा, दूत देवो भिजवाय।
सीता को यदि वापिस करे, झगड़ा सब मिट जाय॥
दूत भी ऐसा चाहिये, करे भूत का काम।
एक वार के जाने से, करदे काम तमाम॥

पहले जनक सुता को, यहाँ की खबर सुनावे जा करके।
फिर दे उपदेश विशाल, सब तरह रावण को समझा करके।
यदि नर्मी से ना काम बने तो, कहे फेर झुंझला करके।
अन्तिम जंगी ऐलान, सुना आवे कुछ जौहर दिखा करके॥
बाजार गली कूंचा-कूंचा, ज्ञाता हो सब बाजारों का।
जगदम्बा जहाँ हो विराजमान, ले नक्शा उन्हीं मिनारों का॥
शूरवीर योद्धा बांका, जाने से ना घबराता हो।
फिर जबरदस्ती का काम नहीं, हृदय से करना चाहता हो॥

दोहा

श्रेठ पुरुष है लंका मे, एक विभीषण वीर।
न्याय वन्त गम्भीर है, शूरवीर रणधीर ॥
यदि काम बनाना चाहो तो उसके द्वारा बन सकता है।
और रावण को भी समझा कर, सन्मार्ग पर ला सकता है ॥
हो वीर प्रथम परिचय वाला, जिसका प्रभाव भी पड़ता है।
फिर सजी हुई लका, आशाली विद्या से ना डरता हो।

दोहा

वृद्ध मन्त्री की सम्मति लई, सभी ने मान।
उसी समय सुग्रीव जी, बोले खोल जबान ॥
कर सकते हैं काम सब, पूरे यह हनुमान।
क्योंकि हैं ये अनुभवी, शूरवीर बलवान ॥
ऐलान जग का देने को तो, हर एक व्यक्ति जा सकता है।
पर इन बातों पर विजय, एक बजरंगबली पा सकता है ॥
भनेज जमाई रावण का, खा राखी इसने जाफत है।
बाजार गली कूंचे तो क्या ये महलों तक के वाकिफ हैं ॥
फिर विंभीषण जी से हनुमत जी का, मेल-जोल भी खासा है।
जो कहा इसे चौचन्द दिखायेगा, करके यह आशा है ॥
इसलिये कहो बजरंगबली, यह काम तुम्हारे लायक है।
वास्तव में देखा जाय तो, इस दल का तू ही तो नायक है ॥

दोहा

जी हाँ बिल्कुल ठीक है, यों बोलो सब वीर।
समय भाव को देख कर, कहने लगे रघुवीर ॥

दोहा (राम)—पवन पुत्र हनुमान जी, शूरवीर गम्भीर।
सब योद्धाओं की नजर, है तुम पर बलवीर ॥

हे सच्चे पुरुषार्थी योद्धा, यह जल्दी काम बनावो तुम।
जो डाली नींव समर की तो, यह भी तकलीफ उठावो तुम॥
उपकार जिसे कहती दुनियां, उसके समक्ष अवतार हो तुम।
यह भार तुम्हारे सिर पर है, क्योंकि सबके सरदार हो तुम॥
चाहे नींव कहो जड़मूल कहो, इस दल के स्तम्भ तुम्हीं तो हो।
था बन्ध छुड़ाया रावण का, बजरंगबली तुम वही तो हो॥
काम सभी यह आप बिना, कोई और नहीं कर सकता है।
जो घाव किया दशकंधर ने, अय वीर तू ही भर सकता है॥

दोहा

मिष्ट वचन श्रीराम के, सुने वीर हनुमान।
हाथ जोड़ श्रीराम के, गिरा चरण मे आन॥

दोहा (हनुमान)

हे रघुवर कुलपति मुकुट- जगभूषण जगताज।
नम्र निवेदन दास का, सुन लीजे महाराज॥

यहाँ बड़े-बड़े योद्धा बैठे, मै पिछली संख्या वाला हूँ।
इनके आगे कोई चीज नहीं, क्योंकि फिर भी मैं बाला हूँ॥
श्रीगव गवाक्ष सरभज गवय, बैठे हैं वीर बली भारी।
यह जामवन्त अंगद सलील, जो जरा धरा कंपा देवे सारी॥
यह गंधमादन द्विविद गवय, नल नील बड़े रण बांके हैं।
महा तेज देख इन योद्धों का, हृदय फटते दुर्जन के हैं।
फिर हैं सबके सब अनुभवी, इनके समक्ष मैं बच्चा हूँ॥
यह काम हाथ में लेते हुवे, दिल में होता मैं कच्चा हूं।

दोहा

आपने सबको छोड़ कर, दिया मुझे यह दान।
तो फिर मुझको भी प्रभु, है सब कुछ प्रमाण॥

अहो भाग्य मेरे स्वामिन्, यह अवसर आज नशीब हुवा ।
शक्ति अनुसार करूं पूरा, जो भी कुछ तजवीज हुवा ॥
मूल मंत्र का ले शरणा, जिस समय लंक में जाऊंगा ।
और चिरस्मरणीय, छाप बिना, मारे नहीं वापस आऊंगा ॥
आज्ञा हो यदि आपकी यहां, जगदम्बा को ले आने की ।
तो मेरे आगे दुर्जन की, वहाँ पेश नहीं कुछ जाने की ॥
सीता तो क्या और कही, कुछ बदले में ले आऊंगा ।
ऐलान जंग का तो स्वामिन्, चलते चलते दे आऊंगा ॥

दोहा

सुने राम ने जिस समय, हनुमान के बैन ।
मिष्ट वचन से रघुपति ' लगे इस तरह कहन ॥

है निश्चय जो कुछ कहा. आप पूर्ण करके दिखलावोगे ।
और मान सभी के मर्दन कर, सीता को भी ले आवोगे ॥
किन्तु अभी करो इतना, जो भी कुछ यहाँ पर नियत हुआ ।
फिर बाद में जो मर्जी करना, जैसा तेरा चित्त वित्त हुआ ॥
क्योंकि अधिकार है शत्रु का, क्या पता वहाँ कैसे बीते ।
हम आते हैं कुछ देर नहीं, कह देना पास सिया जी के ॥
चन्द दिनों का कष्ट और है, धैर्य उनको दे आना ।
विमान भी है तैयार काम, करके वापिस जल्दी आना ॥

दोहा

जो कुछ आज्ञा आपकी, प्रभु मुझे स्वीकार ।
अभी ही पहुँचूं लंक में, मुझे न लगती वार ।

पर एक ख्याल कुछ और, अभी जो मेरे मन मे आया है ।
कि आज तलक वैदेही का, मैंने दर्शन नहीं पाया है ॥

है उदाहरण कि जला दूध का, फूक छाछ को लाता है।
इस कारण से जगदंबा को, विश्वास मेरा कब आता है॥
क्योंकि वह सती महान् सती, विश्वास न मुझ पर लायेगी।
वह जगह तसल्ली के उल्टी, अपने मन मे घबरायेगी॥
इसलिये निशानी दे दीजे, अपनी जो उन्हे दिखा देऊं।
कुछ धीर बंधा कर सीता से भी तुम्हें निशानी ला देऊं॥

गाना

(तर्ज—एतभी)

निश्चय दिलाने के लिये, विपदा मेरी काफी है।
सुना देना उन्हें वृतांत, मेरा काफी है।
निश्चय वहाँ बैठी हो, चाकग्रीवाँ बन कर।
यह सुना देना यहाँ, जलती मेरी छाती है॥
नित्य विरह रूपी उसे, दाह सताती होगी।
नाम संदल ही मेरा, उसकी दवा काफी है॥
ऐसी निशानी कहीं, गुम भी नहीं होने की।
उसके हृदय मे मेरी, खैंच नकल राखी है॥
यह भी ना समझे कहीं, कि मुझे भुला बैठे हैं।
भला पानी से भी क्या, शीतलता कहीं जाती है॥
आराम ना पावेगा कभी, तुझको चुराने वाला।
सफर को तह करके, कजा उसकी चली आती है॥
फिक्र अब त्याग सभी, करलो निश्चय मन में।
थोड़े दिनों का ही तुम्हे, कष्ट रहा बाकी है॥
कभी ये ना समझे सिया, कि मैं ही मुसीबत में हूँ।
"शुक्ल" विपता न मेरी, कागज मे लिखी जाती है॥

(हनुमान गाना तर्ज)

ठीक है सब आपका कहना, मुझे प्रमाण है भगवन्।
निशानी के बिना देगी, न हर्गिज ध्यान वो भगवन् ॥
वो समझेगी मनुष्य कोई, रावण ने ही भेजा है।
सुनाऊंगा मैं क्या उसको, न लाए कान वो भगवन् ॥
जो मर्जी सो कहुं लेकिन, न निश्चय उनको आयेगा।
क्योंकि उनको नहीं बिल्कुल, मेरी पहचान है भगवन् ॥
निशानी के बिना जाना, मेरा निष्फल सा होवेगा।
करूंगा बात मैं कैसे, ये मन हैरान है भगवन् ॥
प्रथम तो कठिन होगा, पास मे जाना ही सीता के।
बिना फिर चिन्ह के माने, क्या वो नादान है भगवन् ॥
"शुक्ल" वहां पर भी रहने का, समय मुझको मिला थोड़ा।
बिना किसी चिन्ह के मेरा, वहॉ नहीं मान है भगवन् ॥

दोहा

नामांकित निज मुद्रिका, रघुवर दई निकाल।
ये मुद्रिका लीजिये, अहो अंजनी लाल ॥

(श्रीराम का गाना)

यह लो अंगूठी लो पास अपने, रख्यो इसको सम्भाल करके।
लौट कर आना जल्द यहॉ पर, कायम कोई मिशाल करके ॥
यदि हो मुश्किल सिया से मिलना, तो लेना कोई दलाल करके।
तमातेल जहां मिले नर्म हो, ये देना हीरे निकाल करके ॥
यह पत्र भी साथ लेते जाना, लिखा है सब कुछ विलाल करके।
सिया के दिल को तसल्ली देना, सभी निराशा को टाल करके ॥
जावो जल्दी वो खोती होगी, तन की रंजो मलाल करके।

"शुक्ल" परम सुख मिलेगा तुमको
दुःखी के दिल को खुश हाल करके।

हनुमान जी का गाना

यदि है कृपा तुम्हारी मुझ पर,
तो ताज उसका गिरा के आऊँ,
ना भूले दुनियाँ कभी भी जिसको।
मैं धब्बा ऐसा लगा के आऊँ॥

यदि हो आज्ञा नहले ऊपर
दहला अपना टिका के आऊँ.
सिया तो क्या मैं उसकी पुत्री।
उसी के सम्मुख उठा ले आऊँ॥

होगा सम्मुख योद्धा जो कोई
तो उसको निश्चय सुला के आऊँ,
यदि समय कुछ अधिक मिले तो।
मैं फूट मेवा चखा के आऊँ॥
सचाई है दुनियां में चीज कोइ तो
उनके दिल को हिला के आऊँ
सिया के चरणों मे हाल कह कर

दोहा

सिद्धेश्वर का नाम ले, बैठे तुरन्त विमान।
लंका को अब चल दिए, निडर वीर हनुमान॥
महेन्द्रपुर के बाग पर, पहुँचा जब विमान।
सुभट मित्र हनुमान से, बोला खोल जबान॥

यह बाग आपके नाने का, देखो क्या छवि दिखाता है।
प्रसन्नकीर्ति माहेन्द्र सुत, शूरवीर कहलाता है॥
अब चलते चलते मेल जोल, कुछ इनसे भी करना चाहिए।
रावण से प्रतिकूल कान, माहेन्द्र का भरना चाहिए॥

दोहा

सुने सहायक के वचन, हनुमत ने जिस बार।
मन ही मन में इस तरह, करने लगा विचार॥
इसी जगह था माता को, दिया उन्होंने त्रास।
चाहिये इनका भी उड़ा, देना होश हवाश॥

यदि मेल जोल इन्हों से होगा, तो होगा दो हाथ दिखा करके।
कर्त्तव्य इन्हों ने किये, उसी का, देऊं स्वाद चखा करके॥
मेल जोल अब किये बिना, हम भी नहीं आगे जावेंगे।
माता को यहाँ ना मिली जगह, तलवार से जगह बनावेंगे॥

दोहा

वीर रंगीले ने तुरन्त, दीना बिगुल बजाय।
गूंज उठा ब्रह्माण्ड सब, भूप गया घबराय॥

महल सभा क्या नगर किले में, सहसा शोर मचा भारी।
क्यों अकस्मात् यह बिगुल बजा, किसने की रण की तैयारी॥

प्रसन्नकिर्ति ने झट पट, निज तन पर बख्तर धारा है।
हो गयी बिगुल रण जुटने की, धौंसे पर डंका मारा है॥
अब आन परस्पर अनी मिली, तो चमका खड्ग दुधारा भी॥
कभी अग्निबाण अभी धुन्ध बाण, कभी चलता सांग कटारा भी।
वज्ररत्न घन और, हथोड़ों की चोटों को खा जाता है।
इसी तरह हनुमान भी, रण मे आगे बढ़ता जाता है॥

दोहा

देख तेज हनुमान का, घबरा गये तमाम।
प्रसन्नकीर्ति से लगा, फिर होने संग्राम॥
मामूली नहीं चीज था, महेन्द्र सुत शूर।
लड़ते लड़ते परस्पर, हो गये दोनों चूर॥

यह हाल देख कर पावन पुत्र के, जोश बदन में छाया है।
कुछ यह भी ख्याल हुवा मन में, क्या काम तू करने आया है॥
यदि मारा मैंने मामे को, तो माता अति दुःख पावेगी।
भाई मेरा तूने मारा, हर समय यह ताना लावेगी॥

दोहा

नाग फांस मे बांध कर, करूं फेर प्रणाम।
भेद खोल आगे चलूं, पहुँचू लंका धाम॥

कर ऐसा विचार वज्र, संग्रामी रथ पर झोंक दिया।
सब पुरजा २ अलग २, रथ ने भी अपना छोड़ दिया॥
पवन पुत्र ने नाग फांस में, प्रसन्न कीर्ति बांधा है।
फिर अपना आप बताने का, भी दिल मे किया इरादा है॥

दोहा

हनुमान का लीजिये मामा जी प्रणाम।
ऐसा कह बजरंग ने, तोड़े बंध तमाम॥

जब लगा पता कि हनुमत है तो, खुशी का ना कोई पार रहा।
महेन्द्र नृप हनुमान को. देता अतितर प्यार रहा॥
भेद सिया का आदि अन्त पर्यन्त, सभी बतलाया है।
श्री रामचन्द्र का बना सहायक, आगे को चल धाया है॥

दोहा

जय जिनेन्द्र कर चल दिए, उसी समय हनुमान।
प्रसिद्ध दधिमुख द्वीप पर, पहुंचा जाय विमान।
साधु दो शुभ ध्यान में, बैठे हो कर लीन।
कुछ दूरी पर ध्यान में, राज कुमारी तीन

कर नमस्कार मुनियो को, पहुँचे जहाँ पर राजदुलारी थी।
तो दीर्घ शस्त्र ज्वाला ने, कुछ, वहाँ अपनी लाट निकाली थी॥
जलाशय से ले पानी, हनुमान ने आग बुझाई है।
और अबला क्या मुनि राजों की, आपत्ती दूर भगाई है॥

दोहा

कष्ट सहे स्थिर योग से, सिद्धि होत तत्काल।
खुश हो राजकुमारियाँ, बोली शंका टाल॥
बिना काल तरुवर फला, हे प्रभु दीन दयाल।
और हमारा आन के, आप ने टाला काल॥

हम तो क्या इस ज्वाला मे, वे महापुरुष भी जल जाते।
यदि एक मुहूर्त भर भी यहाँ, उपकारी आप नहीं आते॥
कारण हम अग्नि लगने के, मुनिजन का पाप हमे चढ़ता।
तन धन और धर्म सभी जाता, यह जीव पता क्या कहां पड़ता॥

दोहा (हनुमान)

नाम पता सब आपका, देवो हमें बताय।
कैसे तुम कारण बनी; सो भी दो समझाय॥

दोहा (राजकुमारियाँ)

दधिमुख नगर सुहावना, गन्धर्व भूप प्रधान।
शुक्माला राणी भली, मात हमारी जान ॥
ज्योतिषियों से पिता ने, पूछा था एक बार।
कौन भूप इनका कहो, होवेगा भरतार ॥

तब ज्योतिषियों ने बतलाया, जो सहसगति को मारेगा।
बस पति इन्हों का बने वही, दुखियों का दुःख निवारेगा ॥
देख तेज उस राजकुमार का, भानु भी शर्मायेगा ॥
शूरवीर गम्भीर नाम, सागर मानिन्द लहरायेगा।

दोहा

अंगारक खेचर बड़ा, कामी एक नादान।
रूप हमारे पर हुवा, मोहित वश अज्ञान ॥

करी याचना पिता हमारे से, हमको परणाने की।
पर मानी नही पिता ने, अंगारक से विवाह रचाने की ॥
करें कोई विद्या साधन, यह ख्याल हमें इक दिन आया।
पा आज्ञा माता-पिता की हमने, यहां आकर डेरा लाया ॥

दोहा

द्वेपानल में दग्ध हो, अंगारक ने आय।
हमें जलाने के लिये, अग्नि दई लगाय ॥

इसलिये ध्यान मे लगे हुवे, साधु भी आज भस्म होते।
ना हमे ध्यान से उठाना था, ना वह भी इधर उधर होते ॥
तुम हुवे पुण्य के अधिकारी, क्योंकि सब कष्ट निवारा है।
आ जान बचाई हम सब की, और काम सिद्ध हुवा मारा है ॥
अब आप कृपा कर बतलावो, किस भूप के राजदुलारे हैं।

इतनी जल्दी क्यों डरते हो, किस काम को आप सिधारे हैं ॥
जो सेवा हो सो बतलाईये, तुम जग दुःख भंजन हारे हो ।
कर्त्तव्य से जाने जाते हो, श्रीजिन शिक्षा के प्यारे हो ॥

दोहा (हनुमान)

नगरी है आदित्य पुर, पवनजय नृप तात ।
नाम मेरा हनुमान है, सती अंजना मात ॥

श्रीरामचन्द्र रघुकुल दिनेश, किष्किन्धा आज विराजते हैं ।
उदार चित्त गम्भीर वीर, दुखियों का दुःख निवारते हैं ॥
किष्किन्धा में आन राम ने, सहसगति को मारा है ।
सूर्य वंशी अवधेश श्री, दशरथ का राजदुलारा है ॥

दोहा

रामचन्द्र की नार थी, सीता सती विशेष ।
उसे चुरा कर ले गया, लंका में लंकेश ॥

इसलिये लंका मे जाता हूं, सन्तोष सिया को देने को ।
फिर वहां जंग भी होवेगा, उस शत्रु का सिर लेने को ॥
यह गन्धर्व नृप को कह देना, तुम राम के पास चले जावो ।
इस लिये तुम्हे समझाता हूं, कि फिर पीछे ना पछतावो ॥

दोहा

कला दबाई वीर ने, फिर चल दिया विमान ।
राजकुमारी भी गई, निज नगरी सुखमान ॥

श्रीराम की सुन कर प्रशंसा, गन्धर्व नृप मन हर्षाया है ।
दल बल विमान संग सेना, लेकर किष्किन्धा में आया है ॥
श्रीहनुमान का शीघ्र उधर, विमान लंका की ओर बढ़ा ।
जब गये पास तो कोट, आशाली विद्या का चहुं ओर खड़ा ॥

— o✻o —

आशाली

दोहा

लगाई धूम विमान की, ऊपर तले तमाम।
रास्ते का तो नाम क्या, नहीं छिद्र का काम ॥

फिर कोण ईशान की ओर बढ़े, वहा आशाली का डेरा था।
थी आकृति दरवाजे की, पर तम तम घोर अन्धेरा था ॥
सिवा पुण्य के और कोई, नहीं शस्त्र वहां चल सकता है।
सब दारू गोला आशाली के, सन्मुख नहीं डट सकता है॥

दोहा

वज्रांगी उस तमा के, अड़े सामने जाय।
तब देवी हनुमान से, यों बोली झुंझलाय ॥
भाग्य हीन तुमको यहां, लाई मौत बुलाय।
अब भी कहती हूँ, तुझे भागो जान बचाय ॥

हृदय नेत्र दोनों के अन्धे, चले किधर को आते हो।
नादान आशाली ज्वाला मे, किस कारण जलना चाहते हो ॥
तू मौत पराई क्यों मरता जग का झूठा नाता है।
वह काम नहीं बनता यहां पर, जो काम तू करना चाहता है॥

दौड़

पीठ यहां से दिखलावो, चले अपने घर जावो।
हुक्म ये दशकन्धर का, अन्य देश वालों को जाना
मिले नहीं अन्दर का।

दोहा

आशाली के सुन वचन, मुस्काया बजरग।
उत्तर मे कहने लगे, होकर रङ्ग विरङ्ग ॥

आशाली काली जरा, सुनो लगाकर कान ।
अन्दर जाने दीजिये, हम यहां के मेहमान ॥

यह हुक्म नहीं दशकन्धर का, तुम रोको रिस्तेदारों को ।
किस लिये तंग करती बतला, हमसे राहगीर विचारों को ॥
उपहास्य से होता है झगड़ा, बुद्धिमानों का कहना है ।
हट एक तरफ को जाने दे, कुल दो दिन हमे रहना है ॥

दोहा (देवी)

मूढ़मति तू किस लिए, करता है तकरार ।
जाना तुझ को ना मिले, छल कर चाहे हजार ॥

लीक अरी से बत रिस्तेदारी, राजो की होती है ।
मन फटा हुवा नहीं मिल सकता, जैसे पय टूटा मोती है ॥
जान बचा कर भाग नहीं, अब काल शीश पर आता है ।
यहां लिये पराये तू वृथा क्यों अपनी जान गंवाता है ॥

दोहा (हनुमान)

वाहरी वाह क्या खूब तू, दिखा रही है जोश ।
खैर हमारे कथन से, अब होजा खामोश ॥

कितनी ही तुझ मे शक्ति हो, फिर भी अबला कहलाती है ।
यहां क्षत्रिय मर्दाने के आगे, पेश न तेरी जाती है ॥
नियम कुदरती जात नार की, पुरुष वेद को नमती है ।
फिर मेरा दर्जा पचम, और तेरा दर्जा एक कमती है ॥

दोहा (देवी)

अच्छा तो फिर करन को, आया है उपदेश ।
सो फिर तेरे काल ने, पकड़े आकर केश ॥

अच्छा अब सावधान होजा, जल्दी परभव मे जाने को।
इस सुन्दर तन की आशाली से, जल्दी भस्म बनाने को॥
ऐसा कह कर आशाली ने, लम्बी लाट निकाली है॥
इस तरफ वीर बजरङ्गी ने, भी अपनी गदा सम्भाली है।

दोहा

ज्वाला आई जिस समय, पवन पुत्र के पास।
गदा पकड़ शरणा लिया, मूल मन्त्र का खास॥

नवकार मंत्र से आशाली क्या, देवन पति थर्राते हैं।
पर बिन निश्चय और साधन के,बिन पूर्ण फल नहीं पाते है॥
फिर मारी गदा घुमा के, प्रस्थान किया आशाली ने॥
झट देख रवि को पीठ दिखाई, जैसे रजनी काली ने॥

दोहा

बादल से जैसे रवि, ऐसे निकला वीर।
लक कोट के पास फिर, पहुँचा वो रणधीर॥

विमान तले को तार लिया, भूमिचर उसे बनाया है।
यह हाल देख कर वज्रमुखा, शस्त्र ले सम्मुख आया है॥
अति क्रोध मे चेहरा लाल हुआ, और शस्त्र कर में तोला है।
निज मस्तक पर बल तीन डाल, हनुमान से ऐसे बोला है॥

——=

वज्रमुखा

दोहा (वज्रमुखा)

भाग्यहीन तुम किस तरह फसे मौत मुख आन।
बिना सींग और पूंछ के, क्या तुम पशु समान।

क्या लिखा हुवा दरवाजे पर, यह तुम्हे नजर नहीं आता है।
क्या ऐनक लाने का स्वभाव, या मोतिया विन्द सताता है ॥
आज्ञा नहीं यहाँ पर अन्य, राष्ट्र वालों को अन्दर जाने की।
और किसने शिक्षा दी तुमको, यह निष्फल प्राण गंवाने की ॥

दोहा (हनुमान)

जिह्वा को वश मे करो, दांत होट लो मींच।
अनुचित जो कुछ भी कहा, लेऊ रसना खींच ॥

गाना (हनुमान जी का)

उछलता है क्यों मेंढ़क सा, तुझे परभव पहुंचा दूंगा।
जो बोला दुर्वचन कोई, स्वाद उसका चखा दूंगा ॥
रोकता है तू रावण के, जो आये रिस्तेदारों को।
अलग हठ एक पासे को, नहीं तरकस चला दूंगा ॥
कभी रास्ता कहो सिंहो का, स्यालों ने भी रोका है।
समझ अपना तू हित, चुप में नहीं यहाँ पर सुला दूंगा ॥
यदि रहना है इस तन में तो, माफी माँग लो इसकी।
करी तूने जो अविनय, वह सभी दिल से भुला दूंगा ॥

दोहा (वज्रमुखा)

धौंस दिखाता है मुझे, आँखें लाल निकाल।
अब निश्चय कूदने लगा तेरे सिर पर काल ॥

गाना (वज्रमुखा का)

आज सारी रसम रिस्ते की, यहाँ पर हम वजा देंगे।
हमेशा के लिये सोना, तेरा बिस्तर लगा देंगे ॥
यदि स्नान करना है, तो जल्दी शौक से कीजे।
तुम्हारे रक्त की धारा से, हम तुमको नहला देंगे ॥

चीज ऐसी खिलायेंगे, लगे ना भूख इस भव मे।
प्यास भी दूर जायेगी, नीर ऐसा पिला देंगे॥
अहो धन्य भाग्य हैं मेरे, करूं मेहमान की सेवा।
स्वयं बस पीक आयेगी, पान ऐसा चबा देंगे॥

दोहा (हनुमान)

सेवा करवाने के लिये हम भी हैं तैय्यार।
अब तू जल्दी सांभले अपने सब हथियार॥

सोचा था मैंने क्यों गरीब के, नाहक प्राण गमाने है।
पर तेरे खोटे कर्मों ने ही, तुझको नाच नचाने हैं॥
मरने से पहले मुझको, एक बात और भी बतला जा।
नियम यहाँ कुछ पहले भी हैं, या बदले सभी सुनाताजा॥

दोहा (वज्रमुखा)

क्यों मरने के समय अब, गाता आल पताल।
बातें घडने से कभी, टल नहीं सकता काल॥

पर कान लगा अब जल्दी से, तेरा विचार पूरा कर दूं।
फिर समय नहीं मिलना जबकि, तलवार तेरे गल पर धर दूं॥
कोई शक्तिशाली सम्मुख हो. नीति की वहाँ जरूरत है।
पर रावण के आगे सब, नृप मानिन्द पत्थर की मूरत है॥
दीपक की तब तक चाहना है, जब तक ना सूरज रोशन हो।
पंखे की वहां जरूरत क्या, जहाँ पर सर्दी का मौसम हो॥
तीन खण्ड में कान हिलाने, वाला छोड़ा बशर नही।
जो मर्जी सो करें पुण्य, दशकधर के मे कसर नहीं॥

दोहा (हनुमान)

वाह वाह वाह तो फिर हमे, मिला खूब अवकाश।
पहले तुझको मार कर, करें लंक का नाश॥

यह लज्जा मुझको आती है, किस पर तलवार उठाऊं मैं।
जो काम करने यहां आया हूँ. सो भी तुमको समझाऊं मैं ॥
हूँ दूत राम का रावण को, संदेशा देने जाता हूँ।
नहीं दूत को रोका करते हैं, फिर भी तुमको समझाता हूँ ॥

दोहा (वज्रमुखा)

हमको तो आज्ञा यही, दूत होवे चाहे भूत।
रामा दल के मनुष्य को समझो सभी अछूत ॥
अच्छा तो अब सम्हल कर, हो जावो तैयार।
धोके मे रहना नहीं, करलो पहले वार।
वज्रमुखे ने वीर पर, झौंक दई तलवार।
धक्का दे बजरंग ने, दिया धरन पर डार ॥

फिर बोले सम्भल खड़ा हो जा, क्योंकि अब वार हमारा है।
आगे फिर जल्दी जाना है, पहले कर ढेर तुम्हारा है ॥
वज्रमुखे ने फिर उठ करके, अपनी सांग घुमाई है।
पवन पुत्र ने काट उसे, अपनी तलवार मुझाई है ॥

दोहा

कड़कड़ाहट से चपला ज्यों, गिरे अम्बर से आय।
ऐसे घहराती वीर की, पड़ी खड्ग गल जाय ॥

रक्त फुव्वारा उठा व्योम मे, वज्रमुखे का नाश किया।
पड़ा जिस्म रणभूमि मे, आतम ने परभव वास किया ॥
मरा अधिपति समझ चमू में, हाहाकार मचा भारी।
जनक मृत्यु सुन कर पुत्री ने, मन मे रोष किया भारी ॥

दोहा

वज्र मुखे की कन्या का, लंका सुन्दरी नाम।
शूरवीर रणधीर थी, शस्त्र कला की धाम ॥

फिर पास विभीषण के पहुँचे, झट शीश झुका प्रणाम किया।
मिले विभीषण प्रेम भाव से, हनुमत को सम्मान दिया॥
सेवक जन सेवा करते, सब आगे पीछे फिरते हैं।
और वीर विभीषण हनुमान को, ऐसे गिरा उचरते हैं॥

दोहा (विभीषण)

बहुत दिनों मे आपके, दर्शन पाये आज।
कहो कुशल है सब तरह 'पवनजय महाराज॥

कुछ पता आपने आने से, पहले हम पर भिजवाना था।
हम मिलते स्वयं रास्ते में, सम्मान से आपको लाना था॥
यहाँ आने मे जो कष्ट हुवा, तुमको सो हम पर धब्बा है।
आराम आप कीजे क्योंकि, तह किया सो रास्ता लम्बा है॥

दोहा (हनुमान)

प्रेम आपका ही हमे, लाया यहाँ पर खींच।
किन्तु काम अब लंक मे होन लगे अति नीच॥

इसलिये जहाँ पर न्याय नहीं, वहाँ प्रेम नहीं रखना चाहिये।
जिस बात मे सम्मुख हानि है, उससे पीछे हटना चाहिये॥
अब अन्तिम प्रणाम समझ लो, आप को करने आये है।
कल्याण आपका हो जिसमे, सो अर्ज चरण मे लाये हैं॥
बस लीक अरी सेवत अब, तुमसे प्रेम हमारा टूटेगा।
और पाप का बेड़ा भरा हुवा. लंका का सारा डूबेगा॥
प्रेम हमारा आपसे है, कुछ अर्ज गुजारने आये हैं।
मर्जी मानो या न मानो, निज कर्त्तव्य पालने आये हैं॥

दोहा

पिछली बातों को जरा, रख दीजे सरकार।
वर्तमान क्या हो रहा, इस पर करो विचार॥

क्या आपने सोचा बतलाओ, और क्या रावण को समझाया ।
या यहीं किया कि कोट, आशाली का लाकर पहरा लाया ॥
निश्चय क्या ख्याल आपका है, सब साफ साफ बतला दीज ।
संकोच रूप से बतला कर, फिर जल्दी हमे विदा कीजे ॥

दोहा (विभीषण)

पवन पुत्र क्या कह रहे, रूखी-रूखी बात ।
प्रेम हमारा जिस तरह, शीतलता जल साथ ॥

जो भी कुछ आपको कष्ट हुवा, मैं क्षमा उसी की चाहता हूँ ।
अब रावण का भी हाल सुनो, सारांश तुम्हे समझाता हूं ॥
मेरा विचार भी सुन लीजे, हृदय से हूं सत्य का पक्षी ।
वह आहार कभी पचता नहीं, जिसमे खाई जावे मक्षी ॥

दोहा

मोर खुशी में नाचता, फिर फिर चारों ओर ।
किन्तु चरण निज देख कर, रोता है उस ठौर ॥

बस ये ही हाल हमारा है युक्ति ये, सोच खुशहोते है ।
कुछ पेश नहीं चलती रावण, आगे हम निष्फल होते हैं ॥
उधर सती का दुख भी तो, हमसे न सहारा जाता है ।
इधर बड़े भाई का भी,ना प्रेम विसारा जाता है ।
जो दिल में दुख उबाल उठे, सो मुझ से कहा न जाता है ।
यह उलट पेच इक आन फंसा, इसका हल मुझे न पाता है ॥
और अधिक क्या वतलाऊं, इस जीने से घबराता हूँ ।
अनुमान नजर जो आते हैं, सो नहीं देखना चाहता हूँ ॥

दोहा (हनुमान)

दोष नहीं कुछ आपका, हुवा मुझे सब ज्ञात ।
जरा ध्यान लाकर सुनो, कहता हूं दो बात ॥

जैसा प्रेम तुम्हारे को, रावण का वैसा हमको है।
तन-मन से सेवा की हमने, यह ज्ञात सभी कुछ तुमको है॥
जिस काम को नीच भी नहीं, करते वह काम किया दशकंधर ने
तो कूच किया अब लंका से, समझो कि पुण्य सिकन्दर ने॥

दोहा

दम्भी अन्यायी अधम निन्दक और अज्ञान।
इतनों की संगत सदा, तजते बुद्धिमान॥

तजो देव फलहीन तजो, राजा जो कि अन्यायी है।
तज देना चाहिये धर्म भ्रष्ट को, चाहे सगा भाई है॥

तजो अटकनी तुरी, घूमती फिरे, वृथा वह वाम तजो।
जहां रहने से हो कर्मबन्ध, ऐसे सुख शय्या धाम तजो॥

जहां भले बुरे मे अन्तर ना, वहां पांव नहीं धरना चाहिये।
और बुद्धिमान शत्रु अच्छा, मूर्ख मित्र तजना चाहिये॥

रहना उसपे जो गुण जाने, न जाने गुण तो क्या रहना है।
हीरे की जौहरी परख करे, मूरख ने पत्थर कहना है॥

तुम अपना सोच विचार करो, क्यों मोह मे डूबे जाते हो।
क्यूं जान बूझ तुम भी उसके संग, जहर हलाहल खाते हो॥

यदि पक्ष करोगे झूठा तो, अन्तिम तुम भी पछताओगे।
और जान माल इज्जत खोकर, बस कर मलते रह जाओगे॥

बस यही हमारा कहना है, तुम अपना आप बचा लेना।
सबसे अच्छा जहा तक होवे, रावण को भी समझा देना॥

अब ख्याल हमारा सीता से, मिल कर रावण पे जाना है।
समझायेंगे यदि समझा नहीं, अन्तिम ऐलान सुनाना है॥

दोहा

प्रथम आपको कह चुका, अपने दिल की बात ।
इस अकार्य में भ्रात का, कभी न दूंगा साथ ॥

है विचार मेरा यहां तक, सीता वापिस करवाने का ।
पर पेश नहीं जाती क्योंकि, वो है बेशर्म जमाने का ॥
जो होना सो तो होगा ही, तुम वैदेही से मिल आओ ।
हम पता निशान बताते हैं, और आप अकेले ही जाओ ॥

दोहा

यहां से उत्तर की तरफ, देव रमण उद्यान ।
उसी बाग के मध्य है, रक्ताशोक महान् ॥

उस वृक्ष तले उस महासती, सीता माता का आसन है ।
तन मन से ध्याना रूढ हुई, मुख नमोकार का भाषण है ॥
कभी ऐसी हालत होती है, नयनो से नीर बरसता है ।
सन्देशा राम का सुनने को, उसका मन बडा तरसता है ।
तुम जावो अभी चले जावो, सन्तोष सिया को दे आना ।
श्री रामचन्द्र का सदेशा, और क्षेम कुशल सब कह आना ॥
इक्कीस दिवस होगये आज, जिस दिन से सीता आई है ।
खाना पीना क्या बूंद एक, जल की नहीं मुख मे पाई है ॥

दोहा

निज सेवक जन से किया, हनुमत ने संकेत ।
फिर परमेष्ठी को जपा, अविचल राखे टेक ॥

कर जय जिनेन्द्र विभीषण को, हनुमान वहां से चल धाये ।
जब देवरमण के पास गये तो, पहरेदार नजर आये ॥
फिर सोचा कि ये देख मुझे, कोलाहल सभी मचायेगे ।
मेरा भी समय नष्ट होगा, ये भी निज प्राण गमायेगे ॥

दोहा

यदि फाटक रास्ते गया, होगा विघ्न जरूर।
सीता के फिर मिलन में, बाधा है भरपूर ॥

अच्छा है गगन आकाशी द्वारा, ही अपना सब काम करूं।
जहां रक्ताशोक वहां जाकर, वैदेही को प्रणाम करूं ॥
उसी समय बन कर खेचर, अशोक वृक्ष पर जा बैठा।
ना दृष्टि वहां जा सकती थी, ऐसे टहने पर जा लेटा ॥
सीता को पंच परमेष्ठी का, बस एक वहां शरणा देखा।
सब अंग कष्ट से दुबले थे, नयनों मे जल झरना देखा ॥

=००=

जगदम्बा दर्शन

दोहा

कर्म विपाक का कर रही, थी उस समय विचार।
नेत्रों से थी वह रही, मानो जल की धार ॥

करतल पर कर धर बैठी थी, आंखे दोनों थी मिची हुई।
गति उदासीन थी माता की, तन की तप से नस खिंची हुई ॥
पर चिह्न कुदरती शीलवान् के, कभी नहीं मिट सकते हैं।
गुण वैदेही के उस मुर्झाये, तन मे कब छिप सकते हैं ॥

दोहा

महासती के दर्श कर, खुशी हुए हनुमान।
मन वच काया से किया, दिल ही दिल गुणगान ॥
पहला ही अवसर मुझे, किये दर्श यहा आन।
धन्य राम, धन्य है सिया, धन्य ज्ञान शुभ ध्यान।

श्री रामचन्द्र की आशा मे, निज तन को नहीं गमाया है ॥
इक्कीस दिवस हो गये, आज तक अन्न-पान नहीं पाया है ।
इस तीन खण्ड की, ऋद्धि पर जूती की ठोकर मारी है ॥
और शील रत्न की खान अद्वितीय आज एक यह नारी है ।
इस वैदेही को दशकन्धर, निज कर से कभी ना मोड़ेगा ॥
मेरा तो निश्चय ऐसा है, आयु पर्यन्त न छोड़ेगा ।
आज्ञा नहीं श्री रघुपति की, किन्तु इसको ले चलते ही ॥
रक्षक योद्धे और लंक पति, सब रह जाते कर मलते ही ।

दोहा

हनुमान यों वृक्ष पर, बैठे करे विचार ।
सीता बोली शोक मे, ऐसे गिरा उच्चार ॥
अय सीता किस की यहाँ, बैठी आशा धार ।
समय पड़े पर कौन हो, किसी का मददगार ॥

सीता जी का गाना

अय मात तेरी लाडली पर, जो मुसीबत आज है ।
कैसे बतावे हाल तुझ को, सब तरह मौहताज है ॥
प्राणों से प्यारी थी तुम्हे, तुमने विसराया क्यो मुझे ।
अब तप्त ये जिससे बुझे, कैसे मिले वो साज है ।
पति का कथन माना नहीं, अपना मै हठ ताना सही ॥
अंजाम कुछ जाना नही, अब किसपे मुझको नाज है ।
हे नाथ तुम भी हो खफा, दई छोड़ मुझको कर दफा ॥
किससे कहूँ अपनी व्यथा, रखे जो मेरी लाज है ।
क्या खबर प्रीतम है कहाँ, दिया साथ जिसने था वहाँ ॥
बन बैठी मै कैदन यहाँ, कहाँ अवध सुख समाज है ।

किससे कहूँ अब क्या करूं, घोट घोट दम अपना मरूं ॥
या और कुछ आशा करूं, कहाँ मम पति महाराज है ।

दोहा

कहे आपत्ति शीघ्र अब, यह शरीर दे छोड़ ।
प्रेम कहे अभी ठहर जा, अपने मन को मोड ॥
फिरते होंगे ढूंढते, कहाँ मुझे रघुनाथ ।
यहाँ पर सौ सौ वर्ष सम, कटे एक दिन रात ॥

निष्ठुर वचन मेरे दशकधर, कब तक सहता जायेगा ।
फिर अवश्यमेव एक दिन मेरी, इज्जत पर हमला आयेगा ॥
कुसुम व्योमवत् रामचन्द्र की, आशा निष्फल करना है ।
फिर इस हालत मे सिवा मौत के, और मुझे क्या शरणा है ॥

—:※:—

सीता जी का विलाप

किस तरह मोहताज हो, यहाँ आज मै मरने लगी ।
अय प्रेम अब तू अलग हट, मै तन जुदा करने लगी ॥
देश घर जन सब विगाना, अपना यहाँ कोई नही ।
अनित्य चोला तन का अब मैं, प्रेम कब धरने लगी ॥
पांच सौ मुनिवर पिले, घानी मे धर्म के वास्ते ।
उन्हीं के शासन मे हूँ मै, मरने से कब डरने लगी ॥
ढूंढ भाल के खूब देखा, कर्म देखा है अटल ।
ना टले अरिहन्त से, फिर मैं तो कब बचने लगी ॥

दोहा

देख सिया के हाल को, दुखित अजनी लाल ।
उसी समय ले मुद्रिका, दई तले को डाल ॥

जा पड़ी सिया के पास मुद्रिका, नाम राम का खुदा हुवा ।
जब नजर पड़ी जगदम्बा की, तो इकदम दुख सब जुदा हुवा ॥
दमक निराली चेहरे पर, आ खुशी ने डेरा डाला है ।
मानिन्द फूल के खिला हुवा, मस्तक खुश रंगत वाला है ॥

दोहा

मन मे छाई प्रसन्नता, करने लगी विचार ।
अगूठी रख सामने, बोली गिरा उचार ॥

सीता जी का विचारना

लंका मे आई क्योंकर, भगवान् की अंगूठी ।
क्या प्रेम नाहिं उनसे, स्वामिन् की ऐ अगूठी ॥
वे राम जिनकी संगत, सुरगण भी चाहते है ।
उनसे विमुख हुई क्यों, श्रीमान् की अंगूठी ॥
भयभीत काल जिनसे, उनको है किसने जीता ।
सुरपति भी रच सके ना इस शान की अगूठी ॥
पक्षी भी फांद सागर, आये यहां असम्भव ।
हैरान कर रही है, गुणधाम की अंगूठी ॥
आशीर्वाद तुम को, दूंगी "शुक्ल" बतादे ।
लाया है कौन यहां पर, कुल भानु की अंगूठी ॥

दोहा

प्रसन्नता लख सिया की, त्रिजटा के मन उल्लास ।
कहने को वृत्तान्त यहा, पहुची रावण पास ॥

दोहा (त्रिजटा)

जय विजय हो महाराज की दिन-दिन बढ़े इकबाल ।
यदि हुक्म हो तो जरा, कहूँ बाग का हाल ॥

गद्यवार्ता

रावण—आओ त्रिजटा आओ, आज तो तेरा चेहरा बड़ा प्रसन्न नजर आता है। क्या तुम्हारा हाथ भी कुछ तरी में होना चाहता है।

त्रिजटा—जी हां महाराज! आज खुशखबरी सुनाकर इनाम पर अधिकार जमाने आई हूं।

रावण—तो सुनाओ।

त्रिजटा—महाराज यह अर्ज है कि अब तक सीता को रुदन के सिवाय और कुछ नहीं सूझता था परन्तु आज उसका चेहरा बड़ा प्रसन्न है। बस मैं तो इस बात को देखकर भागी जैसा समझा वैसा आपको आ सुनाया। अब आप मालिक हैं।

रावण—बहुत अच्छा किया! त्रिजटा अब तुम सीता के पास चलो और मैं महाराणी साहिबा को भेजता हूँ और मैं भी आता हूँ। घबराना नहीं।

[दासी का जाना तथा रावण का प्रधान महल में आना]

मन्दोदरी—पधारिये महाराज आज तो आप अत्यन्त प्रसन्न नजर आते हैं।

रावण—हां महाराणी साहिबा! त्रिजटा सूचना देकर गई है कि सीता आज अति प्रसन्न है। सो मेरे विचार में तुम पहले जाओ। सीता को समझा कर महलों में ले आओ अब उसने पिछला प्रेम छोड़ दिया होगा। अन्त में इसके सिवाय और करती ही क्या?

मन्दोदरी—मुझे तो सीता के सामने जाने में शर्म आती है।

रावण—तुम्हें तो शर्म आती है। यह नहीं कहती कि शोकन मेरी छाती जलाती है।

मन्दोदरी—खैर छाती तो एक दिन जलनी ही है। यदि आप कहते हैं तो मैं जाती हूँ, परन्तु मेरा निश्चय तो यही है कि खास इन्द्र भी आकर समझाये तो सीता अपने धर्म को नहीं त्यागेगी।

(सीता के पास जाना)

मन्दोदरी—सीता तेरा दुःख मेरे से नहीं देखा जाता।

सीता—तो मेरे दुःख मिटाने के लिये क्या उपाय सोचा ?

मन्दोदरी—क्या स्पष्ट कह दूं।

सीता—जो तू कहने को आई है सो तो कहना ही है। स्पष्ट कहो चाहे लपेट कर।

मन्दोदरी—बस मेरा तो यही विचार है। कि अब तू पिछला प्रेम छोड़ दे और दशकधर से प्रेम जोड़ ले।

सीता तेजी से—बस बस खबरदार----अरी दुतिका मेरे सामने से अलग हट जा। बातें तो क्या मैं तेरी सूरत भी नहीं देखना चाहती!

शेर

हट दुराचारिणी यहाँ से, किसको बहकाने लगी।
जैसा सिखाया भांड ने, वैसा ही तू गाने लगी॥
धिक्कार तेरे मातु पितु को, और तुझे धिक्कार है।
मक्कार खर जैसा पति, वैसी ही तू मक्कार है॥

दोहा

शर्मसार मन्दोदरी, सुन सीता की बात।
मुंह छिपाय यहां से भगी, जा पहुंची एकान्त॥

दोहा (सीता)

प्रीतम की यहां मुद्रिका गिरी, किस तरह आज।
दिल धैर्य धरता नहीं, बने किस तरह काज॥

जा कारण दिल है समझ रहा, वह जिह्वा नहीं कह सकती है।
यदि प्राणपति को कष्ट हुवा तो, यह मेरी कमबख्ती है॥
क्या पक्षी कोई उड़ा लाया, जो गिरी यहाँ पर आकर के।
क्या देव कोई या विद्याधर, कहीं छिप गया इसे गिरा कर के॥

गाना (सीता जी का)

मैंने कैसा किया कर्म भारी, दिल मे हो रही है बेकरारी।
कैसे मुद्रिका राम की आई, लाया कोई इसे क्या चुराई॥
दिल में ये ही है आश्चर्य भारी।

राम लक्ष्मण जैसे शूरे, सब तरह निज शक्ति मे पूरे।
रहते सदा बीच हुशियारी॥
किया छल या किसी ने है भारा, शायद प्रीतम मेरे को है मारा।
मुद्री अंगुली से तभी उतारी॥
हाय कर्म तू और सताले, चाहे जितना तू मुझको रुलाले।
मैं तो डूबी हूँ कर्मों की मारी॥
अब तो जी में मेरे यही आवे, जान तन से निकल क्यों न जावे।
और करूं क्या मुसीबत की मारी॥
क्या खबर कहा प्रीतम प्यारे, कौन दिल के भ्रम को निवारे।
मानूं उसका मैं ऐहसान भारी॥

शेर

आशा थी जो दिल मे, वह सब काफूर बन गई।
दोष किसका इसमें, जब कर्मों से तन गई॥

तन जुदा करने को भी, ना कोई सामान है।
तो खेंचने को हाथ, और मेरी जबान है॥
वैर विरोध त्याग दिल को, शान्त करती हूँ।
शील की रक्षा लिये, भगवान मै मरती हूँ॥

दोहा

दृश्य भयानक देख कर, झट उतरे हनुमान।
सम्मुख होकर कहने लगे, माता सुनो बयान॥

दोहा (हनुमान जी का)

अरी मात जरा दिल धीर धरो।
अब मरने का ना विचार करो॥

श्रीराम का भेजा आया हूँ, और ये मुद्रिका मै ही लाया हूँ।
अंजना राणी का जाया हूँ, माता मुझ पर इतबार करो॥
पवन भूप का पुत्र हूँ माता, श्रीराम का सेवक कहलाता।
तुमरे दर्शन से हुई साता, अय मात जगत उद्धार करो॥
श्री रामचन्द्र जी महाराया, किष्किन्धा मे डेरा लाया।
वहाँ से मैं चलकर आया, अब मुझ पर कुछ उपकार करो॥
दल बल सेना है किष्किन्धा, सुध लेने को आया बंदा।
निश्चय करलो हे जगदम्बा, सब सोच दूर एक बार करो॥
सुग्रीवादिक नृप आन मिले, सब तोड़न को गढ़ लंक किले।
रावण की शक्ति धूल मिले, अपने दिल को होशियार करो॥
तुमने सती धर्म निभाया है, दुनिया में यश फैलाया है।
तपस्या से तन को सुखाया है, अब जनक सुता आहार करो॥

दोहा

भाषण ये बजरंग का, सोचा दिल दरम्यान।
जनक सुता हनुमान से, बोली मधुर जबान॥

दोहा (सीता)

आज तलक देखा नहीं तुझको मैने भ्रात।
किन्तु महासती अंजना, सुनी जगत विख्यात॥

रग ढंग से यही नजर आता है, तुम कोई सज्जन हो।
यदि महासती के पुत्र हो, तब तो तुम दुःख निकन्दन हो॥
क्योकि दुनिया मे महापुरुष ही, दुखियों का दुःख हरते है।
वह सब कुछ अपना अर्पण कर, औरों की खातिर मरते हैं॥
अब रही बात निश्चय की मो, इसमें है कुछ सकोच मुझे।
जो जला दूध का फूक छाछ को, लाता यह सब ज्ञात मुझे॥
चालाक आदमी दूजों का, बातो से मन भर सकता है।
और कारीगर मुद्री जैसी, दूजी मुद्री कर सकता है॥

दोहा

इस कारण हे भ्राता जी, मुझे नहीं विश्वास।
और निशानी राम की, बतलाओ कोई खास॥

जिससे दिल को विश्वास मिले, कि राम लखन को साता है।
प्रतिज्ञा पुरी हुवे विना, मुझको नहीं अन्न जल भाता है॥
सन्तोषजनक श्रीराम लखन का, यदि सदेशा सुना देवो।
फिर तो मुझको ऐतराज नहीं, बेशक अन्न पान करा देवो॥

दोहा

हस्त लिखित श्रीराम का, लेकर कर मे लेख।
जनक सुता से यह कहा, लीजे माता देख॥

श्री रामचन्द्र ने पत्र मे लिख रखे, सभी इशारे थे।
थे शब्द वे चुन चुन के रखे, जो जो सीता को प्यारे थे॥
उस लेख मे था वह असर भरा, जो पढे वीरना आ जावे।
जो खुशी हुई पढ सीता को, वह कैसे यहा कही जावे॥

जैसे वसत मे खिले फूल, या जैसे मेला जंगल में।
और ग्रीष्म अन्त जैसे श्रावण, शुभ सखियां जैसे मगल में ॥
सीता को ऐसे लहर चढ़ी. जैसे कि लहर समुद्र में।
उस लेख पे ऐसे मस्त हुई, जैसे अहि भभरा सदल मे ॥

दोहा

सोच समझ निश्चय किया, अपने दिल मंझार।
जनक सुता हनुमान से, बोली गिरा उचार ॥

दोहा (सीता)

हां भाई मुझको हुवा, अब पूर्ण विश्वास।
खबर मुझे दी राम की, वीर तुझे शाबाश ॥

हे सच्चे उपकारी योद्धा, मैं कैसे गुण गाऊं तेरा।
इस दुर्गम राष्ट्र में आकर, तुमने ही कष्ट हरा मेरा ॥
अब इच्छा है प्रबल मेरी, श्रीराम के दर्शन चाहती हूं।
जिस कारण दिल है धड़क रहा, सो मैं भी तुझे बताती हूं ॥

दोहा

दुर्जन का यह देश है, तुम हो चतुर सुजान।
ऐसा न हो आपको, कष्ट देवे कोई आन ॥

अब जल्द यहां से जाकर के, श्रीराम लखन को बतलावो।
क्योंकि मुझको भय लगता है, तुम न कहीं यहां रोके जावो ॥
कह देना जो कुछ देर करी तो, सिया न जीती पावोगे।
मैं परभव मे पहुंचूगी यहां, और तुम पीछे पछतावोगे ॥

दोहा

कर्मगति की चाल को, भोगे सकल जहान।
कभी बढ़ाते मान यह, कभी घटाते शान ॥

है महा खेद उपकारी को, कहती हूं आप चले जावो।
क्या जोर चले कर्मों आगे, बेशक कोई हाथ मले जावो॥
यह महा दुःख मेरी जबान, मेरा ही मान घटाती है।
श्री रामचन्द्र के सेवक को, विश्राम न देना चाहती है॥

दोहा (हनुमान)

जैसा सीता नाम है, वैसा शीतल काम।
श्री रामचन्द्र से भी अधिक, इनकी मधुर जबान॥
जनक सुता के जब सुने, अमृत झरते वैन।
हाथ जोड़ बजरंग जी, लगे इस तरह कहन॥

तुम्हें धन्य मात हे जनक सुता, उदार चित्त वाली तुम हो।
तुम हो संकट मोचन हारी, महाशक्ति सुमति वाली तुम हो॥
तुम हो जगदम्बा महासती, दुखियों का दुःख हरने वाली।
क्या मात पिता क्या पति देश, सबको प्रसिद्ध करने वाली॥

दोहा

सेवक की यह अर्ज है, सुनो मात कर गौर।
यदि हुक्म हो लंक में, दिखलाऊ कुछ जौहोर॥

यदि आज्ञा हो तो मात तुम्हें, श्रीराम पे अभी पहुचा देऊं।
आज्ञा हो तो दशकन्धर, पापी का शीश उड़ा देऊ॥
निर्भय होकर हे जगदम्बा, तुम अपने मुख से फरमाओ।
दो हाथ बताऊ लंका में, सेवक की शक्ति अजमाओ॥

दोहा

कर सकते हो जो कहा, निश्चय आप निशंक।
पर द्रव्य काल और क्षेत्र को, सोचो हे बजरंग॥

चलूं आपके साथ वीर, इस हालत मे ये ठीक नहीं ।
जो लड़े अकेला रावण से, तो तेरी भारी पीठ नहीं ॥
बस मेरी यही सम्मति है, तुम जल्दी किष्किन्धा जावो ।
दल बल समेत श्रीराम लखन को, शीघ्र वीर लंका लावो ॥

दोहा (हनुमान)

जो फरमाया आपने, वहीं मुझे स्वीकार ।
मगर दीन की अर्ज पर, करना जरा विचार ॥

प्रथम तो फिक्र तजो माता, दूजे कुछ अन्न जल पान करो ।
तीजे कुछ आप निशानी दो, चौथे फिर आज्ञा दान करो ॥
अब देवरमण उद्यान देख कर, किष्किन्धा में जाता हूं ।
दल बल समेत श्रीराम लखन को, शीघ्र लंक में लाता हूं ॥

दोहा

प्रतिज्ञा पूर्ण हुई, किया सती ने आहार ।
फेर दिया हनुमान को, चूड़ामणि उतार ॥

दोहा (सीता)

लो हनुमान चूड़ामणि, रखो अपने पास ।
प्रीतम प्यारे से मेरी, करना ये अरदास ॥

हाथ जोड़कर कह देना, तुमरे दर्शन की प्यासी हूँ ।
क्यों आपने मुझको भुला दिया, मै तो चरणों की दासी हूं ॥
अब कृपा करो इस हालत पर, क्योंकि तुम दुःख निकन्दन हो ।
रघुकुल दिनेश काटो क्लेश, दशरथ के आप सुनन्दन हो ॥
लक्ष्मण देवर को कह देना, तुम पर ही तो विश्वास मेरा ।
और सिर्फ आपके नामों पर, चलता है श्वासोच्छवास मेरा ॥

रौरव नरक से भी बढ़कर, यह देवरमण उद्यान मुझे।
यदि हुई देर लाचार जिस्म, करना होगा श्मशान मुझे॥

दोहा (हनुमान)

माता अब विश्वास कर, हुवा सकल दुःख दूर।
लंकपति की लंक मे, उड़ने वाली धूर॥

मानिन्द घटा के राम लखन, लंका पर छाने वाले हैं।
बिजली समान वर धनुष बाण, वर्षा बरसाने वाले हैं॥
जैसे नभ में बादल समूह, ऐसे ही विमान अड़ा देंगे।
रावण की सारी शक्ति को, क्षण भर मे धूर मिला देंगे॥

हनुमान जी का गाना

तेरा चमकेगा तेज सितारा सती।
तैंने पतिव्रत धर्म निभाया है, और कष्ट अतुल उठाया है।
हमको तेरा ही है, आधार सती॥
तैंने धर्म पर जान कुर्बान करी, लिये रावण के हुई तेज छुरी।
होगा दुष्ट का अब, सहार सती॥
श्रीराम लखन अब आवेगे, गढ़ लका को धूर बनावेंगे।
यहाँ का पुण्य खत्म हुवा सारा सती॥
तैंने सतियों का धर्म प्रकाश किया, सच्चे शील भवन में वास किया
समझा सब कुछ और असार सती॥
दुःख दूर हुवा विश्वास करो, नमोकार मन्त्र का जाप करो।
श्री जिन वर का लो सहारा सती॥
अब किष्किन्धा को जाता हूँ, बस आज्ञा आप से चाहता हूँ।
लेवो अब प्रणाम हमारा सती॥
हम सग राजे हैं बलवान् कई, और दलबल का कुछ पार नहीं।
ध्यावो "शुक्ल" ध्यान सुखकारा सती॥

दोहा (सीता)

बार बार रघुराय से, यही मेरी अरदास।
कह देना श्रीराम को, अब मत करो निराश॥

दोहा (हनुमान)

माता मत घबराइये, दिल मे धारो धीर।
चन्द दिनों में आपकी, हर लेगे सब पीर॥

जो कहा आपने आदि अन्त, पर्यन्त सभी मैं कह दूंगा।
मुझको यहाँ कुछ भी कष्ट नहीं, यदि होगा तो सब सहलूंगा॥
अब आने मे कुछ देर नहीं, श्रीराम को यहाँ समझ माता।
लो नमस्कार मैं जाता हूं, श्री वीतराग को भज माता॥

दोहा

नमस्कार कर चलने को, हनुमत हुवा तैयार।
जल भर नयनों मे सिया, बोली गिरा उच्चार॥

सीता जी का गाना

जावो जावो जी हनुमत जावो, जल्दी राम लखन को लावो।
प्रीतम बिन यह नयन तरसते, दर्श बिना दिन रैन बरसते।
सब जाकर हाल सुनावो॥१॥
प्रेम के पुंज दया के सागर, रघुकुल दीपक करुणा सागर।
अब न मुझे तरसावो॥२॥
मैं दुखियारी कर्मों की मारी, सेवा न कुछ करी तुम्हारी।
ख्याल न दिल मे लावो॥३॥
सावधान हो करके जाना, प्रीतम को सब अर्ज सुनाना।
अब आनन्द घन बरसावो॥४॥

दोहा

सीता को सन्तोष दे, चले बीर हनुमान।
लगे देखने घूमकर, देवरमण उद्यान ॥

कभी खाते हैं सन्तरा, कभी बदाम की डाल झुकाते हैं।
कभी लेवें तोड़ अनार, रक्त फूलों पर हाथ जमाते हैं॥
फिर पहुँचे वीर अंगूरों के, गुच्छों पर हाथ चलाने को।
यह हाल देख उस तरफ, बाग का माली लगा चिल्लाने को॥

—***—

माली और हनुमान

दोहा (माली)

अरे २ कहा करत भयो, रह्यो अंगूर उजाड़।
मानत नहीं ढीठ तू, आकर देऊँ सुधार॥

आकर देऊँ सुधार तोये, मरनो पसन्द आयो है।
बिना हुक्म तू देवरमण में, कैसे घुस आया है॥
देऊँ थोथरो तोड़ फेर जो, मुख अंगूर पायो है।
यह सरकारी बाग मूढ़ तू, किसको बहकायो है॥

दौड़

आज तू कैद परेगो, जेल में कष्ट भरेगो, हुक्म नहीं यहाँ आने को, आन फंस्यो फन्दे मेरे, अब नहीं सूझो जाने को।

माली का गाना

अरे ढीठ उद्यान मे क्यों बड़ा।
किस तरह घुस गया, जब कि पहरा खडा॥
तोड़ने फल न दूंगा, मै हरगिज कभी,

निकल वाटिका से तू, बाहर अभी।
नहीं तो लगे बांस, अब कड़कड़ा ॥
हुक्म रावण का हमको, बडा सख्त है,
तू तो सुनता नहीं, फिर रहा मस्त है।
बेइजाजत तू क्यों, बाग मे आ बड़ा ॥२॥
तेरे सिर पर समझ, मौत मंडला गई,
परभव जाने की, तेरी खबर आ गई।
मैं था बेसुध गफलत में, सोया पड़ा ॥३॥

दोहा

बड बड़ करता इस तरह, पहुचा हनुमत पास।
निडर वीर खाते रहे, हुए ना जरा उदास ॥

यह हाल देख खामोशी का, माली गुस्से में लाल हुआ।
नयनों में डोरे रक्त खिचे, और भृकुटि सहित निडाल हुआ ॥
आकृति देख यह माली की, अजनी लाल मुस्कराते हैं।
और प्रेम भाव से माली को, यों शीतल वचन सुनाते हैं ॥

दोहा (हनुमान)

बागवान् कहो क्या तुम्हें, हो रहा कम्पन वाय।
मस्तक में कुछ फर्क या, गर्मी रही सताय ॥

आवो बैठो यहाँ शान्ति से, और हमको आज बताओ सब।
जो रोग औषधि सब देगे, क्योंकि फिर आवेगे कब कब ॥
एक रोग तो है प्रसिद्ध, मुख आकृति से दर्शाता है।
वह रोग क्रोध रूपी अग्नि, जो मुख आँखों से बरसाता है ॥

दोहा

हनुमान के वचन सुन, हो गया लाल अगार।
दांत पीस और शस्त्र ले, बोला गिरा उचार ॥

दोहा (माली)

अरे ढीठ तू हमन से, रह्यो मखोल उड़ाय।
भुट्टो सो यह सर तेरो, देऊँ धरन गिराय॥

जो बाग उजाड़ गेरो तूने, इसको अब स्वाद चखाऊँगो।
और जकड़ के रस्सों से तोहे, रावण के पास ले जाऊंगो।
काल तेरे सिर पर छायो, जो हमें बीमार बनावत है।
चोर काहीं को आन घुस्यो, और उल्टो धौंस दिखावत है।

दोहा

माली का वक्तव्य सुन, कोपे पवन कुमार।
कुछ तेजी में आन कर, बोले गिरा उचार॥

दोहा (हनुमान)

किस कारण अनुचित रहा, अपनी जबां चलाय।
क्या तेरे सिर पर रहा, आज शनिश्चर छाय॥

केवल यही विचार मेरा कि, किस पै हाथ उठाऊ मैं।
बुला आज दशकन्धर को, जिस को शक्ति दिखलाऊं मैं॥
क्षत्रापन का धर्म नहीं, तुझ रंक का खून बहाऊं मैं।
किन्तु अनुचित भाषण का, थोड़ा सा स्वाद चखाऊं मैं॥

दोहा

माली की दाढ़ी पकड़, दिये तमाचे चार।
दो ठोकर पीछे दई, मच गया हा हा कार॥

रुदन सुना जब माली का, मालिन भी दौड़ी आई है।
बच्चे-बच्ची मजदूरों ने, कोलाहल अधिक मचाई है॥
यह हाल देख उस बाग के, सारे रक्षक दौडे आये हैं।
मारो, पकडो यह भाग न जाये, मिलकर शोर मचाए हैं॥

दोहा

देख हाल ये पवन सुत, मन मे करे विचार।
उन सबके हित के लिये, बोले गिरा उचार॥
मूढ़ सभी क्यो बन गये, भगो बचाकर प्राण।
नहीं द्वेष तुम से कोई, कहा हमारा मान॥

क्यों हमसे रार बढ़ाते हो, निज-निज स्थान प्रस्थान करो।
मात-पिता की सेवा करना, और बच्चो से प्यार करो।
निज शक्ति कुल को देखे बिन, क्यों मौत पराई मरते हो।
अनमोल समय न मिले फेर, क्यों व्यर्थ ही कर से खोते हो॥

दोहा

सुन कर हनुमत के वचन, रक्षकराय रिसाय।
शस्त्र लेकर हाथों मे, बोला कदम बढ़ाय॥
अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत
माफी माली से मांग लो, अपनी रक्षा हेत॥

ना छूट सके यूं बातों से, अब तेरा उल्लू बनायेंगे।
और मार-मार तुझ को, दुग्ध छठी का याद करायेंगे॥
ऐसा सुन अञ्जनीलाल को, क्रोध बदन भर आया है।
विकराल बदन और गर्ज-तर्ज कर, थप्पड़ एक जमाया है॥
पड़त बज्र सम चपेटिका, प्रधान धरणि पर जाय पड़ा।
प्रचंड तेज लख अंजनीसुत का, सबके दिल मे खौफ भरा॥
पकड़ टांग से एक दूजे पै, गैंद समान गिराते है।
ये मार करारी देख सभी, जा सभा मे अर्ज सुनाते है॥

दोहा

भाग-दौड़ माली गये, रावण के दरबार।
सभी दुहत्थड़ मार कर, करने लगे पुकार॥

ध्यान सिया का हृदय में, दशकन्धर लाए बैठा था।
सब यथायोग्य बैठे बायें, सिंहासन पुत्र कनिष्ठा था॥
जब दृष्टि उठाकर देखा तो, माली सम्मुख रोते हैं।
नृप ध्यान हटा कुछ सीता से, इस तरह मुखातिब होते हैं।

दोहा (रावण)

क्यो रोते अय मालियो, कहो कष्ट का हाल।
किसने मारा है तुम्हे सूज रहे जो गाल॥

दोहा (माली)

बुरो हमन को हाल हुवो, सुनो श्री महाराज।
बालवचन के भाग से, बची जान यह आज॥

बची आज ये जान, आपके पास दौड़ आये हैं।
अर्ज यही कि देवमरण में, रहने को भरपाये हैं॥
तोड़ गेरो सब बाग फूल, अंगूर सभी खाये हैं।
आन घुसो कोई चोर, बाग मे हम सब घबराये है॥

दौड़

पतो ना क्या बलाय है, किसी से डरत नाय है।
तुमन को काढ़े गाली, चमु प्रधान से मार दिये हम तो
गरीब हैं माली।

दोहा

अक्षय कुंवर सुत की तरफ, देखा नजर उठाय।
विनीत पुत्र झटपट उठा, बोला मस्तक नाय॥

दोहा (अक्षय)

चाहता था मै भी यही, ठीक किया उपकार।
देखूं जाकर बाग मे, कौन है मूढ गंवार॥

कवच शस्त्र धारण कर जाऊं, संग में सैन्य ले जाता हूं ।
कौन घुसा ये आन बाग में, अभी पकड़ कर लाता हूं ॥
शीश झुकाया पिता को, आ टुकड़ी को हुक्म सुनाया है ।
अस्त्रों-शस्त्रों से सजवा करके, देवरमण में आया है ॥

दोहा

निश्शंक वहीं थे घूमते, अमित बली हनुमान ।
देख अकेला वीर को, बोला अक्षय धर मान ॥

दोहा (अक्षय-हनुमान)

बिना आज्ञा इस बाग मे, घुसा किस तरह आन ।
कारण जल्दी से कहो, नहीं काढलूं प्राण ॥

यदि प्राण प्यारे हैं तो सच-सच सब बाते बतलाओ ।
नहीं तो इस तलवार को, सिर देकर के परभव को जावो ॥
हाथ जोड़ कर क्षमा मांग, माली को शीश निवा जावो ।
फिर मांगो माफी सब जन से, यदि जान बचानी निज चाहो ॥

दोहा (हनुमान)

वाह-वाह-वाह क्या खूब, तू बजा रहा है गाल ।
जैसा रावण चोर तुम वैसे जन्मे लाल ॥

दोहा

. ई परस्पर इस तरह, दोनो की तकरार ।
दोनों योद्धों ने लिये, कर मे शस्त्र धार ॥

अक्षय कुमार की बिगुल बजी झट, मारा मार मची भारी ।
अब चले वीर के बाण सरासर, सेना करते संहारी ॥
पता लगे ना चाप का कब मारा, कब कर मे बान लिया ।
यों छाया सारा व्योम बाणों से, चंदोवा सा तान दिया ॥

जिधर गये बजरंगी बाण, सब सेना चपट कर डारी है।
ये हाल देख घबराई सेना, भगी पड़ी अति भारी है॥
ये हाल लखा जब अक्षय कुंवर ने, धनुष बाण उठाया है।
पर पेश गई न वीर के सम्मुख, सरासन अपना टिकाया है॥
जब अक्षय कुंवर निज खड़ग तान हनुमान के सम्मुख आन अड़ा
और इधर वीर बजरंगी का, वज्र पर दाहिना हाथ पड़ा॥
अक्षय कुंवर ने खडग तान कर, अंजनीलाल पर झोंक दिया।
पर पवनपुत्र ने वार बचा, निज वज्र उस पर ठोक दिया॥

दोहा

अक्षय कुमार धरनी गिरा, मच गया हा हा कार।
कुछ बचे आदमी सैन्य के, दौड़े करन पुकार॥

दोहा (दूत रावण का)

वज्रपात प्रभु हो गया, परलोक सिधारे कुमार।
इन्द्रजीत को सुनते ही, छाया जोश अपार॥

दोहा

सुन मूर्छित लघु भ्रात को, इन्द्रजीत रणधीर।
तमक उठा सारा बदन, यों बोला बलवीर॥

यों बोला बलवीर देखूं जा, बला ये क्या आई है।
यदि निकला कोई अन्य मनुष्य, उसकी शामत आई है॥
तीन खंड मे भुजबल की, शक्ति मैं दिखलाई है।
आज यह कर्त्तव्य करने की, यहाँ किसमें जुर्रत आई है॥

दौड़

किये का दण्ड पायेगा, भाग कर कहाँ जायेगा।
सिर्फ आज्ञा चाहता हूं, बाँध जड़ कर उसी दुष्ट
को अभी यहाँ लाता हूं।

दोहा (रावण)

हाँ बेटा जावो अभी, देवरमण उद्यान।
पकड़ उसे लाकर धरो, मेरे सम्मुख आन॥

इन्द्रजीत-हनुमान

दोहा

कवच पहन तन पर लिये, सब हथियार सजाय।
इन्द्रजीत उस बाग मे, पहुंचा जल्दी जाय॥

जब नजर मिली बजरंगी से, तो दोनों वीर मुस्कराये हैं।
दोनों के भुजदण्ड फड़क उठे, शस्त्रों पर हाथ जमाये है॥
जब अक्षयकुमार को देखा तो, नयनों में सुर्खी आई है।
तब क्रोधातुर हो इन्द्रजीत ने, ऐसे बात चलाई है॥

दोहा (इन्द्रजीत)

अय मूर्ख तू किस लिये, फसा मौत मुख आन।
इकलौता ही लाल तू, सोचा नहीं नादान॥

क्यों प्रहलाद का वंश आज, निर्वंश करन की ठानी है।
अब लंका से नहीं ले जा सकता, ये अपनी जिन्दगानी है॥
अक्षयकुमार और वज्रमुखा, दोनों को तूने मारा है।
अब सोच जरा अपने मन में, कैसे होगा छुटकारा है॥
यदि ख्याल हो तेरा भागन का, सो भी आशा निष्फल होगी।
नादान नहीं कुछ भी सोचा, परिवार बनेगा सब शोगी॥
बस एक यही रास्ता तुमको, पहनो कर में जंजीर अभी।
चल सैर करो कारागार की, वख्तर शस्त्र दो छोड़ सभी॥

शेर (हनुमान)

संहार इस वज्र से मैने, दोनों का ही कर दिया ।
ठोकर से गेरू ताज रावण का ये, दिल मे धर लिया ॥
जामात तेरे बाप का, जंजीर पहनेगा नहीं ।
कंगना विजय का हाथ मे, सज कर दिखा देगा यहीं ॥
आदत ये तेरे बाप की है, दुम दबाकर भागना ।
हम शूरमों का काम है, शत्रु के सम्मुख गाजना ॥
मुश्किल बताता जंग मे, धोखे में रह जाना नहीं ।
इस मौत रूप वेग में तू, देख बह जाना नहीं ॥
कहना तेरा ये ठीक मैं, अंजना का एक ही लाल हूं ।
उस सिंहनी का सिंह, तुम सब के लिये मैं काल हू ॥
सिंहनी के सिंह ही, होते अतुल बलवान हैं ।
मानिन्द गधी के जन दिये, मन्दोदरी ने लाल हैं ॥

शेर (इन्द्रजीत)

शेखियां तेरी सभी यह, धूल मे मिल जायेंगी ।
पहुँचेगा तू परभव में, और बाते यहाँ रह जायेगी ॥

शेर (हनुमान)

शक्ति है कितनी मुझ में, यह वज्र पता देगा ।
आ सामने तुझको, तजुर्बा सब बता देगा ॥

दोहा

सुनी काट करती हुई, हनुमान की बात ।
इन्द्रजीत का क्रोध से, लगा कांपने गात ॥

जुट गये वीर रण मे दोनो, दोनों ही थे गम्भीर बली ।
बाणो की वर्षा बंद हुई, फिर दोनों की तलवार चली ॥

कभी नभ में कभी भूतल पर, अप अपना जोर लगाते हैं।
ना वो हारा ना वो हारा, दोनो ही लज्जा खाते हैं॥

दोहा

देख तेज हनुमान का, इन्द्रजीत हैरान।
वज्रङ्गबली के सामने, ढला आज सब मान॥

इन्द्रजीत मन सोच रहा, ये तो बिल्कुल ही आफत है।
हनुमान भी यही विचार रहा, किसको दे बैठा जाफत है॥
रावण से भी बातें दो करके, किष्किन्धा को जाना है।
दे रामचन्द्र को सभी खबर, सीता का कष्ट मिटाना है॥

दोहा (हनुमान)

चेहरे पर कहो किस लिये, गई उदासी छाय।
अपने दिल के भाव सब, देवो जेल्द बताय॥

क्या मुझको रिश्तेदार समझ, तुमने नहीं चोट लगाई है।
या दशकधर के पास चलूं, यदि दिल में-यही समाई है॥
मैंने तो समझा था लका, वालों में कुछ दानाई है।
पर यहां अक्ल के खाने में, सबके ही सिफर समाई है॥

दोहा (हनुमान)

क्यों मेंढक सा उछल कर, रहा जबान चलाय।
स्वयं आप घबरा गये, हमको रहे चिड़ाय॥

अभी तो मैंने केवल तेरी, शक्ति ही आजमाई है।
ले सम्भल खड़ा हो जा जल्दी, अब तेरी शामत आई है॥
जब मौत शृगाल की आती है, तो ग्राम सामने आता है।
था अब तक रिश्तेदार किन्तु, अब तो शत्रु कहलाता है॥

दोहा

इतना कह बजरंग पर, नाग फांस दिया डार।
बैठा कर विमान में, पहुँचा लंक मंझार ॥

जा पेश किया दशकंधर के, सम्मुख हनुमान बैठाया है।
तब इन्द्रजीत की पीठ ठोक, दशकंधर अति हर्षाया है॥
दरबार ऐन भरपूर हुवा, कई देख २ खुश होते हैं।
कई बुद्धिमान् अन्याय समझ, अंजाम सोच कर रोते हैं॥
वीर विभीषण भी अपने, सिंहासन पर थे विराज रहे।
कुछ अन्तर से थे भानुकर्ण. योद्धा भी वहाँ विराज रहे॥
देख २ निज गौरव को, दशकंधर जी खुश होते हैं।
फिर पवन पुत्र से लकपति, इस तरह मुखातिब होते हैं॥

रावण-हनुमान

(हनुमान जी व रावण का संवाद)

रावण—अहो पवनपुत्र तुमने यह क्या किया ?

हनुमान—जी हाँ जब तक आत्मा की मोक्ष नहीं हो जाती तब तक यह संसार मे कुछ न कुछ अवश्यमेव करता ही रहता है। इसलिये आपकी इच्छानुसार जो कुछ आपको अच्छा लगा सो आपने किया। जो कुछ मेरा कर्त्तव्य था सो मैंने कर दिया।

रावण—क्या तेरा यही कर्त्तव्य था, कि चोरी से देवरमण में घुसना, बागवानों को सताना, नागफांस मे फंसकर यमराज के हाथ मे अपनी जान देना।

हनुमान—आपकी बात बिल्कुल ठीक है किन्तु मेरे साथ सम्बन्ध नहीं बैठता। यदि आप हृदय में विचार कर देखेंगे तो आपके ऊपर ही घटती नजर आयेगी।

रावण—अरे हनुमान तेरी समझ पर क्या पत्थर पड़ गया है। मैं तो भानेज जंवाई समझ कर प्रेम से कुछ पूछना चाहता हूँ और तुम मेरे से विपरीत ही चलते हो। और यह गन्दी बात हमारे ऊपर ढालते हो।

हनुमान—वाह वाह क्या कहने है। आपको एक शर्म नहीं और सब गहने हैं। अजी भानेज जमाई के वास्ते तो आपके प्रेम की ही सीमा न रही अहा हा देखो तो सही ऐसा आभूषण कोई प्रेम के बिना किसी को पहिना सकता है। हरगिज नहीं और इसका नाम भी क्या है। (नागफांस, और जिस बात को आप अपने वास्ते गन्दा समझते है। उसे प्रेम भाव ही तो मेरे ऊपर लगा रहे है।

रावण—अरे यह तो तेरे खोटे कर्मों का फल है।

हनुमान—वाह यह खूब उचरे नानी खसम करे दोहिता चट्टी भरे। दुष्ट काम करने वाले आप और इसका फल भोगने वाला मैं। भला ऐसा घोर अन्याय हो वहाँ का राज्य और सुख सम्पति क्यों ना नष्ट हो यह किसी कवि ने क्या ही उत्तम पद कहा है कि—

विगरे पय कांजी की छीट परे, कलधोत कुघात परे विगरे।
विगरे तपपुञ्ज कषाय चढे, पद ऊँच कुसंगति ते विगरे॥
विगरे कुल जात कलंक लगे, नृपराज अनीति करे विगरे।
विगरे हित मित्र जहां छल है, शुभ धर्म मृपामति से विगरे॥

रावण—अनीति मैंने की या तूने।

हनुमान—सोचो मैंने की या कि तुमने ।

रावण—सोचने की क्या बात है । यह तो प्रत्यक्ष सामने नजर आती है । और अब भी आँखों में धूल डालना चाहता है।

हनुमान—क्यों बतलाइये मैंने क्या करी !

रावण—अरे दुष्ट तूने आशालोकोट क्यों ढाया ।

हनुमान—तुमने को लगाया क्या किसी दुष्टकर्त्तव्य का डर था

रावण—देख जबान को लगाम लगा ।

शेर

औकात अपनी देख कर, बातें बनाना चाहिये ।
जैसा पचे भोजन उदर में, वैसा खाना चाहिये ॥

हनुमान—हां, मुँहजोर टट्टू को कांटेदार लगाम की आवश्यकता है ।

शेर

क्षत्रिय का जो चिन्ह वह ललकारता मैदान में
चोर की औकात क्या, बातें करे जो सामने ॥

रावण— अच्छा तैंने बज्रमुखा को क्यों मारा ।

हनुमान—उसने मुझको क्यों रोका ।

रावण—अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए।

हनुमान—उसका क्या कर्त्तव्य था ।

रावण—अन्य राष्ट्र वाले को अन्दर नहीं आने देना ।

हनुमान—यदि दूत होतो ?

रावण—दूत को नहीं रोकना ।

हनुमान—बस मैं आपके कथनानुसार निर्दोष होगया ।

रावण—क्या तू दूत है ?

हनुमान—और क्या भूत हूं ।

रावण—किसका दूत बन कर आया है ?

हनुमान—वाह आप किस अन्धेरी कोठरी में बैठे है। आपके पास पत्र आ चुका है, सारी दुनियाँ मे प्रसिद्ध हो चुका, यदि आपको भी फिर पता नहीं तो बताये देता हूँ-मैं दूत हूं अयोध्या पति श्री रामचन्द्र जी महाराज का।

रावण—वाह खूब सुनाई। जगली भीलों का दूत बन के आया है। खैर इस बात को तो फिर चलायेगे परन्तु यह बतलाओ कि देवरमण में बिना आज्ञा क्यों घुसा।

हनुमान—देवरमण कहाँ है।

रावण—तुमको खबर नही।

हनुमान—किस बात की।

रावण—अरे जहाँ मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है क्या तुमको यह भी नजर नहीं आया।

हनुमान—अच्छा तो देवरमण शब्द जहाँ मर्जी लिखदें वह चोर पल्ली भी क्यों न हो तो क्या उसी का नाम देवरमण हो जाता है।

रावण—अरे जहाँ तैंने मालियों को मारा, अक्षकुमार को मौत के घाट उतारा, जहाँ मेघनाद ने तुमको नागफांस में बांधा क्या वो चोर पल्ली है।

हनुमान—चोर पल्ली नहीं तो और क्या है।

रावण—भला कैसे चोर पल्ली है।

हनुमान—अजी जहाँ चुराई हुई वस्तु छिपाई जाय और भले पुरुष को भी अन्दर न आने दिया जाय।

रावण—क्या छिपाया।

हनुमान—जिस काम को नीच भी नहीं करते उस नीच काम से भी नीच काम को आपने किया। श्री रामचन्द्र जी की

महारानी सीता जी को चुराया। और चोर पल्ली मे छिपाया। उसको छिपाने वाला चोर नहीं तो और क्या। और जहां सीता जी को छिपाया चोरपल्ली नहीं तो और क्या है?

रावण—तू दूत है वरना तेरा सिर उड़ा देता।

हनुमान—क्या कहना है शूरमा हो तो ऐसा ही हो। वन मे गीदड़ की तरह छिप कर सिंहनाद बजाना, धाखे से सीता का चुराना, पूंछ दबाकर भागना, भला ऐसे नपुंसकों ने भी कहीं मैदान मारा है? असली बात का कोई उत्तर नहीं। बस यही सीखे है कि सिर उड़ा दूंगा। अजी सिर तो आपका उड़ने वाला ही है। जिसको आप बुलावा दे आए हो। क्या वह लक्ष्मण का शस्त्र आपका सिर लेने को न आयेगा? नहीं नहीं, अवश्य आयेगा।

रावण—यदि तू दूत है तो अक्षयकुमार के साथ लड़ने की क्या जरूरत थी?

हनुमान जी—निरपराधी के ऊपर वार करने का तो मेरा भी नियम है।

रावण—उसने तेरा क्या अपराध किया?

हनुमान—हा-हां गालिया दीं, मारने को शस्त्र झोका, क्या फिर भी अपराधी ही ना हुआ?

रावण—अरे तूने पहले मालियो को सताया, ठोकरों व तमाचों से उनका शरीर व मुख सुजा दिया, फिर भी तू अपराधी न हुआ। और बाग का मालिक, गरीब मालियों का सहायक अक्षयकुमार अपराधी बन गया।

हनुमान—हां अपराधियों का सहायक अपराधी नहीं तो और क्या होता है।

रावण - मालियों ने तेरा क्या बिगाड़ा था ?

हनुमान—हां उन्होंने अनुचित शब्द कहे, बद जबान चलाई और मैने दो थप्पड़ व ठोकर लगाई।

रावण—उन्होंकी आज्ञा बिना देवरमण में क्यों घुसा और फल क्यों खाये ?

हनुमान—फिर वही बात। अजी मैं तो चोरपल्ली में गया था अपना मुद्दा ढूंढने के लिये, सो मेरा कार्य सिद्ध हो गया और मै लंका को चोरपल्ली, यहा के निवासियों को चोर और आपको सबका सरदार समझता हूं।

रावण शेर—

अब अधिक जो कुछ कहा, तो सर उड़ा दूंगा।
तेरे जिस्म से जीव का, नाता छुड़ा दूंगा ॥

हनुमान शेर—

शेखियां तेरी ये, मिट्टी मे मिलाऊंगा।
ताज ठोकर से गिरा, मस्तक का जाऊंगा ॥

इन्द्रजीत—पिताजी आप किस पागल से मगजपच्ची कर रहे हैं महाराज! भूत का इलाज हमेशा जूत होता है। आप तो शान्ति के समुद्र है। परन्तु ऐसे अयोग्य शब्दों को मै सहन नहीं कर सकता।

[खड्ग खैंच कर]

शेर—

अनुचित शब्द कहने से, पहले सिर उड़ा देता।
खाल में भुस भर के, रास्ते पर टिका देता ॥
बस मै आगे और कुछ कानों से, सुन सकता नहीं।
सिर उड़ाये बिन मै, इस शत्रु का रह सकता नहीं ॥

इन्द्रजीत-विभीषण

विभीषण जी—बस-बस बेशर्म, कुपात्र–तू कहां से कुल कलङ्क पैदा होगया। तू भाई रावण का हितकारी पुत्र नहीं, किन्तु शत्रु है। भला तेरा बीच मे बोलने का क्या अधिकार था। अय मूढ़! तूने आज असख्य पीढ़ियों से और असख्य समय से चली आती हुई राजनीति का भग किया है। बस यदि अपना भला चाहता है तो चुपचाप वापिस यहां से उसी जगह बैठ जाओ। मैं इस अन्याय को नहीं देखना चाहता। यदि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो अपनी तलवार से तेरा सिर उड़ा दूंगा। जब तक मै जीता हूॅ, जहाॅ तक मेरी शक्ति है, तब तक अपने भाई त्रिखण्डेश्वर श्री दशकन्धर के गौरव को नीचा न होने दूॅगा। दूत का कर्त्तव्य है कि अपने स्वामी की आज्ञा नर्म या कठोर जैसी मर्जी वैसे कठोर शब्दों में सुना सकता है और सुनना हमारा कर्त्तव्य है।

रावण—ठीक, विभीषण का कहना ठीक है और तुम गलती पर हो। राजनीति मे दूत अवध्य है। और यह भी सोचना चाहिये कि जिसको जैसी संगति होती है वैसे ही उनमें सस्कार पड़ जाते हैं। किसी ने यह सत्य कहा है—

दोहा

जैसी सौबत बैठते वैसे ही गुण लीन।
कदली सीप भुजग मुख एक बूंद गुण तीन॥

जैसे जंगली मनुष्य राम लक्ष्मण हैं वैसा ही यह दूत है। एक और यह भी सोचने की बात है कि जब उनकी स्त्री पर हमारा अधिकार है। क्या बेचारे गालियों से भी गये। यही ने

निर्बल और शक्तिशालियों की परीक्षा की कसौटी है। यह स्वाभाविक बात है कि निर्बल गालियाँ ही निकाला करते है और बुद्धिमान सह लेते है। इसलिये तुम अपने दोष को स्वीकार करते हुए उल्टे पैरों अपने सिंहासन पर बैठ जाओ।

इन्द्रजीत—पिताजी आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है परन्तु यह याद रखे कि चचा साहिब ने इस समय शत्रु की सहायता की है और मेरा सिर उड़ाने में नीति समझी है। आपने भी शत्रु की सहायता करने वाले की प्रशंसा की है लेकिन समय आने पर आपको प्रत्यक्ष दिखला दूँगा कि देखलो शत्रु की सहायता पर पूर्ण तुले हुए हैं। ऊपर से ये तुम्हारे भाई हैं। और प्रेम दिखलाते हैं किन्तु निश्चय ये शत्रु हैं। आप भी इनके साथ मिल कर नीति-नीति पुकारते हैं। पिता जी शक्ति ही नीति है, कहावत भी प्रसिद्ध है कि "जिसकी लाठी उसी का सिर" शत्रु और कांटे को जहां पावे, वहीं मसल देना चाहिये। बस यही सर्वोत्कृष्ट नीति है। शक्तिशाली अपना काम कर जाते है और निर्बल नीति-नीति करते मर जाते हैं। अच्छा हमे क्या। जैसी मर्जी वैसा करे, जब आपके सामने कोई कठिन समस्या आयेगी स्वयं पता लग जायेगा।

[मेघनाद का अपने स्थान पर बैठ जाना]

रावण—क्यों हनुमान जी कुछ घबरा रहे हो या किसी विचार में लग रहे हो।

हनुमान—जी नहीं, घबराना किससे है। कुछ आप लोगो का तमाशा देख रहा था और कुछ विचार भी कर रहा था।



रावण-हनुमान

रावण—क्या विचार कर रहे थे।

हनुमान—जी हाँ एक दृष्टान्त पर मेरा ध्यान चला गया था। उसको आप ही के ऊपर घटा रहा था।

रावण—फिर घटा है या नहीं ?

हनुमान—जी हाँ, बिल्कुल ठीक बावन तोले पाव रत्ती।

रावण—क्या दृष्टान्त है, हम भी सुनें।

हनुमान—महाराज एक पर्वत के समीप मिरासी लोग रहा करते थे, पथरीला क्षेत्र विशाल था। अन्नादिक की उत्पत्ति कम होती थी। वहाँ के राजा ने सोचा कि इन रंक मिरासियों से क्या कर लेना है मानो एक स्वतन्त्र मिरासियों की रियासत ही बन गई थी। प्रायः ये लोग कलह प्रिय होते हैं, एक दूसरे के घर, मुहल्लों पर अधिकार जमा लेते थे। कई पीढ़िया तक इनकी यही दशा रही, उसके बाद एक मिरासी के तीन पुत्र पैदा होगये। जिनमें बड़ा पुत्र झगड़ालु, जल्दबाज, कलह प्रिय, आचार-विचार भ्रष्ट, कुपात्र था, दूसरा अपने भाई के अनुकूल चलने वाला जिसको अच्छे बुरे की पहिचान न थी. भद्र और शूरवीर था, तीसरा पवित्रात्मा, सत्यवादी, न्यायी सदाचारी था। बड़े पुत्र ने अपने बड़ों से छिनी हुई रियासत घर-मुहल्ला जो कुछ भी था, उसे अपनी शक्ति व प्रभाव से वापिस छीन लिया तथा आसपास के मिरासियों पर अधिकार जमा कर मानो एक स्वतन्त्र राजा बन बैठा और आनन्द से रहने लगा। इधर-उधर किसी की पुत्रियों को राजकुमारियों को अपहरण कर लेना, किसी को सताना

उसका कुकर्त्तव्य था, परन्तु शक्तिशाली था इसलिये सब लोग डरते थे। उस अन्यायी का सामना करते हिचकते थे। एक दिन श्रेष्ठ राजा अपनी रानी को साथ लेकर भ्रमण करता हुआ उसी पहाड़ के समीप आ निकला। मिरासी राजा की नजर श्रेष्ठ राजा की पतिव्रता पर पड़ी और अपहरण कर लाया। धर्मात्मा राजा ने अपना दूत भेजा लेकिन नीति से अनभिज्ञ मिरासियों ने दूत का भी अपमान किया। यह देख दूत ने जाकर अपने स्वामी से सब वृत्तान्त कह दिया तथा उस न्यायी राजा ने कुछ योद्धाओं को भेज कर मिरासियो को अन्याय करने का स्वाद चखाया, कुछ भाग गये, कुछ कैद कर लिये और अपनी रानी को साथ ले गया। सो मै भी यही विचार कर रहा था कि देखो बुद्धिहीन शठों ने अपना सर्वस्व नाश करा लिया।

रावण—अच्छा तो यह दृष्टान्त हमारे ऊपर घटाया है।

हनुमान—मैंने क्या जबरदस्ती घटाया है, यह तो स्वयं ही घट गया।

रावण—तो हम मिरासी हैं।

हनुमान—आप जो मर्जी बने, मैंने तो उनकी तरह बतलाया है।

रावण—अरे तुल्य कहो, तरह कहो, भांति कहो, इसमे भेद ही क्या है।

हनुमान—नहीं तो ना सही, इसमे भेद की जरूरत ही क्या है।

रावण—मुझको क्रोध बहुत आता है। किन्तु क्या करूं तू दूत है।

हनुमान—नहीं तो।

रावण—नहीं तो तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालता।

हनुमान अच्छा मैं रामदल में सैनिक बन कर दूसरे रूप मे

रावण-हनुमान

रावण—क्या विचार कर रहे थे।

हनुमान—जी हाँ एक दृष्टान्त पर मेरा ध्यान चला गया था। उसको आप ही के ऊपर घटा रहा था।

रावण—फिर घटा है या नहीं ?

हनुमान—जी हाँ, बिल्कुल ठीक बावन तोले पाव रत्ती।

रावण—क्या दृष्टान्त है, हम भी सुनें।

हनुमान—महाराज एक पर्वत के समीप मिरासी लोग रहा करते थे, पथरीला क्षेत्र विशाल था। अन्नादिक की उत्पत्ति कम होती थी। वहाँ के राजा ने सोचा कि इन रंक मिरासियों से क्या कर देना है मानो एक स्वतन्त्र मिरासियों की रियासत ही बन गई थी। प्रायः ये लोग कलह प्रिय होते हैं, एक दूसरे के घर, मुहल्लों पर अधिकार जमा लेते थे। कई पीढ़ियां तक इनकी यही दशा रही, उसके बाद एक मिरासी के तीन पुत्र पैदा होगये। जिनमें बड़ा पुत्र झगड़ालु, जल्दबाज, कलह प्रिय, आचार-विचार भ्रष्ट, कुपात्र था, दूसरा अपने भाई के अनुकूल चलने वाला जिसको अच्छे बुरे की पहिचान न थी, भद्र और शूरवीर था, तीसरा पवित्रात्मा, सत्यवादी, न्यायी, सदाचारी था। बड़े पुत्र ने अपने बड़ों से छिनी हुई रियासत, घर-मुहल्ला जो कुछ भी था, उसे अपनी शक्ति व प्रभाव से वापिस छीन लिया तथा आसपास के मिरासियों पर अधिकार जमा कर मानो एक स्वतन्त्र राजा बन बैठा और आनन्द से रहने लगा। इधर-उधर किसी की पुत्रियां व राजकुमारियों को अपहरण कर लेना, किसी को सता

परन्तु यदि मैं भी इसको प्रत्युत्तर में सजा दूं तो मेरा और उसका अन्तर ही क्या रह जायेगा। किन्तु नहीं हमारी शोभा और गौरव हनुमान के ऊपर अनुग्रह करने में ही है।

कुम्भकर्ण—निस्सन्देह महाराज आपको ऐसा ही सोचना चाहिये। [क्षमा वीरस्य भूषणम्] अर्थात् दूसरों पर कृपा करना, मिष्ट वचन बोलना, विचार कर काम करना ही बड़ों का भूषण है तथा (उदारचित्तानां वसुधैव कुटुम्बकम्) अर्थात् उदार हृदय वाले पुरुष का समस्त संसार ही निज का कुटुम्ब है। फिर हनुमान तो हमारे पुत्रवत् है। यदि इसका जो भी कुछ अपमान हुआ वह हमारा ही तो हुआ।

शेर

भूले को समझाना यही, कर्त्तव्य है इन्सान का।
करना नहीं अपमान, घर आए हुए मेहमान का॥

विभीषण—भानुकरण जी का कथन सुनहरी अक्षरों में लिखने लायक है, तथा मेरी जबान इन अनमोल शब्दों का आशय प्रकट करने में असमर्थ है। अब इतना ही कहना चाहता हूँ कि महाराज का और हनुमान जी का परस्पर प्रेमपूर्वक वार्तालाप होना चाहिये।

शेर

जिसको नजर आता स्वयं, मार्ग वही बतलायेगा।
जो आप ही उल्टा चल रहा, औरो को क्या समझायेगा॥
कर्त्तव्य अप अपना पिछाने, मनुष्य का ये धर्म है।
नहीं तो उसे जानो पशु, या यों कहो बेशर्म है॥

इसलिए हमारी दोनों से प्रार्थना है कि प्रेम पूर्वक वार्तालाप हो और हनुमान जी! आप से हम विशेष करके कहते हैं।

आपसे जंग करने के लिये आऊंगा उस समय यह क्रोध मेरे ऊपर निकाल लेना, किन्तु यह याद रखना कि मेरे सामने आने से पहले ही किसी योद्धा की झपट में आकर परभव को सिधार न जाना।

शेर (रावण)

सूरमा मैंने कोई, संसार में छोड़ा नहीं।
नीचा दिखाये बिन, किसी को आज तक मोड़ा नहीं॥
आएंगे शक्ति कौनसी पर, भील मेरे सामने।
नाम ही रावण का सुन, योद्धा लगें सब काँपने॥

शेर (हनुमान)

चाल जो राजा की हो, सो चाल चलनी चाहिये।
ठोकरें खाने से पहले ही, संभल जाना चाहिये॥
शेखियां सारी ये रण, भूमि में देखी जायंगी।
वीर लक्ष्मण के अगाड़ी, धूल में मिल जायगी॥
शेर की मूछों पै डाला, हाथ क्या छूट जायेगा।
कच्चे चित्र की तरह, दुनिया से तू मिट जायेगा॥

रावण (भानुकरण)—विभीषण देखो, रामचन्द्र जंगली भील होते हुए भी चालाक और धूर्त कितना है। जिसने हमारी छत्र छाया में रहने वाले हमारे सेवक हनुमान को भी कैसे फंदे में फँसाया है, पता नहीं क्या जादू डाला है। जिसके प्रभाव से अपने कुल का गौरव और हमारा प्रेम तो क्या जिसने अपने शरीर की भी सुध-बुध भुला दी। और रामचन्द्र शिकारी की तरह आप तो नहीं आया किन्तु हनुमान को कुत्ते की तरह मुझ जैसे सिंह के सामने भेज दिया। अब इसने तो बिना सोचे समझे अज्ञानता से अनुचित काम किया

रावण---मैंने समझ लिया कि तू हवा के घोड़े पर सवार है,

हनुमान---जो मर्जी कहो वह आपके अख्त्यार है।

रावण---मैं क्या करूं जब काल तेरे सिर पर तैयार है।

हनुमान---जी हाँ, काल तो सबके ऊपर आयेगा, कोई शुभ नाम और कोई अशुभ नाम फैलाकर मर जायेगा।

रावण कथन (ब० त०)

होश मे आन कर बात कर तू जरा।
वीर पृथ्वी के मुझको सलामी करे॥

तेरा गौरव मेरे संग बढ़ जायेगा॥
रामचन्द्र की क्यों तुम गुलामी करे। (१)

वह तो स्वयं ठोकरे खाते वन में फिरे॥
ऐसे भीलों से तुम क्यों कलामी करें।

"शुक्ल" कर दूंगा वृद्धि तेरे राज्य की॥
ता उमर क्यो न अपनी आरामी करें। (२)

हनुमान (ब० त०)

यह कहना उन्हे जो हों अज्ञानी जन,
मेरे खुले हैं सारे हृदय चस्म के जख्म।

सिक्का ढल जायेगा सारा पल मे तेरा,
इस लका में तेरी न होगी रस्म।

जिन्दगी तेरी समझ खत्म हो गई,
रामचन्द्र के रण में तू होगा भस्म।

तुख्म छोड़े ना लंका मे हरगिज तेरा,
साफ कहता हूं खाकर मैं तेरी कसम।

हनुमान—आपका कथन मुझे स्वीकार है किन्तु ईंट का उत्तर तो मैं पत्थर से ही दूंगा। क्योंकि—

शेर

चाकर हूँ मैं श्रीराम का, उनका सिपाही हूं।
भाई भले का समझ ले, बद का जमाई हू॥

जिसको अपने गौरव की जरूरत हो वह दूसरों का गौरव बढ़ाने की कोशिश करे।

शेर

शिक्षा लई गुरुदेव से मैं, पहल कर सकता नहीं।
जो होगा अपराधी कभी मैं, उससे टल सकता नहीं॥
सत्य का पक्षी हूँ मैं, प्रतिपक्षी हूँ अन्याय का।
खौप खोटे कर्म का, सेवक हूं श्री जिनराय का॥

रावण—ठीक, पवन कुमार मनुष्य को ऐसा ही होना चाहिए। अब जरा शान्ति से सुनें उसके ऊपर विचार करें।

हनुमान—जी हाँ ध्यान से सुनूंगा।

रावण—अच्छा प्रथम लंका और अयोध्या की तुलना करके देखो कि कितना अन्तर है

हनुमान—किस बात का।

रावण—जल वायु का, स्वाभाविक दृश्यों का, रूप का, शक्ति का, पुण्य प्रताप का, मेरा और रामचन्द्र का इत्यादि सब प्रकार का।

हनुमान—जी हाँ ऐसे तो पृथ्वी और आकाश मे जितना अन्तर है। अयोध्या पुरी जैसे स्वर्ग, लंका जैसे नर्क रामचन्द्र जैसे सुरेन्द्र आप जैसे असुरेन्द्र इत्यादि सब प्रकार का।

फिर एक बार मैं आया था, जिस समय आप पर भीड़ पड़ी।
उस समय तुम्हारे चहुँ ओर, दुर्जन की थी सगीने खड़ी॥
जब आपके लगे घसीटने को, वहाँ वरुण भूप के सुत दल मे।
तब मैंने आकर छुड़वाया था, तुमको शत्रु के दंगल मे॥

दोहा

शुभ कर्त्तव्यो पर जरा, रखना चाहिये ध्यान।
गौरव निज पहचान कर, तजो निरस अभिमान॥

आज तीन बातों को लेकर, हुआ मेरा यहाँ आना है।
प्रथम सीता की खबर लेन, दोयम तुमको समझाना है॥
यदि आप नहीं समझे तो, फिर जंगी ऐलान सुनाना है।
और नाग फांस के बंधने का, बदला लेकर भी जाना है॥

अब सोचो आप जरा मन में, किस गौरव पर थे खड़े हुए।
और तीन खंड में सब राजों के, मस्तक पर थे चढ़े हुए॥
किन्तु आज सब दुनियाँ की, दृष्टि से आप हैं गिरे हुए।
हैं बड़े बड़े शक्तिशाली राजों के, दिल भी फिरे हुए॥

बस यही हमारा कहना है, जगदम्बा को वापिस कर दो।
जिस बात से प्रेम घटा सब का, फिर भी उसको वैसा कर लो॥
वह पुण्य समाप्त अब हुवा आपका, सीता माता के हरने से।
हम सब का भी मन फटा एक बस, यही अनीति करने से॥
जिस शक्ति का अभिमान तुम्हे, वह सभी धरी रह जायेगी।
अब तक तो कुछ भी नहीं बिगड़ा, फिर बात हाथ नहीं आयेगी॥
यह समय हाथ से निकल गया, तो फिर पीछे पछताओगे।
लक्ष्मण आगे रणभूमि से, तुम अपने प्राण गंमाओगे॥

जर्द चेहरा हुवा देख गममें तेरा,
हिल चुकी है तुम्हारी सब नब्जो नसम।
"शुक्ल" थोड़े दिनो में तेरे जिस्म की,
बस उठा लेंगे डोली में गाके नजम।

शेर (रावण)

सोच अपने मन में अब तू, क्या था और क्या हो गया।
जो साथ मेरे था तेरा गौरव वो, सारा खो गया॥

कहाँ तो सुग्रीव और हनुमान को दुनियाँ राजा रावण की मूछों का बाल कहती थी। किन्तु आज तुम उस नीच जंगली भील राम शिकारी के कुत्ते बने हो शर्म शर्म शर्म।

हनुमान—बस फिर क्या जब मूछें ही कट गई तो फिर रहा ही क्या ? खाक किन्तु मूछों का ख्याल मर्दों को होता है, नामर्द की मूछे कटे चाहे दाढ़ी उसे क्या शर्म।

रावण—देख जैसे तुम्हारे बड़े और तुम भी अब तक हमारे सेवक रहे और हम तुम्हारी सहायता करते रहे। उसी तरह अपने बड़ों की परम्परा को छोड़ना धर्म नहीं।

दोहा (हनुमान)

कब सेवक थे हम तेरे, कब स्वामी था तू।
स्वामीपन की आप में, जरा नहीं है खुशबू॥

जब वरुण भूप ने कैद किये, खरदूषण को क्या नहीं पता।
कुछ पेश गई ना आपकी वहाँ, तब बुलवाया था मेरा पिता॥
खरदूषण को छुडवा करके, आधीन वरुण करवाया था।
क्या वह दिन भी अब भूल गये, शत्रु से तुम्हे बचाया था॥

कर्त्तव्य अपने को जरा पहचान तू,
पाके तुच्छ वैभव, न कर अभिमान तू।
क्या मनुष्य तन पाया है, भरने को जठर॥ ३
व्यवहार रखना शुद्ध, गौरव है यही,
चन्द दिन की जिन्दगी, सब की कही।
अन्त सब लेवेंगे, परभव की डगर॥ ३
चक्री तीर्थंकर, व गणधर चल बसे,
अन्त सुरपति ने भी अपने कर घसे।
आज ढूंढे भी नहीं आते नजर,
धर्म करने को मिला मनुष्यतन।
पाके अत्युत्कर्ष को ना नीच बन।
लांघ मत सरवर व व्रज की सतर।
आया कहीं से काल कर जाना भी है,
फिर शुभाशुभ कर्मफल पाना भी है।
इसलिये शुभ ध्यान अपना शुक्ल कर।

शेर [रावण]

बंद कर उपदेश को बस क्यों ढिठाई है गही।
राम के जो भी सहायक मौत उन की आगई।

शेर [हनुमान]

ठीक यह दिल में समझ, मौत तेरी आगई।
पेश अब किसकी चले, जब होनी सिर पर छागई॥

रावण वार्ता.—बस-बस अब ज्यादा बक-बक मत कर यदि कुछ दिन दुनिया से रहना है तो जान बचाने की फिकर कर।

(हनुमान जी का प्रचंडता में आकर नागफांस तोड़ डालना और ऐलान सुनाना)

दोहा (रावण)

बस बस बस मैं सुन लिया, सब तेरा उपदेश।
अधिक और आगे कहा, तो होगा बहुत क्लेश॥

जब तक दम मे दम मेरा, तो जानकी जान की साथिन है।
जैसे तू नाग फास मे यूं, सीता में बंधा मेरा मन है॥
मैं सुर सुन्दर से जीत लिये, फिर कौन बिचारा लक्ष्मण है।
इक रामचन्द्र क्या सारा दल, तलवार मेरी का भक्षण है॥

शेर (हनुमान)

फिर कहता हूँ समझ ले, बरबाद क्यों होने लगा।
एक नारी के लिये सर्वस्व, क्यों खोने लगा॥

शेर (रावण)

सीता विरह का शब्द भी, सुनना जरा चाहता नहीं।
प्राण प्यारी के बिना, अन्न जल मुझे भाता नहीं॥
सीता सो मेरी जान है, जो जान है सीता वही।
बतलाइये पानी से क्या, शीतलता जाती है कहीं॥

गाना (हनुमान का रावण को समझाना)

अय भूपति मत, जुल्म पर बांधे कमर,
आखिरी अच्छा, नहीं होगा समर।
दिल दुखाना धर्मियों का, है गुनाह,
अन्याय से ना, सुख मिले हमने सुना॥
इसलिये रख, प्राणी मात्र की कदर,
एक डंडे से, सभी को हॉक मत।
ज्ञान सम्यक से लखो, कुछ सत्यासत,
फिर न्याय और अन्याय की, कुछ रख खबर॥

कर्त्तव्य अपने को जरा पहचान तू,
पाके तुच्छ वैभव, न कर अभिमान तू।
क्या मनुष्य तन पाया है, भरने को जठर ॥ ३
व्यवहार रखना शुद्ध, गौरव है यही,
चन्द दिन की जिन्दगी, सब की कही।
अन्त सब लेवेंगे, परभव की डगर ॥ ३
चक्री तीर्थंकर, व गणधर चल बसे,
अन्त सुरपति ने भी अपने कर घसे।
आज ढूंढे भी नहीं आते नजर,
धर्म करने को मिला मनुष्यतन।
पाके अत्युत्कर्ष को ना नीच बन।
लांघ मत सरवर व व्रज की सतर।
आया कहीं से काल कर जाना भी है,
फिर शुभाशुभ कर्मफल पाना भी है।
इसलिये शुभ ध्यान अपना शुक्ल कर।

शेर [रावण]

बंद कर उपदेश को बस क्यों ढिठाई है गही।
राम के जो भी सहायक मौत उन की आगई।

शेर [हनुमान]

ठीक यह दिल में समझ, मौत तेरी आगई।
पेश अब किसकी चले, जब होनी सिर पर छागई ॥

रावण वार्ता.—बस-बस अब ज्यादा बक-बक मत कर यदि कुछ दिन दुनिया मे रहना है तो जान बचाने की फिकर कर।

(हनुमान जी का प्रचंडता मे आकर नागफांस तोड़ डालना और ऐलान सुनाना)

हनुमान जी—अहो लंकेश—श्री रामचन्द्र महाराज तुमको यह हुक्म देते हैं कि या तो सीता को अर्च-पूज कर वापिस करदो नहीं तो जंग के लिए तैयार हो जावो। और जीने की आशा छोड़ कर परभव मे जाने की तैयारी करो। फेर ना कहना कि रामचन्द्र जी ने मुझको बिना खबर ही आकर दबा लिया।

शेर

धोखा न देना किसी को, यह क्षत्रियों का धर्म है।
शरण आये की करे, प्रतिपालना ये कर्म है॥
किस बात पर भूला फिरे, तुझको मिटा देंगे।
धरणी तो क्या चीज, हम स्वर्ग को भी हिला देंगे॥

रावण—बेटा मेघनाद इस दुष्ट को अभी पकड़ कर मेरे सामने मुँह काला करदो और गधे पर बैठाकर मोरी के रास्ते से निकाल दो।

दोहा

सुनते ही इस बात को, कोप उठे बजरंग।
कडके बिजली की तरह, होकर रँग बिरँग॥

मस्तक पर ठोकर लाकर के, रावण का ताज गिराया है।
फिर गगन गति कर गये, कलेजा सबका ही दहलाया है॥
निज अंगरक्षकों से आन मिले, जहाँ पर भी था संकेत किया।
प्रसन्न वदन हो चले शीघ्र जा, किष्किन्धा प्रवेश किया॥

दोहा

वाशिन्दे सब लंक के, जल बल हो गये खाक।
रावण ऐसा जल गया, कोयला न रहा राख॥
दशकन्धर का जब गिरा, ताज धरणी पर जाय।
एक दम सारे शूरमे, दौड़े शोर मचाय।

पकड़ो पकड़ो इस दुरात्मा को, टुकडे टुकड़े इसके कर दो।
इस बात का तो क्या कहना है, यदि पकड़ यहां सम्मुख धरदो॥
देख देख इस बेइज्जती को, सब लंका वाले रोते हैं।
कर सके कौन रक्षा उसकी, जिसके उल्टे दिन होते हैं॥

रावण—बेटा इन्द्रजीत ! शर्म शर्म शर्म।

इन्द्र—किसको।

रावण—तुझको।

मेघनाद—क्यों।

रावण—अरे हमारे अपमान को तो खड़ा खड़ा देखता रहा। तुमसे एक बंदर न पकड़ा गया।

मेघनाद—अजी मेरा तो रोम-रोम खुश होगया। आपके साथ ऐसा ही होना चाहिये था। और चाचा साहब का कहना माना करो, बस जल्दी ही बेड़ा पार हो जायेगा। फिर ताज तो क्या आपका सिर भी गिर जायेगा।

भानुकर्णः—बेटा इन्द्रजीत शान्ति करो, तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु उस समय तो बात ही और थी।
यदि दूत को मार ही देते तो हमेशा के लिए कलंकित हो जाते।

इन्द्रजीत—हूँ—अब तो बडे निष्कलंक हो रहे हो। सीता को लाये तभी दोनों को समाप्त कर आते तो क्यों बुआ रॉड होती क्यों पाताल लंका का राज्य जाता। और क्यों सुग्रीव-हनुमान राम के पक्ष में होकर आज ये दुर्दशा करते, परन्तु यहॉ हमारी मानता ही कौन है, यहॉ तो उनकी ही चलती है जो सत्यानाश करने वाले हैं' जहॉ दुनिया चोर कहती है। वहा अन्याय किया इतना और कह देती। बस इतना ही अन्दर था या और कुछ—

शेर

कष्ट से लाया था मै, शत्रु को पकड़ करके यहाँ।
हाथ से मौका गया अनमोल, अब मिलना कहाँ॥
दुःख बड़ा यों काल के मुख से, गया दुर्जन निकल।
पवन पुत्र कर गया, हम सबकी बुद्धि को विकल॥

रावण—बेटा इस विचार को अब छोड़ दो। और हम उसको एक पशु समझते हैं। जैसे पशु बधन से घबरा कर रस्सों को तोड देता है और नुकसान भी कर देता है बस यही हाल हनुमान का हुआ फिर हम विचार करे तो किस बात का।

विभीषण—जी हाँ सम्भव है। ऐसा ही हुआ होगा क्योंकि जिस समय आपने काला मुँह करने को कहा बस वह शब्द उससे सहा नहीं गया और गगन गति करते समय आपके ताज में झपट लग गयी बस बात तो यह है, इस बात को यहीं छोडदेना चाहिए। और जिस कारण से अशान्ति हुई है उस कारण को दूर करने का कोई नियत समय कर लीजिये जिसमे शान्त करने का कोइ उपाय सोचा जाय।

रावण—शान्ति का उपया सोचा जाय। क्या किसी को तपेदिक है। हमे सोचने की कोई जरूरत नहीं यदि होगी तो रामचन्द्र को होगी वह सोचे या न सोचें हमे क्या? प्रथम तो रामचन्द्र मे शक्ति ही नहीं कि लका की ओर एक भी कदम उठायें, यदि उठायेगा तो अपने प्राण गवायेगा। यदि सुग्रीव भी उसका साथ देगा तो वह अपने प्राण और तीन सौ योजन का वानर द्वीप हाथ से गवायेगा। हमारे तो सब तरह पौ बारह हैं। (सभा की ओर देखकर) क्यों जी क्या बात ठीक है। (विभीषण के अतिरिक्त सब) हाँ ठीक है। बिल्कुल ठीक है।

रावण---बस मेरी यही आज्ञा है कि सबको अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए और प्रेम से एक जयकारा बुलाकर सभा को विसर्जन करना चाहिए (बोलो राजा रावण की जय)

[पटाक्षेप]

राम-हनुमान

दोहा

रामचन्द्र के पास जब, जा पहुँचा हनुमान ।
भूम भाम चहूं ओर से, आ पहुंचे इन्सान ॥
सीता का चूड़ामणि, दिया राम के हाथ ।
आदि अंत पर्यंत अब, लगा कहन सब बात ॥

भूखा जैसे भोजन पर, त्रिषातुर जैसे पानी पर ।
प्रतिज्ञा पर जैसे सतजन। या भव्यजीव जिनवाणी पर ॥
वीणा पर जैसे सर्प मस्त, औषधि मस्त जैसे रोगी ।
जनता सुनने में मस्त हुई, शुभ ध्यान मस्त जैसे योगी ॥

दोहा (हनुमान)

जिस कारण लंका गया, हुवा सिद्ध सब काज ।
जो जो कुछ बीतक हुवा.सुनो सभी महाराज ॥

चहुं ओर कोट आशाली का था, पहले उसको तोड़ दिया ।
फिर रोका वज्रमुखे ने तो, उसका भी सिर फोड़ दिया ॥
फिर पहुँचा पास विभीषण के, जो मेरा वड़ा सहायक था ।
यह उनका ही उपकार सभी, वरना मैं तो किस लायक था ॥

फिर गया व्योम से देवरमण, अशोक वृक्ष पर जा बैठा।
थी मणि पीठिका पर सीता, उस तरफ ही ध्यान लगा बैठा॥
तब देख हाल जगदम्बा का, पत्थर का कलेजा छनता था।
गिर गिर नयनों का जल वहाँ, पानी का झरना बनता था॥
बैठी थी अपने आसन पर, ना खाती थी ना पीती थी।
यदि जीती थी बस एक आपके, राम नाम पर जीती थी॥
एक घड़ी-घड़ी पल-पल उनको, वर्षों की तरह गुजरता था।
दिल तो चाहता था मरने को, पर आपका प्रेम मुकरता था॥
अन्तिम निराश हो करके फिर, शर्द श्वास जब भरने लगी।
तब मैंने मुद्रिका गेर दई, देखा कि जब वे मरने लगी॥
फिर मैंने प्रणाम किया, और आपका सब संदेश कहा।
जब दशा आपकी सुनी, नीर नयनों से और विशेष बहा॥
विश्वास दिलाकर मुश्किल से, मैंने उसको समझाया था
इक्कीस दिवस के बाद मात को, अन्न पान कराया था॥
वार वार तुम चरणों मे बस, यही अर्ज गुजारी है।
यदि जल्दी ना लिया पता तो, आयु खतम हमारी है॥
मेरी तो यही सम्मति है, अब देरी का कुछ काम नहीं।
जब सीता को है कष्ट महा, तो हम को भी आराम नहीं॥
लंकपति को चलते समय, जंगी ऐलान सुना आया।
निज ठोकर से दशकन्धर के, मस्तक का ताज गिरा आया॥

दोहा

सिया संदेशा राम ने सुना, प्रेम के साथ।
हृदय लगाया पवन सुत, लम्बे करके हाथ॥

जब लगी खबर सिया की सबको, खुशी की ना सम्भाल रही।
सुन दुःख सिय का सब नारी, आँखों से आंसू डाल रही॥

अब शीघ्र लंक मे जाने को, सब योद्धाओं का मन चाहता है।
श्री रामचन्द्र को घड़ी-घड़ी, वर्षों की तरह दिखाता है॥

दोहा

उसी समय सुग्रीव ने, किया खास दरबार।
लंका पर अब चढ़न को, हुए सभी तैयार॥
मुख्याधिकार सबने दिया, सुग्रीव नरेश के हाथ।
और सहायक संग में, कर दिया वीर विराध॥

वानर दल के योद्धाओं के, मस्तक पर लाली दमक रही।
गम्भीर शूरमे सजे खड़े, नंगी तलवारें चमक रही॥
बाकी राजे सब अपनी अपनी, सेना ले तैयार हुवे।
श्री रामचन्द्र के सेवक बनकर, सब के दिल एक सार हुवे।

दोहा

भामंडल मंडलपति, वड़वानर नल नील।
जामवंत अंगद चढ़े, कपि सुत नन्द सलील॥

श्री महेन्द्र महिमा अपार, और पवन पुत्र बजरंग चढ़े।
सज गए प्रबल महाबल, यह दोनों ही थे दुर्दान्त बड़े॥
वीर विराध बलवत महा, थे भूप सुनैयन उदार वहीं।
कई विद्याधर कई भूचर थे, सब दल बल का कुछ पार नहीं।
सज गये विमान आकाशी, और दारू गोला शुमार नहीं॥
संग्रामी रथ हाथी घोड़े, है विकट गाड़ी विस्तार कहीं।
सब मारू बाजे बजा बजा, सेना को जोश दिलाते है।
चढ़ गया वीर रस योद्धों को, हुँकार से धरा कपाते हैं॥

दोहा

श्रीराम ने कर दिया. लंका को प्रस्थान।
एक से एक शूरमा, महा अधिक बलवान॥

करता किलोल सिन्धु जैसे, इस तरह राम की सेना है।
वहाँ विविध भांति के वाहन, और जहाँ विविध भांति का गहना है।
और विविध भूप सुन्दर स्वरूप, क्या शस्त्रों का वहां कहना है।
निश्चय विश्वास सभी को, रावण का खुर खोज न रहना है॥

दोहा

जंगी बाजे बज रहे, पड़ी गगन मे धूम।
जय बोले 'श्रीराम की' रहे चरण रज चूम॥

हैं विविध भांति के तम्बू आदि, खान पान समान सभी।
तल्लीन राम की सेवा मे, और राजे हैं कुर्बान सभी॥
गुल गुलाहट हस्ती करते, कहीं घोड़ों का हिनसाना है।
झकार कहीं पर यानों का, अद्भुत ही शब्द सुनाना है॥

दोहा

कायर जन सिंहनाद सुन, क्षण में छोड़े प्राण।
बढ़े शूरमों का वहाँ, उत्साह अधिक महान्॥

कई बैठे चले विमान बीच, कोई गजरथ अश्व पै जाते हैं।
सब पार हुए बेधड़क सिन्धु, वेलन्धर गिरि पर आते हैं॥
सेतु समुद्र वहाँ दो राजे, महासुर वीर बलधारी थे।
श्रीरामचद्र को रास्ता, देने से दोनों ही इन्कारी थे॥

सेतु भूप

दोहा

वेलधर पुर नगर का, सेतु श्री महाराय।
सीमा पर श्रीराम के, दल को रोका आय॥

मित्र भूप समुद्र को संग ले, निज सीमा पर आन खड़े।
यह लगा पता श्रीराम के, सन्मुख योद्धे हैं बलवंत खड़े॥
श्रीरामचन्द्र जी ने भेजा, निज दूत उन्हें समझाने को।
आज्ञा पाकर वहां दूत गया, स्वामी का हुक्म बजाने को॥

दोहा (दूत)

राम दूत की लीजिये, नमस्कार महाराज।
जिस कारण आया यहाँ, सभी सुनाऊँ आज॥

श्रीराम ने ये बतलाया है, तुमसे ना बैर हमारा है।
फिर किस कारण रोका हमको, असली क्या ख्याल तुम्हारा है॥
एक सिया के कारण ही, हम लंक पुरी को जाते हैं।
हम सिवा एक रास्ते के, आपसे और नहीं कुछ चाहते हैं॥
बस यही निवेदन है तुमसे, अपने दल को वापिस कर लो।
इसमें क्या आपकी हानि है, यदि है भी तो हम से भर लो॥
झगड़े का करना ठीक नहीं, इसमें कुछ हर्ज तुम्हारा है।
और क्षण २ की देरी मे यहा, भारी नुक्सान हमारा है॥

दोहा

वचन दूत के सुनत ही, कोपा सेतु नरेश।
उलट पुलट कहने लगा, जिससे बढ़े क्लेश॥

दोहा (सेतु)

वन का बासी भीलड़ा, दुखियारी का पूत।
नार खुसा कर अब यहां, लगा भेजने दूत॥

उस समय शक्ति क्या गहने थी, जब दशकंधर ने सिया हरी।
धिक्कार है ऐसी शूरमता, इक नारी की ना विपद टरी॥
बस यही हमारा कहना है, अपने दल को वापिस कर लो।
वरना नृप सेतु समुद्र की, यहां शक्ति सहने का दिल कर लो॥

रास्ता देकर क्या रावण से, हम अपना नाश करा लेवें।
उस लंक मे ऐसे योद्धे हैं, जो सारी धरा कंपा देवे ॥
सभी नपुंसक सेना लेकर, लंका पर करी चढाई है।
जा कहो राम से वापिस, हो जाने में तेरी भलाई है ॥

दोहा

सुने काट करते हुए, सेतु भूप के वैन।
विकराल रूप होकर लगा, दूत इस तरह कहन ॥

इसमे ही भला तुम्हारा है, जा राम लखन के चरण परो।
वरना देरी का काम नहीं, मैदान मे आकर चरण धरो ॥
ज्यूं खोज तिटाया खर दूषण का. ऐसे तुम्हें मिटा देंगे।
जिस लंकपति का भय तुमको, हम धूल में उसे मिला देंगे ॥

दोहा

इतना कह कर दूत फिर, गया राम के पास।
आदि अन्त पर्यन्त सब, कथा सुनाई भाप ॥

चौपाई

उसी समय नल. नील बुलाया।
श्रीरामचन्द्र ने, हुक्म सुनाया ॥
जावो वीर मत, देरी लगाओ।
सेतु भूप वो, बांध ले आओ ॥

दोहा

सेतु समुद दो भूप थे, अद्भुत शक्तिवान्।
टापू एक समुद्र में, थे उनके स्थान ॥

यन्त्रों की चहुँ तरफो से, सुरंगे थी वहाँ बिछा रखी।
जो आवे उसे डुबा देवें, शक्ति थी वहाँ छिपा रखी ॥

सिवा पत्थर के और कोई ना, चीज सफल हो सकती थी।
नल नील ने अनुभव से देखा, हृदय में स्वामी भक्ति थी ॥

दोहा

अहं भाव तज स्वामी की, करें हृदय से सेव।
गौरव दुनिया मे बढ़े, उन सब का स्वयमेव ॥

साइन्सदान नल नील उस समय, हरफन के जो माहिर थे।
थे महाबली योद्धा बॉके, कर्त्तव्यशील जग जाहिर थे ॥
कृत सकंल्प से पहिले लंका में, लश्कर पहुंचाना था।
उस सामग्री का था अभाव, जो जल्दी काम बनाना था ॥
गर देर लगी पुल बन्धने मे, तो वाक्य भंग हो जायेगा।
प्राण तजे वहां सीता. यहॉ योद्धों का दिल घबरायेगा ॥
नल नील ने देखा दूर गिरि से, एक जलाशय घिरा हुवा।
वृक्ष सहित उसमे पत्थर. नौका के मानिन्द तिरा हुवा ॥

दोहा

लिया नमूना नील ने, पत्थर किये तलाश।
उसी नमूने का मिला, गिरी समुद्र पास ॥

दण्ड रत्न सम शस्त्र से, पर्वत को तोड़ गिराया है।
गुप्त मार्का राम नाम, पहिचान के लिये लगाया है ॥
इसी नसल के पाषाणों मे, पुल सा एक तय्यार किया।
उदधि की खाड़ी पर था यह, फरश आर और पार किया ॥

दोहा

श्रीराम इस कार्य को, देख हुये हैरान।
सम्बोधन कर सभी से, यूं बोले भगवान् ॥

जितने भी योद्धा हो मुझको, एक एक से अधिक प्यारा है।
विश्वास मुझे सन्मुख तुम्हारे रावण कौन बिचारा है॥
यह काम किया तुमने जादू का, पत्थरों को भी तिरा दिया।
नल नील की खोज अपूर्व है, सबके दिमाग को फिरा दिया॥

दोहा

आश्चर्य लख राम का, बोले नल नील प्रवीन।
सिद्ध कार्य उन्हीं का, रहे सत्य मे लीन॥

हे नाथ आप की कृपा से, ये सारे पत्थर तरते है।
विश्वास प्रभु में है जिन का, वह पार भवोदधि करते हैं॥
पुण्य आपके से स्वामी, यह पत्थर यहाँ पर पाया है।
हे नाथ आपकी कृपा से, ये पुल तैयार कराया है॥
ये आपके नाम की बर्कत है, बस और किसी का महत्त्व नहीं।
ये पुण्य प्रकृति आपकी है, बस और कोई यहाँ तत्त्व नहीं॥

दोहा

परीक्षा कारण ही गये, एकान्त आप भगवान्।
समझ रहस्य पीछे चले, गुप्त वीर हनुमान॥

श्रीराम ने एक शिला लेकर, पानी पर स्वय टिकाई है।
उसी समय वह डूब गई, तब शर्म राम को आई है॥
पीछे जब देखा हनुमत है, तो बोले बात छुपाने को।
आओ हनुमान किस तरफ चले, क्या आये शौच मिटाने को॥

दोहा

प्रभु अकेले कहाँ चले, देखा मै जिस बार।
पीछे मैं भी चल दिया, झटपट हो तैयार॥

पर यहा आप पाषाणों को क्यों, उदधि मे सरकाते थे।
और आश्चर्य मे इधर-उधर, क्यों दृष्टि को दौड़ाते थे॥

हे नाथ आपकी शुभ प्रकृति, काम सभी कुछ करती है।
और पुण्य योग से मिली हुई, योद्धाओं की शुभ भक्ति है॥

दोहा

मुस्कराय हनुमान को, यूं बोले श्रीराम।
भाई मुझसें तो नहीं, कोई महत्त्व का काम॥

नल नील की ये सब महिमा है, पत्थर को जिसने तरा दिया।
जिसको मुश्किल समझे थे, वह काम आपने बना दिया॥
जन समूह एकत्रित हो, श्रीराम के गुण सब गाते हैं।
योद्धों सहित नल नील के यूं, श्रीराम जी गुण प्रकटाते हैं॥
यह सब नल नील की साइंस हैं, इसमें शंका का काम नहीं।
हमने फैंका वो तरा नहीं, तो महत्त्व का राम का नाम नहीं॥
भगवान् जिन्हों को फेंक देवे, तो वह कैसे तर सकते हैं।
आप नहीं जिनको फेंके, वह कष्ट पार कर सकते हैं॥
महापुरुष गुण वर्णन करके, औरों को अपनाते हैं।
यों विनोद की बाते कर कर, दिल अपना बहलाते है॥
प्रेम पूर्वक जो प्राणी अपने, कर्त्तव्य निभाते हैं।
वो यहाँ पर गौरव सुख भोगे, अन्त परम पद पाते हैं॥
स्वार्थी अपने नाम का ही, टाइटिल चमकाना चाहते हैं।
वो सदा दुःखी गौरव खो करके, नीच गति जा पाते हैं॥
'शुक्ल' ध्यान परमार्थ शोभन, ज्ञान ध्यान मे लीन सदा।
जीवन सफल उन्हों का होगा, आवे दुःख न पास कदा॥

दोहा

फिर आज्ञा पा राम की, चले वीर हुलसाय।
रणभूमि में आन कर, दिया मोरचा लाय॥

दिया मोरचा लाय खनाखन, बजने लगा दुधारा।
कहीं अग्निबाण कहीं धुन्धबाण, कहीं चलता साग कटारा॥
किया धरणि को रक्त व्योम मे, चलता खून फुवारा।
देख तेज नल नील का, सेतु समुद हौसला हारा।

दौड़

घेर लिये दोनो राजे, जीत के बाजे बाजे पास, श्रीराम के
लाये, उदार चित्त रघुकुल दिनेश ने ऐसे वचन सुनाए।

दोहा (श्रीराम)

निष्कारण तुमने किया, निज गौरव का नाश।
समझाये थे प्रथम ही, दूत भेज कर पास॥

फिर भी हम हित की कहते हैं, तुम अपने घर आबाद रहो।
हमको कुछ भी नहीं चाहना है, एक भरत भूप की शरण गहो।
यदि सहायता रावण की चाहो, तो मंगवा सकते हो।
और जो भी दिल मे ख्याल, सभी तुम पूरा करवा सकते हो॥

दोहा (सेतु)

क्षमा करो सब दोप अब, कृपा करो रघुनाथ।
दास समझ कर प्रेम का, धरो शीश पर हाथ॥

यह राज पाट सब आपका है, हम तो चरणों के चाकर हैं।
दुःखियों के दुःख निकन्दन हो, रघु कुल मे आप दिवाकर हैं॥
जो भी कुछ आपकी आज्ञा है, सो सिर मस्तक पर धारेंगे।
यह सिर जाय तो जाय किन्तु हम, वचन ना अपना हारेंगे॥

दोहा

तोड बंध श्रीराम ने, किया उन्हें स्वतन्त्र।
प्रेम भाव उत्पन्न हुआ, बजने लगे वाजिन्त्र॥

सेतु समुद ने लक्ष्मण को, निज-निज पुत्री का डोला दिया।
बन गये सहायक रामचन्द्र के, दारू शस्त्र गोला दिया।
यहाँ एक रात विश्राम किया, फिर आगे को चल धाये हैं।
सेतु समुद्र के सहित सभी, सुवेल गिरि पर आये हैं।
सेतु समुद्र को आधीन किया, सुबेल भूप को खबर लगी॥
और सुना राम दल आ पहुंचा, तो क्रोधानल प्रचण्ड जगी।
उसी समय रणतूर बजाकर, दल बल आगे ठेल दिया॥
उस तरफ सुसेन भूप ने भी, आकर सीमा को घेर लिया।

—※※※—

सुवेल भूप

दोहा

युद्ध भयंकर छिड़ गया, लगा होन घमासान।
गिरें धड़ाधड़ शूरमे, रणक्षेत्र में आन॥

वो दृश्य भयानक देख देख, कायर धरणी गिर जाते थे।
श्री रामचन्द्र का तेज देख, सब ही शत्रु भय खाते थे॥
झट भगी फौज यह हाल देख, सुवेल भूप घबराया है।
उस वक्त सुसैन ने हल्ला कर, भूपति को आन दबाया है॥

दोहा

सोचा भूप सुवेल ने, अब ना पार बसाय।
सधि का फिर उस समय, दिया निशान दिखाय॥

फिर क्या था उस रण भूमि मे, प्रेम परस्पर होने लगा।
श्रीरामचन्द्र का वचन भूप के, वैर विरोध को खोने लगा॥
रघुकुल दिनेश की सब शर्तें, सुवेल भूप ने मान लई।
तन मन से सेवा रामचन्द्र की, करना दिल मे ठान लई।

हंसरथ भूप

दोहा

तीजे दिन वहां से चले, संघ सुवेल उदार।
हंस द्वीप मे पहुंच कर, दई छावनी डार॥

हंसरथ नृप दल बल भारी, ले युद्ध करन सन्मुख आया।
इस तरफ महाबल योद्धा भी, अपनी सेना लेकर धाया॥
थे दोनों रणधीर वीर दोनों, इस फन में माहिर थे।
अतुल बली थे दोनों ही, महाशूर वीर जंग जाहिर थे॥
फिर लगी बाण वर्षा होने, जैसे श्रावण की लगी झडी।
चल रहे दारू गोला तोपें, और संगीने थी अड़ी खड़ी॥
वादल समान नभ में विमान, थे अड़े खड़े कुछ पार नहीं।
कहीं विकट गाड़ी की कला दवा कर, फिरते थे राजकुंवार वहीं॥
तोमर शक्ति कुदाल भुशण्डि, परशु परिघा वरसाते थे।
जैसे आंधी से फूल गिरे, धड़ से यों सिर गिर जाते थे॥

दोहा

महावल दल में घुस रहा, हो करके विकराल।
पराजित होकर के भगा, हंसरथ भूपाल॥

छिप गया दुर्ग मे जाकर के, पहरा चहुँ ओर लगाया है।
इधर राम दल ने भी जा सब, दुर्ग को घेरा लाया है॥
फिर समझ लिया कि नरमाई विन, बचने का अवकाश नहीं।
जो लड़ूं सामने होकर के तो, शक्ति मेरे पास नहीं॥

दोहा

अक्ल भ्रमण करने लगी, उड़ गये होश हवाश।
तृण मुख में लेकर गया, रामचन्द्र के पास॥

दोहा (हंस)

पराक्रम जाना था नहीं, आपका हे श्रीराम ।
शरणागत को शरण में, रख लीजे सुख धाम ॥

कृपा सिन्धु कृपा विशाल, करके दुःख सारा दूर करो ।
यह राजपाट सब आपका है, विनती मेरी मंजूर करो ।
जो भी कुछ आपकी आज्ञा है, तन मन से उसे निभाऊंगा ।
जहां गिरे पसीना आपका, वहां मैं अपना रक्त बहाऊंगा ॥

दोहा (राम)

माफ सभी हमने किया, जो तेरा अपराध ।
सम्वेदन है तू मेरा, जैसे वीर विराध ॥

यदि वो बाईं भुजा मेरी तो, तू दक्षिण कहलाता है ।
आनन्द से अपना राज करो, जैसे भी तुमको भाता है ॥
मत फिक्र करो अपने मन मे, तुम भरत भूप की शरण परो ।
कोई कष्ट पड़े तुम पर आकर, तो शीघ्र हम पै खबर करो ॥

दोहा

आज्ञा जो श्रीराम की, लई भूप ने मान ।
हंसरथ नृप का होगया, योग्य पक्ष पर ध्यान ॥

दोहा

यह सब खटका मेटकर, हुये सभी तैयार ।
विमानों द्वारा हुवे---महा समुद्र पार ॥

श्रीराम पास ही आ पहुंचे, यह खबर लंक मे फैल गई ।
और पुण्य सितारा देख राम का, सबकी तबियत दहल गई ॥
जैसे मीन राशि में शशि, आने पर जन घबराते हैं ।
ऐसे ही सब लंका वाले, भय रामचन्द्र से खाते हैं ॥

आ गये राम आ गये राम, यह शोर लंक में होने लगा।
तब आँख खुली दशकंधर की, तो निज शक्ति भी टोहने लगा॥
मारीच हस्त प्रहसित और, सारन आदि सब बुलवाये।
श्रीराम से युद्ध मचाने को, निज-निज कर्त्तव्य सब पर लाए॥

रावण विचार

दोहा

उसी समय दशकंधर ने, किया खास दरबार।
सिंहासन पर बैठकर, ऐसे कहा उचार॥
अब तक यही विचार था, कि राम रहेगा दूर।
किन्तु आज सिर पर चढ़ा, उसकी मौत जरूर॥

श्रृगाल की मौत जब आती है, तब ग्राम सामने जाता है।
बस यही हाल है रामचंद्र का, पास लंक के आता है॥
सेतु समुद्र सुवेल हंसरथ, ये भूप और भरमाए हैं।
सो भी अपना नाश करन को, संग राम के आए हैं॥
अब उद्यमशील रहो सारे, और इन्तजाम जल्दी कर दो।
जा रखो मोरचा हंस द्वीप के, पास वहीं डेरा कर दो॥
बेटा इन्द्रजीत तुम भी, सब अपनी सेना ले जावो।
मुश्क बांधकर उन जंगली, भीलों को यहां पर ले आवो॥
बस मूल नाश हो जाने से, महावृक्ष स्वयं गिर जायेगा।
क्या वानरपति क्या हनुमान, फिर किसी का पता न पायेगा।
अब देरी का कुछ काम नहीं, रणतूर बजा देना चाहिये।
जिस मान पै शत्रु कूद रहा, वह मान गिरा देना चाहिये॥

दोहा

बिना विभीषण ने किया, सबने वचन प्रमाण ।
शिक्षा देने को अनुज, बोला चतुर सुजान ॥
हे भाई कुछ सोचकर, करना चाहिये काम ।
सोच किये मुख रूप है, बिन सोचे मुख श्याम ॥

बिन सोच किये मुख श्याम, मान ले अब भी बात हमारी ।
सब दुनियां में बरत रही थी, आन अखंड तुम्हारी ॥
किन्तु आप लाए जिस दिन से, सीता राजदुलारी ।
इसी रोज से भ्रात लंक में, लगी असाध्य बिमारी ॥

दौड़

श्री रघुपति के हाथ में गई सब
आज ताकते, मान लो अब भी कहना,
यदि न माने तो लंका का, अब खुर खोज रहेना ।

शेर

कुल को कलंकित कर दिया, और शक्तियां सब खो दई ।
जो अवस्था चोर की, सो आज तेरी होगई ॥
किसको दिखावे मुख यह अपना, आज हम संसार में ।
क्या धूल इज्जत पायेंगे, जाकर किसी दरबार में ॥
क्षत्रिय है रघुवंशी कभी, खाली वो जा सकते कहीं ।
मैदान मे उनसे कभी, तुम जीत पा सकते नहीं ॥
श्रीराम के एक दूत ने था, जौहर दिखलाया यहां ।
कोट ढाया अक्ष मारा, ताज था गेरा कहां ॥
लक्ष्मण के आगे समर मे, यह शीश भी गिर जायेगा ।
धूल में लंका मिलाकर के, सिया ले जायेगा ॥

तुम अपने गौरव पर रहो, वह अपने रास्ते जायेगा।
बस जानकी को भेज दो, झगड़ा सभी मिट जायेगा॥

दोहा

शिक्षा का और राग का, होता जग में वैर।
रावण को ले पैर से, चढ़ा शीश तक जहर॥

पड़ गये तीन बल मस्तक पर, गुस्से मे चेहरा लाल हुआ।
नयनों में सुर्खी आ पहुची, और रूप अति विकराल हुआ॥
इन्द्रजीत भी पास भरा गुस्से मे, था बेतोल खड़ा।
रावण से पहले मेघनाद, यों चचा सामने बोल पड़ा।

इन्द्रजीत-विभीषण

दोहा (इन्द्रजीत)

शूरमताई आपकी, देखी खूब हजूर।
अब तक तेरा ना हुआ, क्लीवपना यह दूर॥

नाश हमारा करने मे, तैंने नहीं छोड़ी बाकी है।
अब समझ गये हैं शायद पिता भी, सब तेरी चालाकी है॥
विश्वासघात करने वाला, दिल भी अन्दर से काला है।
और अब तक तूने हम सबको, बस धोखे मे ही डाला है॥
यह झूठ कहा तूने आकर, दशरथ को मैंने मार दिया।
फिर हनुमान को भी तूने, लंका का भेद विचार दिया॥
तू भ्रात नहीं कोई शत्रु है, जो पिता को तैंने तंग किया।
जो रुद्र लंका पर चढ़ा हुआ था, तूने सभी विरुद्ध किया॥

दोहा (इन्द्रजीत)

ताज गिराया पिता का, लगी सभा थी आम ।
शर्म तुझे आई नहीं, करवाते यह काम ॥

फिर नागफांस में बंधे हुए, शत्रु को साफ निकाल दिया ।
इस भरी सभा में तूने ही, था, मान हमारा गाल दिया ॥
अब शत्रु सिर पर आन चढ़ा, फिर भी तू हमको रोक रहा ।
तो समझ गये तू मिला हुवा, शत्रु की पीठ को ठोक रहा ॥

शेर

अब तेरा प्रपंच कोई भी, यहाँ चल सकता नहीं ।
दाँतों तले आया अरि, हर्गिज निकल सकता नहीं ॥
नाम इन्द्रजीत मेरा, कौन सम्मुख आयेगा ।
राम क्या दल बल कोई, जीता न यहाँ से जायेगा ॥
यदि आपको है भय कोई, जाकर कहीं छिप जाइये ।
या पहन करके चूड़ियाँ, अबला जरा बन जाइये ॥
अब आपकी यहाँ दाल, मनमानी न गलने पायेगी ।
राम की सेना को यह, तलवार दलने जायेगी ॥
नाश कर सकते नहीं, कहने से तेरे अपना हम ।
अपनी शक्ति से करूंगा, राम क्या सब दल खतम ॥

शेर (विभीषण)

क्यों उछल कर कूदता, अविनीत कल के छोकरे ।
होश गुम हो जायेंगे, जिस दम लगेगी ठोकरें ॥
रङ्ग दिखलायेंगी ये, बातें तेरी आता नजर ।
हितेच्छु को जो माने अरि, तो पुण्य में उसके कसर ॥
अनुचित शब्द कहने का, यहाँ अधिकार क्या था बेशर्म ।
बेटा उदय में आ गये हैं, अब तेरे खोटे कर्म ॥

दोहा

पुत्र मेरा कुछ भी नहीं., रामचन्द्र से प्रेम।
तन मन धन से चाह रहा, आप सभी का क्षेम॥

गाना (विभीषण जी का—बहरतबील)

आवे कैसे सीधा रास्ता नजर,
जबकि आँखों पै अपराधी चश्मा लगा।
जैसे विषयान्ध क्रोधान्ध मोहान्ध को,
जग मे आता नजर न कोई अपना सगा॥
अब ये विपरीत बुद्धि तुम्हारी हुई,
जो कि उपदेश मेरा जरा न लगा।
जिसने दल दल में फंसने की ठान ली,
तो उसे थल पै ले जावे कैसे सखा॥

(इन्द्रजीत)

बस चचा साहिब अब जो कहा सो कहा,
आगे लाना जबां पै जिकर ये नहीं।
क्षत्रिय कुल में कहाँ से तू गीदड़ हुवा,
तेरा अबला के जितना जिगर भी नहीं॥
मुझ बबर सिंह का जो करे सामना,
ऐसा दुनिया मे कोई बशर ही नहीं॥

विभीषण

बेशर्म अब तू अपनी जबा बन्द कर,
वृथा बक बक लगाई क्यों तूने यहां।
दूध के भी ना टूटे तेरे दांत हैं,
यह अनुभव फेर तुझे है कहां॥

जिस पिता की तू शक्ति का मान करे,
इनको बाली ने नीचा दिखाया वहां।
लाया क्यों ना सिया को राम के सामने,
क्षत्रापन उस समय घुस गया था कहां॥

इन्द्रजीत

इस समय उस समय क्या सभी काल ही,
तेरी चालाकी सारे ही चलती रही।
देख कर के ये गौरव पिता का सभी,
तेरी छाती हमेशा से जलती रही॥
बस तेरी शरारत के कारण सदा,
महा विपत्ति पिता पर है आती रही।
नाश करने में तैंने न छोड़ी कसर,
यह तो किस्मत हमारी सम्भलती रही॥

विभीषण

तू अधर्मी कृतघ्नी महा दुष्ट है,
तुझे परभव का खौफो खतर ही नहीं।
तैंने बोली की गोली से घायल किया,
मेरे हृदय मे छोडी कसर ही नहीं।
कामी अन्धे के अन्धा तू पैदा हुवा,
तेरी नजरों मे कोई बशर ही नहीं।
कील ठुकवाने को मेंढक उछलता फिरे,
पेट फट जायेगा यह खबर ही नहीं।

शेर (विभीषण)

क्या सभ्यता यही सिखाई, थी किसी बे पीर ने।
तासीर बतलाई है या, माता तेरी के क्षीर ने॥

क्या त्रिखंडी लंकेश भी भरी सभा में ऐसे अयोग्य शब्दों को चुपचाप बैठे सुन रहे हैं। क्यों भाई साहब क्या आप इसको रोक नहीं सकते ?

रावण—जो भी कुछ इन्द्रजीत ने कहा सो बिल्कुल ठीक कहा है। यदि सत्य पूछा जाय तो तेरे षड्यन्त्र का भण्डा फोड़ दिया है।

रा० भ० क्रोध

शेर

अब तेरा विश्वास मैं त्रिकाल खा सकता नहीं।
अपनी आदत से कभी तू, बाज आ सकता नहीं॥
निश्चय में तू शत्रु मेरा, ऊपर से भाई बन रहा।
अब भेद सारा खुल गया, जो भी तू ताना तन रहा॥

शेर (विभीषण)

समझते शत्रु मुझे, सब आपकी यह भूल है।
आगे यही हालत रही, तो लंक की भी धूल है॥
मरते दम तक भी फर्ज, अपना बजा जाऊँगा मैं।
तू बदी से बाज आ, फिर बाज आजाऊँगा मैं॥

रावण (बहरतवील)

अय विश्वासघाती अलग हट जरा,
तेरा उपदेश मुझको सुहाता नहीं।
क्योंकि पापी अधर्मी महा नीच है,
अपने दिल की अग्नि तू बुझाता नहीं॥

भेद देना सिया का तेरा काम था,
वरना लंका में कोई भी आता नहीं।
मीठा बन तैंने काटी हमारी ही जड़,
तेरी वाणी किसी को यहाँ भाती नहीं॥

विभीषण

कर दो अब भी बहम दिल से ऐसा तर्क,
वरना रो रो के आखिर को पछताओगे।
अपनी नारी को हरगिज ना छोडेंगे वह,
सारी सेना को वृथा ही कटवाओगे।
भेजदो भेजदो भेजदो जानकी,
मानो कहना हमारा तो सुख पाओगे।
वृथा न रतन अमूल्य को खो कर के तुम,
खोटे कर्मों का खोटा ही फल पाओगे।

रावण

बेशर्म निरंकुश तू बकता है क्या,
अब समझले तेरे धड़ पर सिर ही नहीं।
काट डालूंगा शस्त्र से गर्दन तेरी,
मेरी शक्ति की तुझको खबर ही नहीं।
निर्भय होकर के सन्मुख खड़ा मूढ़ तू,
धमकी सहने का तेरा जिगर ही नहीं।
रामचन्द्र का तू पक्षपाती बना,
कृतघ्नी तेरे जैसा कोई नर ही नहीं।
तेरे आये उदय भाग्य खोटे कर्म,
अब तेरे मरने में कुछ भी कसर ही नहीं।
भाग जायेगा बच के कहाँ बेशर्म।
क्या यह आता नजर मेरा खंजर नहीं॥

विभीषण

देता धमकी किसे यहाँ तू अय बेधर्म,
आ अगाड़ी जरा अपनी शक्ति दिखा।
काट सकता नहीं मेरा सिर तू कभी,
मेरी तलवार से अपना सिर तू बचा।
अरे लम्पट तू आँखों से चल हट परे,
मेरे आगे न अपनी ये शेखी दिखा।
होनी आई है क्यों तेरी आज ही,
किस कुमति ने तुझे अब दिया है बहका।
तेरे सिर की धरणी पर उडेगी गरद,
क्या तू फिरता है दिल में बहादुर बना।
किया चोरी से तूने सिया का हरन,
तुझे कर्म चबायेंगे नाको चना।

दोहा

सुनकर के व्याख्यान ये, हुआ दशानन लाल।
उछल-कूद सन्मुख खड़ा, शस्त्र लिया निकाल॥

इधर विभिषण ने भी झट, अपनी शमशेर निकाली है।
मैदान मे दोनों कूद पड़े, नयनों का रंग गुलाली है।
यह झगड़ा देख परस्पर का, सब बुद्धिमान् घबराने लगे॥
फिर भानूकर्ण झट उठे, बीच पड़ दोनों को समझा ने लगे।

कुम्भकर्ण का गाना:—

सगे होकर के तुम भाई, परस्पर जंग करते हो।
उधर शत्रु खडा सिर पर, इधर आपस में लडते हो॥
रावण—मेरे भानुकर्ण भ्राता, जरा चुप आप हो जाइयें।
बड़ा शत्रु विभीषण जैसा, ना कोई और बतलाइयें॥

भानु—अजी आपस मे जो कुछ हैं, चाहे शत्रु चाहे मित्र।
किन्तु औरों के तो तीनो ही, मिल कर लाये हम छित्तर ॥

रावण—वहम यह दूर कर भाई, यदि इसको बचाओगे।
दगा मैदान मे देगा, वफा इससे न पाओगे ॥

भानु–समझलो दिल मे यदि, तलवार भाई पर चलावोगे।
तो बदनामी यहा लेकर, वहाँ नरको मे जावोगे ॥

रावण–समझता तो हूँ मै भी आपने, जो कुछ उचारा है।
खड़ा देखो तो कैसे, तानकर, कर में दुधारा है ॥

भानु–अर्ज दोनों से है मेरी, खास कर आपसे पहले।
जो कहना है विभीषण को, वही कहना मुझे कहले ॥

विभीषण–किसी की अच्छी शिक्षा को, हृदय में धर नहीं सकता।
निशंक तुम छोड़ दो इसको, मेरा कुछ कर नहीं सकता ॥
सभा मे आज भाई को, जो यूं तलवार दिखलाई।
पुण्य काफूर अब इसका, हुआ यह समझलो भाई ॥

भानु—बड़े भाई की इज्जत को, जरा अब ध्यान मे धरलो।
अभी तलवार अपनी को, विभीषण म्यान मे करलो ॥

विभीषण—सार यह आपका कहना, मैं सिर आंखों पै धरता हूं।
आप के कथन से लो, म्यान में तलवार करता हूं ॥

दोहा

भानु–तडितकेश कुल मणि मुकुट अय भाई लकेश।
सिंहासन पर बैठ कर, देवो कुछ आदेश ॥

आज्ञा देवो योद्धाओं को अब, देरी का कुछ काम नहीं।
जब तक शत्रु ललकार रहा, तब तक हमको आराम नहीं ॥

अब एक जान तुम हो जावो, और द्वेष भाव को दूर करो।
रण तूर बजाकर जल्दी से, शत्रु का दल काफूर करो॥

शेर (रावण)

राम की शक्ति कुचलना खेल, बाये हाथ का।
पर भव पहूंचाऊगा उन्हे, बस अंतरा है रात का॥

दोहा

होन हार के बस पडा, दशकधर लंकेश।
लघुभ्राता को जोश में, बोला वचन नरेश॥

अरे दुष्ट विभिपण यदि अपना भला चाहता है तो यह आदर्श नीक अपना मुख मुझे ना दिखा और तू जिस राम की सहायता के लिये तुला हुआ है। जा, उसी राम के पास चला जा तुझको देख देख कर मेरी आंखों से खून बरसता है। और तेरे अधिकार में जितनी सेना है उसको भी साथ लेजा मुझे उसकी जरूरत नहीं। क्योंकि जिन को तेरी सगति है वह मेरे शत्रु हैं। कृतघ्नी, विश्वासघाती, स्वार्थी, इन्हों से कोई लाभ नहीं उठा सकता, इसलिये तू और तेरे सब मित्र तीस मुहूर्त के अन्दर लंका से निकल जाओ। नहीं तो सारे मौत के घाट उतारे जायेगे। क्योंकि तुम मेरे गुप्त शत्रु हो।

शेर

गुप्त शत्रु से कोई जल्दी, सम्भल सकता नहीं।
प्रत्यच्च होकर के अरि, नुकसान कर सकता नहीं॥

फट गया जो दिल मेरा, तुझ से मिल सकता नहीं।
दाव तेरा अब यहाँ, कोई भी चल सकता नहीं॥

छन्द (विभीषण)

खैर अब मैं क्या करूं जब काल सिर पर आगया ।
अज्ञान का पर्दा तेरी, बुद्धि के ऊपर छा गया ।।
श्वास तब तक आश मैं, कहावत ये छोड़ूंगा नहीं ।
चाहे समझ शत्रु परन्तु, मित्र रहूँगा जहाँ कहीं ।।
जब तक भी जीता हूँ मैं, कर्त्तव्य निभाता जाऊंगा ।
तू समझ चाहे ना समझ, मैं तो सुझाता जाऊंगा ।।

विभीषण प्रस्थान

दोहा

रहना उस संग चाहिये, जो होवे अनुकूल ।
यदि इससे विपरीत हो, उड़े वहा पर धूल ।।

तजना अच्छा गुणहीन देव, खोटा न जाप जपना चाहिये ।
जिसमें न जौहर वह अस्त्र तजो, अन्याई भूप तजना चाहिये ।।
दुराचारिणी नार तजो, वह मित्र तजो जो छल करता ।
उस दुष्ट का मुख ना देखो कभी जो नार सताये पतिव्रता ।।
जहाँ भले बुरे में अन्तर ना, ऐसों का संग तजना चाहिये ।
दस अन्धों मे जो हो अन्धा, उससे न वाद करना चाहिये ।।
जो कह कर बात बदल जावे, उसका विश्वास नहीं करना ।
जिसकी कुछ जान पहिचान नहीं, उसके कुछ पास नहीं धरना
जो शत्रु समझे मित्र को, उसके क्यों नाहक गल पडना ।
चहाँ बीज डाल कर खोना है, फल देता कल्लर रकड़ना ।।
फट गया तेरा दिल मेरे से, ना सूरत देखना चाहता है ।
लो नमस्कार लो वीर विभीषण, भी लंका से जाता है ।।

दोहा

सज्जन गण सुन लीजिये, होनहार बलवान।
लका से अब चल दिया, लघुभ्रातृ पुण्यवान॥

चले विभीषण वीर श्रुति, रघुवर चरणन में लाई।
तीस अक्षौहिणी चली फौज, संग देर न जरा लगाई॥
हाथी घोड़े रथ सग्रामी, गर्द गगन मे छाई।
हंसद्वीप की तरफ विकट, गाड़ी की कला दबाई॥
राम का उधर गुप्तचर, भेद लंका का लेकर, चरण आशीश निवाया।
रावण और विभीषण का सब, भेद खोल दर्शाया॥

दोहा (दूत)

सूर्यवंश कुल मणि मुकुट, हे स्वामिन गजदीश।
विजय आपकी समझलो, होगी विश्वा बीस॥

अब सुनो हाल सब लका का, यहा नया फूल एक और खिला।
फट गया विभीषण रावण से, यह भी एक कारण खूब मिला॥
मन में थी यही विभीषण के, सीता वापिस करवाने की।
बस इसी बात से बिगड़ गई, भाई से राजा रावण की॥
फिर लगी परस्पर युद्ध होने, तब भानु कर्ण ने छुड़वाया।
मुझको ना अपना मुख दिखला, यह दशकंधर ने फरमाया॥
यह वचन विभीषण सह न सका, और अन्न जल वहा का छोड़ दिया।
हे नाथ आपके चरणों में, दिल प्रेम पूर्वक जोड़ लिया॥
तीस अक्षौहिणी फौज सहित, वह चला इधर को आता है।
आगे मुझको कुछ पता नहीं, दिल मे क्या ध्यान लगाता है॥
सहसा विश्वास नहीं करना, क्योंकि शत्रु का भाई है।
जैसी हालत मैंने देखी, वैसी ही आन सुनाई है॥

शेर (राम)

अय वीर योद्धा किस तरह, गुण मै तेरा वर्णन करू ।
यह लो खुशी से हार, हीरों का तुझे अर्पण करू ॥
जिस बुद्धि से लाया पता, आश्चर्य उस पर हैं सभी ।
देखोगे शीघ्र टूटता, गढ़ लंका को सारे अभी ॥

दोहा

गोरव पाकर गुप्तचर, लगा फेर निज काम ।
खबर यही श्रीराम ने, फैला दई तमाम ॥

भी जगह यह लगी खबर, तो बटने लगी बंधाई है ।
शकन्धर के यहाँ फूट पड़ी, यह खुशी सभी दिल छाई है ॥
ीस अक्षौहिणी फौज सग ले, वीर विभीषण आता है ।
स बात को सुन कर वानरपति, सुग्रीव का दिल दहलाता है ॥

दोहा

उसी समय वहाँ से चला, गया राम के पास ।
होकर के भयभीत सा, बोला ऐसे भाष ॥

दोहा (सुग्रीव)

स्वामी मेरी विनती, पर कुछ कीजे गौर ।
तीस अक्षौहिणी आरही, हंस द्वीप की ओर ॥

हंस द्वीप की ओर गुप्तचर, यही पता लाया है ।
इसी बात को प्रभु आपने, हर जहा पहुंचाया है ॥
किन्तु कुटिल रावण की, नस नस मे फरेब छाया है ।
क्या पता बहाने मिलने के, धोखा देने आया है ॥

दौड़

आप विश्वास ना करना, विनती हृदय धरना, पुराना शत्रु भारा।
दशरथ नृप को आया था मारन, यही अरि तुम्हारा ॥

(सुग्रीव का गाना)

सुग्रीव–यदि मिलने की मर्जी थी तो, सेना संग क्यों लाते।
भेजते दूत या पाती कोई, या खबर दिलवाते ॥
श्रीराम–जो होगा ठीक ही होगा, सखा न दिल में घबराये।
यदि आया है लड़ने को तो, फिर तुमको भी क्या चाहिये॥
सुग्रीव–ठीक है आपका कहना, इसी कारण तो आया हूँ।
किन्तु यह भी भ्रम लड़ते, तो जगी बिगुल बजवाते ॥
श्रीराम–यदि निश्चय ही करना तो, तुम्हें अख्त्यार है सब कुछ।
भेद लो आप जाकर या, किसी खेचर को भिजवाइये॥

दोहा (सुग्रीव)

आज्ञा आपकी चाहिये, देरी का क्या काम।
भेजूं विद्याधर कोई, लावे भेद तमाम ॥
विभीषण ने निज दूत एक, भेजा रघुवर पास।
आकर सब कहने लगा, जो था मतलब खास ॥

दोहा (दूत)

दुःख मोचन श्रीराम जी, सज्जन पोषण हार।
एक दास की विनती, सुन लीजे सरकार ॥

यह अर्ज विभीषण वीर की है, चरणों की सेवा चाहता हूं।
बस लज्जा आपके हाथ में है, मैं शरण तुम्हारी आता हूँ ॥
वचन सिया को दे बैठा, स्वतन्त्र तुम्हें बनाऊंगा।
इसलिये बिगाड़ी भाई से, ना वचन के वट्टा लाऊंगा ॥

दोहा (राम)

वीर विभीषण से मेरा, है आन्तरिक प्रेम ।
कह देना यहां पर सभी, वर्त रहा है क्षेम ॥

रावण और विभीषण क्या, मैं भला सभी का चाहता हू ।
और सिवा एक वैदेही के, कुछ और न लेने आता हूं ॥
आवो निःशंक सिर मस्तक पर, तुम तो मेरे हमदर्दी हो ।
और फटे हुए दिल सीमन को, तुम ही एक अनुभवी दर्जी हो ॥
जैसा हूॅ वैसा हाजिर हूॅ, शरणा तो श्री जिनवर का है ।
जिस काम के वास्ते आया हूं, वह काम तुम्ही को करना है ।
आवो मित्र यहाॅ खुशी खुशी, यह तम्बू डेरा आपका है ।
विश्वास तुझे मेरा मुझको, तेरा तो डर किस बात का है ॥

दोहा

ले सन्देशा राम का, गया विभीषण पास ।
आदि अन्त पर्यन्त सब, हाल सुनाया भाष ॥

जब सुने राम के वचन, विभीषण की अर्ति सब दूर हुई ।
अनुकूल विभीषण यही बात, सब सेना में मशहूर हुई ॥
सुग्रीव नरेश्वर के दिल मे, फिर भी विश्वास न आया है ।
और ठीक भेद सब लेने को, विद्याधर वहाॅ पठाया है ॥

दोहा

पास विभीषण के गया, विद्याधर सुविशाल ।
भेद भाव लेकर सभी, आन कहा सभी हाल ॥

करके निश्चय मन में आ फिर, स्वागत का कार्य करने लगे ।
उस खुशी का कुछ भी पार नहीं, यहाॅ प्रेम के झरने झरने लगे ॥
दरबार राम का लगा हुआ, चहूॅ ओर थे योद्धे खड़े हुए ।
थे उद्योगी निज कर्त्तव्य पर, और वख्तर तन पर पड़े हुये ॥

राम० विभी० मिलन

दोहा

आ पहुंचे विभीषण जी, धूमधाम के साथ।
रामचन्द्र आगे बढ़े, लम्बे करके हाथ॥

वीर विभीषण ने अपना मस्तक, चरणों में डाल, दिया।
औदार चित्त श्रीराम ने भी, उस पर निज हाथ विशाल किया॥
क्षीर नीर समप्रेम प्रेम का जल, नयनों मे बहने लगा।
विश्वास दिलाने लिये राम, अपने मुख से यों कहने लगा॥

दोहा (श्रीराम)

तन दुबला कैसे हुआ, अहो सखा लंकेश।
शूरवीर धर्मज्ञ तुम, कारण कौन विशेष॥

कारण कौन मिला मित्र, तुमको दुर्बल होने का।
जलवायु अनुकूल सभी, और लंक काट सोने का॥
मिला समागम खूब तुम्हें हैं, धर्म बीज बोने का।
श्री जिनवर का धर्म समागम, मिला कर्म खोने का॥

दौड़

तेरा सब पर सम मन है, फेर इतना क्यों गम है।
मानसी और शरीरी, इनमें से हे प्रिये मित्र है तुम्हें,
कौन दल गिरी।

दोहा (विभीषण)

मै तो हूँ प्रभु आपके, चरण कमल का दास।
सिवाय यहाँ के और ना, मिला मुझे कहीं वास॥

जिसको ना मिलती ठौर कहीं, उसको लंकेश बुलाते हो!
हे नाथ अपेक्षा कौन आप, जिससे ऐसा फरमाते हो॥

थी जलवायु तो शुद्ध लङ्क की, किन्तु अब सब बिगड गई।
और धर्म बीज बोने की भी, शक्ति इस कर से निकल. गई॥
धर्म ठीक सर्वज्ञ देव का, कर्म मैल को धोता है।
पर भाग्यहीन को तो फिर भी, कर्मों का बन्धन होता है॥
कुल के गौरव को मैने, निज दिल मे नहीं भुलाया है।
बस यही मानसी दुःख मुझे. जिसने कमजोर बनाया है।
यदि घृणा है तो मुझको कुछ, रावण के कर्त्तव्यों पर है॥
निश्चय उससे कुछ बैर नहीं, इज्जत मेरे दिल अन्दर है।

दोहा

सत्यवादी के वचन पर, रीझ गये रघुवीर।
दानवीर गम्भीर नर, यों बोले रणधीर॥

दोहा (राम)

सखा विभीषण कह चुके, हम तुमको लकेश।
ऐसा तू भाई मेरा, जैसा भरत नरेश॥

यदि भरत है भांई भुजा ठीक तो, भुजा मेरी तू दक्षिण है।
जैसा मुझको सुग्रीव मित्र, वैसा तू मित्र विभीषण है॥
और जनक सुता के सिवा लंक से, और न कुछ ले जावेंगे।
बस ताज लक का निज कर से, हे मित्र तुम्हे दे जावेगे॥

गाना (श्री राम का)

तैने विपत्ती समय में, सहारा दिया।
सगे भाई का दुख न. गंवारा गया॥
तैने सत्य धर्म को पाला है, और दुनियाँ मे नाम निकाला है।
तैने हृदय ये सर्द, हमारा किया॥

जब हनुमत लंक में आया था, तैंने सीता का भेद बताया था।
हम पर आपने, ये उपकार किया ॥
तू जनक सुता का सहारा था, सारी लंका में तू ही हमारा था।
कैसे दुष्टों में, तैंने गुजारा किया ॥
तुम जैन धर्म के ज्ञाता हो, सच्चे पुरुष जगत विख्याता हो।
खोटे पुरुषों से, तूने किनारा किया ॥

दोहा

रामचन्द्र के जब सुने, अमृत झरते बैन।
विभीषण चरणों में गिरे, लगे इस तरह कहन ॥

दोहा (विभीषण)

मै तो इस लायक नहीं, जैसे कहते आप।
शरण पड़ा हूँ आपके, काटन निज संताप ॥

यदि मैं इस लायक होता तो, जनक सुता क्यों दुःख पाती।
क्यों आडम्बर इतना बढ़ता, यह राड़ कभी की मिट जाती ॥
जो होनहार की मर्जी है, सो तो अब रङ्ग दिखायेगी।
जब तक दशकंधर का दम है, तब तक सीता ना आयेगी ॥

दोहा

राम विभीषण का यहाँ, हुवा परस्पर मेल।
एक दूजे का चाह रहे, कुशल और सब चेम ॥



लंका पर चढ़ाई

दोहा

प्रथम बिगुल जिस दम वजा, सावधान हुवे शूर।
योद्धों को लाली चढी. खुशी ऐन भरपूर ॥

दोहा

हंसरत भूपाल भी, गये राम के साथ।
शस्त्रों से अति शोभते, रणधीरों के गात ॥

आठ दिवस रहे हंसद्वीप, फिर आगे को प्रस्थान किया।
चढ़ रहा वीर रस योद्धा को, लंका पर सबने ध्यान दिया ॥
दशकंधर की सीमा पर, जा श्री राम ने सेना डाल दई।
और तेजी से लक्ष्मण जी ने, फिर धनुषबाण टङ्कार दई ॥

दोहा

लम्बी चौड़ी जगह थी, योजन बीस प्रमाण।
चक्रव्यूह सब सेना का, किया वहाँ मंडान ॥

मारू बाजा बजता है, योद्धों को जोश दिलाने का।
टङ्कार शब्द हो रहे खूब, शत्रु के दिल दहलाने को ॥
घनघोर शब्द सुन सुन करके, लंका वाले घबराते हैं।
तब वीर दशानन इन्द्रजीत को, ऐसे हुक्म सुनाते हैं ॥

=००=

राक्षस दल

दोहा (रावण)

बेटा इन्द्रजीत अब, क्यों करते हो देर।
कर तैयारी फौज की, शत्रु को ले घेर ॥

शत्रु को ले घेर स्वयं, आ फंसे कर्म के मारे।
विन पुरुषार्थ किये सिंह को, मिले मृगगण सारे ॥
समझ लिया बेटा मैंने, प्रबल है भाग्य तुम्हारे।
करो नाश शत्रु का, बस हो गये आज पौबारे ॥

वार्ता--रावण----बेटा इन्द्रजीत अब अपने जौहर दिखाओ।

शेर (इन्द्रजीत)

आपकी कृपा से यदि मैं चाहूं तो, एक बाण से, अंधेर मचा दूं।
आए हुवे मध्याह्न में, सूर्य को छिपा दूं ॥
क्या राम, क्या सुग्रीव, सब परभव मे पहुँचा दूं ।
ऐक तीर से तूफान की, तस्वीर बना दूं ॥

दोहा (रावण)

शाबाश मेरे सुत केहरि, इन्द्रजीत बलवत ।
जंगी बिगुल बजा अभी, करो अरि का अंत ॥

चढ़ा हुक्म दशकन्धर का, लगा बजन रणतूर ।
बख्तर शस्त्र पहन कर, खड़े हुवे सब शूर ॥

सज गई विकट गाड़ी संग्रामी, रथ पर भूप सवार हुवे।
हाथी घाड़ों का पार नहीं, अद्भुत विमान तैयार हुवे ॥
मारू बाजा बजा रहे, योद्धों को जोश दिलाने को ।
कल्पान्त काल की तरह चला, रावण निज धूल उडाने को

दोहा

सहस्र अक्षौणी सेना को, देख हर्ष दिलमाय ।
रण भूमि मे आन के, दिया मोर्चा लाय ॥

योजन पचास में फौज पड़ी, रावण की चक्रव्यूह रचके।
अप अपने शस्त्र नचाते है, कोई गदा उछाल रहा हंस के॥
इन्द्रजीत और भानुकर्ण थे, मेघवाहन दुर्दन्त बडे ।
मारीच सुन्द सारण आदि, यह सभी वीर बलवंत खडे ॥
त्रिशूल भुशुंडी धनुपबाण, शतघ्नी की दनादन होती है।
कहीं दण्ड खड्ग शस्त्र अपार, मुग्दर की सजावट होती है

फिर उतर पड़े रणक्षेत्र में, बलवीर दुतर्फी आकर के।
तब लगा घोर संग्राम होन, कई गिरे धरणी गश खाकर के॥
दुर्दान्त महाबलवन्त शूरमा, उधर से हस्त प्रहस्थ चढ़े।
दोनों का मान मर्दन करने, इस तरफ वीर नलनील-बढ़े॥
अब लगा होने संग्राम घोर, कायर का हृदय फटता है।
मिट जाता है वह दुनिया से, जिस पर शस्त्र जा पड़ता है।।



संग्राम

दोहा

नल भूपति ने हस्त के, मारा कस कर बाण।
शत्रु ने मैदान मे, दिये छोड़ झट प्राण॥

यह हाल देख के प्रहस्थ वीर के, तन मे गुस्सा छाया है।
तेजी से हल्ला बोल दिया, बानर दल आन दबाया है॥
इस तरफ से नीलबली ने भी, सम्मुख अपना दल ठेल दिया॥
प्रहस्थ सुभट के सन्मुख जा, संग्रामी रथ को मेल दिया।
जब आन परस्पर मेल हुवा, तो युद्ध भयानक होने लगा॥
एक एक शूरमा शर शय्या पर, नींद सदा की सोने लगा॥
फिर नील बली ने मारी एक, शत्रु को सांग घुमा करके।
जा लगी प्रहस्त के हृदय मे, झट गिरा मूर्च्छा खाकर के॥
फिर एक दम हल्ला बोल दिया, रावण के दल मे भगी पड़ी।
अब उनकी गिनती कौन करे, जो खून से लाशें रंगी पड़ी॥
पराजय हुई दशकन्धर की, और विजय राम ने पाई है।
अब रणक्षेत्र में दशकन्धर की, फौज दूसरी आई है॥

दोहा

भूप वीर मारीच शुक, सारण और सिंहरथ।
वीभत्स उद्दामा रवि, मकरचन्द्र अश्वरथ॥

कामाक्ष और ज्वरभूप चढ़े, गम्भीर बली थे सिंहजघन।
सम्भूप सकामा महाबली, यह चढ़े वीर दिल अतिमगन॥
यह महाबली दशकन्धर के, योद्धे आ रण में ललकारे।
इस तरफ राम की सेना ने, वस्त्र शस्त्र तन पर धारे॥

दोहा

मदन और अंकुश बली, प्रथित और सन्ताप।
पुष्पास्त्र सुविघ्न भट, नन्दन दुरी और चाप॥

सुदूर धर सजगया वीर, योद्धा रणधीर बहादुर था।
सन्ताप से आ मारीच जुटा, जो कि बलबीर उजागर था॥
मारीच वीर ने रण क्षेत्र में, सन्ताप भूप को मार दिया।
नन्दन वानर ने यहाँ ज्वर, राक्षस को धरणि पछाड दिया॥
राक्षस उद्दामा ने विघ्न सुभट, दल में घायल कर डाला है।
तब दुरित वीर के एक बाण से, परभव शुक सिधारा है॥
सिंह जघन ने प्रतीप कपि पर, अमोघ बाण को छोड़ दिया।
जब लगा उर स्थल आकर के, दुनियां से नाता तोड़ दिया॥
यह महावीर संग्राम देखकर, सूर्य अस्ताचल पहुँचा।
योद्धों ने शस्त्र म्यान किये, हो गई शाम ये दिल सोचा॥
अप अपने डेरों में जाकर, सब योद्धों ने विश्राम किया।
जो नियत किये थे मुर्दों पर, अप-अपना सबने काम लिया॥

दोहा

दिनकर जब प्रकट हुवा, हुई निशा जब दूर।
योद्धे सब तैयार थे, बजन लगा रण तूर॥

बजा बजा रण तूर चले, शूरे खा जोश समर मे ।
बख्तर तन पर पड़े हुवे, लटके तलवार कमर मे ॥
जीने की तज दई आशा, ना किया ध्यान कुछ घर में ॥
रण क्षेत्र में कूद पड़े सब, शस्त्र लेकर कर मे ॥

दौड़

खड़े सब तने दुतर्फी, सिर्फ थी देर हुक्म की, बैठ संग्रामी रथ मे, सब सेना का कर आगे दशकंधर कहे मगन मे ।

दोहा (रावण)

सुनहु शूर मम वचन सब, लगा इधर को ध्यान ।
जौहर दिखावो आज तुम, समर भूमि दरम्यान ॥

समर भूमि दरम्यान आज बस, खतम सभी को कर दो ।
बॉध मुस्क दो भीलो की, सन्मुख मेरे ला धर दो ॥
क्षत्राणी का क्षीर समर में, अदा आज सब कर दो ।
मार मार बाणों से सब, सेना का छेद जिगर दो ॥

दौड़

जौहर जो-दिखलायेगा, जागीर सो पायेगा, पीठ देगा जो-रण मे, जीता छोड़ू नहीं उसे आखिर पहुँचे नरकन मे ।

दोहा

लंक पति के वचन सुन, महा रोष मन खाय ।
ललकारे सब शूरमा, रण भूमि में आय ॥

गाना

(तर्ज—आल्हा-ऊदल)

रामचन्द्र की सेना पर जा, योद्धे परे सभी अर्राय ।
दण्ड चक्र परिघा व मुग्दर, फरसी गदा को रहे चलाय ॥

जिधर झुके रणधीर शूरमा, लाशो पर दें लाश बिछाय।
यह गति कर दई रण क्षेत्र की, नदी खून की दई बहाय॥

वीर बहादुर चढ़े जोश में, सब को मार ही मार सुहाय।
जैसे पक्षी उड़े व्योम मे, ऐसे शीश उड़ें रण माय॥
दुर्जय माली झुके जिधर को, उधर देवे अन्धेर मचाय।
बेशक राक्षस बूढ़ा था, पर कोई सन्मुख आवे नाय॥
रामचन्द्र की सेना पर गई, राक्षस सेना गालिब आय।

खननन ॰ खांडा बाजे, शतघ्नी दनादन रही मचाय॥
विकट गाड़ियें घूमे रण मे, जिनकी झपट सही ना जाय।
देख पराक्रम रावण दल के, राम की सेना गई घबराय॥
देख हाल सुग्रीव नरेश्वर, धनुष बाण कर लिये समाय।
खबर लगी यह हनुमान को, बानर पति चढ़े रण माय।
झट आकर प्रणाम किया, और बोला ऐसे शीश नवाय॥

दोहा (हनुमान)

स्वामि आज्ञा दीजिये, सेवक को एक वार।
रण भूमि मे आज मै, करूँ कठिन तलवार॥

कौन वीर है रावण का, जो मेरे सन्मुख आयेगा।
जब गरजूँगा रण मे जाकर, शत्रु दल पीठ दिखायेगा॥
प्रथम अकेले ने लंका मे, अक्षकुमार को मारा था।
और भरी सभा में रावण का, ठोकर से ताज उतारा था॥

दोहा (सुग्रीव)

महाबली बस है मुझे, तुझ पर ही विश्वास।
जावो अब रण क्षेत्र में, करो अरि का नाश॥

दोहा

पा आज्ञा सुग्रीव की, चढ़े अजनीलाल ।
रण भूमि में जा धसे, होकर के विकराल ॥

फिर क्या था श्रीराम फौज ने, पांव समर मे रोप दिया ।
और पवन पुत्र ने जोश दिला कर, सहसा हल्ला बोल दिया ॥
जैसे शेर हस्तियों मे, यों राक्षस दल को दलने लगा ।
या शूकर जैसे पानी को, ऐसे रणधीर मसलने लगा ॥
देख बली का तेग दशानन, की सेना घबराई है ।
हो गये धरणि पर खाक, शूर कायरों ने पीठ दिखाई है ॥
ये देख हाल दुर्जय माली, हनुमान के सन्मुख आया है ।
तब पवन पुत्र ने उस बूढ़े को, ऐसे वचन सुनाया है ॥

गाना (हनुमान)

अरे बूढ़े बता तूने, अकल कहां बेच खाई है ।
अवस्था वृद्ध है, तलवार तैंने क्यों उठाई है ॥
गई अब उम्र वह तेरी, जो थी सग्राम करने की ।
बता अब काल को आकर के, क्यों धमकी दिखाई है ॥
बैठ करके किसी स्थानक मे, अब भजन कुछ कर ले ।
क्योंकि परभव में जाने की, तेरी यह उमर आई है ॥
किये संग्राम तैंने उमर भर, अब तो धर्म कर ले ।
तरस खाकर "शुक्ल" कहता, तेरी इसमे भलाई है ॥

गाना (दुर्जय माली)

अरे तू छोकरे कल के, काल को क्यों खिजाता है ।
चन्द दिन सैर कर अपनी, तू क्यों हस्ती मिटाता है ॥
दूध के भी नहीं टूटे, दांत कितना अकड़ता है ।
तेजर्वकार को मूर्ख तू, क्या यौवन दिखाता है ॥

मेरे एक तीर से अवसान, सारे भूल जायेगा।
जरा तू सामने आ, क्यों खड़ा बातें बनाता है॥
लाल तू एक माता का, "शुक्ल" यह तरस आता है।
किन्तु मैं क्या करूँ, जब काल ही तुझको मिटाता है॥

गाना (हनुमान व० त०)

अच्छा बाबा तू, अपना दिखाले जौहर,
क्योंकि फिर तेरे, मन की न मन में रहे।
अब तू सारे ही, अरमा यहाँ काढ ले,
कोई शक्ति, बकाया ना तन में रहे॥
तू तो मुर्दा है खुद. क्या मैं मारूं तुझे,
वरना तेरा निशाँ, ना समर में रहे।
मैंने समझाया था पर, तू समझा नहीं,
क्यों ना आनन्द से, अपने घर मे रहे॥

दोहा

पवन पुत्र के सुन वचन, छाया क्रोध अपार।
हनुमत पर करने लगा, वृद्ध वार पर वार॥

जैसे निरर्थ खर्च में मूर्ख, दौलत वृथा गंवाते हैं।
जब पास नहीं कुछ रह जाता, तो फिर पीछे पछताते हैं॥
बस यही हाल हुआ बूढ़े का, शस्त्र विद्या सब खो बैठा।
फिर ऐसा दिल में भाव हुआ, मैं जीने से कर धो बैठा॥

दोहा

आश्चर्य में पड़ गया, उड़ गये होश हवाश।
हनुमत अब करने लगा, मुख से वचन प्रकाश॥

दोहा (हनुमान)

क्यो बाबा अब किस लिये, मुंह को रहे उबाय।
यदि कुछ शक्ति और है, तो भी दो दिखलाय ॥
अब यदि समाप्त कर बैठे तो, घर जाकर आराम करो।
माला कर में लो पकड़, नित्य श्री नमोकार का जाप करो ॥
क्योंकि अब तो काल स्वयं, तुमको ले जाने वाला है।
तो किस कारण फिर शस्त्र से, मुर्दे का खून बहाना है ॥

दोहा

वज्रोदर बलवीर नृप, आ पहुंचा तत्काल।
हो सन्मुख हनुमान से, बोला आंख निकाल ॥
क्यों शठ वृद्ध से इस तरह, बातें रहा बनाय।
यदि कुछ शक्ति बदन में, आज मुझे दिखलाय ॥

वज्रोदर गाना

(बहरे तवील)

क्यों मेंढ़क सा टर्राता अय बेशर्म,
तुझको जीता समर में ना छोड़ूंगा मैं।
आज मेरी प्रतिज्ञा, यही समझ ले,
सबको करके खत्म मुंह को मोड़ूंगा मैं ॥
पहले तुझको मिटा करके, मै आगे बढ़ूं,
मान सुग्रीव का आज तोड़ूंगा मैं।
बाकी दो ही रहे सब विजय है मेरी,
शक्ति उनकी भी, सारी निचोड़ूंगा मैं ॥

दोहा (हनुमान)

वाह जी वाह क्या खूब ये, शक्ल दिखाई आय।
था गल में मुर्दा पड़ा, तुमने दिया हटाय ॥

हनुमान गाना

(बहरे तवील)

बूढ़े बाबा को देकर, अभयदान हम,
आवो तुमको, पहुँचायेंगे मुल्के अदम।
आज अरमान दिल का, सभी काढ़ले,
क्योंकि कर दूंगा, फिर तो तेरा दम खतम।
राम सुग्रीव लक्ष्मण को, देखेगा क्या,
यहां ही कर देंगे साहिब, तुम्हारी भसम।
दाना पानी अब, तेरा खतम हो गया।
सच्ची कहता हूँ, तुमको तुम्हारी कसम॥

दोहा

पवन पुत्र के वचन सुन, वज्रोदर झुंझलाय।
वज्रबाण हनुमान पर, सहसा दिया चलाय॥
पवन पुत्र ने काट वार को, अपना बाण चलाया है।
तज दिये प्राण वज्रोदर ने, परभव डेरा जा लाया है॥
यह हाल देख जम्बू माली, नृप का नन्दन सन्मुख आया।
पर एक वार से हनुमान ने, उसको भी परभव पहुँचाया॥

दोहा

दो योद्धा दल में गिरे, मच गया हा हा कार।
रावण दल मे एक दम, छाया जोश अपार॥
महोदर आदि वीर नृपति, चढ़ आये चहुं तरफा से।
अंजनी लाल यूं घेर लिया, जैसे कोई पक्षी वर्षा मे॥
उदधि मे जैसे वडवानल, यों राक्षस दल मे शोभ रहा।
जैसे भानु के चढ़ते ही, तारागण का ना खोज रहा॥

या यों समझे महा प्रबल सिंह, जैसे कि गर्ज रहा वन मे ।
त्यो अस्त्र शस्त्र घुमा २, करता कमाल रण के फन में ॥
मुर्दों पर जीते गिरने लगे. यह हाल हुआ रण क्षेत्रों मे ।
तब लगा बरसने रक्त देख, यह कुम्भकर्ण के नेत्रो मे ॥

दोहा

कुम्भकर्ण जिस दम चढ़ा, दहला गई जमीन ।
लगा समर मे घूमने, जैसे विकट मशीन ॥

राघव सेना अति घबराई, उस वीर की शक्ति सह न सके ।
एक सिवा अंजन लाल युद्ध में, सन्मुख कोई रह न सके ॥
कल्पान्तकाल की तरह वीर ने, रूप भयानक धारा है ।
जिस तरफ झुका बस, उसी तरफ सब रुंड-मुंड कर डारा है ॥
मुर्दों मे जीते लगे छिपने, कई अपने प्राण बचाने को ।
यह हाल देख कई लगे सोचने, रण मे पीठ दिखाने को ॥
जब छिन्न भिन्न होगई सेना, सुग्रीव ने हाल निहारा है ।
झट बिगुल बजाया योद्धों ने, बख्तर निज तन पर धारा है ॥
चल दिये दधि मुख माहेन्द्र, अप अपनी फौज सजा करके ।
चौथे मुकुन्द अगद पचम, सज गये जोश मे आकर के ॥
नव चढ़े वीर दुर्दन्त बली, भामण्डल इनमें शामिल थे ।
मिथिलेश किशोरी के भाई, जो कि इस फन में कामिल थे ॥

दोहा

छः योद्धे जाकर अड़े, कुम्भकर्ण के साथ ।
उधर अकेला वीर था, दशकन्धर का भ्रात ॥

जब लगा घोर संग्राम होने, तो नदी रक्त की बहने लगी ।
कल्पान्तकाल आगया आज, वहां की जनता ये कहने लगी ॥
लगी बाण वर्षा होने, बहुते शरशय्या पर लेट गये ।
ना हटे पिछाड़ी दोनों दल, शूरे निशंक रण भेंट हुये ॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने तान कर, छोड़ा 'सम्मोहन बाण'।
निद्रागत सेना हुई, कपिपति का हुवा ध्यान॥
शयनाहतास्त्र को छोड़, भूप ने सेना तुरन्त उठाई है।
फिर तमकतान क्रोधातुर होकर, अपनी गदा घुमाई है॥
बाहक संग संग्रामी रथ, सब कुम्भकर्ण का चूर हुआ।
मुग्दर ले नीचे कूद पड़ा, क्योंकि योद्धा मजबूर हुआ॥

दोहा

मुग्दर ले भानुकर्ण, कपिपति ऊपर जाय।
गुस्से में भरपूर हो, रथ पर दिया झुकाय॥
संग्रामी रथ को उसी समय, सुग्रीव नरेश ने तोड़ दिया।
थे वीर बराबर के दोनों, फिर आपस मे जंग जोड़ लिया॥
विद्या की शिला बना करके, सुग्रीव नरेश ने छोड़ दई।
पर भानुकर्ण ने मुग्दर से, वो माया सारी तोड़ दई॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने तान फिर, मारा अस्त्र रज बाण।
घोर अन्धेरा छागया, उडी धूल आसमान॥
यह हाल देख सुग्रीव ने, झट अस्त्राम्बु बाण चलाया है।
जिस रज से घोर अन्धेरा था, उसको झट शान्त बनाया है॥
छोड़ दिया एक तड़ित बाण, सुग्रीव ने महारिसा करके।
जा लगा अरि के हृदय में, झट गिरा मूर्छा खा करके॥

दोहा

कुम्भकर्ण जिस दम गिरा, होकर के बेहोश।
राक्षस सेना का हुआ, ठण्डा सारा जोश॥

छाई खुशी रघुसेन में, अरि गया मुर्झाय।
उत्साह चौगुना बढ़ गया, हल्ला बोला जाय॥
ंगिगण उड़ जाते हैं, जिस तरह वृक्ष गिर जाने से।
ा ही भगी राक्षस सेना, एक योद्धा के मुरझाने से॥
ंशा देखकर सेना की, दशकन्धर अति रिसाया है।
ः चढ़ा आप संग्रामी रथ, मुख से रण तूर बजाया है॥

दोहा

तैयार पिता को देख कर, आया ज्येष्ठ कुमार।
विनय सहित मस्तक निवा, कहा वचन सुखकार॥

दोहा (मेघनाद)

पिता आप किस पर चढ़े, बख्तर शस्त्र धार।
शृगालों पर क्या शोभते, आप सजा हथियार॥
ज्ञा मुझको दे दीजे, देखो तो फिर क्या कर दूंगा।
स तरफ झुकूंगा उसी तरफ, लाशो पर लाशे धर दूंगा॥
न चीज सुग्रीव विचारा, आज सभी को मारूंगा।
नित्य प्रति का जो झगड़ा है, बस सभी खत्म कर डालूंगा॥

दोहा (रावण)

बेटा तुम पर ही मेरा, है अन्तिम विश्वास।
जावो अब रणक्षेत्र में, करो अरि का नाश॥

रावण गाना

करो जग बहादुर बेटा, अब दुश्मन को मार दो।
अमोघ शस्त्र को धार, उनके सिर उतार दो॥
कहलाता इन्द्रजीत, तूने जीता इन्द्र को।
क्या चीज राम की सेना है, छिन मे निवार दो॥

बढ़ने न पावे आगे को, ये सेना शत्रु की।
लेकर के सेना अपनी, तुम आगे विस्तार दो।
राष्ट्र अपने की करो, अब सेवा तन मन से।
परवाह न करना मरने की, यह निश्चय धार लो॥

भानुकर्ण चाचा तुम्हारा, देखो मूर्छित है।
शत्रु से इसका बदला, तुम अपना उतार लो॥

दोहा

स्वीकार वचन करके, हुवा इन्द्रजीत तैयार।
बिगुल बजी तो हो गई, सेना सब तैयार॥

तीन ताल (इन्द्रजीत की तैयारी)

मेघनाद तैयार हुआ है, पहन अभेद्य भारी बख्तर।
खिच गई पेटी दलनायक की, संग चले हैं सब अफसर॥

लंका से दल चला, मैदाने शान पर।
काली घटायें छाई, ज्यूँ आसमान पर॥

कवायद करवा सब सेना को, देख रहा अफसर वस्त्र।
सलवट हो ना किसी वर्दी में, मेघनाद बोला हंसकर॥

बाजा बजा है रण का, झंडा लगा दिया।
रावण की जय मनावो, सब को सुना दिया॥

बर्छी भाले और तमंचे बांध, लिये सबने शस्त्र।
वानर दल पर आज अपूर्व, बरसाओ अस्त्र शस्त्र॥

शक्ति नहीं है दुश्मन की, मेरे सहे वार को।
लगादे चौब डंका, बोला नक्कार को॥

बिन जीते अब राम लखन के, वापिस नहीं लौटूं घर पर।
पुण्य पाप का खेल जगत में, काल घटा सब के सिर पर॥

दोहा

इन्द्रजीत रण में चढ़ा, होकर के विकराल ।
सुर्खी छाई नयनों में, भृकुटी सहित निडाल ।।

इन्द्रजीत और मेघवाहन आ, रणभूमि में ललकारे ।
विमान विकट गाड़ी सेना, भारी योद्धे संग बलवारे ।।
कल्पान्त काल की तरह देख. वानर योद्धे घबराते हैं ।
तब इन्द्रजीत वानर सेना को, ऐसे शब्द सुनाते हैं ।।

दोहा (इन्द्रजीत)

इधर कान धर कर सुनो. वानर वीर तमाम ।
अब यहाँ से भागो सभी, पहुंचो निज निज धाम ।।

कहाँ गया सुग्रीव बली, और पवन पुत्र हनुमान कहाँ ।
राम लखन और भामण्डल, सर्व का आ पहुंचा काल यहाँ ।।
बाकी डालो हथियार सभी, क्यों मौत पराई मरते हो ।
जा मिलो बाल-बच्चों से तुम, किसलिये जुदाई करते हो ।।

दोहा

इन्द्रजीत का नाम सुन, घबरा गये तमाम ।
जैसे हो भूकम्प से, कंपित सारे धाम ।।

यह हाल देख सुग्रीव और, भामंडल दोनों वीर चढ़े ।
झट इन्द्रजीत और मेघवाहन के, सम्मुख जा रणधीर अड़े ।।
मेघवाहन से रणभूमि में, भामंडल ललकारा है ।
और इन्द्रजीत के पास पहुँच, सुग्रीव ने वचन उचारा है ।।

गाना (सुग्रीव का)

क्यों अभिमान करता, खड़ा हो सम्भल कर,
कदम अपना आगे, बढ़ाओ सम्भल कर ।

यदि इच्छा लड़ने की, तेरी प्रबल है,
तो देरी क्यों करते हो, आवो सम्भल कर।
जरा सोच लेना, समर है ये बांका,
करो सैर परभव की, जावो सम्भल कर।
यदि वीर हो तो बढ़ो, अब अगाडी,
नहीं पैर पीछे, हटाओ सम्भल कर॥

गाना (इन्द्रजीत का)

तुम्हें आज सब कुछ, दिखाऊँ सम्भल कर।
समर में सभी को, लिटाऊँ सम्भल कर॥
समझ लो सभी जान, खतरे मे अपनी।
कि सिर सब का धड़ से, उड़ाऊं सम्भल कर॥
इस लंका पे चढ़ने का, तुमको नतीजा।
सभी को समर में, दिखाऊं सम्भल कर॥
तजो आश जीने की, तैयार हो लो।
परभव में सबको, पठाऊं सम्भल कर॥

दोहा

आपस में यूं बढ़ गया, क्रोध दुतर्फी जान।
रणभूमि मे होने लगा, महाघोर घमसान॥
विकट वीर वलवान वहुत, धरणी पर मार गिराये हैं।
कभी अग्निवाण कभी धूंधवाण, कभी मेघवाण वरसाये हैं॥
फिर मेघवाहन ने नाग फांस, अस्त्र छोड़ा भामडल पर।
वह जनक पुत्र को जा लिपटा. जैसे अहि लिपटा सन्दल पर।

दोहा

रघुवर दल के पड़ गये, महा सङ्कट मे प्राण।
सज्जन गण सुन लीजिये, होनहार वलवान॥

इन्द्रजीत ने भी अपना, अस्त्र सुग्रीव पै साध लिया।
उस तरफ बंधा भामंडल, यहां सुग्रीव नरेश को बाध लिया॥
यह हाल लखा बज्रङ्गबली ने, क्रोध बदन मे छाया है।
अन्य लक्षों को गौण बना, उस तरफ ही रथ बढ़ाया है॥

दोहा

जा पहुँचे झटपट वहीं, जहाँ थे दोनों वीर।
रोक रथ दोऊ शूरों के, बोला अमित बली वीर॥

यों उछल कूद मचाई है, अब परभव को पहुंचाऊंगा।
ीव और भामंडल के, बांधन का स्वाद चखाऊंगा॥
र क्या था वे वीर परस्पर, बाणों की वर्षा करने लगे।
नघोर युद्ध छिड़ गया वहां, कायर लख के ही गिरने लगे॥
क नदी बहती यहाँ नभ मे, रक्त फुव्वारे चलते हैं।
स पर जा पड़े वीरो के बाण, क्या पता कहां जा मिलते हैं॥
अमित बली रावण सुत, पर वज्रांग भी एक ही नाहर थे।
कांपते जिनके नाम से नृप, ऐसे दुनियां मे जाहिर थे॥
। गये पांव श्री राम चमू के, देख के योद्धा बलधारी।
ड़ गई सेना फिर से आपस में, मारा मार मची भारी॥
शुण्डी शतघ्नी परिघापटा, भाला खंजर भी खटकते हैं।
। वीरों के रण मे आपस में, व्योम में वार सरकते हैं॥

दोहा

अस्त्र शस्त्र कड़कते, ज्यों हो विद्युत पात।
देख तेज वज्रंग का, सोचें दोनों भ्रात॥
अमित बली हनुमंत है, शक इसमे कुछ नांय।
शक्ति ना हर कोई सह सके, नाम सुनत भग जांय॥

उधर बली श्री हनुमान के, बाणों से अम्बर छाया है।
इत मेघवाहन और इन्द्रजीत क्या, रावण दल घबराया है॥
इतने में मूर्छा त्याग के रण में, भानुकर्ण भी आया है।
फिर तो क्या था रणभूमि में, कल्पान्त काल सा छाया है॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने उछल कर, मारी गदा घुमाय।
पवन पुत्र उस गदा से, गिरे मूर्छा खाय॥

हो गये वीर तीनों बेबस, फिर राघव सेना घबराई।
यह हाल देख वानर दल का, रावण सेना अति गर्वाई॥
पत्ती जैसे उड़ते नभ में, यों वीरों के सिर उड़ते हैं।
यह हाल विभीषण देख, राम आगे यों गिरा उचरते हैं॥

—***—

विभीषण-राम भयभीत

दोहा (विभीषण)

सेना हमारी हो गई, सभी प्रभु बेकार।
रावण के सुत भ्रात ने, किया बहुत संहार॥

भामंडल और सुग्रीव बली, दोनों बेबस कर डारे हैं।
धोखे मे गिरा वज्रांगबली, सब दल के होश बिगारे हैं॥
मानिन्द शेर के गर्ज रहे, निर्भय हो अब दोनों दल में।
ऐसे तो खाली कर देगे, हमको योद्धों से क्षण पल में॥

दोहा

केवल इक अंगद बली, निभा रहे हैं काम।
जिनके पैरों पर खड़ी, कुछ सेना सुख धाम॥

इसका अब शीघ्र विचार करो, नहीं तो पीछे पछतावोगे।
यदि ले गये लंक मे तीनों को, तो कर मलते रह जावोगे ।।
अब तो दुःख है सीता का, फिर छोटा सा सन्ताप नहीं।
और बिना तीन योद्धों के, बाकी इस दल में रहे खाक नहीं ।।

गाना विभीषण

श्रीराम के प्रश्नोत्तर

यह देख हाल दिल को, बिलकुल सबर नही।
इस दम हमारी सेना, उनसे जबर नहीं है ।।
अंगद अकेला रण मे, कब तक डटा रहेगा।
हिलता है एक जगह पर, मेरा जिगर नहीं है।
राम---सुनकर वचन तुम्हारे, मन को सबर नहीं है।
बीतेगी आज कैसी, कुछ भी खबर नहीं है।
बजरंग पड़ा है मूर्छित, दो नागफांस में है ।।
मेरा भी एक जगह पर, इस दम जिगर नहीं है।
विभी०---झुकता है जिस तरफ को, वो भानुकर्ण देखो।
जिसके मुकाबले हो, यम का गुजर नहीं है ।।
राम----बेशक अतुल बली है, भानुकर्ण बहादुर।
लड़ता है काल बनकर, इसमें कसर नहीं है ।।
विभी०----वो इन्द्रजीत भाई, दोनों को आप देखे।
जौहर दिखा रहे हैं, कुछ भी तो डर नहीं है ।।
राम---रावण के पुत्र दोनों, बेशक है वीर बाके।
आसान उनसे करना, निश्चय समर नहीं है ।।

दोहा

कुंभकर्ण हनुमान को, झुक कर लगा उठान।
अंगद ने अति क्रोध मे, कस कर मारा बाण ।।

वह वार बचाया कुंभकर्ण ने, हनुमान की मूर्छा दूर हुई।
और अंजनी लाल फिर ललकारे, अंगद की अर्ति दूर हुई॥
इतने में विभीषण आ पहुंचे, श्रीराम की आज्ञा पा करके।
बस फिर क्या था वानर सेना, बढ़ गई जोश में आ करके॥

गाना

खड़ा जिस दम विभीषण, तानकर कर मे दुधारा।
मेघवाहन ने फिर सोचा कि, यह चाचा हमारा है ॥१॥
ख्याल यह ज्येष्ठ भाई का कि टल जाना ही अच्छा है।
लड़े किससे पितावत् यह, बड़ा गुरुजन हमारा है ॥२॥
भाव भानुकर्ण के भी, यही लड़ना नहीं अच्छा है।
यदि आपस मे मचावें जंग, तो हर्जा हमारा है ॥३॥

दोहा

उसी समय पीछे हटे, राक्षस वीर तमाम।
जैसा किया विचार था, बना नहीं वो काम॥
सूर्य अस्ताचल पर्वत के, पास पहूंचने वाला था।
नागफांस ने यहां महा, योद्धों को कष्ट में डाला था॥
किया बहुत उपाय राम ने, नागफांस तुड़वाने का।
किन्तु प्रयत्न गया खाली, सब योद्धों के छुड़वाने का॥

दोहा

रघुवर ने स्मरण किया, महालोचन फिर देव।
उसी समय हाजिर हुआ, देव आन स्वयमेव॥
था वचन दिया श्री रामचन्द्र को, जिस कारण सुर आया है।
और संकट दूर कराने को, श्रीराम ने उसे बुलाया है॥
आपत्ति सब दूर भगें, शुभ पुण्य जिन्हों का चढ़ा हुआ।
दो हाथ जोड़कर खड़ा सामने, देव वचन का बधा हुआ॥

गाना (रामचन्द्र व देवता का)

सेवा मुझे बताओ चरणों का दास आया।
जिस काम के लिए है, मुझको प्रभु बुलाया ॥१॥
लाचार हो के हमने, तुमको यहा बुलाया।
दु:ख दूर करना होगा, जिसने हमें सताया ॥२॥
मुख से जरा उचारे, फिर देर भी तो क्या है।
मैं आपकी अमानत, इस वक्त देने आया ॥३॥
यह दो हमारे शूरे, सेना सभी के चक्षु।
दोनों पे राक्षसों ने, है नागफांस ताया ॥४॥
बेशक विकट यह फंदा, है काल की निशानी।
यह खूब तुमने सोचा, मुझको यहां बुलाया ॥५॥
यह गारुड़ी लो विद्या, देता हूँ आज तुमको।
जहां पर रहे यह विद्या, हो दूर नाग माया ॥६॥

छन्द

गारुड़ी विद्या सुमित्रा, लाल लक्ष्मण को दई।
सिंहनि नादा नाम विद्या, रामचन्द्र ने लई॥
शत्रु विनाशक एक गदा, विद्युत वदन वसु नाम है।
देकर ये विद्या सभी, वो सुर गया निज धाम है॥
गारुड़ी विद्या पै चढ़, लक्ष्मण जी वहां फिरने लगे।
नागफासों के समूह, सब धरणी पै गिरने लगे॥
महा कष्ट से दोनों बचे, सुग्रीव भामण्डल बली।
सब दल के हृदय खिल गये, जैसे कि फूलों की कली॥

दोहा

वानर दल आनन्द में, टल गया सकल क्लेश।
जय जय शब्द होने लगे, चारों ओर विशेष॥

जब सुने खुशी के नक्कारे, रावण दल को अति कष्ट हुआ।
जिस खुशी में थे सब फूल रहे, उस खुशी का साहस नष्ट हुआ॥
अस्ताचल पर सूर्य पहुँचा, सब शूर लगे विश्राम करन।
प्रातः काल के होते ही, लग गये वीर संग्राम करन॥

दोहा

रण भूमि में जुट गये, हो कर के विकराल।
सुभट बहुत मरने लगे, जिनका आया काल॥
जुट गये वीर दोनों दल मे, तब नदि खून की बहने लगी।
निज २ स्वामी और देश के, हित सेना शस्त्रों को सहने लगी॥
रावण सेना के पराक्रम से, राघव सेना घबराई है।
छिन्न भिन्न हो गये वीर, कईयों ने पीठ दिखाई है॥

दोहा

देखा जब सुग्रीव ने, सेना का यह हाल।
उसी समय झट कोप कर, चले जिस तरह काल॥
बड़े बड़े रणधीर शूरमा, सहसा दल में कूद पड़े।
इस तरह बढ़ा श्रीराम का दल, जैसे समुद्र की वेल बढ़े॥
जरा देर में रावण दल को, छिन्न भिन्न कर डाला है॥
हो गये बहुत रण भेंट शूरमें, अन्तिम पैर उखाड़ा है।

दोहा

भग देख निज सेना का, चढ़े दशानन आप।
थर थर कांपे मेदिनी, महा प्रबल प्रताप॥
आँधी आगे जैसे तृणे, या जैसे सिंह आगे बकरी।
ऐसे ही अब वानर दल की, रावण ने घुमा दई चकरी॥
जिधर झुके रणधीर वीर, सब सफा उधर ही कर डारे।
कई भाग गये पर धाम गये, और कइयों ने शस्त्र डारे॥

दोहा

रावण का कर्त्तव्य यह, जब देखा रघुराय।
वज्रावर्तज धनुष को, कर में लिया सजाय॥
पता विभिषण को लगा, हुए राम तैयार।
हाथ जोड़ सन्मुख हुआ, बोला गिरा उचार॥

दोहा (विभीषण)

आज्ञा मुझ को दीजिये, हे प्रभु दीना नाथ।
रण भुमि मे आज मे, दिखलाऊं दो हाथ॥
बानर दल सारा बिखर गया, मै उनका पैर जमाऊंगा।
रावण के सन्मुख जाकर के, अपनी तलवार चलाऊंगा॥
अभी आपका रावण से, लड़ने का समय नहीं आया है।
अब आज्ञा सेवक को दीजे, मेरे दिल यही समाया है॥

श्री रामजी का गाना—विभीषण के प्रति

दि है इच्छा यही तुम्हारी, तो जावो मित्र खुशी खुशी से।
य न खाना किसी का मन मे, सजाओ बख्तर खुशी २ से॥१।
शा होती है सत्य की जय, असत्य की न हुई न होगी।
पुण्य योद्धा सहाई तेरा, लगावो शस्त्र खुशी खुशी से॥२।
न्तु ये शिक्षा हमारी सुनजा, ना धोका भाई से कोई करना।
कर्म क्षत्रीय का सोही करना, चलाओ अस्त्र खुशी २ से॥३॥
भी दिल में विचार करना, ना पहले भाई पर वार करना।
दे चाहे सन्धी विचार करना, तो झुकाना मस्तक खुशी २।४।

विभीषण

फूल वर्षे तुम्हारे मुख से, सजाऊ गलमे खुशी खुशी से।
जंगी बख्तर है देर क्या है, सजाऊं तन पे खुशी २ से॥५।

जो गुण तुम मे हे दीनबंधो, जबां से उनको कहुँ मैं कैसे।
सहारा चरणों का लेके स्वामी, मैं जाऊं रण में खुशी २ से।

रावण विभीषण जंग

दोहा

सब सेना को जोश दे, चढ़ा विभीषण वीर।
उधर सामने आ गया, लंक पति रणधीर॥
जब आन मोरचा लगा सामने, देख शूर हर्षाये हैं।
हाथी घोड़े संग्रामी रथ, नभ में विमान आन अड़ाये हैं॥
यथायोग्य स्थानों पें. थे रक्षक योद्धा खड़े हुये।
फिर भाई से बोला रावण, पर मस्तक पर बल पड़े हुए॥

दोहा (रावण)

देख लई सब बानगी, अहो विभीषण वीर।
आज काल के गाल मे, झोंका तुझे अखीर॥
जैसे धूर्त शिकारी जन, आगे कुत्ते को लाते हैं।
बस यही हाल है रामलखन का, तेरी बली चढाते हैं॥
किन्तु वे कब तक अपने, प्राणों का भला मनावेंगे।
अन्तिम तो तलवार मेरी की, धार तले वो आवेंगे॥

दोहा

मौत पराई किस लिये, मरता है तू वीर।
अन्तिम तेरे दुख की, होगी मुझको पीर॥
पूरा-पूरा तुझ पर स्नेह, क्योंकि तू मेरा भाई है।
वो कहाँ छिप गये राम लखन, बस मौत उन्हों की आई है।

तुम जाओ अपने तम्बू मे, बस यही हमारा कहना है।
वानर सेना सब राम लखन, कोई जीता आज न रहना है॥

दोहा (विभीषण)

जो कुछ कहना आपका, सिर मस्तक पर वीर।
एक बात सुन लीजिये, दिल मे लाकर धीर॥

प्रेम आपका मुझ पर है, और ऐसा होना भी चाहिये।
पर दिल में जो है भ्रम भूत, उसको भी खो देना चाहिये॥
श्रीराम आप ही आते थे, मैंने ही उनको रोका है।
अपनी मर्जी से आया हूं, ना किसी ने मुझ को झोंका है॥

दोहा

होनी के आते नजर जाहिर सब असार।
अतः आप को चाहिये करना जरा विचार॥

गाना (विभीषण)

उड़ गई तेरी लका की अब सब तरी।
बात समझो ना रावण, मेरी सरसरी॥
रामचन्द्र के, सीता हवाल करो।
शूरवीरों के नाहक, नगाले करो॥
एक वानर ने ही, कायर लंका करी॥१॥
पेश उनपे चलेगी, ना तेरी जरा।
हो गया तेरी लंका मे, अब चर चरा॥
हुए प्रकट अवतार, रघुवर हरी॥२॥
सैना लश्कर का भाई, तूं मत कर गुमा।
करके ही छोड़ेगे, वो तेरा खातमा॥
सब ये रह जायेगी तेरी, शक्ति धरी॥३॥

राम लक्ष्मण जब रण मे धरेंगे कदम।
उनके हाथों से, जायेगा मुल्के अदम॥
सूर्य वंशी हिला देंगे ये धर्त्ं ॥७॥

दोहा

बीत गई सो तो गई, आगम ना अख्त्यार।
वर्तमान पर ही सदा, बुध जन करें विचार॥

बस यही हमारा कहना है, अब भी कुछ सोच विचार करो।
जो करन निवेदन आया हूं, हे भ्रात आप स्वीकार करो॥
लड़ने का एक बहाना है, तुम को समझाने आया हूँ।
कल्याण जिस तरह हो सब का, तजवीज बताने आया हूं॥

दोहा

जनक सुता वापिस करो भला इसी मे जान।
नहीं तो अब यहां कसर क्या, होने मे घमसान॥

लाखों के प्राण गवाये है, रण-भूमि मे लड़वा करके।
अब कर मलते रह जाओगे, सब कुटुम्ब यहां कटवा करके॥
एक नार के कारण क्यों, सब देश का नाश कराते हो।
क्यों अपना आप गंवा करके, नरको का बंध लगाते हो॥

दोहा

औदार चित्त होते सदा, नम्र भाव मे लीन।
बुद्धिमान् हो स्वयं ही, हरफन मे प्रवीण॥

यदि आप न जाना चाहते तो, सिया को मैं दे आता हूं।
विशाल हृदय कर बतलाओ, बस आज्ञा आपकी चाहता हूँ।
इतनी सुनकर बात भ्रात की, रावण जल-बल अङ्गार हुआ।
तलवार काढ़ विकाल बना, जैसे कि कुपित यमराज हुआ।

दोहा (रावण)

प्यासी तेरे खून की ये मेरी तलवार।
फेर यदि ऐसा कहा लेऊ शीश उतार ॥

रावण—तेरा कायरपना नीच जाता नहीं;
मुझ को सारी उम्र ही सताता रहा।
मैंने भाई समझ करके खाया तरस,
फिर भी टेढ़ी ही बाते बनाता रहा ॥
सीधे रास्ते से मूर्ख मुझे घेर कर,
हर समय उलटे रास्ते पर लाता रहा।
क्या है रिश्ता तेरा उनसे यह तो बता,
कर दो वापिस सिया ये सुनाता रहा ॥

विभीषण—होनी सिर पर ही आई तो फिर क्या करे,
तुझ को हम तो हमेशा बचाते रहे।
तैंने सन्धि के सारे समय खो दिये,
मौके-मौके पे हम तो जिताते रहे ॥
चाहे मुझ को कहो या किसी को कहो,
तेरे खोटे कर्म ही सताते रहे।
कर दो वापिस सिया हम कहेगे यही,
अब भी पहले भी तुमको सुनाते रहे।

रावण—अरे महा मूढ़ अच्छा ठहर जा,
पहले करता हूँ जल्दी तेरा दम खत्म ॥
तू है कायर कमीना कुबुद्धि कुदिल,
बेहया बेच खाई कहां तूने शर्म।
तुझ को भाई समझ कर बचाता रहा,
नहीं तो बोलने से पहले ही करता खत्म ॥

पीछे देखूंगा भीलों की शक्ति को मैं,
पहले पहुंचाऊ तुझ को ही मुल्केअदम।
ओ कुलांगार कायर अधर्मी कुटिल,
जरा आगे तो आ बेहया बेशर्म॥
विभी०—मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझको पहुचाता हूँ आज मुल्केअदम।
तेरे जैसे अधर्मी पे करना रहम,
यह भी दुनियां मे फैलाना खोटा कर्म॥
कृतघ्नी, कुबुद्धि, अधम, बेशर्म,
आज आया उदय तेरा खोटा कर्म॥

दोहा

सुन-सुन रावण को चढ़ा, क्रोध अति विकराल।
इधर विभीषण ने किये, दोनों नेत्र लाल॥

जुट गये वीर दोनों दल मे, तो लगी मेदिनी थर्राने।
आंधी सहित जैसे वर्षा, यों लगे बाण वहा सर्राने॥
हो गया रक्त से कीच धड़ाधड़, शूर धरणि पर गिरते हैं।
दल-वल का कुछ पार नहीं, विमान व्योम मे फिरते हैं॥

दोहा

युद्ध भयंकर छिड़ गया, चलें सरासर बाण।
महाकाल से लड़ रहे, दोनों वीर बलवान्॥

इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण, आदि योद्धे भी कूद पड़े।
मेघवाहन और कुम्भकर्ण, सुत महा बली ये आन खड़े॥
सुग्रीवादिक बड़े २ सब, रावण भ्रात के संग मे थे।
इस कारण बाकी वानर योद्धा, महा काल के अक मे थे॥

भयंकर रुद्र सा रूप धार कर, कुम्भकर्ण फिर धाया है।
जिस तरफ झुके रावण योद्धे, बस सफा मैदान बनाया है॥
खलबली पड़ी सब सेना मे, ये राम लखन निहारा है।
वज्रावर्तज अरुणावर्तज, शरासन कर मे धारा है॥
अस्त्र शस्त्र तन पर धारे, झट रण भूमि मे आये है।
जब लखा और भूपों ने ये, तो वो भी संग उठ धाये हैं॥
इधर नजर पड़ी सुग्रीवादिक की, खलबली फौज में छाई है।
झुक पड़े उधर ही रण बांके, राक्षस सेना घबराई है॥

दोहा

इन्द्रजीत के सामने, अड़े सुमित्रानन्द।
मेघनाद के भी हुआ, मन में परमानन्द॥
अनी मिली जब वीरो की, खड्ग हाथ में तान।
लाल नेत्र कर कहत यूं, इन्द्रजीत बलवान॥

आओ २ ऐ जंगली भीलो, मै राह तुम्हारी लखता था।
छिपे हुए थे अब तक दोनों, मेरा खड्ग तरसता था॥
अब लंकपुरी पर चढ़ने का, परिणाम तुम्हें दिखलाऊँगा।
ना बचकर जा सकते यहाँ से, यमपुरी को आज पठाऊँगा॥

दोहा

वचन अवज्ञा के सुने, कोपे सुमित्रा लाल।
रूप भयानक धार के, गर्जे जैसे काल॥

ओ मूढ़ अधर्मी अन्याई, क्यों व्यर्थ मे गाल बजाता है।
श्रीराम ने करुणा करी बहुत, पर काल ही तुझे बुलाता है॥
मुझको क्या परभव पहुँचायेगा, नराधम जान बचा अपनी।
और साथ ही निज पाखंडी पिता को, बनवा ले जाकर कफनी॥

दोहा

जन्मा नहीं किसी जननी ने, सहे मार मम आय।
भागो जान बचा नहीं, परभव दूं पहुँचाय ॥

मेघनाद व लक्ष्मण जी का संवाद

(चाल थ्येटरी)

मेघनाद बोला दलवीर, मेरे अस्त्र हैं अकसीर।
तुझको जीता दूं न जान, देख हनूं अब तेरे प्राण ॥
देखूं कैसा तू रणधीर ॥ १
लक्ष्मण—क्या तू बोल रहा है अधीर, तेरी उल्टी है तकदीर।
रघुकुल के हम वीर जवान, खोदें तेरा नाम निशान ॥
पत्थर पर तू जान लकीर ॥ २
इन्द्रजीत—मेरे अस्त्र हैं गम्भीर, लाखों योद्धा दीने चीर।
क्या तू बनता तीरन्दाज, तुझे न जीता छोड़ूं आज ॥
अब ना काबू रहा शरीर ॥ ३
लक्ष्मण—मिल आ रावण से आखीर, देख लेवें तेरी तसवीर।
उसे न दर्शन होंगे फेर, लिया काल ने तुझको घेर ॥
सम्भल जा आती है जंजीर ॥ ४

दोहा

विस्तार से क्या ज्यादह कहे, समझो स्वयं सुजान।
योद्धों का संक्षेप से, परिणाम इस तरह जान।

गाना

(तर्ज—आल्हा ऊदल)

कुम्भकर्ण संग राम जुट गया, इन्द्रजीत सग लक्ष्मण जाय।
सिंह जगन महा वली राक्षस, नील ने उनको लिया दबाय ॥

दुर्मुख कपि घटोदर राक्षस, इनकी जोड़ी अधिक सुहाय ।
दुर्मुख निशाचर गर्जा तर्जा, शम्भू प्रबल सिंहवत् जाय ॥
स्वयंभू और नल योद्धा की, चलने लगी कठिन तलवार ।
अंगद विराज स्कन्द निशाचर, करने लगे परस्पर वार ॥
मय वानर और चन्द राक्षस, जुट गये खाकर जोश अपार ।
वीर विराध निरूपम योद्धा, खूब चलाते सांग कटार ॥
मारीच और सुग्रीव नरेश्वर दोनो थे रण धीर अपार ।
श्रीदत्त वानर जम्बू राक्षस दोनों कूद पड़े ललकार ॥
भामंडल और केतु राजा, दोनों विद्याधर बलधार ।
पवनपुत्र और कुम्भकर्ण सुत, बलि जिन में था अपरम्पार ॥

कुन्द और धूमाक्ष अड़ गये, जैसे फणिधर गुस्सा खाय ।
घटाटोप अम्बर कर डारा, शतघ्नी दनादन रही मचाय ॥
चन्द्र रश्मि और शारण योद्धे, दल में रहे अन्धेर मचाय ।
कटी हुई खेती जैसे, बलवीरों का दिया ढेर लगाय ॥
इन्द्रजीत ने लक्ष्मण ऊपर मारा, खैंच के तामस बाण ।
बाण २ से काट गिराया, लक्ष्मण शूरों का सुल्तान ॥
नागफांस लक्ष्मण ने छोड़ा, इन्द्रजीत पर अस्त्र महान ।
रावण सुत फंस गया फंदे से, छुट गये अस्त्र [illegible] ॥
करके बन्द विकट गाड़ी से, अपने दल में दिया [illegible] ।
चन्द्रोदर का इन्द्रजीत पै पहरा, सन्त्र दिया [illegible] ॥
रामचन्द्र ने नागफांस से, कुम्भकर्ण को लिया [illegible] ।
भामण्डल के हाथ उसे भी, उसी [illegible]
पवनपुत्र ने कुम्भकर्ण सुत, [illegible]
वीर सुभट के पहरे में फिर, [illegible]

दोहा

ये शूरे जब राम की, पड़े कैद मे जाय।
मेघवाहन अति जोश मे, डटा सामने आय॥

पवनपुत्र बजरङ्गबली से, आकर युद्ध मचाया है।
पर पेश चली ना हनुमान सन्मुख, बन्दी नाम धराया है॥
फिर जिसके जो काबू मे आया, उसी ने उसको दबोच लिया।
मक्खन बिन जिम दूध समझ, ऐसे सेना को फोक किया॥

दोहा

रावण ने यह जब लखा, निज सेना का हाल।
क्रोधातुर होकर किया, रूप अति विकराल॥
सुत भाई पर बस हुए, लगी खबर जिस बार।
वचन तीर सम भूप के, हुए जिगर के पार॥
इतने में ही पहुंच गये, वीर सुमित्रा लाल।
दोनों भ्रात जहाँ लड़ रहे, होकर के विकराल॥

रावण ने दाँत पीस भ्रात पर, कठोर त्रिशूल चलाई है।
सो लक्ष्मण वीर बहादुर ने, रास्ते मे काट गिराई है॥
फिर तो जैसे वैश्वानल में, घी सींचे ऐसा हाल हुआ।
अमोघ विजय शक्ति पर अन्तिम, दशकन्धर का ख्याल हुआ

दोहा

अमोघ विजय महा शक्ति पर, था पूरा विश्वास।
क्योंकि इस महा अस्त्र में, देवी का था वास॥

धरणेन्द्रदत्त अमोघविजय, शक्ति रावण ने हाथ लई।
इस तरफ खडे ये वीर विभीषण, के भी योद्धे साथ कई॥

जिस समय घुमाई रावण ने, तो हाहाकार मचा भारी ।
रोको रोको सब कहते हैं, शस्त्र ले कर में बलधारी ॥

दोहा

देख प्रबल उस शक्ति को, दहल गये रणधीर ।
शस्त्र फेकने ले सिवा, करते क्या आखीर ॥

लय काल की बिजली के, मानिन्द चमक दिखलाने लगी ।
घाट और तड़तड़ाहट कर, अपना रूप बढ़ाने लगी ॥
न्द कर लिये क्योंकि, उस तेजी को न सहार सके ।
शस्त्र छोड़े अपार, शक्ति ना कोई निवार सके ॥
ाये होस सारे दल के, ना पेश किसी की जाती है ।
समय किसी योद्धा के, तन में रही ना शक्ति बाकी है ॥
विभीषण शांत खड़े, जीने की आशा छोड़ दई ।
घ मन्त्र श्रीनमोकार की, तरफ आत्मा जोड़ दई ॥

दोहा

परिणाम विभीषण ने किये, निर्मल और विशेष ।
सागारी संथारा किया, तज सयोग अशेष ॥



मित्रता

उदार चित्त ने जब देखा, मित्र पर शक्ति आती है ।
शरणागत का यों मर जाना, हृदय मे लगती काती है ॥
सुनों मित्रगण दुनिया मे मित्रों का हाल सुनाते हैं ।
मित्र की मित्रता को देखो, कैसे श्रीराम पुगाते है ॥

दोहा

जिस दम देखा मित्र पर, आता कष्ट अपार।
लक्ष्मण को श्रीराम जी, बोले वचन उचार॥

दोहा (श्रीराम)

ऐ भाई लक्ष्मण जरा, सुनना मेरी बात।
जान बचाना मित्र की, आज तुम्हारे हाथ॥

यह समय हाथ से निकल गया, तो फिर पीछे पछतावोगे।
कर्तव्यशील सत्पुरुष विभीषण, सा मित्र न पावोगे॥
आमोघ विजय शक्ति से यदि, शरणागत मारा जायेगा।
तो निश्चय करलो रामचन्द्र, जीता नहीं मुख दिखलायेगा।

गना (श्रीराम का)

मित्र पे कष्ट आया, अय वीर आज भारी।
अब दूर तुम निवारो, आपत्तिआज सारी॥१॥
सर्वस्व को है त्यागा, जिस ने हमारी खातिर।
उसकी हो ऐसी हालत, हमको ये दुःख अपारी॥२॥
जिसने हमारे खातिर, अपना लहू बहाया।
उसका हमारे ऊपर, ऐहसान आज भारी॥३॥
कर्तव्य बस यही है, अब अपनी जिन्दगी का।
मित्र के बदले बेशक, लगजाये जां हमारी॥४॥
दुखिया शरण में आकर, फिर भी रहा जो दुखिया।
मिट्टी मे जिन्दगी ये, मिलजाये आज सारी॥५॥
इसका उपाय अब तो, इसके सिवा न कोई।
हृदय में आप झेलो, शत्रु की ये कटारी॥६॥

मेरे सखा की खातिर, छाती अड़ादो अपनी ।
परवाह न जान की कर, हृदय मे लो ये धारी ॥७॥
मरना "शुक्ल" जरूरी, दो दिन या आगे पीछे ।
ना साथ तन चलेगा, नर हो या चाहे नारी ॥८॥

दोहा (लक्ष्मण)

जैसी आज्ञा आपकी, करूं वही मै काम ।
खूब विचारा आपने, हे स्वामी सुख धाम ॥

दोहा

जब तक जीता जगत मे, सेवक लक्ष्मण वीर ।
तब तक तुम को क्या फिकर, अय भाई रणधीर ॥

हे भाई रणधीर अभी मै, आगे बढ़ जाऊंगा ।
अमोघ विजय शक्ति को, अपने हृदय में खाऊंगा ॥
जो कुछ कहा अभी देखो, पूरा कर दिखलाऊगा ।
इस विपदा से आज आपदा, मित्र बचा लाऊंगा ॥

दौड़

सोच अब दूर निवारो, आप मन निश्चय धारो,
अभी आगे बढ़ता हूं, जगह आपके मित्र की अपना हृदय करता हूँ ।

दोहा

उसी समय आगे बढ़े, वीर सुमित्रा लाल !
मित्र विभीषण का धरा, अपने सिर पर काल ॥

रावण के सन्मुख लक्ष्मण ने, निज सीना तुरत अड़ाया है ।
जिसको अपना कह चुके, उसे अपना ही कर दिखलाया है ॥

काल के सन्मुख आय अड़े, मित्र का अङ्ग पुगाया है।
उस समय दशानन ने, लक्ष्मण को ऐसे वचन सुनाया है॥

दोहा (रावण)

क्यों लड़के तू किस लिये, फँसा काल के गाल।
जरा देर तो देखता, रणभूमि का हाल॥

रणभूमि में आज सभी, सर शय्या पर सोवोगे।
पानी की ना मिले बूंद, आँसुओं से मुख धोवोगे॥
देख देख अपनी हालत, दोनों भइया रोवोगे।
तड़प तड़प कर प्राणों को, रणभूमि मे खोवोगे॥

दौड़

प्रथम इसको मरने दो, ढेर दलका करने दो, बाद में तुम भी मरना, दशकन्धर बलवीर, संग नहीं जग सुखाला करना।

दोहा

शर्म तुझे आती नहीं, खाली करते बात।
कैद हमारी में पड़े, तेरे सुत और भ्रात॥

तेरे सुत और भ्रात डूब मर, पापी चुल्लू भर में।
तीस मारखां बने रहे, तुम आज तलक निज घर में॥
कायर चोर अकड़ता कैसे, बांध के तेग कमर मे।
आज सुमित्रा लालसिंह से, पाला पडा समर मे।

दौड़

लंका की धूलि उड़ाऊं. समर मे तुझे सुलाऊ,
प्रथम तू जोर लगा ले खड़ा तान छाती सम्मुख,
दशरथ नन्दन अजमाले।

दोहा

बोली गोली सम हुई, दशकन्धर के पार ।
फिर भी यों कहने लगा, धैर्य मन मे धार ॥
फिर कहता हूं तुझे, ओ लड़के नादान ।
क्यों मरता मतिमन्द तू, मौत पराई आन ॥

अमोघ विजय शक्ति का निश्चय, वार न खाली जायेगा ।
यदि पहले ही मर गया, तमाशा फेर न देखन पावेगा ॥
सबसे बड़ा विभीषण शत्रु, पहले इसको ही मरने दो ।
जो लगी हुई तन मे ज्वाला, वह शान्त जरा अब करने दो ॥
दुष्ट विभीषण जीता है, तब तक मुझ को सन्तोष नहीं ।
क्योंकि सब भेद दिया इसने, बस किसी और का दोष नहीं ॥
इस से क्या आपका रिश्ता है, मरने दो वे परवाही से ।
फिर आपकी बारी आवेगी, मिल आओ अपने भाई से ॥

दोहा

रिश्ते दो है जगत् मे, एक प्रेम एक द्वेष ।
तेरा शीश उतार के, करूं इसे लंकेश ॥

रिश्ता प्रथम विभीषण से, और दूसरा रिश्ता आप से है ।
फिर शरण हमारी आन पड़ा, बचकर तेरे संताप से है ॥
श्री रामचन्द्र ने बांह पकड़ी, हृदय से मित्र हमारा है ।
इसलिये सामने खड़ा करूं निष्फल ये ख्याल तुम्हारा है ॥

गाना (लक्ष्मणजी का)

लिया साथ इसका, निभाना पड़ेगा ।
चाहे हमको सर्वस्व लगाना पड़ेगा ॥१॥
विभीषण को हम कह चुके अपना भाई ।
तो भाई बना कर दिखाना पड़ेगा ॥२॥

यदि आई मित्र पे, कोई भी विपदा।
तो खून हमको, अपना बहाना पड़ेगा ॥३॥
यह शक्ति दिखा करके, क्या फूलता है।
तुझे अपना ही तन, मिटाना पडेगा ॥४॥
यह धड़ से गिरा सिर, तेरा ताज लेकर।
विभीषण के मस्तक सजाना पडेगा ॥५॥
सीता चुराने का, भय चोर तुझ को।
समर मे नतीजा, चखाना पडेगा ॥६॥
यह कहता हूँ निश्चय, समझ काल मुझ को।
तुझे अब तो, परभव में जाना पड़ेगा ॥७॥

दोहा (लक्ष्मण)

जाओ लंका लोट कर, सुनो हमारी बात।
यहां पर लगने की नहीं, लगा रहे जो घात ॥

कल तक जो कुछ मिल ना जुलना, खाना पीना, सब कर आओ।
क्योंकि फिर तुमने, मरना है यह शस्त्र भी घर धर आओ ॥
अन्त समय यदि चाहोगे, सुत बांधव तुझे मिला देंगे।
खुशी खुशी फिर नींद हमेशा की, हम तुम्हे सुला देंगे ॥

दोहा (रावण)

कर कर बाते जोश की, रहा कलेजा चीर।
अन्तिम जंगली भील की, जाय कहाॅ तासीर ॥

ना संगति शोभ न मिली तुम्हे, जंगल की धूल उड़ाई है।
वन मे गीदड ही धमकाये, ना झपट शेर की खाई है॥
यह कतर कतर करना जिह्वा से, तुझ को अभी भुलाता हूं।
ले सावधान हो नींद हमेशाकी, मैं तुम्हे सुलाता हूं॥

दोहा

ऐसा कहकर भूप ने, शक्ति दई चलाय।
बानर दल के शूर में, सभी रहे घबराय ॥

निज-निज शस्त्र सब शूरों ने, शक्ति की ओर झुकाये है।
आंधी आगे जैसे तृण, शक्ति ने दूर भगाये हैं ॥
अमोघ विजय आ लक्ष्मण के, हृदय मे तुरत समाई है।
मूर्च्छित हो गिरा धरणी में सहसा, सुरति सभी विसराई है ॥

दोहा

सुनो मित्र गण जिस समय, गिरा सुमित्रा लाल।
दशकन्धर आने लगा, नजर सभी को काल ॥

हुआ विकल सब वानर दल, निज आंसुओं से मुंह धोते हैं।
छा गई अंधेरी आंखों में, सब वीर धीर को खोते हैं ॥
सुग्रीव विभीषण भामण्डल, सब ऊचे स्वर से रोते हैं।
चढ़ गया ताप कई शूरों को, बीमार बने कई सोते हैं ॥



राम-रावण

दोहा

देख हाल यह राम को, चढ़ा जोश विकराल।
संग्रामी रथ बैठकर, गर्जे जैसे काल ॥

गर्जे जैसे काल खैंच लिया, धनुष-बाण निज कर में।
टंकार शब्द घनघोर कड़क, बिजली की ज्यों अम्बर में ॥
रावण को ललकार दई, जाकर श्रीराम समर में।
लटक रहा था शम्बूक वाला, खड्ग अमोघ कमर में ॥

दौड़

देख रावण घबराया, काल की शका लाया, राम ने ...
दबाया, एक बाण से रावण का, सारा रथ तोड़ बगाया।

आल्हा

रावण ने फिर दूजे रथ पर, अपना आसन लिया जमाय।
उसको भी श्री रामचन्द्र ने, पुर्जा-पुर्जा दिया बनाय॥
जान बचाने को फिर रावण, तीजे रथ पर बैठा जाय।
एक बाण से रामचन्द्र ने, दिया उसे बेकार बनाय॥
जान बचानी दशकन्धर को, मुश्किल बनी सामने आय।
वीर दशानन ने फुर्ती से, चौथा रथ फिर लिया सजाय॥
वज्रावर्तज धनुष बाण से, उसको भी दिया गर्द बनाय।
योधे खडे तमाशा देखें, राम का तेज सहा नहीं जाय॥
विकल समर से हो रावण फिर, पंचम रथ पर हुआ सवार
दशरथ नन्दन ने झुंझलाकर, उसे भी दिया धरणी में डार
पीठ दिखाई दशकन्धर ने, अन्तिम रणभूमि मझार।
प्राण बचाने को रावण ने, दिल मे ऐसा किया विचार॥

दोहा

भाई के मोह मे हुआ, अन्धा फिरता राम।
यदि यहा ठहरा अभी, पहुँचा दे परधाम॥

'अन्धे का जप्फा बुरा', ठीक यह पंजाबी मे कहते है।
बुद्धिमान् ऐसे मौके पर, कभी ना वहां पर रहते है॥
समय विचारे सो स्याना, ये गुरुजनो का कहना है।
यह स्वय प्राण तक देवेगा, किस कारण यहा दु:ख सहना है।
जिस पर था आधार सभी का, उसका समझो अवसान हुआ।
श्रीराम स्वयं मर जायेगा, क्योकि यह दुःखी महान् हुआ।

बाकी तो हैं सब चूर भूर, दिन उगे कोई न पावेगा।
जो पड़े कैद मे सुत बान्धव, सो भी कल देखा जावेगा॥

दोहा

रावण लंका में गया, दिल में खुशी अपार।
इधर खड़े श्रीराम जी, ऐसे रहे पुकार॥

गाना श्रीराम

(तर्ज—स्थानक में नरनार आवो आवो)

दशकन्धर बलधार आवो आवो।
रणभूमि में यार, आवो आवो॥ टेक॥
क्षत्रिय का यह धर्म नहीं है, पीठ दिखाना कर्म नहीं है।
है तुझको धिक्कार॥ १॥
भाग कहाँ जायेगा पाजी, सिर धड़ की अब लाके बाजी।
देऊँगा शीश उतार॥ २॥
परभव को मैं तुझे पठाऊं, सूर्यवशी तब ही कहलाऊं।
आज नहीं तो कल यार॥ ३॥
कायर क्रूर, अधर्मी, अनारी, भ्रात मेरे के शक्ति मारी।
अब ना करूं उधार॥ ४॥
छल फरेब से सिया चुराई, अब क्यो रण में पीठ दिखाई।
पावेगा नरक द्वार॥ ५॥

—❀—

मूर्छा

दोहा

दृष्टि से रावण छिपा, जाना जब श्रीराम।
वापिस फिर रथ को किया, आ पहुंचे निजधाम॥

जब देखा लक्ष्मण भाई को, झट गिरे मूर्छा खा करके।
सुग्रीवादिक ने शीतलता, कर मूर्छा दई हटा करके॥
भाई का सिर गोदी मे रख, नयनों से नीर बहाने लगे।
श्रीराम का दुःख ना देख सका, भानु अस्ताचल जाने लगे॥

दोहा

रामचन्द्र को हो रहा, महा घोर सन्ताप।
गोदी में ले भ्रात को, किया बहुत विलाप॥
रो रो कर श्रीराम जी, बहा रहे जल नैन।
वीर सुमित्रा लाल को, कहन लगे यों बैन॥

गाना (श्रीराम)

मेरे भाई लक्ष्मण वीर, मुख से बोलो तो सही। (ध्रुव)
शक्ति नहीं तो वचन से, वचन नहीं तो नैन।
नैन नहीं तो और कोई, करो इशारा वीर॥ १॥
दिवस चन्द्र के तेज सम, बने सभी रणधीर।
एक तुम्हारे बिन सभी, खो बैठा दल धीर॥ २॥
दशकन्धर जीता गया, क्या तुमको यह रोष।
या शक्ति ने तेरे उड़ा दिये हैं होश॥ ३॥
सभी शूरमें थे खड़े, तुम पैरो पर वीर।
कटक सभी है रो रहा, बंधा इन्हे अब धीर॥ ४॥
भाई अब तेरे बिना, सीता लावे कौन।
तैने तो अब मौन धारा, कौन बंधावे धीर॥ ५॥
क्या मुझ पर गुस्से हुआ, वीर सुमित्रा लाल।
तेरे बिन हम देखो भ्राता, कैसे हो रहे अधीर॥ ६॥
शुल्क सहायक ना बना, यदि यह तेरा विचार।
तो मैं शत्रु के अभी, मारूं हृदय में तीर॥ ७॥

दोहा (स्वगत रावण)

मोह के वश श्रीराम जी, धनुष बाण ले हाथ ।
शत्रु की करने चले, राम समर में घात ॥
दुष्ट तुझे मारे बिना, मुझे नहीं आराम ।
आता हूं अब ठहर जा, पहुँचाऊँ पर धाम ॥

देख मेरी शक्ति कायर, और अपनी शक्ति दिखा मुझे ।
अब जीता कभी ना छोड़ूंगा, यह साफ २ मैं कहूं तुझे ॥
तेरा शीश उड़ा करके, लक्ष्मण को अभी दिखाता हूँ ।
जो रूठ गया प्यारा भाई, फिर जाकर उसे मनाता हूँ ॥

दोहा

उसी समय हनुमान ने, रोके राम नरेश ।
फिर आकर यों सामने, बोले किष्कन्धेश ॥
सूर्य अस्ताचल गया, लंका मे लंकेश ।
आप किधर को चल दिये, सोचो जरा नरेश ॥

मूर्च्छागत है श्री लक्ष्मण जी, मत फिकर करो अपने दिल में ।
रजनी में ही कोई उपाय करो, फिर काम नहीं बनना दिन में ॥
मन्त्र यन्त्र या औषधि से, शक्ति यदि बाहिर निकल आवे ।
भानु के चढ़ने से पहले, ऐसा कोई तन्त्र मिल जावे ॥

सुग्रीव का गाना

देव शक्ति को दूर हटावो प्रभु ।
कोई ऐसा उपाय बनाओ प्रभु ॥टेक॥
हम तन मन अपना लगावेंगे,
और लक्ष्मण का कष्ट मिटावेंगे ।
सच्चे मित्र तब ही कहलावेंगे,
श्री जिनवर के गुनगावो प्रभु ॥ १ ॥

सारी लंका की धूल उड़ावेंगे,
और सीता को जीत के लावेंगे।
ऐसा करके सेवक दिखलावेंगे,
अब अर्ति दूर नसावो प्रभु ॥ ३ ॥
प्रातः लक्ष्मण बली उठ जावेंगे,
जाकर रावण का शीश उड़ावेंगे।
विजय रण में स्वामी पावेंगे,
इन बातों पर निश्चय लाओ प्रभु ॥ ४ ॥
अब सेना के कोट बनावेंगे,
और लक्ष्मण को मध्य लिटावेंगे।
सब रल मिल यत्न बनावेंगे,
तुम हृदय में धैर्य लाओ प्रभु ॥ ५ ॥
सब योग्य चिकित्सा जारी है,
और पुरुषार्थ अति भारी है।
इस कारण अर्ज गुजारी है,
'अब "शुक्ल" ध्यान शुभ ध्याओ प्रभु ॥ ५ ॥

दोहा (राम)

कष्ट महा प्रलय भई, सुनो वीर सब बात।
प्यारे भाई के बिना, अब नहीं शान्ति दिखात ॥
ऐसा कह श्रीराम जी, होकर हाल निढाल।
लक्ष्मण से कहने लगे, उठो सुमित्रा लाल ॥

श्रीराम का गाना

जागो २ ऐ भ्राता लक्ष्मण करो न जग हंसाई।
आंखें खोलो मुख से, बोलो प्राणों से प्यारे भाई।
मन नहीं बाधे धीर, वीर मैं सह ना सकूं जुदाई ॥ १ ॥

एक तेरे सोने से कुल की, मिटती है प्रभुताई ।
अवध में शोक आनन्द लंक में, विधि ने धूल उड़ाई ॥ २ ॥
संग तुम्हारे प्राण तजूं मैं, रण में मचे दुहाई ।
यह सुनते ही प्राण तजेगी. सीया जनक की जाई ॥ ३ ॥
रघुकुल भूषण प्राण राम के, सेन्या को सुखदाई ।
जनक सुता नहीं आई, अभीना लक विभीषण पाई ॥ ४ ॥
"शुक्ल" भरोसे तेरे ही, लंका पै करी चढ़ाई ।
उठ रख लाज तू मेरे प्राण की, अच्छी नहीं रुखाई ॥ ५ ॥

दोहा (सुग्रीव)

धैर्य करके हे प्रभु, सोचो कोई उपाय ।
जैसे तैसे हो सके, विघ्न सभी टल जाय ॥

दोहा (राम)

क्या कह दूं मै इस समय अपने मुख से भाप ।
भाई बिन मेरा हुआ, मानो सर्वस्व नाश ॥

श्रीराम सुग्रीव का गाना

(श्रीराम वहरतवील)

मैं कैसे कहूँ अपने दिल की व्यथा;
मेरे सिर पर महा कष्ट भारा पड़ा ।
उस तरफ खोती होगी सिया जानको,
इस तरफ मेरा भाई प्यारा पड़ा ॥ १ ॥
तब तक मेरा भी दिल ठिकाने नहीं,
जब तक माता की आंखों का तारा पड़ा ।
मैंने झोंका इसे काल के गाल में,
शक्ति आगे ना हृदय हमारा वढ़ा ॥ २ ॥

सुग्रीव—बांधो दिल में दिलासा निकालो अकल,
प्यारे लक्ष्मण को जल्दी उठाओ प्रभु।
बीत जायेगा ऐसे तो सारा समय,
आप रो रो न हमको रुलाओ प्रभु ॥ ३ ॥
कोई इसकी कहीं पर बताओ दवा,
उसको जल्दी वहाँ से मगावो प्रभु।
पास भाई के बैठो तजो सब फिकर,
विद्याधर योद्धे हर जहाँ पठाओ प्रभु ॥ ४ ॥

शेर [राम]

मन ही ठिकाने पर नहीं, फिर मैं करूँ तो क्या करूँ।
दिल तो चाहता है यही, भाई से पहले मैं मरूँ ॥

दोहा

इतना कह फिर अनुज सिर, धरा राम ने हाथ।
मोह के वश फिर लखन से, यों बोले रघुनाथ ॥

श्रीराम का विलाप

उठो तुम रण योद्धा बलवान, सो लिये बहुत देर मरदान। टेक
कैसे बर्छी आ लगी तेरे तन मे वीर।
हाय लक्ष्मण नहीं बोलता, मेरी उलट गई तकदीर ॥
आंखें खोल मुझे पहचान ॥ १ ॥
दशकंधर के अस्त्र ने, किया वीर बेहोश।
सिया चाहे मत ना मिले, मुझे नहीं अफसोस ॥
बचादे कोई वीरन के प्राण ॥ २ ॥
आधी रैन होने लगी, लगी ना औषधि खास।
वानर सेना सब तेरी, लक्ष्मण खडी उदास ॥
विपद में विपद पड़ी क्या आन ॥ ३ ॥

जब जाऊँगा अवध में, पूछेगी मोहे मात ।
कहां वीर लक्ष्मण तेरा, कौन कहूं फिर बात ॥
कैसा लगा दुष्ट का बाण ॥ ४ ॥

खबर लगे जब भरत को, तन करले विकराल ।
सिर धुन धुन पागल बने, छिन में करेगा काल ॥
गवा देगा सुन कर जान ॥५॥

औषधी कोई लगती नहीं, हुए वैद्य लाचार ।
चीर फाड़ से उल्टी शक्ति, करती दुःख अपार ॥६॥
हाय बिगड़ी रघुकुल शान ॥६॥

शेर

नारी खुसाई बन में, और भाई गवाऊंगा यहाँ ।
वाक्य ना पूरा किया, यह मुख दिखलाऊंगा कहां ॥

दोहा

नारी हरण भाई मरण, कष्ट रहा ये दूर ।
लंक मित्र को ना दई, यही दुःख भरपूर ॥
तन के खातिर धन तजो, तन को तज रख लाज ।
धर्म हेतु तीनों तजो, कहा श्रीजिनराज ॥

संयोगमूल दुःख दुनिया मे, सर्वज्ञ देव का कहना है ।
क्योंकि एक दिन होगा वियोग, ना पास किसी के रहना है ॥
यह जीव अकेला आया है, और आप अकेला जायेगा ।
एक सिवा शुभाशुभ कर्मों के, और साथ ना कुछ ले जायेगा ॥

दोहा

एक दिन होना था जुदा, अवध पुरी का राज ।
माता पिता भाई बहिन, और सब साज समाज ॥

जनक सुता की भी मुझ से, एक रोज जुदाई होनी थी।
लक्ष्मण भाई की भी आगे, पीछे कब होनी टलनी थी॥
किन्तु मित्र को वचनदिया, वह अब तक नहीं निभाया है।
लंकेश विभीषण को कह कर, लंकेश ना उसे बनाया है॥

दोहा

प्रातःकाल ही समर मे, रावण का सिर तार।
राज लंका का मित्र के सिर पर देऊं धार॥

राज्य तिलक कर वीर विभीषण, के सिर ताज टिकाऊंगा।
निज वचन करूं पूरा मित्र के, ऊपर चंवर झुलाऊ गा॥
एक सुमित्रा लाल विना, सीता की कुछ दरकार नहीं।
और राजपाट धन दौलत क्या, इस तन से भी अब प्यार नहीं॥

दोहा

भामण्डल सुग्रीव जी, श्रीवज्रांग नरेश।
वीर विराध आदि सभी, जावो निज निज देश॥

तन मन से सेवा की तुमने, इसका बदला मै नहीं दे सकता।
पर एक वीर लक्ष्मण के विना, इस तन को भी नहीं रख सकता।
पूरा करके वचन राम, चन्दन की चिता बनायेगा।
फिर भाई के संग भाई गन्दे, तन की भस्म बनायेगा॥

दोहा

कर्मों ने ये कर दिया, पूरा खेल तमाम।
कुशल क्षेम पहुँचो सभी, तुम अप अपने धाम॥
सुने राम के जिस समय, हृदय विदारक वैन।
प्रेम से फिर वज्रांग जी, लगे इस तरह कहन॥

दोहा (हनुमान)

वचन आप के तीर सम, हुए जिगर के पार ।
जनक दुलारी के बिना, जाना है धिक्कार ॥

शूर वीर क्षत्रीय हो कर हम, कसे कदम हटायेंगे ।
यह शस्त्र तन पे धारण कर, क्या जग मे मुख दिखलायेंगे ॥
धरें लाश पर लाश समर में, दशकन्धर को मारेंगे ।
वचन आपका पूर्ण कर, सीता का कष्ट निवारेंगे ॥

गाना (हनुमान जी का)

चाहे ये तन भी लग जावे तो, लाना ही मुनासिब है ।
बिना सीता के लंका से, नजाना ही मुनासिब है ॥१॥
वचन पूरा करो बेशक, तुम्हारा धर्म है राजन ।
धर्म हम को भी अपना तो, निभाना ही मुनासिब है ॥२॥
करो यह काम पहले, मूर्छा हो दूर लक्ष्मण की ।
सबेरे लंक पर गोला, बजाना ही मुनासिब है ॥३॥
सिवा रावण के राक्षस सेना में, अब तन्त ही क्या है ।
स्वाद सीता के हरने का, चखाना ही मुनासिब है ॥४॥
किया अर्पण यह तन मन धन, प्रभु सब आपकी खातिर ।
हमें रावण को क्षत्रापन. दिखाना ही मुनासिब है ॥५॥
कष्ट की आज की रात्री, रहो सब चुस्त हो कर के ।
क्योंकि विश्वास शत्रु पर, न लाना ही मुनासिब है ॥६॥

दोहा (सुग्रीव)

प्रबन्ध सभी ऐसा करूं, हे आदित्य नरेश ।
मनुष्यमात्र तो चीज क्या, करे न सुर प्रवेश ॥

सात कोट बना करके, दरवाजे चार बनाता हूँ ।
इर्द गिर्द यह इन्तजाम, ऊपर विमान अडाता हूँ ॥

मध्य भाग मे राम लखन, पहरा नंगी तलवारों का।
पहरा होगा दरवाजों पर भी, महा योद्धा वलधारों का॥

दोहा

शीघ्र वीर सुग्रीव ने, किया सभी यह काम।
मध्य भाग ले लखन को, बैठ गये श्रीराम॥

सात कोट कर विद्या के, फिर वीर किये सब शीघ्र खडे।
दरवाजों पर थे अतुल बली, विमान व्योम में सभी अडे॥
गव-गवाक्ष सुग्रीव हनुमत, तारक स्कन्ध दधि मुख थे।
अस्त्र-शस्त्र सब लगा वीर, सातों पूर्व के सन्मुख थे॥

दोहा

श्री महेन्द्र अङ्गद कुरम, अङ्ग विहंग सुशैन।
चन्द्ररश्मि उत्तर तरफ, तने खड़े थे ऐन॥

समरशील दुर्धर मन्मथ, जयविजय वीर संभव भारी।
पश्चिम दरवाजे सावधान हो, खडे नील थे वलधारी॥
वीर विराध गज भुवनजीत, नल मेंद विभीषण भामडल।
नृप राज कुमार सब चुस्त खड़े, कानों मे शोभ रहे कुण्डल॥

दोहा

योग्य स्थानों पर खड़े, वीर तान समसेर।
लक्ष्मण की करने लगे, वैद्य औषधि फेर॥

दोहा

देव रमण उद्यान मे, वैठी थी वेचैन।
सीता को जा त्रिजटा, लगी इस तरह कहन॥
दुःख मे दु.ख देने के लिये, आई तेरे पास।
जनक किशोरी क्या कहूँ, अपने मुख से भाप॥

त्रिजटा सीता के प्रश्नोत्तर—(बहरतवील)

त्रि०—मेरा आता कलेजा है मुख की तरफ,
क्या कहूं जैसी मैंने है वाणी सुनी।
क्या खबर कैसी बीतेगी कल को बहन,
जैसी कर्मों मे है आज तानी तनी ॥१॥
मेरी फटती है छाती यह रुकती जवां,
जब से लंका मे मैंने कहानी सुनी।
मेरे तनका तो हाल भगिनी ऐसा हुआ,
जैसे चिपटी हो लकड़ी को खाने घुनी ॥२॥

सीता—क्या सुनी तैंने ऐसी कहानी बहिन,
कृपा करके वह जल्दी सुना तो सही।
कौन तेरे सिवा मेरा हितकार है,
प्यारी रंजो अलम यह उड़ा तो सही ॥३॥
मेरा दिल बैठता जाता है आज तो,
इसका कारण मुझे तू बता तो सही।
सारा कांपे जिस्म आता चक्कर मुझे,
मेरे दिल की तप्त को बुझा तो सही ॥४॥

त्रिजटा—तेरा पहिले ही जब कि, बुरा हाल है,
क्या सुना करके बेमौत मार तुझे।
मैं करूं तो करूं क्या अय सीता बता,
यह भी अन्याय दिल से बिसराऊं तुझे ॥५॥

सीता—तो फिर देरी क्यों करती हो जल्दी कहो,
मेरे दिल को तसल्ली बंधा तो सही।
क्या तू लाई खबर आज के जंग की,
जैसी है वैसी मुझको बता तो सही ॥६॥

मध्य भाग में राम लखन, पहरा नंगी तलवारों का।
पहरा होगा दरवाजों पर भी, महा योद्धा वलधारों का॥

दोहा

शीघ्र वीर सुग्रीव ने, किया सभी यह काम।
मध्य भाग ले लखन को, बैठ गये श्रीराम॥

सात कोट कर विद्या के, फिर वीर किये सव शीघ्र खडे।
दरवाजों पर थे अतुल वली, विमान व्योम में सभी अड़े॥
गव-गवाक्ष सुग्रीव हनुमत, तारक स्कन्ध दधि मुख थे।
अस्त्र:शस्त्र सव लगा वीर, सातों पूर्व के सन्मुख थे॥

दोहा

श्री महेन्द्र अङ्गद कुरम, अङ्ग विहंग सुशैन।
चन्द्ररश्मि उत्तर तरफ, तने खड़े थे ऐन॥

समरशील दुर्धर मन्मथ, जयविजय वीर संभव भारी।
पश्चिम दरवाजे सावधान हो, खड़े नील थे वलधारी॥
वीर विराध गज भुवनजीत, नल मेद विभीषण भामडल।
नृप राज कुमार सव चुस्त खड़े, कानों में शोभ रहे कुण्डल॥

दोहा

योग्य स्थानों पर खड़े, वीर तान समसेर।
लक्ष्मण की करने लगे, वैद्य औषधि फेर॥

दोहा

देव रमण उद्यान में, बैठी थी वेचैन।
सीता को जा त्रिजटा, लगी इस तरह कहन॥
दुःख में दुःख देने के लिये, आई तेरे पास।
जनक किशोरी क्या कहूँ, अपने मुख से भाष॥

त्रिजटा सीता के प्रश्नोत्तर—(बहरतवील)

त्रि०—मेरा आता कलेजा है मुख की तरफ,
क्या कहूं जैसी मैंने है वाणी सुनी।
क्या खबर कैसी बीतेगी कल को बहन,
जैसी कर्मों मे है आज तानी तनी ॥१॥
मेरी फटती है छाती यह रुकती जवां,
जब से लंका मे मैंने कहानी सुनी।
मेरे तनका तो हाल भगिनी ऐसा हुआ,
जैसे चिपटी हो लकड़ी को खाने घुनी ॥२॥

सीता—क्या सुनी तैंने ऐसी कहानी बहिन,
कृपा करके वह जल्दी सुना तो सही।
कौन तेरे सिवा मेरा हितकार है,
प्यारी रंजो अलम यह उड़ा तो सही ॥३॥
मेरा दिल बैठता जाता है आज तो,
इसका कारण मुझे तू बता तो सही।
सारा कांपे जिस्म आता चक्कर मुझे,
मेरे दिल की तप्त को बुझा तो सही ॥४॥

त्रिजटा—तेरा पहिले ही जब कि, बुरा हाल है,
क्या सुना करके बेमौत मार तुझे।
मैं करूं तो करूं क्या अय सीता बता,
यह भी अन्याय दिल से बिसराऊं तुझे ॥५॥

सीता—तो फिर देरी क्यों करती हो जल्दी कहो,
मेरे दिल को तसल्ली बंधा तो सही।
क्या तू लाई खबर आज के जंग की,
जैसी है वैसी मुझको बता तो सही ॥६॥

दोहा (त्रिजटा)

आज सुमित्रा लाल के, रणभूमि दर्म्यान।
अमोघ विजय दशकन्धर ने, मारी शक्ति तान॥

छंद

शक्ति को खा धरणि गिरा, रण में सुमित्रा नन्द है।
सब जगह चर्चा यही, रावण के दिल आनन्द है॥
मूर्छित बली लक्ष्मण हुआ, देवर तुम्हारा है सती।
धीर धर दिल में जरा, बेटी तू घबरावे मती॥

दोहा

इतना सुन कर जानकी, गिरी मूर्छा खाय।
हो अचेत धरणी गिरे, ये दुःख सहा न जाय॥
त्रिजटा का प्रेम था, सीता संग भरपूर।
शीतल चीजों से किया, मूर्छितपन को दूर॥

आँखों से पानी बरस रहा, जैसे श्रावण की लगी झडी।
कभी ऐसी हालत होती है, सीता जैसे निर्जीव पड़ी॥
मार मार कर मस्तक पर, सीता न धैर्य धरती है।
अपनी हालत को देख देख, फिर ऐसे गिरा उचरती है॥

दोहा (सीता)

सबको दुखिया कर दिया, फिर भी मरती नांय।
जिस लक्ष्मण पर विश्वास था, गिरा मूर्छा खाय॥

(सीता जी का विलाप—शिकस्त में खो)

आह रावण तेरा कैसे होगा भला,
दुख देने में तूने न छोडी कमर।

क्या बिगाड़ा अधर्मी था हमने तेरा,
मार शक्ति जो लक्ष्मण का फारा जिगर ॥

मेरे प्रियतम की तैंने भुजा काट ली,
आज घी का दिया बस जला तेरे घर ।

कैसे जीतेगे तुझको अकेले पिया,
मेरे दिल मे यही एक भारी फिकर ॥

दोहा

ऐसे मूर्छित हो गिरे, पुनि पुनि उठे सम्भाल ।
मस्तक पर कर धर लिये, रोवे आँसू डार ॥
मै पापिनी ना जन्मती, क्यों होता ये हाल ।
रणभू मे क्यों लेटता, आज सुमित्रा लाल ॥

गाना (सीता का)

सिवा लक्ष्मण पिया का गुजारा नहीं,
मेरे जीने का कोई सहारा नहीं ।

आशा दिल मे जो थी सब खत्म हो गई,
ऐसी किस्मत हमारी कहाँ सो गई ॥
अब तो दुनियाँ मे कोई हमारा नहीं ॥१॥

अय कर्म तुझको आती न किसी पै दया,
मुझे किसके हवाले अय पापी किया ।
तूने कुछ भी तो सोचा विचारा नहीं ॥२॥

हाय लक्ष्मण बिना प्रीतम का जीना नहीं,
भ्रात विरहे से पानी भी पीना नहीं ।
क्योंकि शक्ति से बचना सुखारा नहीं ॥३॥

प्राण तज देंगी माताएँ सुन बात ये,
प्रलय होने मे सिर्फ आज की रात ये।
निकला चक्कर से बेड़ा हमारा नहीं ॥४॥

एक सा समय जग में न किसी का रहा,
संयोग ही दुख की जड़ है कहा।
अब तो मस्तक मे पुण्य सितारा नहीं ॥५॥

शुक्ल कहे क्या कर्म से जब पाला पड़ा,
काल सूर्यवंसियो का आ छाती चढ़ा।
सिवा धर्म के अब तो गुजारा नहीं ॥६॥

दोहा

इतना कह करके सिया, गिरी धरणी मुर्झाय।
इसी समय फिर त्रिजटा, बोली गले लगाय॥

दोहा (त्रिजटा)

जनक सुता क्यों हो रही, इतनी हाल बेहाल।
राजी अब हो जायेगे, वीर सुमित्रा लाल॥

त्रिजटा—तेरा सुन कर रुदन ये कलेजा हिले,
अब तू आंखो से आंसू बहावे मती।
इसलिये ही तो तुमको बताती न थी,
रो रो बेटी तू मुझको रुलावे मती ॥१॥

शस्त्र योद्धो को लगते हैं रण मे सदा,
तेरा देवर भी योद्धा है भारी मती।
मेरे कहने से तू अब तो सन्तोप कर,
तुझको आकर मिलेंगे अयोध्या पति ॥२॥

सीता—धीरज कैसे बधे सोचो दिल में जरा,
ऐसो हालत में किसका सहारा लेऊं।
जब धर्म ही गया तो फिर जीऊंगी क्या,
कर खत्म दम मे यहां से किनारा लेऊं॥३॥
बिना लक्ष्मण न जीने के श्रीराम जी,
इससे अच्छा मैं पहले दुधारा लेऊं।
कर दें ऐहसान मुझ पर जरा आज ये,
ला गले मार अपने कटारा लेऊं॥४॥
त्रिजटा—हमने तो क्या कहा तू समझती है क्या,
श्यानी होकर अक्ल कहां गमाई सिया।
तूने समझा कि निश्चय वे मर ही गये,
हमने मूर्छा है उनको बताई सिया॥५॥
पहले मेरी अक्ल ही तो मारी गई,
तुझको आकर ये अफवा सुनाई सिया।
तेरे दुःख से दुखी आज मैं हो रही,
कैसे तुमको मे निश्चय दिलाऊं सिया॥६॥

दोहा

सर्सराहट करती हुई एक विद्याधरी आय।
सीता ने उसकी तरफ देखा नयन उठाय॥

आंखों से पानी बरस रहा, और दुर्बलता अति तन पर थी।
यह हाल कथन नहीं हो सकता, जो अर्ति उसके मन पर थी॥
देख हाल ये जनक सुता का, विद्याधरी अकुलानी है।
और प्रेम भाव से सीता को, ऐसे बोली वो वाणी है॥

दोहा (विद्या०)

सुन सुन कर तेरा रुदन, हृदय दुखी अपार।
बेटी अब रोवे मती, दिल में धीरज धार॥

अशुभ कर्म का उदय भाव हो, तब ही विपत्ति आती है।
एक मनुष्य मात्र क्या देवन पति, की पेश नहीं कुछ जाती है॥
दुष्ट न होते दुनिया मे तो, श्रेष्ठ पुरुष किसको कहते।
यदि अमृत ना होता तो, कैसे बुरा कहो विप को कहते॥
यदि कर्म ना होते दुनिया में, तो दुखिया नजर नहीं आते।
यदि मुक्ति न होती जीवों की, तो नित्यानन्द कहाँ पाते।
यह सभी खेल हैं कर्मों के, अयि सीता नजर जो आते हैं।
जो सुखी जीव आनन्द मे है, दुखिया जल नयन बहाते हैं॥

दोहा

शुभ गणना मे वे सदा, जो रहे धर्म मे लीन।
सर्वस्व चाहे अर्पण करें, बने न हर्गिज दीन॥

धर्म हेतु जो सहे कष्ट, सो ही उत्तम नरनारी है।
नर तन पाकर ना धर्म किया, तो व्यर्थ मे जून विगारी है॥
धन्य धन्य हे जनक सुता, तूने सती धर्म निभाया है।
और महा कष्ट सहने पर भी, अपना मन नहीं हिलाया है॥

दोहा

अवलोकिनी विद्या सती, है मेरे आधीन।
भेद मगाया मै अभी, देख तेरी छवि क्षीण॥

प्रातःकाल से पहले ही, लक्षमण अच्छे हो जावेंगे।
निश्चय कर लो ये वचन मेरे, सब ही सच्चे हो जावेंगे॥
अस्त्र शस्त्र दशकन्धर के, निष्फल सारे हो जावेंगे।
सब भ्रम निवारो राम लखन, अब शीघ्र तुम्हें मिल जावेंगे।

मौन करके मुझे न सतावो जरा ॥१॥
ा जैसा शशि, ऐसा है मस्तक आप का ।
कती दुख स्वामी, आपके सन्ताप का ॥
मेरे दिल को तसल्ली बधावो जरा ॥२॥
ो फरक्ती है, दाहिनी अच्छी नहीं ।
मानते तुम भी, कोई सच्ची नहीं ॥
मेरे सुत कहाँ मुझ को दिखाओ जरा ॥३॥
आया उदय, मेरा ही खोटा कर्म है ।
खों में कैसे, आ रहा कुछ चर्म है ॥
मेरे प्रीतम जबा तो हिलावो जरा ॥४॥

दोहा

य रानी मैं क्या कहूँ, अपने दुख का हाल ।
ः अरि ने कर लिये, तेरे दोनों लाल ॥

छन्द

भानु कर्ण भी, आज उनकी जेल है ।
ोछे कई, बिगड़ा सभी यह खेल है ॥
ऐसी कभी, बीती न मेरे साथ थी ।
रों की अकेले, ने करी मैं घात थी ॥
मुझको विभीषण दुष्टने ...का दिया ।
ा बातों में, ... दिया ॥
में ... गये ।
मको ... गये ॥
हँसी करे ... रि ।
थे ... ी ॥

आत्मा मम दूसरी, भानुकर्ण तू वीर था,
हाय मेरे ज्येष्ठ सुत, तू तो बड़ा रणधीर था।

मेघवाहन मेघ जैसी, गर्जना कहां खो दई
आज मेरे मुख्य योद्धों की, गति क्या हो गई।

कैसे छुटे अब कैद से, योद्धे सभी ये ही फिकर,
कोई बली ना दूसरा, जिससे कहुँ अपना जिकर।

शक्ति से लक्ष्मण मर गया, तो प्रलय उन पर आयेगा,
यदि रहा जीता तो मेरी, पेश ना कुछ जायेगी।

हे—प्रभु अब किस तरह, सुतभ्रात का बन्धन छुटे,
पुत्र विरह में श्वास रुकता, आज मेरा दम घुटे।

दोहा (रावण मंदोरी)

रावण ऐसे कह रहा, बैठा आर्त ध्यान।
मन्दोदरी को यह खबर, लगी महल दरम्यान॥

सुत देवर हो गये कैद, यह खबर सुनी तब घबराई।
तब भूल गई रंग चाव सभी, और पास दशानन के आई॥
देख हाल दशकन्धर का, रानी का मस्तक ठिनका है।
और समझ गई मन ही मन में, बस पुण्यघटा अब इसका है॥

दोहा

कर साहस आगे बढ़ी, किन्तु भय दिल मांय।
हाथ जोड़ मन्दोदरी, बोली शीश नवाय॥

गाना (मन्दोदरी का)

मेरे प्रीतम मुझे भी, बतावो जरा।
स्वामी दिल काये, भ्रम मिटावो जरा॥

पख बिन जैसे पखेरु, तड़फता गिल पर पड़ा।
आप के दुख का असर, मेरे सभी दिल पर पड़ा॥

मौन करके मुझे न सतावो जरा ॥१॥
दिवस का जैसा शशि, ऐसा है मस्तक आप का।
सहना सकती दुख स्वामी, आपके सन्ताप का ॥
मेरे दिल को तसल्ली बंधावो जरा ॥२॥
आंख मेरी फरकती है, दाहिनी अच्छी नहीं।
बात मेरी मानते तुम भी, कोई सच्ची नहीं ॥
मेरे सुत कहाँ मुझ को दिखाओ जरा ॥३॥
क्या शुक्ल आया उदय, मेरा ही खोटा कर्म है।
आपकी आंखों में कैसे, आ रहा कुछ वर्म है ॥
मेरे प्रीतम जबां तो हिलावो जरा ॥४॥

दोहा

अय रानी मैं क्या कहूँ, अपने दुख का हाल।
कैद अरि ने कर लिये, तेरे दोनों लाल ॥

छन्द

देवर तेरा भानु कर्ण भी, आज उनकी जेल है।
साथ में योद्धे कई, बिगड़ा सभी यह खेल है ॥
आज तक ऐसी कभी, बीती न मेरे साथ थी।
लाखां हजारों की अकेले, ने करी मैं घात थी ॥
अय प्रिया मुझको विभीषण, दुष्टने धोका दिया।
मुझ को लगा बातों में, शत्रु को उधर मौका दिया ॥
नाग फांसी में फसा, धोके से उनको ले गये।
जब लगा हमको पता, तो हाथ मलते रह गये ॥
क्या खबर कैसी करे, सुत भ्रात के संग मे अरि।
भाग्य खोटे थे मेरे, जो मध्य आ रजनी पड़ी ॥

दोहा (मन्दोदरी)

काल के मुख धरदिये, मेरे दोनों लाल।
अब के नम्बर आपका, आने वाला काल॥

समझाये सब तरह किन्तु, तुमने ना एक विचार करी।
तो अब क्या यत्न बनाओगे, बतलाओ कुछ सरकार मेरी॥
साप पवनिये दिये छेड़, वह सूर्य वंशज नाहर है।
फिर वह लड़ते नीति अन्दर, तुम लड़ते नीति बाहर है॥

दोहा

अन्याय महा तुमने किया, हरी पराई नार।
अपने हाथों आप ही, सिर मे गेरी छार॥

किन्तु अब यह ध्यान करो, यदि आगे रार बढ़ाओगे।
तो कुटुम्ब खतम करवा कर के, सब राज पाट मे जाओगे॥
पतिव्रता नारीकी हाय बुरी, यह सर्वस्व नाश कर डारेगी।
कोई रहे न यहा रोने वाला, परभव नरकों मे डारेगी॥

दोहा

महापुरुष को चाहिये, निज गौरव का ध्यान।
नीति कभी ना त्यागते, तज देवें चाहे प्राण॥

हे नाथ अनीति करने से, जो पुण्य सभी कापूर
फिर अतुल बली भी पुण्यवान, आगे अति कायर क्रूर
तीन खड मे नाथ दूसरा, नहीं आपकी शानी
एक नार के लिये क्यों करते, नाश लंक राजधानी

(मन्दोदरी का गाना—समझाना)

कही मानों हमारी हजारी बलम ॥टेक॥

शेर

सिया हर के कहो तुमने, क्या फल पाया है।
हम तो साफ कहेंगे कि, इज्जत को गंवाया है ॥
समर में मरवा के, कईयों को रांड बनाया है।
घर बेघर भी हुये, कईयों का नाश कराया है ॥
होती पर नारी जहर कटारी बलम ॥१॥

शेर

कहाँ पै गई वह आपकी, शक्ति साहिब।
बैठ अबला की तरह क्यों, आंसू बहाये साहिब ॥
सुत बन्धु ना किसी, शक्ति से छुटाये साहिब।
अब भी मानो मै खड़ी, सिर को झुकाये साहिब ॥
कर दो वापिस ये, जनक दुलारी बलम ॥२॥

दोहा (रावण)

तू है कायर की सुता, सो आदत कहाँ जाय।
कायर सुत पैदा किये, फंसे कैद मे जाय ॥

फंसे कैद में जाय बता, इसमें क्या दोष हमारा है।
शत्रु की जो करी प्रशंसा, ये दुर्वचन तुम्हारा है ॥
कायर सुत पैदा करते ही, तभी नहीं क्यों मारा है।
सीता खटक रही तुझको, ये मैंने ठीक विचारा है ॥

रावण का गाना

सारा भेद मुझे अब पाया है,
तेरे हृदय को जिसने जलाया है।

तेरी आँखो मे सीता रड़क रही,
जिस कारण सिर को है पटक रहो ।१।
तेरी तबीयत विषयों में लटक रही,
तैंने सब ये पाखंड बनाया है ।
कभी राम को बलीया बताती है,
कभी सीता पै करुणा लाती है ।२।
और कायर हमे जितलाती है,
कैसा तिरिया चरित्र फैलाया है ।
तेरे जैसी कोई मक्कार नहीं,
सिया जैसी सरल कोई नार नहीं ।३।
तेरे फरेबों का कुछ सुमार नहीं,
और तैंने ही उसको बहकाया है ।४।
तेरी शौकन सिया को बनाऊंगा,
पटरानी का चीर उढ़ाऊंगा ।
तुझे सारी उमर तरसाऊँगा,
अब तो दिल में ये निश्चय बैठाया है ।५।
जैसा छलिया दुष्ट विभीषण है,
राणी तेरा भी वैसा ही लक्षण है ।
दुखदायी तुझे ये कुलक्षण है,
तुम्हारा देवो ने पार न पाया है ।६।

दोहा (मन्दोदरी)

जैसी गति वैसी मति, स्फुरना वही निढाल ।
राजन तेरे शीश पर, आ बैठा अब काल ।।
प्रति पालक तुम हो मेरे, परम प्राण प्रिय आप ।
देख न सकती आपका, अरधांगिनी संताप ।।

जो मर्जी सो कहे आप मैं, तो निज धम निभाऊँगी ।
प्रज्वलित प्रतापी महाराज, नित्य आपके शकुन मनाऊँगी ॥
धीर वीर गंभीर धुरन्धर, आप सा कोई और नहीं ।
पर यह भी मन में समझ लेवो, श्रीराम का पुण्य कमजोर नहीं ॥
फस गये कैद में सब योद्धे, दिल मेरा बड़ा धड़कता है ।
रह गये अकेले आप मेरा, यह दाहिना अंग फड़कता है ॥
एक दूत राम का आकर के, यहाँ सब की शान बिगाड़ गया ।
और निर्भयता से देवरमण मे, अक्षकुमार को मार गया ॥

दोहा (रावण)

प्राण प्रिया तू किस लिये, होती है दिलगीर ।
जब तक जीता जगत में, दशकंधर रणधीर ॥

एक रात का कष्ट मुझे कल, सभी ठीक हो जायेगा ।
लक्ष्मण के मरने बाद सभी, शत्रु दल पीठ दिखायेगा ॥
आमोघ विजय शस्त्र मैंने, लक्ष्मण के हृदय मार दिया ।
बस उसी समय रण भूमि में, लक्ष्मण ने पैर पसार दिया ॥
जब तक रजनी तब तक उसके, श्वासों की आस मनावेंगे ।
सूर्य की किरने नजर पड़ी, परभव को शीघ्र सिधावेंगे ॥
प्रातः काल ही अय राणी, तेरे पुत्र छुड़वा दूंगा ।
भागेंगे प्राण बचा करके, तम्बू डेरे उठवा दूंगा ॥

रावण गाना (व० त०)

मेरे प्रणों की प्यारी, तजो सब फिकर,
यहाँ तुझको नहीं है, किसी का खतर ।
कल को दिखला दूं, करके ये बातें सभी,
आज की रात को, कर तसल्ली सबर ।१।

अपने भुजबल की, शक्ति पै लाया सिया,
मेरी शक्ति ना झेले, मनुष्य क्या अमर।
बदला सबका चखा करके, लाऊगा कल,
लूंगा जाकर के अच्छी तरह से खबर।२।

मन्दोदरी—कुछ ना लोगे खबर. हे हजारी वलम,
पीठ दिखलाई तुमने, समर मे पिया।
तोड़े संग्रामी रथ, आपके राम ने,
देखो आई हैं चोटें, कमर में पिया।३।
लाते शक्ति से सीता, को तो आते ही क्यों,
राम दलबल को, लेकर के रण में पिया।
वहाँ सीता हरी, यहाँ रण में भगे,
छत्रापन तो सभी उड़ गगन में गया।४।

रावण—बस बके मत तू अपनी जबां वन्द कर,
वरना कर दूंगा यहाँ मैं तेरा दम खतम।
करके तारीफ शत्रु की ऐ बेहया,
क्यो जलाया करे मेरा हर दम ये दम।५।
जो थी आदत विभीषण की वो ही तुझे,
पहले दर्जे की है तू वडी वेशर्म।
जब से जन्मा विभीषण तू व्याही मुझे,
बस उसी दिन से फूटे हमारे करम।५।

मन्दोदरी का गाना

(तर्ज—रातभी)

तेरे कर्मों ने तुझे, खूब रुला के मारा,
भाव निंद्रा ने तुझे, खूब सुला के मारा।
आंखे हुई तो क्या, हृदय से तो अंधे हो,

तीस लक्षणों की ही, संख्या को बढ़ा के डारा ।१।
राग और शिक्षा का, वैर सदा से है,
आप तो चीज हैं क्या, असुरों को रुला के मारा ।२।
अन्त गति सो मति, ये भगवान ने भाषा,
पिया कुमति ने तुझे, आज भुला के मारा ।३।
एक देवर ही विभीषण, थे रत्न लंका मे,
उस धर्मी का भी दिल, तूने सता के फारा ।४।
बन गया उसके विना, सब बाग खिजा का,
रहा बाकी जो सभी, तूने कटाके डारा ।।५।।
अबके संख्या पे मुझे, विधवा बनाओगे,
कैसे दिल धीर धरूं, पुत्रों को फंसा के मारा ।६।
मेरी नैया ता शुक्ल, आन भवर में अटकी,
डूबा मेरा ये कुटुम्ब, तुमने रुड़ा के मारा ।।७।।

दोहा (रावण)

बुद्धिहीन क्यों कर रही, अशकुन यहां अपार ।
यदि आगे कुछ भी कहा, लेऊं शीश उतार ।।

भाग्यहीन यह बता कौन मर गया, जिसे तू रोती है ।
रोवेंगे राम मर गया लखन, तू क्यों वृथा तन खोती है ।।
बत्तीस लक्षणी आप बने, और तीस मे हमें बताती है ।
रत्न विभीषण को कह कर, क्यों छाती मेरी जलाती है ।।
बार बार कह दिया तेरे पुत्र, हम सभी छुड़ादेंगे ।
शत्रु का करके नाश सवेरे, झगड़ा सभी मिटा देंगे ।।
रत्न जिसे कहती पहले, उसको परभव पहुंचाऊंगा ।
क्योंकि उस पर हूँ जला हुआ, यह हृदय शान्त बनाऊंगा ।।

अपने भुजबल की, शक्ति पै लाया सिया,
मेरी शक्ति ना झेले, मनुष्य क्या अमर।
बदला सबका चखा करके, लाऊंगा कल,
लूंगा जाकर के अच्छी तरह से खबर।२।
मन्दोदरी—कुछ ना लोगे खबर, हे हजारी बलम,
पीठ दिखलाई तुमने, समर मे पिया।
तोड़े संग्रामी रथ, आपके राम ने,
देखो आई हैं चोटे, कमर मे पिया।३।
लाते शक्ति से सीता, को तो आते ही क्यों,
राम दलबल को, लेकर के रण में पिया।
वहाँ सीता हरी, यहाँ रण में भगे,
क्षत्रापन तो सभी उड़ गगन मे गया।४।
रावण—बस बके मत तू अपनी जवां बन्द कर,
वरना कर दूंगा यहाँ मैं तेरा दम खतम।
करके तारीफ शत्रु की ऐ बेहया,
क्यो जलाया करे मेरा हर दम ये दम।५।
जो थी आदत विभीषण की वो ही तुझे,
पहले दर्जे की है तू बड़ी बेशर्म।
जब से जन्मा विभीषण तू ब्याही मुझे,
बस उसी दिन से फूटे हमारे करम।५।

मन्दोदरी का गाना

(तर्ज—रातभी)

तेरे कर्मों ने तुझे, खूब रुला के मारा,
भाव निंद्रा ने तुझे, खूब सुला के मारा।
आंखें हुई तो क्या, हृदय से तो अंधे हो,

वह स्वप्न में भी नहीं चाहती है, तेरी मूरत उसे न भाती है,
कभी नाम ना सुनना चाहती है, अब ज्यादह ना हैरान करो ।६।
कल राम लङ्क धंस आवेगे, और तुमसे जङ्ग मचायेगे,
मुझको भी अनाथ बनायेंगे, लङ्का को ना विरान करो ।७।
मेरी अन्तिम विनती मान पिया, सब नाश करेगी जान सिया,
हठ ऐसा क्यों तुमने तान लिया, श्री राम की शक्ति प्रमाण करो ८
अब अशुभ ध्यान सब दूर हरो, और शुक्ल ध्यान भरपूर करो,
कुछ नेक नाम मशहूर करो, जिन शिक्षा अमृत पान करो ।६।

रावण—अयि मूढ़ नारी तू चल हठ परे,
तेरा उपदेश सुनना मैं चाहता नहीं ।

क्योंकि बातें ही तेरी है वृथा सभी,
कभी शत्रु से मै घबराता नहीं ।१।

चाहे राणी हजारों है घर में मेरे,
सीता जैसी कोई एक राणी नहीं ।

रूप लावण्य में समता हो ना सके,
नक्श उसका मेरे दिल से जाता नहीं ।२।

कभी मानेगी सीता समझ आप ही,
अब तो जाने की यहाँ से ना वो भी रही ।

तैंने बातें बनाकर यह सारी कही,
तेरे कहने पर विश्वास लाता नहीं ।३।

वो प्यारी सिया मेरे मन भा गई,
उदय पुण्य से मेरे हाथ आगई ।

चाहे नागिन छुरी वह कटारी सही,
उसको वापिस तो मैं भी पहुंचाता नहीं ।४।

गाना (रावण)

विभीषण दुष्ट ने ही, भेद शत्रु को बताया है
मेरे पुत्रों व भाई को, उसी ने तो फसाया है ॥१॥
धूल वन वन की फिरते छानते, थे भील दोनों ही,
गुप्त सब भेद देकर के, उसी ने तो बुलाया है ॥२॥
फौज खुसरों की लेकर के, बहादुर बन गये ऐसे,
हंसरथ ही कमीनों मे, मुझे भी जान पाया है ॥३॥
यदि भानु न छिपता आज, तो करता खतम सबको,
पुण्य उनके ने अय राणी, आज उनको बचाया है ॥४॥
स्वाद लङ्का पे चढ़ने का, सवेरे ही चखा दूंगा,
आज कर्मों की चालों ने, ही पुत्रों को फंसाया है ॥५॥
करूं पटनार सीता को मै, पहले कर फना उनको,
'शुक्ल' तेरी तो शिक्षा ने मेरे दिल को सताया है ॥६॥

गाना (मन्दोदरी)

अय प्रीतम न ऐसा ख्याल करो, सती सीता तरफ न ध्यान करो,
यह दुखकारी परनारी है, दशकन्धर दिल मे ज्ञान करो ॥१॥
मैं दासी अर्ज ये करती हूँ, लो स्वामी चरण में पडती हूँ,
चरण रजमस्तक पर धरती हूँ, हे नाथ न इतना मान करो ॥२॥
तेरे घर में हजारों हैं नारी, मुझसी कई आपके पटरानी,
सब हैं चातुर सुन्दर स्यानी, कर सबर जरा आराम करो ॥३॥
वह सीता है एक तेज छुरी, कुल नाश करेगी है वह बुरी,
मेरी सच मानो जो बात फुरी, इस तरफ न बिल्कुल ध्यान करो,
मैने परख लिया उसको जाकर, और हार गई मैं समझा कर,
तुम आवो उसे वहाँ पहुंचाकर, ना झगडा घर दरम्यान करो ॥४॥

वह स्वप्न मे भी नहीं चाहती है, तेरी मूरत उसे न भाती है,
कभी नाम ना सुनना चाहती है, अब ज्यादह ना हैरान करो ।६।
कल राम लङ्क धंस आवेंगे, और तुमसे जङ्ग मचायेंगे,
मुझको भी अनाथ बनायेंगे, लङ्का को ना विरान करो ।७।
मेरी अन्तिम विनती मान पिया, सब नाश करेगी जान सिया,
हठ ऐसा क्यों तुमने तान लिया, श्री राम की शक्ति प्रमाण करो ८
अब अशुभ ध्यान सब दूर हरो, और शुक्ल ध्यान भरपूर करो,
कुछ नेक नाम मशहूर करो, जिन शिक्षा अमृत पान करो ।९।

रावण—अयि मूढ़ नारी तू चल हठ परे,
तेरा उपदेश सुनना मैं चाहता नहीं ।
क्योंकि बाते ही तेरी है वृथा सभी,
कभी शत्रु से मै घबराता नहीं ।१।
चाहे राणी हजारों हैं घर में मेरे,
सीता जैसी कोई एक राणी नहीं ।
रूप लावण्य में समता हो ना सके,
नक्श उसका मेरे दिल से जाता नहीं ।२।
कभी मानेगी सीता समझ आप ही,
अब तो जाने की यहाँ से ना वो भी रही ।
तैने बातें बनाकर यह सारी कही,
तेरे कहने पर विश्वास लाता नहीं ।३।
वो प्यारी सिया मेरे मन भा गई,
उदय पुण्य से मेरे हाथ आगई ।
चाहे नागिन छुरी वह कटारी सही,
उसको वापिस तो मै भी पहुंचाता नहीं ।४।

मर गया होगा लक्ष्मण या मर जायेगा,
कूंच परभव को फिर राम कर जायेगा।
खेल शत्रु का सारा बिगड़ जायेगा,
बाकी राजों का खुर खोज पाना नहीं।५।
तीन खंडों मे सारे अटल वाक्य है,
मेरे गौरव की सारे मची धाक है।
और चक्र सुदर्शन मेरे पास है,
खौफ रावण किसी का भी खाता नहीं।६।

दोहा (मन्दोदरी)

समझ गई मैं सिर तेरे, रहा शनिश्चर छाय।
कर्मों के अनुसार ये, अकल विकल हो जाय॥

समझाये हर समय किन्तु, तुम जरा ख्याल नहीं लाते हो।
हम कहते है पूरब को तो, तुम पश्चिम को जाते हो॥
अब सीता को वापिस करके, श्री रामचन्द्र से प्रेम करो।
अब फेर दुबारा पर स्त्री का, प्राणनाथ तुम नियम करो॥

दोहा

आरी सी जिह्वा तेरी, रही कलेजा चीर।
मती हीन हटती नहीं, कस कस मारे तीर॥

अनुचित कहने का मैं तुझको, सारा स्वाद चखा देता।
क्या करूं जात है औरत की, नहीं धड से शीश उड़ा देता॥
पीठ दिखा यहाँ से जल्दी, क्यो तेरी होनी आई है।
निर्बुद्धि वाम बता तूने, कहा शर्म बेचकर खाई है।"

दोहा

शिक्षा ना मानी नार की, लङ्कपति ने एक।
पड़ो निकाचित कर्म की, टले किस तरह रेख॥

लाचार गई निज महलों में, पर दिल अन्दर से धड़क रहा।
रावण शय्या पर पड़ा हुआ, मानिन्द मीन के तड़फ रहा॥
उधर सयाने वैद्यों ने, अप-अपना जोर लगाया है।
पर वीर सुमित्रा नन्दन को, आराम नहीं कुछ आया है॥

औषधि

दोहा

विद्याधर प्रतिचन्द्र जी, आये दक्षिण द्वार।
भामंडल को प्रेम से, बोले गिरा उचार॥
यदि प्रेम है आपका, रामचन्द्र के साथ।
तो हमें वहाँ पहुँचाय दो, आज निभावे माथ॥
कौन आप हमको पता, देवें सभी बताय।
निश्चय करके हम तुम्हे, देगे दर्श कराय॥
ठीक हमें तुम समझ लो, रामचन्द्र के दास।
बाकी फिर बतलायेंगे, रघुनन्दन के पास॥

शक्ति दूर हटाने की औषधि, बताने आया हूँ।
कृपया जल्दी बतला देवो, उनके दुख से घबराया हूँ॥
प्रात काल से पहले ही उनका, इलाज हो जावेगा।
यदि देर हुई ज्यादह मेरा, आना निश्फल कहलावेगा॥

दोहा

दिल में सोच विचार के, इन्तजाम के साथ।
पास गये श्री राम के, तुरन्त निवाया माथ॥
सूर्यवंशी कुल मणी मुकुट, हे स्वामी जगताज।
नम्रनिवेदन पर जरा, ध्यान धरे महाराज॥

सांगीत नगर का हूँ प्रभु, सुप्रभा अङ्ग जात।
प्रतिचन्द्र मम नाम है, शशि मडल नृप तात॥
अचूक औषधि लक्ष्मण के लिये, आज बताने आया हूं।
सुनते ही शक्ति का प्रहार, हे नाथ बड़ा घबराया हू॥
ध्यान लगा कर सुन लीजे, अपनी बीती बतलाता हूं।
फिर औषधि मिले जहाँ पर यह, सो भी स्वामी दरसाता हू॥

छंद

राणी सहित मैं एक दिन, विमान में था जा रहा।
उस तरफ विद्याधर सहस्त्र, नामक था सम्मुख आ रहा॥
विषय सम्बन्धी बैर के, कारण हमारा जङ्ग हुआ।
इस तरफ मैं भी थक गया, उस तरफ वह भी तग हुआ॥
प्रहार शक्ति चन्द्र वा का, अन्त में उसने किया।
मूर्छित हो मै उद्यान मे, गिर धरणी का शरणा लिया॥
आपके भाई भरत वहाँ आगये करुणा निधि।
लेकर के गधाबू दिये, छींटे उन्होंने कर विधि॥
शक्ति उसी दम निकल भागी, बाण जैसे धनुष से।
या यों कहो जैसे भगा हो, चोर डर कर मनुष्य से॥
निश्चय समाधि हो गई, मुझको उसी जल से प्रभु।
भरत से पूछी मैं महिमा, जल की अब सुन लो विभु॥
बोले भरत गज पुर में, महिषों का व्यापारी आ गया।
विंध्य सार्थवा महीपा, रुग्ण वहाँ विसरा गया।

दोहा

सभी वार्ता भरत ने, दई मुझे बतलाय॥
सो भी मैं संक्षेप से देऊँ प्रभु सुनाय।

शक्तिहीन भैंसा वहाँ, पड़ा मार्ग मे आन ।
दुखिया उठ सकता नहीं, आगे सुनो बयान ॥

अज्ञानी जन उस भैंसे के, ऊपर से आने जाने लगे ।
कई दुष्ट और बालक जन भी, दुखिया को खूब सताने लगे ।
अकाम निर्जरा होने से, वायु कुमार जा देव हुआ ॥
फिर अवधि ज्ञान से देखा है, पर्याप्त जब स्वयमेव हुआ ।

दोहा

निज मृत्यु का जब लखा, सुर ने सारा हाल ।
सभी देश पर देव को, चढ़ा रोष विक्राल ॥

क्रोधातुर हो उसी समय, व्याधि सब जगह फैलाई है ।
भयभीत हुए उस महा रोग से, जनता अति घबराई है ॥
द्रोण मेग मामा कारण वश, इसी राज्य मे रहता था ।
उस जगह य. उसके आस-पास, यह रोग नही कुछ कहता था
मैंने फिर मातुल से पूछा, किस कारण यहा रोग नहीं ।
और आपके आस-पास मेरी, जनता पर भी कुछ शोक नहीं ॥
द्रोणमेग ने बतलाया, कि प्रियंगु जो ममराणी है ।
यह रुग्ण जरा कुछ रहती थी, जो धर्मन चतुर सयानी है ।

छन्द

गर्भ के प्रभाव से राणी का, दुःख सब हट गया ।
जहां पाव राणी ने धरा, उसका भी सकट कट गया ॥
कन्या हुई पैदा गर्भ का, काल जब पूरा हुआ ।
या यों कहो पैदा सभी का, पुण्य अकूरा हुआ ॥

इस तरह ही देश मेरे मै भी, भारा शोक था ।
जिस-जिस जगह कन्या फिरी, वहा का मिटा सब रोग था ॥

करवालिया छिड़काव फिर, लेकर के जल स्नान का।
रोग भागा दूर सारा, नारी व इन्सान का॥
नाम वैशल्या उसी दिन, से यह हमने धर दिया।
क्योंकि इसके पुण्य ने, दुःख दूर सब का कर दिया॥

दोहा

सत्य भूति मुनि एकदा, समवसरे तहाँ आय।
कारण यह मुनिराज से, पूछा हमने जाय॥
सुनकर मेरे वचन को, ज्ञान कारण मुनिराय।
मन्द-मन्द मुस्कावते, ऐसे वचन सुनाय॥
आत्म उन्नति के लिए योग स्थिर शुभ ध्यान।
दान शील तप ज्ञान से, शक्ति बढ़े महान्॥

घोर तपस्या करी जन्म पूर्व मे, थी इस कन्या ने।
इस कारण कर दिया दूर, यह रोग सभी वैशल्या ने॥
दशरथनन्दन लक्ष्मण जी, इस कन्या के वर होवेंगे।
और देख-देख जिसकी शक्ति को, शत्रु मन में रोवेंगे॥

दोहा (म०)

मेरी भी विनती करी, मामा ने स्वीकार।
स्नान करा वह औषधि, दई मुझे सुखकार॥

स्नान का जल मैंने लाकर, जनता का रोग मिटाया था।
अब तुम पर भी लेकर मैंने, वो ही पानी छिड़काया था॥
घाव चोट और शक्ति क्या, कैसा ही रोग होवे तन में।
यह पानी जरा लगाने से, मिट जाता है सब पल क्षण में॥

प्रतिचन्द का गाना

ये कथन मेरा प्रमाण करो, अब लक्ष्मण को आराम करो ।।टेक।।
कोई वीर चतुर अब भिजवाओ, स्नान का पानी मंगवाओ ।
लक्ष्मण पर स्वामी छिड़काओ, अब देरी का न काम करो ।।१।।
देवी शक्ति नुकसान करे, कोई औषधि ना यहां काम करे ।
अक्सीर वो इसका मान हरे,
अब मन में ना आर्त ध्यान धरो ।।२।।

दोहा

प्रतिचन्द के वचन सुन, हर्षे अति रघुराय ।
हनुमान अंगद सुभट, शीघ्र लिये बुलवाय ।।

भामंडल थे विराजमान, योद्धा सलील बुलवाये है ।
श्रीराम ने जल की महिमा के, सब भेद खोल दर्शाये है ।।
कर जोड़ सामने खड़े वीर, तन-मन से शीश झुका करके ।
श्री रामचन्द्र तब लगे कहन, सब को ऐसे समझा करके ।।

दोहा (श्रीराम)

भामंडल हनुमान जी, अंगद सुभट सलील ।
बैठो अभी विमान में, जरा न लाओ ढील ।।

अर्ध रात्रि से ज्यादह रजनी का हिस्सा बीत गया ।
इस लिये सभी योद्धाओं का, और मेरा मन भयभीत हुआ ।।
आज तलक तुम सेवक थे, अब सभी धर्म के भाई हो ।
अपने मुख से क्या कथन करूं, बस तुम ही मेरे सहाई हो ।।
जो-जो तुमने उपकार किये, मुझ पर सो नहीं दे सकता हूं ।
अय हनुमान अंजनी लाल, तेरे गुण नहीं कह सकता हूं ।।
गम्भीर भंवर में नाव पड़ी, तुमने ही पार लगाना है ।
यह घाव किया दशकन्धर ने, सो आपने आज मिटाना है ।।

दोहा

अर्पण सब कुछ कर दिया, तन मन धन अवधेश।
सेवक हाजिर चरण मे, करो इसे आदेश ॥

बतलाइये आदेश आपका, हुक्म बजा लावें हम।
तीन लोक से जहाँ मिले, वहाँ से औषधि लावें हम ॥
देरी का नहीं काम बैठ, विमान अभी जावें हम।
यदि आज्ञा हो खास वैशल्या, को लेकर आवे हम ॥

दौड़

कृपया कर हुक्म चढ़ावें, काम जल्दी कर लावें,
ध्यान जिनवर का लावो, समझो अब आराम हुआ,
लक्ष्मण को मत घबराओ।

श्रीराम का आदेश

जावो जावो जी हनुमत जावो, जल्दी गन्धोदकअब लाओ।
पहले भरत भाई पर जाना, शक्ति का सब भेद सुनाना ॥
द्रोण मेग को फिर समझाना, देरी मत अब लावो ॥१॥
सावधान हो कर के जाना, शत्रु का विश्वास न खाना।
संग वली योद्धे ले जाना, जल्दी विमान सजाओ ॥२॥
जनक सुता की सुध तू लाया, दशकन्धर का ताज गिराया।
सब दल का स्थम्भ कहाया, यह भी अब काम बनाओ ॥३॥
भाई भरत को सग नहीं लाना, लक्ष्मण के बस प्राण बचाना।
शुक्ल असह्य दु:ख मिटाना, हृदय की तप्त बुझाओ ॥४॥

दोहा

शीश निवा झट चल दिये, योद्धे बैठ विमान।
अवध पहुंच अवधेश को, लगे हाल समझान ॥

दोहा (हनुमान)

दशकन्धर ने अनुज के, मारी शक्ति तान ।
मुर्छित हो धरणी गिरा, सब दल है हैरान ॥

छंद

इस समय वैशल्या के, स्नान का जल चाहिये ।
साथ चल करके प्रथम, वह जल हमे दिलवाईये ॥
जिन्दगानी लखन की, उस जल बिना स्वामी नहीं ।
पैदा करे यह औषधि, उस सम कोई दानी नहीं ॥
प्रभात से पहले ही पहले, काम करना है सभी ।
रह जायेंगे कर मलते यदि, भानु निकल आया कभी ॥

दोहा

राम लखन का कष्ट सुन, भर लाये जल नैन ।
समय सोच कर भरत जी, लगे इस तरह कहन ॥
चलो अभी क्या देर है, द्रोण मेघ के पास ।
जल तो क्या भेजू अभी, वैशल्या ही खास ॥
भरत शीघ्र ही चलदिये, लेकर सब को साथ ।
द्रोण मेघ सोया महल, ऊपर पिछली रात ॥

प्रथम जगाया द्रोण मेघ फिर सारी बात सुनाई है ।
द्रोणमेघ ने उसी समय, वैशल्या तुरत जगाई है ॥
आदि अन्त पर्यंत सभी, लक्ष्मण का भेद बताया है ।
इस बात ने वैशल्या के भी, हृदय को खूब सताया है ॥
वैशल्या के संग चलने को, सभी सखी तैयार हुई ।
और मात पिता की आज्ञा से, विमान में तुरत सवार हुई ॥

दोहा

उसी समय झट चल दिये, पवन पुत्र बलधार।
अवध पुरी मे भरत, को लाकर दिया उतार ॥

इस अन्तर में श्रीरामचन्द्र, मन मे धीरज नहीं धरते हैं।
जल बिना मीन यों तड़फ रहे, विमान प्रतीक्षा करते हैं॥
दुःख सागर में लीन और, आँखों से आँसू गिरते हैं।
मोह के वश श्रीरामचन्द्र, फिर ऐसे गिरा उचरते हैं॥

श्रीराम का विलाप

रात भी आज तो, विमान बनी जाती है।
भाई लक्ष्मण की नब्ज, हाथ नहीं आति है।
हाय कर्मों ने मुझे, कैसे रुला के मारा।
आज अपनी ना व्यथा, मुझसे कही जाती है ॥१
उपकार तेरा, मै ना कभी भूलूं गा।
आज मुझ पर तू दया, क्यों न जरा लाती है ॥२
दुखिया की मदद कर, नेक सहायक बन जा।
किस लिये आज तू, तूफान बनी जाती है ॥३
आज तक रैन मेरे, अनकूल रहा करती थी।
आज तू मुझ से क्यों, विपरीत बनी जाती है ॥४
तू ही दया करके फलक, सूर्य को छिपा लेना।
क्योंकि अब रात तो, प्रभात बनी जाती है ॥५
अब तलक आये नहीं, हनुमान भी औषधि लेकर।
क्या करे कोई मेरी, किस्मत ही फिरी जाती है ॥६
कहाँ आकर के दगा, तूने दिया अय भाई मुझ को।
कोर माता के हृदय की ये चली जाती है ॥७

तीन से दो हम बने, अब तो अकेला ही रहा ।
कल को मै भी ना रहूँ, साफ नजर आती है ॥८॥
माता और भ्राता खबर, सुनते ही प्राण तजेगे ।
शुक्ल कर्मों से मेरी, पेश नहीं जाती है ॥९॥

दोहा

राम इस तरह हो रहे, ऐसे आर्त वंत ।
आ पहुंचे उस तरफ से, उदधि पर हनुमन्त ॥

छंद

उदधि पे आ विमान की, सहसा चमक जिस दम पडी ।
राम क्या सब राम सेना, सोच सागर में पड़ी ॥
अति तेज उस विमान का, प्रतिबिम्ब कुछ जल मे पडा ।
कुछ दुखी को धैर्य कहां, महाशोक सब दल मे बढ़ा ॥
तेज कर विमान को, उस तरफ हनुमन्त ने कहा ।
और आँसुओं का जल यहाँ, इस कष्ट मे सब के बहा ॥
राम के दुःख की कोई, सीमा कही जाती नहीं ।
क्षण भर की वो विपदा यहाँ, वर्णन म आ सकती नहीं ॥

दोहा

सन सन करता आगया, क्षण भर मे विमान ।
वानर सेना को हुई, दिल में खुशी महान् ॥

र्ये प्रकाशी कमल जिस तरह, देख रवि को खिलते है ।
ा भानु को लख दम्पति, चकवा चकवी प्रेम से मिलते है ।
ा यों कहिये कि मीन तडफती, को थल पर आ नीर मिला ।
ा क्षुधातुर बच्चे को जैसे, माता ने दिया क्षीर पिला ॥
ाह रोगी को जैसे शीतल, वामना कोपी होता है ।
ा तृषातुर खेती की जैसे, बादल खुश्की खोता है ॥

देख सरोवर ठंडे को, तृषातुर आनन्द पाता है।
श्रीरामचन्द्र भी देख यान को, मन मे खुशी मनाता है॥

मूर्छा निवारण

दोहा

जय जय योद्धों ने किया, हनुमान निवाया माथ।
उतरी वैशल्या सती, निज सखियों के साथ॥
प्रणाम किया वैशाल्या ने, श्रीराम को आय।
देर न अब पुत्री करो, कहा राम समझाय॥
फेरा जिस दम सती ने, हृदय पर निज हाथ।
शक्ति भागी निकल जिम, रवि सामने रात॥

बल धारी के तीर से जिम, धरणी से नीर निकता है।
या जरा लाडली रखने से, जैसे घण लाल उगलता है॥
महा प्रबल सिंहनी के आगे, हथिनी कैसे अड़ सकती है।
बस इसी तरह वैशल्या आगे, शक्ति कब डट सकती है॥
मानिन्द चोर के भगी उसी दम, पवन पुत्र ने पकड लई।
या बाज ने जैसे चिड़िया को, ऐसे निज कर में जकड लई।
दुःख जो था वो निकल गया, फिर चेत अनुज को आया है।
अति नम्रता से शक्ति ने, हनुमान को वचन सुनाया है॥

दोहा (शक्ति)

प्रज्ञप्ति की बहिन हूं, महा शक्ति मम नाम।
दोष नहीं मेरा कोई, करूं बताया काम॥

रावण के आधीन करी, धरणेन्द्र ने समझा करके।
दशकंधर ने लक्ष्मण ऊपर, मुझको छोड़ा झुंझला करके॥

यदि भानु चढ़ने से पहले, वैशल्या यहाँ नहीं आती ।
तो काम सिद्ध था रावण का, लक्ष्मण की जान निकल जाती ॥
पुण्य प्रबल है रामचन्द्र का, लक्ष्मण की है उमर बड़ी ।
जो प्रातःकाल से पहले ही, वैशल्या यहा पर नजर पड़ी ॥
इसका तेज प्रताप इस समय, मुझसे सहा नहीं जाता है ।
कृपा कर छोड़ देवो मुझको, क्योंकि हृदय घबराता है ॥

दोहा

फेर नहीं इन पर कभी, करने की मैं वार ।
नमस्कार तुम चरणों में, करती वार वार ॥

तेज प्रबल वैशल्या का, यह मुझसे सहा न जाता है ।
थर थर कांपे गात मेरा, कर्त्तव्य ही मुझे लजाता है ॥
मेरा इसमें कुछ दोष नहीं, क्योंकि सेवक की भांति हूं ।
यह नम्र निवेदन है मेरा, स्वतन्त्र करो मैं जाती हूं ॥

दोहा

दीन वचन सुन वीर ने, दई उसी दम छोड ।
दृष्टि से गायब हुई, दौड़ गई मुख मोड़ ॥

बामना कोशा चन्दन का, लक्ष्मण के तन पर लेप किया ।
कुछ वैशल्या ने फेर फेर कर, घाव हृदय का मेल दिया ॥
प्रेम भाव से वैशल्या लक्ष्मण के, दुख को खोने लगी ।
वानर दल में उत्साह सहित, जयकार ध्वनी अब होने लगी ॥
कोई उछल उछल कर कूद रहा, फूला न अंग समाता है ।
कोई दांत पीस रहा रावण पर, कोई क्रोध से धरा कपाता है ॥
कई रामचन्द्र के पास पहुँच, चरणों मे शीश नवाते हैं ।
और मिल जल खुश हो नर नारी, अति प्रेम से गान सुनाते हैं ॥

गाना (आनन्द मनाना)

आनन्द मंगला चार, गावो गावो।
श्रीजन पै बलिहार, जावो जावो ॥टेर॥

लक्ष्मण वीर की खुशियाँ मनाओ,
आज विजय का नाद बजावो, बांटो लाखों हजार ॥१॥

भगवन् की कृपा हुई भारी,
आई यहाँ पर राजकुमारी, निकला शक्ति प्रहार ॥२॥
सती धर्म दिखलाया आकर,
वैशल्या ने शक्ति हटाकर, सती पै जावो बलिहार ॥३॥
योग्य भावना निर्मल भावो,
न्याय पाल अन्याय मिटावो, हो लक्ष्मण तैयार ॥४॥
रामचन्द्र की विजय है भारी,
रावण ने कुमति मन धारी, अब लेवें लंक दरबार ॥५॥
योद्धे कैद किये रावण के,
अब नहीं आजादी पावन के, हम दिल खुशी अपार ॥६॥
सीता सती का कष्ट मिटावो,
लका की अब धूल उड़ावो, शत्रु का शीश उतार ॥७॥
औद्धार चित्त फिर राम लखन है,
पूर्ण किये जो कहे वचन हैं, दुखी जन के आधार ॥८॥
तन मन धन से सेवा करलो,
यहाँ यश परभव मे सुर पद लो, शुक्ल ध्यान शुभ धार ॥ ६ ॥

दोहा

आनन्द दिल मे छा रहा, मिट गया सकल क्लेश।
वानर दल के शूरमा, उत्साह धरे विशेष ॥

लाला मैं माता सुमित्रा का तभी कहलाऊँगा।
सीता सहित श्रीराम को जब, अवध मे पहुंचाऊँगा॥
नहीं तो जीते अवध को न जायेंगे हम ॥२

दोहा (राम)

भाई पहले कीजिये, करने वाला काम।
फिर निश्चय तुम शत्रु को, पहुंचाओ परधाम॥

वैशल्या से हे भ्राता तुम, पहले पाणी ग्रहण करो।
उपकार किया जिसने ऐसा, उसका भी तो कुछ कहन करो॥
यह पति तुम्हे है मान चुकी, इस भव का राजदुलारी है।
गम्भीर सती यह माता सती, जिन व्याधी सभी निवारी है॥

दोहा

मौन राम के वचन सुन, हुए सुमित्रा लाल।
वैशल्या ने लखन को, पहनाई वरमाल॥

सभी सहेलियों सहित वहां पर, वैशल्या का विवाह हुआ।
था पुण्य बड़ा श्रीराम लखन का, दुख जिन्हों का जुदा हुआ॥
अति खुशी सहित उत्सव यहा पर, श्रीराम के दल में होने लगा।
यह खबर लगी जब रावण को, तो सिर धुन २ के रोने लगा॥

रावण विचार

दोहा

उसी समय लकेश ने, मत्री लिये बुलाय।
ठंडा लेकर श्वास फिर, यों बोला अकुलाय॥
बतलावो सब को सोचकर, अब क्या करें उपाय।
रामचन्द्र से जीत हो, सुत बान्धव छुट जाय॥

श्री द्रोण मेघ की सुता सती ने, शक्ति आन हटाई है।
हनुमत आदि लाये जाकर, इस कारण यहां पर आई है॥

दोहा

है प्रत्यक्ष यह बात सब, स्वप्न नहीं यह भ्रात।
गोद हमारी मे रहा, वीर आज की रात॥

आराम हुआ तुमको भाई, इस कारण खुशी मनाते हैं।
जयकार शब्द की ध्वनि सहित, सब जिनवर के गुन गाते हैं।
यह इसीलिये सब कोट बने, पहरा नगी तलवारों का।
और नजर तुम्हे आया सब कुछ, यह हाल सिपहसालारों का॥
अय भाई दशकंधर ने तो, यहां महा विघ्न कर डारा था।
यह जन्म दूसरा हुआ तेरा, कुछ बाकी पुण्य हमारा था॥
प्रत्युपकार नहीं दे सकता, हनुमत आदि सब योद्धों का।
शक्ति नहीं मेरी जिह्वा में, कौशल्या को अनमोदूं क्या॥

दोहा

झुंझलाकर फौरन उठे, वीर सुमित्रालाल।
तान सरासन हाथ में, यों बोले तत्काल॥

लक्ष्मण जी का गाना

अब तो रावण का शीश, उडायेगे हम।
कल की शक्ति का बदला चुकायेगे हम॥
अव के रावण समर मे, जीता कभी ना जायेगा।
यदि गया तो अनुज, दशरथ का नन्द कहायेगा॥
उसके सारे ही दाव भुलावेगे हम॥१॥
भाई का भाई वचन, पूर्ण ही कर दिखलायेगा।
ताज रावण का विभीपण के ही, शीश टिकायेगा॥
सीता माता को शीश झुकायेंगे हम।२।

लाला मैं माता सुमित्रा का तभी कहलाऊँगा ।
सीता सहित श्रीराम को जब, अवध मे पहुंचाऊँगा ॥
नहीं तो जीते अवध को न जायेगे हम ॥३

दोहा (राम)

भाई पहले कीजिये, करने वाला काम ।
फिर निश्चय तुम शत्रु को, पहुंचाओ परधाम ॥

वैशल्या से हे भ्राता तुम, पहले पाणी ग्रहण करो ।
उपकार किया जिसने ऐसा, उसका भी तो कुछ कहन करो ॥
यह पति तुम्हे है मान चुकी, इस भव का राजदुलारी है ।
गम्भीर सती यह माता सती, जिन व्याधी सभी निवारी है ॥

दोहा

मौन राम के वचन सुन, हुए सुमित्रा लाल ।
वैशल्या ने लखन को, पहनाई वरमाल ॥

सभी सहेलियों सहित वहां पर, वैशल्या का विवाह हुआ ।
था पुण्य बड़ा श्रीराम लखन का, दुख जिन्हों का जुदा हुआ ॥
अति खुशी सहित उत्सव यहां पर, श्रीराम के दल में होने लगा ।
यह खबर लगी जब रावण को, तो सिर धुन २ के रोने लगा ॥

रावण विचार

दोहा

उसी समय लंकेश ने, मंत्री लिये बुलाय ।
ठंडा लेकर श्वास फिर, यों बोला अकुलाय ॥
बतलावो सब को सोचकर, अब क्या करे उपाय ।
रामचन्द्र से जीत हो, सुत बान्धव छुट जाय ॥

मन मे बड़ी उमंग थी, मर गया लक्ष्मण वीर।
किन्तु आज आनन्द में, है शत्रु रणधीर॥

बाजे खुशी के बजते हैं, और उत्सव का कुछ पार नहीं।
उड़ गये अक्ल के तोते सुनकर, दिल को सबर करार नहीं॥
अब लेने के पड़ गये देने, मैं सभी चौकडी भूल गया।
और ब्याज की आशा आशा में, निज गाँठ का सारा मूल गया॥
बतलाओ तजबीज कोई, जिस तरह शूरमा छुट जावे।
और रामचन्द्र के भी तम्बू डेरे, यहाँ से सब उठ जावे॥
बुद्धि अपनी का परिचय, इस कडे समय मे दिखलाओ।
सब सोच विचार करो मिलकर, मेरे मस्तक में बिठलाओ॥

दोहा (दरबारी)

महाराज आपको प्रथम ही, समझाया हर बार।
किन्तु निवेदन आपने, किया नहीं स्वीकार॥

जो बीत गई सो जाने दो, अब भी कुछ सोच विचार करो।
सीता को वापिस भिजवा कर, श्री रामचन्द्र से प्यार करो॥
नार पैर की जूती है, यदि एक नहीं तो और मिलें।
पुत्र है कोर कलेजे की, आसान कहो किस तौर मिलें॥
राजपाट और ऋद्धि क्या, इस प्राणी को हर बार मिले।
जो खुसे बड़ों से लिये आपने, फिर से वापिस राज किले॥
सीता जैसी राजकुमारी, और कई ला सकते हो।
पर जन्म जन्म मे कुम्भकर्ण सा, वीर नहीं पा सकते हो॥
वडे-वड़े योद्धा उनकी सब, आज कैद में सड़ते हैं।
फिर किस शक्ति पर आप जरा, बतलाइये यहां अकडते हैं॥
अबके रण में क्या खबर आप, किस हालत मे जा पहुचोगे।
फिर शत्रु लंका लूटेंगे, यदि अब भी आप ना सोचोगे॥

सीता को वापिस करने में, सुत भ्रात सभी छुट जावेंगे।
श्रीराम सिया को लेकर के, बस उसी समय मुड़ जावेंगे॥
है तेज प्रताप प्रचण्ड राम का, विजय नहीं पा सकते हो।
यदि अब के रण की ठानोगे, तो वापिस नहीं आ सकते हो॥

दोहा (रावण)

शत्रु से कर विनती, मिलते कायर क्रूर।
मिलते हैं तलवार से, मर्द दिलावर सूर॥

यह वही भुजा है सुर सुन्दर, जैसों का मान घटाया था।
सहस्रांसु नृप भी हार गया, सतबाहु ने छुड़वाया था॥
दुर्लंघ्यपुर पति नल कुबेर, था कोट वहां आसाली का।
क्या हाल किया था डार कैद मे मैंने इन्द्रमाली का॥
पुत्र रत्नश्रवा का रत्न हूँ, जाय भयकर युद्ध मचाऊं।
दड घमड का देऊं खलों को, तेग प्रचंड से शीश उड़ाऊं॥
वानर दल का चूर जरूर जरूर मैं, धूल मे धूल मिलाऊं।
सुत भ्रात छुड़ाय के लाऊं तभी, कैकसी क्षत्राणी का पुत्र कहाऊं॥

रावण का गाना

मेरी शक्ति का अब तक भी, न तुमने भेद पाया है।
मिलूं शत्रु से जाकर के, वाक्य किसने सिखाया है॥ १॥
मिला करती है भाई से, बहिन या पुत्र माई से।
किन्तु क्षत्रिय का मिलना, तेग की धारा से आया है॥ २॥
मात सुत भ्रात और बान्धव, मिले यदि न मिले तो क्या।
कठिन सीता का मिलना है, समझ मेरी मे आया है॥ ३॥
देखकर रूप सीता का, शर्म खाती है इन्द्राणी।
इसे वापिस करो कहते, तुम्हे किसने वहकाया है॥ ४॥

प्यारी जानकी बस जान के ही, साथ जावेगी।
मेरे जख्मी जिगर पर नमक, क्यो तुमने लगाया है ॥ ५ ॥
यदि अपना भला चाहो शुक्र, यह वचन ना कहना।
तुम्हारा दुष्ट मन्त्र यह नहीं, मुझको सुहाया है ॥ ६ ॥

दोहा

रोग असाध्य अब बन चुका, समझ गये मन्त्रीश।
काल शीश पर छागया, इसके विश्वावीस ॥

दोहा (मन्त्री)

जो मर्जी सो कीजिए, महाराज रणधीर।
सुत बान्धव जैसे घुटें, करो वही बलवीर ॥

रावण दूत

रावण ने श्री राम पै, दीना दूत पठाय।
पहुँच दूत श्रीराम से, बोला शीश झुकाय ॥

दोहा (दूत)

सूर्यवंशी कुलमणी मुकुट, बर बुद्धि बलवीर।
नमस्कार मम लीजिए, हे स्वामी रणधीर ॥

दशकन्धर ने फरमाया है, किस कारण रार बढ़ाते हो।
तुम एक नार के पीछे क्यो, वृथा बल वीर कटाते हो ॥
अमोध विजय से बचा अनुज, भाई यह ख्याल तुम्हारा है।
पर अभी सुदर्शन चक्र का तो, बाको वार हमारा है।

दोहा

शम्बूक को तुमने हना, हम हर लाये नार।
यहाँ तक तो हम तुम रहे, सब दोनों एकसार ॥

दोहा

सुनकरके व्याख्यान ये, उठे सुमित्रा लाल।
अरुण वर्ण कर नैन दो, बोला जैसे काल ॥

दोहा (लक्ष्मण)

घर मे बैठा श्वान की, तरह रहा घुर्राय।
कल क्यो भागा था, राम के आगे पूंछ दबाय ॥

भानु जितना चढ़ता, उल्लू अन्धा होता जाता है।
बस यही हाल है रावण का, निज गौरव खोना चाहता है ॥
सुत भ्रात कैद मे पड़े सभी, बेशर्म शर्म नहीं लाता है।
ठीक बात रस्सी का जलने, पर भी बल नहीं जाता है ॥
कब तक वहां छिप कर बैठोगे, यह कह देना दशकन्धर को।
अब रण मे आकर अजमाइये, श्रीराम के पुण्य सिकन्दर को ॥
कायर क्रूर अधर्मी अपना, कब तक भला मनायेगा।
अब तो परभव मे निश्चय ही, बस लक्ष्मण तुम्हे पठायेगा।

दोहा

उत्तर देने को हुआ, दूत फेर तैयार।
धक्का दे हनुमान ने, किया कैम्प से बाहर ॥

आदि अंत परिपंत बात, जाकर रावण को बतलाई।
सुन तड़क फड़क के वचन, दशानन की आत्मा कुछ घबराई ॥
उसी समय सामन्त मन्त्रियों से, सम्मति मिलाई है।
जनक सुता वापिस करने से, सबने कही भलाई है ॥
सिया विरह की बातों ने, दशकंधर पर आघात किया।
कुछ लक्ष्मण जी के तानो ने, हृदय पर वज्रपात किया ॥
हो गये सोच मे मग्न कोई, तरकीब नजर नहीं आई है।
कुछ देर बाद बहुरूपिणी, विद्या पर निज दृष्टि जमाई है ॥

और सभी सुनायें लंकपति की भी, हम को स्वीकार नहीं।
हम कैसे उन्नत वंशज है, रावण ने किया विचार नहीं॥
यह कहना है सब ठीक उन्हों का, शम्बुक हमने मारा है।
और ताज सुन्द का वीरविराध के, मस्तक ऊपर धारा है॥
इसको तो तुमने देख लिया, पर कैसे उसे निहारोगे।
जब लंक विभीषण को देंगे, पर भव मे आप सिधारोगे॥
मरने के पहले सुत बान्धव को, यदि छुडाना चाहते हो।
तो अर्चपूज सीता वापिस कर दो, क्यों देर लगाते हो॥
यहां सूर्यवंशी सिंह शृगाल की, धमकी से कब डरते हैं।
यदि शक्ति है तो दिखलावे, किस लिये निमन्त्रण करते हैं॥
अन्याय पै तुले बताते हो, कहते भी शर्म न आई है।
ले भागे चोरी से परनारी, यहाँ शेखी अब बतलाई है॥
हम राज और पुत्री लेगे तो लेंगे अपनी शक्ति से।
अब भी हम तुमको कहते है, आ मिलो प्रेम और भक्ति से॥

दोहा (दूत)

रिश्तेदारी मित्रता, कुश्ती और तकरार।
बराबरी में ही निभे, ये चारों सरकार॥

यह चारों सरकार आप कुछ, सोच समझकर बोलें।
अपनी और दशकधर की, शक्ति को मन में तोले॥
यौद्धो को कर कैद और, दो चार दिवस खुश होल।
और अन्तिम का यह जंग, आप सब हाथ जाने से धोले॥

दौड़

विश्व को जीतनहारा, लक्रपति योद्धा भारा, सोच कुछ नहीं करते हो। एक नार के पीछे क्यो तुम सब के सब मरते हो।

दौड़

कोई रणधीर पठाकर, ध्यान से देखो चलाकर, विघ्न ऐसा पड़ने से, विद्या सिद्ध न होवे कभी, उसके उपाय करने से।

दोहा (राम)

सखा धीर मन में धरो, क्यो घबराये आप।
पापी के मारन के लिये, प्रबल उसी के पाप ॥
कर्तव्य जिनका ठीक है, सिद्धि उसके होय।
किन्तु सिक्का अपथ्य ही, सदा हेम को जोय ॥

प्रथम तो फल कहाँ बांसों के, यदि लगें तो उनकी शामत है।
और सन्निपातवत् रावण को, विद्या मिश्री के मानिन्द है ॥
विष मिश्रीत पात्र में, शुद्ध अमृत भी विष हो जाता है।
एक पुण्य मित्रबिन सब मत्र, यंत्र निष्फल कहलाता है ॥
यदि मंत्र है तो दुनिया मे, मत्र एक पुण्य सिकन्दर है।
सो विधि सहित सर्वज्ञ कथित, शास्त्रों के देखो अन्दर है ॥
प्रथम तो क्षुधातुर दुःखिया, धर्मी को भोजन देने से।
द्वितीय तृषातुर को जल, दे करके दुःख हर लेने से ॥
पुण्य तीसरा पंथालय, विश्राम स्थान भी कहते है।
चौथे पट्टे चौकी आदि, जिनपे धर्मी सो रहते हैं ॥
पंचम वस्त्र दान क्योंकि, यह तन की रक्षा करता है।
जो ये पाँचों शुभ दान करे, सो पुण्य खजाना भरता है ॥
मन की प्रवृत्ति को सज्जन, सबके हित में बरताते हैं।
साधन है यह छटा मुनि, सुव्रत स्वामी फरमाते है ॥
साधन सप्तम बतलाया, सत्य वचन सदा हितकारी हो।
गुण ग्राम करे परमात्म के, व्यवहार वचन सुखकारी हो ॥
साधन अष्टम मंत्र का, तन से मोह जाल हटाते है।

विद्या साधन

दोहा

साधूं अब बहुरूपिणी, विद्या पूरे आस।
दशकन्धर ने कर लिया, अपने दिल में साहस॥

उसी समय कर लिया ध्यान, जा बैठे औषधशाला मे।
पढ़-पढ़ कर मन्त्र लगे छोड़ने, मण के सुरति माला में॥
मंदोदरी ने द्वारपाल यमदण्ड को, पास बुला करके।
उपधान तपस्या करवावो, यह कहा खूब समझा करके॥

दोहा

उसी समय यमदंड ने, दई डोंडी पिटवाय।
आठ दिवस तक का हुक्म, दिया प्रसिद्ध कराय॥

गुप्तचरों ने पास विभीषण के, यह बात पहुचाई है।
सुन वानर दल मे उसी समय, सब जगह सनसनी छाई है।
एक सिंह ही काबू नहीं, फिर कैसे पार बसायेगी।
यदि सिद्ध हो गई विद्या तो, फिर मौत सभी की आयेगी।

दोहा

वानर दल के भाव थे, करें भंग सब ध्यान।
रामचन्द्र को आन फिर, लगा मित्र समझान॥

परम प्रतापी सत्पुरुष, प्रियवादी सुखदान।
प्रतिपालक दुखी जनन के, सुनो लगाकर कान॥
सुनो लगाकर कान गुप्तचर, पता लंक से लाया है।
रावण ने बहुरूपिणी, साधन का प्रारम्भ लगाया है॥
आठ दिवस तक करो तपस्या, सब पर हुक्म चढ़ाया है।
कीजे शीघ्र उपाय कोई, नहीं काल सभी सिर छाया है॥

लंकेश एक ही मान नहीं, जब सहस्रों रूप बनायेगा।
अब जरा सोच-कर बतलाइये, फिर कैसे काबू आयेगा ॥

दोहा

विघ्न डालना ध्यान मे, यह भी है अन्याय।
इसको भी फल हे सखा, सुनलो चित्त लगाय ॥

निरपराधी शम्बूक का, लक्ष्मण ने शीश उड़ाया था।
सो भी भूलकर सूर्य हॉस खांडा, वहॉ पर अजमाया था ॥
जो बिना विचारे काम किया, यह उसका ही फल पाया है।
बिन भोगे कर्म नहीं छूटते, सर्वज्ञ देव बतलाया है ॥
अब तीनों योग लगाकर, तुम रावण का ध्यान डिगावोगे।
यदि नहीं डिगा वह शूरवीर तो, फिर पीछे पछतावोगे ॥
बस और कहो क्या बतलाऊ, क्योंकि तुम आप ही श्याने हो।
जो मर्जी सो कर सकते हो, तुम आप ही अनुभवी दाने हो ॥

दोहा

कपि पति ने यही किया, निश्चय दिल दरम्यान।
ध्यान डिगाने के लिये, भेजे अपने जवान ॥

अङ्गद आदि भेष बदल जा, घुस गये पौषध शाला मे।
हो रहा ध्यान में मग्न भूप, और चला रहे कर माला मे ॥
महा परिषह देने पर भी, जरा ध्यान से हिला नहीं।
चुप चाप मंत्र में लगे रहे, उत्तर अङ्गद को मिला नहीं ॥

दोहा

अङ्गद ने फिर रच दई, अद्भुत माया और।
ध्यान डिगाने के लिये, बोल उठे इस तौर ॥

उद्धार करे वह औरो का, चाहे खेल जान पर जाते हैं ॥
दुखियों का दुःख हरने के लिये, जो परमार्थ मे रहते हैं।
और लाख कष्ट सहने पर भी, कभी दीन वचन नहीं कहते हैं॥
नवमे जो मुनि पद के धारी, निर्ग्रन्थ गुरु कहलाते हैं।
जो पांच महाव्रत के पालक, और आत्म ध्यान लगाते हैं॥
भक्ति भाव से जो ऐसों को, नित्य प्रति शीश निवाते हैं।
जो सज्जन और गुरुजन के भी, चरणों मे झुक जाते हैं॥

दोहा

पुण्यवान् प्राणी सदा, करे कर्म से जग।
कर्म अरि भागे सभी, आखिर होकर तंग ॥

इसी मंत्र से सखा जीव, यह राजन् पद को पाता है।
और इसी मंत्र से 'वासुदेव' पद, त्रिखंडी बन जाता है ॥
'चक्री' बन कर इसी मंत्र से, मनवाञ्छित सुख पाता है।
बने सुरेन्द्र इसी मंत्र से, शासन खूब चलाता है ॥
इसी मंत्र से भाई अब, देवनपति भी थर्राते हैं।
और यही मत्र इस प्राणी को, भवसागर पार लगाते हैं ॥
दशकन्धर ने इस मंत्र का, साधन बिल्कुल छोड दिया।
अब नीच गति से हे भाई, रावण ने नाता जोड़ लिया ॥
मेरी तो यही सम्मति है, जो करता है सो करने दो।
कोई विघ्न डालना ठीक नहीं, यह भी तृष्णा भर लेने दो ॥

दोहा (विभीषण)

नीति यह सब धर्म की, समझाई महाराज।
राज नीति के बिन यहा, बिगड़ जायगा काज ॥

कांटा और शत्रु जहाँ निकले, वहीं मसल देना चाहिये।
और हारे हुए शत्रु के लिये, कोई दाव नहीं देना चाहिये ॥

दोहा (अंगद)

रावण कपटी नीच नर, तस्कर कायर क्रूर ।
अंगद योद्धा ने दई, डार तेरे सिर धूर ॥

नेत्र खोल कर देख नपुंसक, मूंद लई क्यों पलके ।
तू लाया था वन से चोरी कर, जनक सुता को छल के ॥
पटराणी ले चला मन्दोदरी, सन्मुख देख पकड़ के ।
शक्ति है तो दिखला तेरी, जाऊं आज मसल के ॥

दौड़

कहाँ अब जान छिपाई, शर्म तुझको नहीं आई ।
डूब कर मर जाना था, या कर रक्षा राणी की,
नहीं विवाह क्यो करवाना था ॥

दोहा

इतना कह कर ले चला, पकड़ सामने बांह ।
राणी तव कहने लगी, ऐसे रुदन मचा ॥

नकली मन्दोदरी का विलाप

छुड़ाओ मुझे भरतार जी, कोई ले जाता अनाड़ी ।
मैं मन्दोदरी हूँ तेरी राणी, खींच के महलो से शत्रु ने लानी ॥
करती हूँ रुदन अपार जी ॥१॥
आपके होते हो मेरी यह हालत, कैसे पिया देखो तुम ये जहालत ।
स्वामी अब सुनो पुकार जी ॥२॥
हा हा कार मैं कर २ हारी, कोई ना सुनता आहो नारी ।
फूटे करम हमारे जी ॥३॥
स्वामी तुमने तो मौन है धारा, किसका लेऊँ मैं आज सहारा ।
रो रो के गई मैं हार जी ॥४॥

गाना (अंगादि)

सूर्य वंशज है बलवान, करदे लंका को मैदान।
क्या है रावण तेरी शान, अड़े जो इस रण में तू आन ॥१॥
मांगो माफी ओ अज्ञान, ना कर वीरों का नुकशान।
रामचन्द्र के अग्नि बाण, हर लें पल मे तेरे प्राण ॥२॥
मै अङ्गद योद्धा मरदान, है कोई योद्धा वीर जवान।
'शुक्ल' छोड़ अब आर्त ध्यान, राक्षस दल का है घमसान ॥३॥

दोहा

मेरु सम महा अचल था, दशकंधर बलवान।
रंचक मात्र हिला नहीं, अतुल बली का ध्यान ॥
देख अचल भूपाल को, अङ्गद हो लाचार।
तानोबाजी के शब्द, ऐसे कहे उचार ॥
तेज प्रताप प्रचंड है, रामचन्द्र का आज।
दशकंधर नहीं सह सका, छिप बैठा इस काज ॥

भयभीत हुआ यहाँ आ बैठा, बाकी तो सभी बहाने हैं।
देखो तो कर कंपन से ही, गिरते माला के दाने हैं ॥
क्या करें बिचारे दुखिया का, मुंह भी कैसा कुंमलाया है।
उस तरफ राम के योद्धों ने, लंका में ऊधम मचाया है ॥

दोहा

इन शब्दो से भी नहीं, चला ध्यान से वीर।
मन्दोदरी का भेप फिर, बनवाया आखीर ॥

ला खड़ी सामने करी, अति नयनों से नीर बहाती है।
दो मार २ कर छाती मे, रो रो कर वचन सुनाती है ॥
सुमेर गिरी वत् अचल भूप ने, मन मन्त्र में लाया है।
इस ससय वीर योद्धा अंगद ने, ऐसे वचन सुनाया है ॥

अब जावो निज धाम, समय पर याद तुम्हे कर लूंगा।
रणभूमि में लड़ने का, कल ही सामान धरूंगा॥
रूप अनुपम बना सभी, शत्रु की फौज हरूंगा।
चक्र सुदर्शन से भीलों की, गर्दन दूर करूंगा॥

दौड़

पता महलों का लूंगा, फेर स्नान करूंगा, जरा कुछ भोजन पाकर, याद करूंगा तुम्हे उस समय रणभूमि में जाकर।

दोहा

आज्ञा ले विद्या चली, पहुँची निज स्थान।
खुशी-खुशी गया महल में, दशकन्धर बलवान॥
पूछ रही पति देव से, क्षेम कुशल पटनार।
समझ लिया प्रपंच था, सभी ध्यान मंझार॥

व्यायाम किया दशकन्धर ने, फिर तेल पाक मलवाया है।
करके मंजन स्नान फेर, भोजन रावण ने पाया है॥
देवरमण में जा पहुंचे, जहां बैठी जनक दुलारी है।
विनाश काल बुद्धि मलीन, रावण ने गिरा उचारी है॥

दोहा (रावण)

साध लई बहुरूपिणी, विद्या मैंने आज।
अब भी सीता मान ले, मुझको सिर का ताज॥



सीता-रावण

दोहा (सीता)

प्रथम तो यह बात है, फलते कभी ना बास।
यदि कभी फल भी गये, होगा उनका नाश॥

पकडो शत्रु को देर न लाओ, इस पापी से हाथ छुडाओ।
पकड़ी तेरी पट नार जी॥११

एक घुरकी है काफी तुम्हारी, शत्रु की जावे मती मारी।
आप बड़े बलधार जी॥१२

दोहा

रावण के सन्मुख किये, राणी ने विरलाप।
ले चला फेर घसीट के, सन्मुख अंगद आप॥

लंकेश ध्यान में दृढ़ रहा, अगद निज कटक सिधाया है।
विद्या ने आन प्रकाश किया, तब दशकन्धर हर्षाया है॥
खिल गया फूल की तरह भूप, मंत्र में ध्यान लगाया है।
तब हाथ जोड़ बहुरूपिणी, विद्या ने यों वचन सुनाया है॥

दोहा (बहुरू०)

जिस कारण तुमने किया, है दशकन्धर ध्यान।
आन खड़ी मैं सामने, देने को वरदान॥

जो आशा मन की प्रकट करो, सब पूरी करने आई हूँ।
क्या कष्ट है तुम पर बतलावो, मैं सभी काटने आई हूं॥
है बहुरूपिणी नाम मेरा, विश्व वश करवा सकती हूं।
और एक वीर से शत्रु की, सेना सब मरवा सकती हू॥
एक रूप से रूप हजारों, चाहो अभी बना देऊं।
फिर कौन विचारे राम लखन, मैं विश्व विजय करा देऊं॥

दोहा (रावण)

जो कुछ भापा आपने, कर सकती हो काम।
निश्चल रहना वचन पर, अब जावो निज धाम॥

सीता—तू कायर क्रूर कहाया ।
रावण—वे शूर सही ।
सीता—पतिव्रता को सता ना जालिम ।
होगा बुरा आखीर पर ॥ अय रावण ॥ १ ॥

रावण—पटनार बनाऊँ तुझको ।
सीता—बक बक ना कर ।
रावण—तू पति मान ले मुझको ।
सीता—परभव से डर ।
रावण—राजी से नाराजी से पटनारी का चीर धर ।
॥ अय जनक ॥ २ ॥

सीता—किस गुरु से शिक्षा लई थी ।
रावण—कुछ और कहो ।
सीता—तब बुद्धि भ्रष्ट हुई थी ।
रावण—खामोश रहो ।
सीता—छल से नाद बजा कर लाना,
धिक क्षत्राणी क्षीर पर ॥ अय रावण ॥ ३ ॥
रावण—कुछ अक्ल नहीं है तुझको ।
सीता—वाह ! खूब कही ।
रावण—क्या बोल रही है मुझको ।
सीता—बिलकुल है सही ।
रावण—क्या शक्ति है रामचन्द्र वनवासी,
भील हकीर पर ॥ अयी जनक ॥ ४ ॥

सीता—सुत बान्धव कैद मैं उनकी ।
रावण—हां डर क्या है ।
सीता—सुर सेवा करते उनकी ।

रावण—तो फिर क्या है।
सीता—लेजायेंगे मुझे अयोध्या,
तेरी भस्म अखीर कर ॥ अय रावण ॥ ५ ॥
रावण—क्या सिफ्त बड़ी है उनकी।
सीता—शुद्ध आत्म है।
रावण—तुझे खबर नहीं मेरे गुण की।
सीता—दुरात्मा है।
रावण—जबां सम्भाल के बात करो,
दृष्टि डालो शमशीर पर ॥ अयी जनक ॥ ६
सीता—मैं फिर भी यही कहूँगी।
रावण—क्या ताकत है।
सीता—बिल्कुल रोके न रुकूँगी।
रावण—तो हिमाकत है।
सीता—झूठ नही लवलेश आप धर देखें,
हाथ जमीन पर ॥ अय रावण ॥ ७
रावण—कल उनका सिर कतरूंगा।
सीता—खुद होगा खतम।
रावण—तेरे सम्मुख आन धरूंगा।
सीता—जाऊं मुलके अदम।
रावण—पटराणी फिर करूं तुझे, क्या भूली फिरे।
अहीर पर ॥ अयि जनक ॥ ८ ॥
सीता—मैं जिस्म फना कर दूंगी।
रावण—मूर्खता है।
सीता—सुरपुर जा कदम धरूंगी।
रावण—दिल जलता है।

सीता----सती धर्म को छोड़ कभी, हरफ न लाऊं तौकीर
पर ॥ अय रावण ॥६॥

रावण----क्यों नर तन मुफ्त गंवाती ।
सीता...यह फानी है ।
रावण क्यों दिल तू मेरा जलाती ।
सीता अज्ञानी है ।
रावण----ऐसे सुख दू, नहीं मिले होंगे, बनवासी भीलपर
॥ अय जनक० ॥ १० ॥

सीता...तूने कुल को दाग लगाया ।
रावण कुछ फिकर नही ।
सीता...क्यो बन्ध नरक का लाया ।
रावण . मँजूर वही ।
सीता.. धिक्कार तुझे सौ वार और धिक्,
माता पिता गुरु पीर पर ॥ अय रावण ॥ ११ ॥

रावण... क्यों करती जबां दराजी ।
सीता .. हो दफा परे ।
रावण... ना मिले तुझे आजादी ।
सीता.. जो कर्म मेरे
रावण . राज पाट तन तक वारू इस सुन्दर,
तेरे शरीर पर ॥ अयि जनक० ॥१२॥

सीता . क्यो कुत्ते भौक रहा है ।
रावण . बाहोश रहो ।
सीता.. खर मोहन भोग कहाँ है ।
रावण—आशीश रहो ।

रावण—तो फिर क्या है।
सीता—लेजायेंगे मुझे अयोध्या,
तेरी भस्म अखीर कर ॥ अय रावण ॥ ५ ॥
रावण—क्या सिफ्त बड़ी है उनकी।
सीता—शुद्ध आत्म है।
रावण—तुझे खबर नहीं मेरे गुण की।
सीता—दुरात्मा है।
रावण—जवां सम्भाल के बात करो,
दृष्टि डालो शमशीर पर ॥ अयी जनक ॥ ६
सीता—मैं फिर भी यही कहूँगी।
रावण—क्या ताकत है।
सीता—बिल्कुल रोके न रुकूँगी।
रावण—तो हिमाकत है।
सीता—झूठ नही लववेश आप धर देखें,
हाथ जमीन पर ॥ अय रावण ॥ ७
रावण—कल उनका सिर कतरूंगा।
सीता—खुद होगा खतम।
रावण—तेरे सम्मुख आन धरूंगा।
सीता—जाऊं मुलके अदम।
रावण—पटराणी फिर करूं तुझे, क्या भूली फिरे।
अहीर पर ॥ अयि जनक ॥ ८ ॥
सीता—मैं जिस्म फना कर दूंगी।
रावण—मूर्खता है।
सीता—सुरपुर जा कदम धरूंगी।
रावण—दिल जलता है।

बाकी दुनियां में मनुष्य मात्र, सब पिता और ममभाई है।
आप तो बाबे दादे क्या, प्रति पितामह के न्यायी है॥
राम लखन मर गये मुझे, जब ये निश्चय हो जावेगा।
तो सीता के भी उसी समय, एक प्राण न तन में पायेगा॥
बस इसी समय से खान पान का, त्याग अटल समझे मेरा।
निज पति पास मैं पहुंचूंगी, दुर्गति में हो तेरा डेरा॥

दोहा

देख तेज आश्चर्य मे, दशकन्धर बलधार।
अपने मन मे कर रहा, ऐसे खड़ा विचार॥

प्रेम स्वाभाविक राम से, जनक सुता का जान।
आशा करना व्यर्थ है, हुआ मुझे अब भान॥

पीपल झूरता फूल को, फल को नागर बेल।
जनक सुता बिन मे झुरूं, झुरे पत्र को कैर॥

स्थल पर मीन तड़फती है, पानी से प्रेम बढ़ाने को।
किन्तु नहीं करता नीर ध्यान, दुखिया का दुख मिटाने को॥
बस इसको भी जो कुछ कहना, वज्र पर तीर चलाना है।
या यों कहिये कि मेरू गिरि को, घर पै उठाकर लाना है॥
ज्यों वामन चाहे उड़ गण गहने, अपनी हंसी कराता है।
त्यों पानी से नवनीत ग्रहण का, व्यर्थ प्रयास कहाता है॥
पत्थर पर कमल जमाने का, उद्यम ही निष्फल जाता है।
बस यही हाल है जनक सुता का, नजर सामने आता है॥

=००=

सीता—ले जायेंगे मुझे लखन तेरी छाती को,
चीरकर ॥ अथ रावण ॥१३॥

दोहा (रावण)

व्योम कुसुमवत आश ये, सब ही निष्फल जाय।
जो भाषा कर कल तुम्हे, देऊं सभी दिखाय॥

छोड़ो आर्त ध्यान नहीं कुछ, होता रोने धोने से।
यदि होगा सुख तुमको तो बस, अनुकूल हमारे होने से॥
प्रातः काल ही राम लखन को, तो परभव पहुचा दूंगा।
और तम्बू डेरे उठा सभी, राजों को मार भगा दूंगा॥
नियम टूटने के भय से, अब तक यह समय निभाया है।
अब इसकी भी परवाह नहीं, बस दिल में यही समाया है॥
पटराणी का ताज सजा कल, महलों मे पहुँचाऊंगा।
राजी से नाराजी से, ये झगड़ा सभी मिटाऊगा॥

दोहा

बाण रूप जब वचन ये, पड़े सिया के कान।
मूर्छित हो धरणि गिरी, वृक्ष से जैसे टाहन॥

जरा देर में सम्भल फेर, उठ बैठी जनक दुलारी है।
हुई दुख सागर मे लीन, और नयनो से गिरता वारी है॥
फिर आर्ति मन से दूर हटा, श्री जिन का ध्यान लगाया है।
और दशकन्धर को क्षत्राणी ने, ऐसे वचन सुनाया है॥

दोहा

दशकन्धर सुन लीजिये, जरा लगा कर कान।
क्षत्राणी हूं आन पर, तज देऊंगी प्राण॥

राम लखन के श्वासों पर ही, सीता की जिन्दगानी है।
यदि राणी है तो जनक सुता, श्री रामचन्द्र की राणी है॥

बाकी दुनियां में मनुष्य मात्र, सब पिता और समभाई है।
आप तो बाबे दादे क्या, प्रति पितामह के न्यायी है॥
राम लखन मर गये मुझे, जब ये निश्चय हो जावेगा।
तो सीता के भी उसी समय, एक प्राण न तन मे पायेगा॥
बस इसी समय से खान पान का, त्याग अटल समझे मेरा।
निज पति पास मैं पहुंचूंगी, दुर्गति मे हो तेरा डेरा॥

दोहा

देख तेज आश्चर्य मे, दशकन्धर बलधार।
अपने मन मे कर रहा, ऐसे खड़ा विचार॥

प्रेम स्वाभाविक राम से, जनक सुता का जान।
आशा करना व्यर्थ है, हुआ मुझे अब भान॥

पीपल झूरता फूल को, फल को नागर बेल।
जनक सुता बिन मे झुरूं, झुरे पत्र को कैर॥

स्थल पर मीन तड़फती है, पानी से प्रेम बढ़ाने को।
किन्तु नहीं करता नीर ध्यान, दुखिया का दुख मिटाने को॥
बस इसको भी जो कुछ कहना, वज्र पर तीर चलाना है।
या यों कहिये कि मेरू गिरि को, घर पै उठाकर लाना है॥
ज्यों वामन चाहे उड़ गगण गहने, अपनी हंसी कराता है।
त्यों पानी से नवनीत ग्रहण का, व्यर्थ प्रयास कहाता है॥
पत्थर पर कमल जमाने का, उद्यम ही निष्फल जाता है।
बस यही हाल है जनक सुता का, नजर सामने आता है॥

=००=

शुद्ध विचार

दोहा

ठीक नहीं मैंने किया, हर लाया सिया नार।
कलङ्कित हुआ संसार मे, पड़ी शीश पर छार॥

छंद

शिक्षा विभीषण वीर की, मैंने कभी श्रद्धी नहीं।
महा खेद उल्टा दुख दिया, की तनिक हमदर्दी नहीं॥
कुल भी कलंकित कर दिया, कार्य भी कोई ना सरा।
भानुकर्ण मेरी भुजा, हा! कैद शत्रु की परा॥
वापिस करो हर बार, दी मन्दोदरी ने सम्मति।
निश्चय न तोड़ेगी धर्म, है अचल मेरुसम सती॥
ठीक सुख दाई वचन, मन्त्री गणों ने भी कहा।
यह उस समय बुद्धि मेरी, क्या खबर बैठी थी कहा॥
राम के मरने का सीता, शब्द सह सकती नहीं।
मारा उन्हे निश्चय तो, यह जीती भी रह सकती नहीं॥
अब भयानक नियम जो, सीता ने धारण है किया।
समझ लो सामान यह सब, मरण के कारण किया॥
हाथ मलने के सिवा, फिर हाथ कुछ ना आयेगा।
मोड़ दूं अब भी सिया तो, यश मेरा रह जायेगा।

दोहा

अब ये निश्चय कर लिया, मैंने दिल के साथ।
कल लेजा कर सौंप दू, रामलखन के हाथ॥

संसार मे मेरा यश होगा, कुलका कलक मिट जायेगा।
भाई बन्धु सब आन मिले, उनका डेरा उठ जायेगा॥

वृथा ही रक्त बहाया आगे, वृथा ही और बहाना है।
क्योंकि मैंने अब समझ लिया, कुछ हाथ ना इसमें आना है॥



मन की लहरें

दोहा

मन मे ऐसा नियत कर, चला लक की ओर।
होनहार आगे कहो, चले किस तरह जोर॥

मन चंचल की है विचित्र गति, यह कई रंग दिखलाता है।
कभी दान वीर कभी शूरवीर, कभी शुभ मति पर टिकजाता है॥
कृपण हो मक्खी चूस कभी, कायर कपटी बन जाता है।
कामान्ध कभी मानांध कभी, कुमती पर ध्यान जमाता है॥
जल तरंग से भी ज्यादह, मन की लहरे कहलाती है।
या वायु चलने पर बन राजी, कभी न स्थिरता लाती है॥
तदुलमच्छ की तरह जीव, दुर्मन से दुर्गति जाते हैं।
और शुभ विचार करने से, प्राणी स्वर्ग का बन्ध लगाते है॥
दो भेद कहे कर्मों के, 'जिन' मे निद्धित्त तो छुट पाते हैं।
बिन भोगे पर कर्म निकाचित, कभी न छुटने पाते है॥
जिन परिणामों से बन्ध पड़े, वो अन्त समय आजाते हैं।
यदि अच्छे है तो श्रेष्ठ गति, नहीं तो पीछे पछताते है॥

दोहा

चलते २ फिर किया, इसी बात पर ध्यान।
राग वही गाने लगा, फेर मान के तान॥
इस हालत में राम को, देऊं सीता जाय।
तो फिर इस संसार में, नाक मेरी कट जाय॥

सारी दुनिया फेर मेरे, इस क्षत्रापन पर थूकेगी।
और देख २ अपमान मेरा यह, नित्य प्रति काया सूखेगी॥
बदनाम हुआ ना काम बना, दुनिया समझेगी हार गया।
श्रीरामचन्द्र के भय से, रावण सीता आज निवार गया।
गल गया मान सब रावण का, जो सीता वापिस करता है।
क्योंकि यह अब क्या करे विचारा, लक्ष्मण जी से डरता है॥
तो लिये सदा के मैं गन्दा, इतिहास रूप बन जाऊंगा।
और कायर कामी शठ जन की, श्रेणी मे संख्या पाऊंगा॥

शेर

चक्कर मे डाला था मुझे, कुमति ने आकर के सही।
अपने गौरव को जरा मैंने, पिछाना भी नहीं॥
अधिकार सच्चा है, सभी ने झूठ झगड़े को कहा।
अधिकार जिसने तज दिया, समझो सभी कुछ तज रहा॥
सीता को यदि वापिस करूं, छुट जाय कर से डोर है।
फिर झुरूं ऐसे चरण जिम, देख झुरता मोर है॥
लाया था जिस शक्ति पे, अब वही दिखाना चाहिये।
राम से पाकर विजय, सीता को देना चाहिये॥

दोहा

मान उन्हों का तोड़ कर, फिर दूंगा सिया नार।
भानुकिरण सम यश मेरा, फैले सब संसार॥

ऐसा ही करना ठीक समझ में, सभी तरह से आता है।
और बिना सोचे जो करे काम, सो फिर पीछे पछताता है॥
प्रातः काल ही पकड़ राम लक्ष्मण, दोनों को लाऊंगा।
और सुत बान्धव सब योद्धों को भी, कल स्वतन्त्र बनाऊंगा॥

दोहा

शक्ति अपनी सभी को, पहले दूं दिखलाय।
फिर देऊं सीता उन्हे, यश फैले जग मांय॥
बैठाई तजवीज ये, सोच सोच दिल मांय।
पहुचा सायंकाल को, भूप महल में जाय॥

करके अन्न जलपान फेर जा, शयन गृह आराम किया।
और प्रातःकाल होते ही, नृपने रणभूमि का ध्यान किया॥
चखतर शस्त्र सजा भूप ने, वज्र हाथ उठाया है।
जब लगा देखने शीशे मे तो, चेहरा नजर ना आया है॥



अपशकुन

दोहा

फेर हाथ में तो लेने, लगा, भूप तलवार।
सो भी कर से छूट कर, गिरी धरणी मंजार॥

तलवार उठाई करमें तो, मस्तक का मुकुट धरणी आया।
अपशकुन देख मन्दोदरी ने झट, मस्तक आन चरण लाया॥
दाहिना नेत्र फड़क रहा राणी का, वामा रावण का।
तब किया इरादा राणी ने भी, अपना स्वप्न सुनावन का॥

दोहा

प्राण नाथ मेरा हृदय, कांप रहा है आज।
सोच समझ कर कीजिये, समर अज महाराज॥

यह भी है अपशकुन आज, रण करने से हूं रोक रही।
पर देख देख हालत स्वामी, कुछ अच्छा ही मैं सोच रही॥

अब तक तो छिपा रक्खा था, हे प्राण नाथ निज ख्यालों को।
पर चैन नहीं मेरे मन को, अब देख देख इन हालोंको ॥
कड़क रही कर की चूड़ियां, और दाहिना नेत्र फड़क रहा।
चलत समय गिरा मुकुट आपका, देख मेरा दिल धड़क रहा॥
प्रात.काल ही प्रथम मुझे, आया स्वप्ना सो सुन लीजे।
हे प्राण ईश फिर सोच समझ कर, आज का आप समर कीजे॥

दोहा (रावण)

क्या स्वप्न आया तुम्हें, झट पट करो बयान।
शूर शकुन गिनते नहीं, लगे चाहे वहां प्राण॥
लगे चाहे वहां प्राण कहो, जल्दी क्यों पकड़ा दामन।
गिर जाते किसी समय मुकुट, कर से शस्त्र अय कामन॥
चोटे सन्मुख सहे शूरमे, करे जन्म निज पावन।
आज बाण बरसाऊं, जैसे झड़ी लगावे श्रावण॥

दौड़

प्रमदा प्रिये प्रवीणा, आज भय किसका कीना।
पंकज मुखी वाम मृग नयनी, अपने दिल का राज
कहो तुम हमसे कोकिल वैनी॥

मन्दोदरी व रावण का गान।

(तर्ज—लावणी)

बन गई राड मैं आज, साफ स्वप्ने में,
ले गये सीया को राम, आज स्वप्ने में।
सज गया विभीषण, के शीश ताज स्वप्ने में॥
हो गये समर में राख, आप स्वप्ने में,
यह नथली खाकर, बल दोहरी होती है।
जिस लिये पिया यह, अर्द्धाङ्गिनी रोती है॥१॥

रावण—किस लिए आज नादान, जान खोती है।
नहीं बात कभी स्वप्ने की. सत्य होती है॥
कई बार गिरा कट २ के, शीश स्वप्ने में।
हो गई बात सब झूठ, प्रातः उठने मे॥
बन जाय भिखारी, राजन पति स्वप्ने में।
फिर वही झोपड़ी आवे, नजर उठने मे॥
नथली कुछ दबने से, दोहरी होती है।
नहीं बात कभी स्वप्ने की सत्य होती है॥

मन्दोदरी—दण्डक की राणी, पुरन्द्र यशा स्वप्ने मे।
लिया देख गर्क हो गया, राज स्वप्ने मे॥
जल गये सभी लग गई, आग स्वप्ने मे।
हो गई बात सच नाथ. सुबह उठने में॥
सब बात स्वप्न शास्त्र, की सच होती है।
जिस लिये पिया यह, अर्द्धाङ्गिनी रोती है॥३॥

रावण—यह वहम सभी देखा, तुमने स्वप्ने में।
जो दिन की चिन्ता पडे, नजर स्वप्ने में॥
धन माल कभी खुस जाय, सभी स्वप्ने में।
तृषातुर पीता फिरे, नीर स्वप्ने में॥
भूखे को भोजन, मिले क्षीर स्वप्ने मे।
तू निरर्थक आसुओं से, मुख धोती है नहीं बात० ॥४॥

मन्दोदरी—जो क्षीर समुद्र स्वप्ने में, तिर जाता।
सो उसी जन्म में अक्षय मोक्ष सुख पाता॥
गज भानु शशि कोई, जिसे नजर है आता।
तो श्रेष्ठ पुरुष कोई, वहां जन्म है पाता॥
यह बात धर्म शास्त्रों, में भी होती है
जिस लिये पिया० ॥५॥

रावण—वैराग्य पक्ष की, बात सभी यह प्यारी।
जिनको न चिन्ता, होती कोई लगारी॥
किन्तु हम हैं क्षत्रिय, योद्धा बलधारी।
क्षत्राणी हो क्यों, बनती कायर नारी॥
ना डरे शूर जिस, समय बिगुल होती है।
नहीं बात कभी॥६॥

दोहा (मन्दोदरी)

शुभ सम्मति ना उर धरी, कभी एक प्राणेश।
अब तो दासी की, अर्ज मानो इक लंकेश॥

दोहा (रावण)

निश्चय मैं आया नहीं, इन बातों से बाज।
किन्तु तुम्हारे कथन पर, किया अमल कुछ आज॥

नीचा दिखलाकर पहिल. फिर सीता उनको देऊंगा।
यह कथन तुम्हारा पूरा करके, यश दुनिया में लेऊंगा॥
पाकर विजय बांध दोनों को, आज यहा पर लाता हूँ।
इस कारण ही प्राणप्रिये मैं, रण भूमि में जाता हू॥

दोहा (मन्दोदरी)

दुःख होता है मुझे, सुन सुन ऐसी बात।
वापिस ही देना उन्हें, फिर लड़ने क्यों जात॥

आप उदाराचित्त हो, ये खुशी है मुझे।
जाओ लड़ने को, हरगिज ना चाहती हू मैं॥
मुंह को आया कलेजा, मेरा एक दम।
अपशकुन हो रहे, सच सुनाती हूँ मैं॥१॥
आंख दाई फड़कती, धड़कता है दिल।
कड़कि चुरियां ये करकी दिखाती हूं मैं॥

आज जावो न रण को, कहा मान लो,
हा हा खाकर के, सिर को झुकाती हूं मैं ॥२॥
रावण—कायर दुर्बल ही माने, शकुन अपशकुन।
तेरी बाते न हर्गिज, मानेंगे हम ॥
असली घर तो योद्धों का, रण क्षेत्र ही है।
चाहे हो जावे, बेशक वहाँ दम खत्म ॥३॥
हो के क्षत्राणी रावण की, पटनार तूं।
बनती कायर, जरा भी न आती शर्म ॥४॥
अब अधिक कुछ कहा गुस्सा आजायेगा !
क्योंकि करना समर का हमारा कर्म ॥५॥

दोहा

एक ना मानी नार की, समझाया हर बार।
उसी समय दशकन्धर ने, सेना करी तैयार ॥

रण तूर बजा कर चला, मान में चूर भूप हर्षाया है।
प्रबल प्रताप सबल दल लेकर, आन मोर्चा लाया है ॥
वानर दल था वहां खड़ा हुआ, उस तरफ प्रथम ही आ करके।
फिर तो क्या था रणभूमि मे, अड़ गये शूरमा धा करके ॥

राम व रावण प्रश्नोत्तर

राम रावण के दल मे मचा बलबला।
लाल झंडे लड़ाई के फिर आ गड़े ॥
इधर राम है उधर रावण खडे।
खुशी हो करके रावण हंसा खिलखिला ॥१॥
राम—बाज रावण तू आ मान मेरा सखुन,
क्यों करता है अपना तू चूरोचकन।
जल के रावण कहे राम से सिर हिला ॥२॥

रावण—सब मरे योद्धा रण में हुआ खातमा,
है दुखी जिन्दगी से मेरी आत्मा।
गये योद्धा जहाँ गये मुझको बुला ॥३॥
मैं हस्ती मिटाई है, तेरे लिये।
बेटे पोते सभी, तेरे अर्पण किये॥
क्यों ना जाहिर करूं अब मैं, अपना गिला ॥४॥

दोहा

इतना कह दशकन्धर ने, हमला कर दिया आम।
अमित सुभट उस जंग में, पहुंचाये परधाम॥
मानिन्द झड़ी के परस्पर, लगे बरसने बाण।
योद्धों का होने लगा, महा घोर घमसान॥

खांड़े बरछी परिघ भुशुंडी, दंडास्त्र विस्तार करें।
संग्रामी रथ और विकट गाड़ियां, कहीं धनुष टंकार करें॥
नभ में लड़ें विमान शूरमे, अगणित यहाँ पर मरते हैं।
मार्ग में ले विश्राम शरों पर, फिर नीचे आ गिरते हैं॥

रावण-लक्ष्मण

दोहा

रावण के सन्मुख हुआ, वीर सुमित्रा लाल।
अरुण वर्ण कर नयन दो, बोला हो विकराल॥

दोहा (लक्ष्मण)

आवो दशकन्धर बली, शूरवीर बलधार।
अन्तिम का रण आज है, करलो बढ़कर वार॥

करलो बढकर वार क्यों कि फिर, परभव को जावोगे।
जो कुछ करना करो आज. फिर समय नहीं पावोगे॥
करो उन्हें तैयार जिन्हें, अपने संग ले जावोगे।
परभव जाते आप अकेले, क्या शोभा पावोगे॥

दौड़

काष्ठ चन्दन मगवालो, चिता पहले चिनवालो, शल्य सब दूर निवारो, यहां से टूट गया अब नाता, आगा जरा सम्भालो।

दोहा (रावण)

छोटा मुख बातें बड़ी रहा कलेजा फार।
अब यह घाव तभी मिटे, देऊं तुमको मार॥

शक्ति से बच गया इसी. कारण क्या फूल रहा है।
परभव आज पठाऊ तुमको, क्या मन भूल रहा है॥
मेंढक सा क्यों उछल. उछल, अय कायर कूद रहा है।
बदल-बदल कर आँख चुभा, हृदय त्रिशूल रहा है॥

सवैया

दूध के दाँत न टूटे अभी, शठ शूर महान् से खात न शंका।
कुन्थु समान न बालक मूर्ख, बाँध के तेग बना रण बंका॥
जीवन आन उठो जग से तव, आयु के पूर्ण हो गये अंका।
जान गये हम आज बजा, तेरे सिर काल कराल का डंका॥

दौड़

बिचारा जो था मन में, फेर दिया तूने छिन में, यदि जीणा चाहते हो, डार भगो हथियार नहीं अब परभव को पाते हो।

दोहा (लक्ष्मण)

वाह जी वाह क्या खूब ही, दिखा रहे हो धौंस।
जरा चरण आगे धरो, अभी विगाड़ूं होश॥

दंड रत्न छोटा सा ही, पर्वत को तोड बगाता है।
और अंकुश देखो छोटा सा, हाथी को वश कर लाता है॥
प्रबलसिंह का बच्चा भी, कुम्भस्थल को दल जाता है।
भानु की किरणें चढ़ते ही, रजनी का पता न पाता है॥

दोहा

तारागण तब तक रहा, अपनी चमक दिखाय।
जब तक उदयाचल शिखर, रवि न पहुंचा आय॥

तारागण की तरह देव राक्षस, यह वश तुम्हारा है।
प्रसिद्ध सभी ससार में, निश्चय सूर्य वंश हमारा है॥
सूर्य वशज शूर वीर, हम भी शेरों के बच्चे हैं।
उम्र जरासी है तो क्या, रण के फन मे नहीं कच्चे हैं॥

सवैया

तन पै रंग जंग मजीठी चढ्यो, आज फड़क रहे भुजदंड हमारे।
काल कराल ही जान हमें, बन आये तेरे रघुवंश दुलारे॥
लाज न आवे तुझे शठ बोलत, कैद पड़े सुत बान्धव सारे।
खावो न शंक निःशंक वढ़ो, आज प्राण परवेरू उड़ेंगे तुम्हारे॥

दोहा

सुनी काट करती हुई, लक्ष्मण की सब बात।
दशकन्धर आगे बढ़ा, शस्त्र लेकर हाथ॥

फिर तो क्या था रणभूमि में, लगी रक्त वर्षा होने।
और अगणित शूरे लगे समर में, नींद हमेशा की सोने॥

छंद

देख शक्ति लखन की, रावण का मन घबरा गया।
समझा कि मेरा काल यह, लछमण ही बनकर आगया॥
फिर ख्याल है बहुरूपिणी, विद्या का रावण ने किया।
विद्या ने आ करके सहारा, भूप को रण में दिया॥

जिस तरफ देखे उस तरफ, रावण ही रावण घूमते।
रामदल के शूरमे अति, भय से धरणि चूमते॥
रामदल का उस समय, भयमान फूटा गोल है।
यह देख हालत लखन को, गुस्सा चढ़ा बेतोल है॥

दोहा

क्रोध अति ही छा गया, रूप बना विकराल।
गारूड़ी विद्या पर उड़े, बने भयकर काल॥
वज्रावर्तज धनुष को, लेकर लक्ष्मण वीर।
वज्रमुखे दशशीश के, मारे कस २ तीर॥

जो जहाँ थे रावण रूप कई, वहाँ बाण रूप कई होने लगे।
जिन रूपों के जा तीर लगे, वह रूप धरणी में सोने लगे॥
फिर वानर सेना राक्षस सेना, पर आक्रमण करने लगी।
अब पुण्य हार गया रावण का, जो अगणित सेना मरने लगी॥

एक बाण से लक्ष्मण जी के, सौ-सौ बाण निकलते हैं।
सौ-सौ से फेर हजार बने, बाणों को बाण उगलते हैं॥
जिस जगह रूप दशकंधर का, जा बाण उसी के लगता है।
वह रूप लोप हो जाय तभी, क्या पता कहाँ जा मिलता है॥
जैसे बरसाती मेंढक, नित्य धूप से मरते जाते हैं।
यों रूप सभी रावण के भी, सख्या कम करते जाते हैं॥

स्वल्प समय में रूप भूल का, नजर पड़ा दशकन्धर का।
यह शक्ति का नहीं काम, काम लक्ष्मण के पुण्य सिकन्दर का॥

दोहा

रावण तब आश्चर्य से, देख रहा मुह बाय।
'चक्र सुदर्शन' अन्त मे कर में लिया उठाय॥

चक्र सुदर्शन को झुंझलाकर, हाथ में खूब घुमाया है।
बिजली के मानिन्द तडतडाट कर, काल रूप बन आया है॥
सुग्रीवादिक सब घबराये, जीने की आशा छोड दई।
ना दृष्टि सामने टिकती है, ग्रीवा भी पीछे मोड़ लई॥
वह समय भयानक जैसा था, वैसा यहाँ कहा न जाता है।
ये दृश्य देख दशकधर, मन मे फूला नहीं समाता है॥
ले अस्त्र-शस्त्र वानर योद्धे, चक्र पर सभी चलाते हैं।
पर उसको ना पीछे हटा सके, बेशक जाकर टकराते है॥

दोहा

हो करके लाचार सब, मलते रह गये हाथ।
समझा होगी चक्र से, अब लक्ष्मण की घात॥

भयभीत हुए सब ही दिल मे, श्रीराम का मन भी हाफ गया।
भामंडल सुग्रीवादिक, सब योद्धों का तन काप गया॥
अमोघ अस्त्र एक नमोकार का ही, अब बाकी शरणा है।
बस सिवाय अनादि मन्त्र और, किसने विपदा को हरना है॥

दोहा

पंच परमेष्ठी का मन मे, किया निश्चल ध्यान।
चक्र सुदर्शन अनुज के, पहुंचा सम्मुख आन॥

उस समय जो भय था योद्धा को, वर्णन मे नहीं आ सकता है।
पर वार अनादि मन्त्र का भी, खाली कब जा सकता है॥

निज शक्ति का जो मान करे, और पुण्य को नहीं निहारते हैं।
पुण्य बिना शक्ति निष्फल, श्री जिनवर यही उचारते हैं॥

दोहा

चक्र सुदर्शन लखन को, दे प्रदक्षिणा तीन।
दशकन्धर भी उस तरफ, देख रहा यह सीन॥

चक्र सुदर्शन लक्ष्मण जी के, दक्षिण कर पर आ बैठा।
तब लङ्कपति के हृदय पर, जैसे कोई कणिय लेटा॥
यह दृश्य देख वानर दल को, बस खुशी का ना कुछ पार रहा।
उस तरफ दशानन पिछली, बातों को दिल खूब विचार रहा॥

दोहा

याद मुझे अब आ गया, मुनिजन का व्याख्यान।
परनारी कारण सही, लगे जान अब प्राण॥

अधिकारी मन्त्री गण क्या, सब ही ने मुझको समझाया।
क्या करूँ मेरी किस्मत उल्टी, कुछ सोच नहीं मन मे लाया॥
मुनिराज की बातों पर भी, श्रद्धा मैंने करी नहीं।
अष्टांग ज्योतिषी की भी, कोई बात हृदय में धरी नहीं॥

दोहा

अर्धांगिनी के कथन पर, किया न जरा विचार।
नर्म गर्म और प्रेम से, समझाया हर बार॥

रावण का पश्चात्ताप लावणी शिकस्त

किस्मत ने धोखा दिया, आज बे मौके।
अब आई मुझको अक्ल, सभी कुछ खोके॥
राणी ने आखीर तक, समझाया रो के।
खो दिये हाथ से, जितने थे सब मौके॥

क्या करूं कैद मे, योद्धे पड़े तमाम।
जिस कारण लाया सीता, कुछ बना नहीं वो काम ॥१॥
सुत भूख प्यास के, कैसे दुख सहेगे।
ना खबर पिता ने लई, ये लाल कहेगे॥
सब योद्धों की, आखो से अस्क बहेगे।
किस विध सुत बान्धव के, अब प्राण रहेंगे॥
मेरे लाल कहाँ, आजादी के आराम।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वो काम ॥२॥
किस जन्म की वैरन शूर्पणखा थी मेरी।
तारीफ करी मुझ आगे सीता केरी।
तू प्रलय काल की पापिनी बनी अंधेरी॥
करवाया सब कुछ नाश करी ना देरी।
मेरी बहिन रुढ़ा दिया बेड़ा मेरा तमाम॥
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वो काम ॥३॥
यदि होती कुछ मालूम ये होनी होगी।
तो क्यों बनता मै हाय इश्क का रोगी॥
क्या हालत मन्दोदरी राणी की होगी।
नहीं मानी सीख तो आज विपत्ति होगी॥
हो गया हाय मैं मुल्कों में बदनाम।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वह काम ॥ ४ ॥
अमोघ विजय शक्ति भी गई निकल के॥
बहुरूपिणी विद्या भाग गई सिर धुन के।
अब चक्र सुदर्शन भी वश में हो गया उनके॥
फल दीख रहे राणी के सही स्वप्न के।
है पुण्यवान बेशक लक्ष्मण और राम॥
जिस कारण लाया सीता कुछ बना नहीं वह काम ॥५॥

दोहा

रावण ऐसे हो रहा, सोच फिकर मे लीन ।
दिवस शशि जैसे हुवा, चेहरा अतिमलीन ॥
दशकन्धर के हो रहा, दिल मे दुख अपार ।
लक्ष्मण तब यों भूप से, बोला गिरा उचार ॥

लंक पति अब कर रहे, कैसा आप विचार ।
और है शक्ति शेष कुछ, या हो गये लाचार ॥

अमोघ विजय का वार गया, खाली जो दैवी शक्ति थी ।
द्वितीय विद्या काफूर हुई, जिसकी की तुमने भक्ति थी ॥
वज्रा वर्तज के आगे जो, रूप थे वह सब धूल हुवे ।
तेरे ही साधन किये हुए, तेरे ही ना अनुकूल हुए ॥
इन्द्रजीत और कुम्भकरण, सब योद्धे कैद हमारी हैं ।
जो विद्या साधी थी हजार, वह कहा पर गई तुम्हारी हैं ॥
चक्रशुदर्शन अन्तिम शस्त्र, सो ना तेरे पास रहा ।
वह बता कौनसी शक्ति है, बाकी जिसकी कर आस रहा ॥

—— —

राम-रावण

दोहा

प्रियवादी गभीर नर, औदार चित्त सुख धाम ।
कथन बन्द कर अनुज का, यों बोले श्रीराम ॥

दोहा

अब भी सोच विचार लो, दशकन्धर बलवीर ।
जंग आपका हो चुका, निश्चय आज अखीर ॥

निश्चय आज अखीर रहा ना, तत जरा कुछ बाकी ।
नजर आगई आज युद्ध के, अन्त समय की झांकी ॥
वही श्रेष्ठ नर दुनिया मे जो, करता बात सुलह की ।
कर लो संधी अब भी हम से छोड़ सभी चालाकी ॥

दौड़

निहशंक रणधीर बहादुर, आप संसार की चादर, हमें अब देवो आदर, राजन पति गभीर, वीर दिल मे ना जरा गिला कर ।

दोहा

तेज प्रताप प्रचण्ड तव, फैल रहा जग मांय ।
स्याही सीता हरण की, देवो इसे मिटाय ॥

तुम सीता को वापिस करदो, फिर भी लाली रह जावेगी ।
सब फौज हमारी प्रातःकाल ही, कूच का बिगुल बजावेगी ।
यह लंक मुबारिक आप को हो, हम और नहीं कुछ चाहते है ॥
यदि आज्ञा हो तो शस्त्र छोड़ कर, पास आप के आते है ।

दोहा

राज खजाने वास्ते, नहीं किया यह जग ।
एक सिया के वास्ते, सो भी होकर तंग ॥

सुत बान्धव आपके जितने है, स्वतन्त्र सभी को कर देंगे ।
जो हानि यहाँ पर हुई सभी, रल-मिलकर दोनों भर लेंगे ॥
तुम अपने यहाँ आनन्द करो, हम पुरी अयोध्या जावेंगे ।
यदि समय गवावोगे ऐसा, तो कर मलते रह जावेंगे ॥

दोहा

रामचन्द्र के वचन सुन, दिल मे उठे तरंग ।
अशुभ ध्यान मे लीन था, उड़ा जिस्म का रंग ॥

मौन चित्र की तरह खडा, मुख से ना बोल निकलता है।
और सोच विचार अनेक करी, पर रास्ता कोई ना मिलता है॥
उस समय विभीषण वीर वीर को, आकर यों समझाने लगे।
और देख हाल मोह के वश हो, नयनों से नीर बहाने लगे॥

गाना विभीषण का समझाना

शिक्षा उर धारो अय भाई, तुम्हे अन्त समय समझाता हूं।
मोह के वश होकर आया हूं, कुछ प्रेम के वचन सुनाता हूँ॥ १॥
तैंने जोर बहुत सा लाया है, और विद्या बल दिखलाया है।
पर काम कोई ना आया है, मैं दिल मे अति घबराता हू॥ २॥
तेरा चक्र सुदर्शन खाली गया, और पुण्य तेरा रखवाला गया।
शुभ ध्यान बाग का माली गया, अब तेरी खैर मनाता हू॥ ३॥
तेरे पुत्र भाई बांध लिये, और भूप तेरे सब साध लिये।
श्रीराम के तैं अपराध किये, वह क्षमा सभी करवाता हू॥ ४॥
यदि भाई तू जीना चाहता है, तो राम शरण क्यों न आता है।
रघुनाथ प्रभु सुख दाता हैं, तुम्हे सन्मार्ग बतलाता हूं॥ ५॥
श्रीमान् वीर ना देर करो, प्रभु रामचन्द्र की शरण परो।
इस देश की विपदा सारी हरो, कर जोड़ के अर्ज सुनाता हू॥६॥
अब जनक सुता को पहुँचावो, रघुनाथ के सग प्रीति लावो।
निर्भय निज राज के सुख पावो, शुभ शुक्ल ध्यान मैं चाहता हूँ॥

दोहा

इतनी सुनकर भूप को, चढ़ा क्रोध विकराल।
तेजी से कहने लगा, भृकुटि मस्त डाल॥

रामचन्द्र क्या चीज है, मूढमति अय वीर।
लक्ष्मण जो है कूदता, छिन मे डालूं चीर॥

चक्र सुदर्शन गया हाथ से, जो यह है कहना तेरा।
बिगड़ा क्या उसके जाने से, तन का नहीं साहस गया मेरा ॥
सब कर दूंगा चूर्ण चूर्ण, जो करूं मुष्टी प्रहार उसे।
इस धमकी के डर से हर्गिज, ना दूंगा सीता नार उसे ॥

दोहा

शक्ति इस लंकेश की, जाने सकल जहान।
जीते मैंने समर में, अमित भूप बलवान ॥

अमित भूप बलवान नाम, सुन होते पानी पानी।
किया दिग्विजय भुजा मेरी, क्षत्रीपन की काल निशानी ॥
रघुवंशिन के बीच सुहागिन, छोड़ें नहीं क्षत्राणी।
तुझ जैसा ना और कोई है, कायर मूढ़ अज्ञानी ॥

दौड़

सहित चक्र लक्ष्मण को, पहुंचाऊंगा परभव को।
राम को वहीं पठाऊं, तेज दिखाकर भुजबल का,
इन सब को स्वाद चखाऊं।

दोहा

जैसी मति वैसी गति, कही श्री जिनराज।
सिर पर धौंसा भूप के, रहा काल का बाज ॥
शिक्षा पर शिक्षा सभी, दे देकर गये हार।
लक्ष्मण फिर लंकेश को, बोला गिरा उचार ॥

दोहा (लक्ष्मण)

अच्छा तो अब सम्भलकर, हो जाइये होशियार।
यदि शक्ति है आप में, रोक हमारा वार ॥

तेरा ही यह चक्र सुदर्शन, तेरी ओर चलाते हैं।
यह वार अन्त का समझ तुम्हें, हम साफ साफ बतलाते हैं ॥

पहले प्राण हरूं तेरे, फिर सीता को ले जाऊंगा।
जो करी प्रतिज्ञा आज वही, पूरी करके दिखलाऊंगा॥

दोहा

इतना कहकर अनुज ने, किया भूप पर वार।
दशकन्धर ने चक्र पर, दिया मुष्टी प्रहार॥

किन्तु काल के आगे किसी की, पेश नहीं जा सकती है।
और युक्ति चाहे हजार करो, कोई काम नहीं आ सकती है॥
चक्र सुदर्शन ने रावण का, हृदय कमल विदार दिया।
उस रणभूमि की धूलि में, रावण ने पैर पसार दिया॥
प्रस्थान कर गया परभव को, उस समय जीव दशकन्धर का।
फिर कहो तो क्या बन सकता है, खाली गंदे तन मन्दिर का॥
ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को, पूरे सब श्वासोश्वास हुआ।
दिन के पिछले याम प्राण तज, पंक प्रभा मे वास हुआ॥

चौपाई

वर्ष सहस्र पंचदस आयु पाई।
अशुभ कर्म लेश्या दुख पाई॥
दुर्गति दाता नार पराई।
गौरव इज्जत खाक रुलाई॥



विजय

दोहा

विजय हुई श्री राम की, दशकन्धर दिया मार।
कुसुम वृष्टि कर व्योम से, सुर बोले जयकार॥

अष्टम है ये वासुदेव, प्रतिवासुदेव, जिन मारा है।
बलदेव अष्टमे रामचन्द्र, जिनका अति पुण्य सितारा है॥
धन्य राम जिन महासती, सीता का कष्ट मिटाया है।
और धन्य वीर लक्ष्मण जिसने, भाई का अग निभाया है॥
धन्य मित्र सुग्रीव मित्र के, लिये सभी कुछ वार दिया।
वह धन्य विभीषण वीर, जिन्होंने सत्यपक्ष स्वीकार किया॥

धन्य अजनी लाल क्योंकि, इस दल का स्तम्भ यही तो है।
रावण के सम्मुख अड़ा दिये, योद्धे रणधीर वही तो है॥

दोहा

रघुवरदल आनन्द में, राक्षस दल दुख पूर।
भाग रहे भयभीत हो, रावण दल के शूर॥
रावण जब धरती गिरा, सहसा चक्करखाय।
आखों आगे विभीषण के, गया अन्धेरा छाय॥

वीर विभीषण ने कटार उस, समय कमर से खोल लिया।
अपने हृदय मे मारन को, दक्षिण मुष्टी मे तोल लिया॥
फिर सर्द श्वास भरकर दोना, नेत्रो से नीर बहाने लगे।
इन कर्मों की है विचित्र गति, यह कहकर गीत सुनाने लगे।

गाना विभीषण का विलाप

आज हृदय की तप्त हाय, मै बुझाऊ किस तरह।
हो गया मुझ से जुदा, यह वीर पाऊ किस तरह॥१॥
जिसकी शक्ति से धरणी क्या, कापता था आसमान।
शेरे बबर था वीर मेरा, अब उठाऊ किस तरह॥२॥
युक्ति लाखों ही चलाई, जिस तरह भाई बचे।
पर निकाचित कर्म, रेखा को, मिटाऊं किस तरह॥३॥

हो गया संसार सूना, एक रावण के बिना ।
आज पतझड़ बाग की, रौनक बढ़ाऊं किस तरह ॥४॥
भाई के प्रतिकूल हो, सम्मुख समर में डट गया ।
'शुक्ल' दुनियां में ये अपना, मुख दिखाऊँ किस तरह ॥५॥

शेर

महाबली योद्धा अतुल, यह आज रण में मर गया।
मरना है तुझको एक दिन, मुझ को वह शिक्षा कर गया॥
संसार मे सब कुछ मिले, पर भाई मिल सकता नहीं।
वह कौन सृष्टि में जिसे, अन्तक निगल सकता नहीं॥
फिर किस लिये आश्चर्य कर, करके मैं अपने कर मलूं।
हृदय कटारा मार के, भाई के क्यों न सग मरूं॥
बस आज ये हृदय और, यही कटारा है।
चक्र लगा भाई के तो, यह मेरे पार है॥

दोहा

देख विभीषण की दशा, शीघ्र उठे रघुनाथ।
धैर्य यों देने लगे, पकड मित्र का हाथ॥
बुद्धियान् हो मित्र तुम, क्यों बनते अनजान।
हम तुम सबका एक दिन, बने हाल यही आन॥

जो होना था सो हो ही चुका, अब रोने से क्या बनता है।
और अशुभ ध्यान करने से, आत्मा कर्मों से ही सनता है।
महाबली योद्धे मित्र सब, रण भूमि में मरते हैं।
वह अपना आप मिटा देते, नहीं पांव पिछाड़ी धरते हैं॥
जो खिला बाग में फूल हमेशा, खिला नहीं रह सकता है।
इस जन्ममरण ससार में, किस को कौन अमर कर सकता है॥

चक्रवर्ती भी दुनिया में, लद गये और लद जायेंगे।
ना गई मेदिनी साथ किसी के, सब यहां ही तज जायेंगे॥
बस इतना ही संयोग मित्र था, साथ तुम्हारे रावण का।
जो गया काल के गाल मे, फिर वह मुड़ करके नहीं आवन का
बिना आपके और कौन, इन सबको वीर बधायेगा।
जब आपकी ऐसी हालत है, क्यों न सब दल घबरायेगा॥
अब इस कटार को म्यान करो, तुम बुद्धिमान् और स्याने हो।
सब बातों में चतुर आप, सारे संसार मे माने हो॥

दोहा

जरा मोह उपशान्त कर, किया कटारा म्यान।
धीर बंधाने को किया, राक्षस दल पर ध्यान॥
राक्षस दल के शूरमा, मुख्य-मुख्य बलवान्।
वीर विभीषण सभी को, बोला ऐसे आन॥

दोहा (विभीषण)

अय योद्धो अब किस लिये, होते हो भयभीत।
राम-लखन शत्रु नहीं, सब जन के हैं मीत॥

जो होना था सो हो ही चुका, अपना भय दूर निवारो तुम।
श्री रामचन्द्र के चरणों में, निज शीश आन के डारो तुम॥

औदारचित्त ये महापुरुष, शत्रु पर कृपा करते है।
फिर हम तुम तो सेवक इनके, किस लिये आप यों डरते हैं॥
कोई राजपाट धन-दौलत की, इनको कुछ भी नहीं इच्छा है।
शत्रु जन के भी हितकारी, होती शुभ इनकी शिक्षा है॥
जिस कारण जंग हुआ भारी, वह छिपी हुई कोई बात नहीं।
यदि सीता वापिस करते तो, होती यह इतनी बात नहीं॥

दोहा

सब योद्धों को इस तरह, दे उपदेश विशाल।
भ्रम भूत उन सभी के, मन से दिये निकाल॥

विश्वास विभीषण ने देकर, योद्धो को धीर बधाई है।
फिर देख भ्रात की लाश विभीषण, की तबियत घबराई है॥
औदारचित्त ने राक्षस दल को, प्रेम भाव दर्शाया है।
सब तरह उन्हे आश्रय देकर, श्रीराम ने गले लगाया है॥

दोहा

दशकन्धर के मरण की, खबर गई झट फैल।
पटरानी मंदोदरी बैठी थी, निज महल॥

जब लगा पता पटरानी के, हृदय पर वज्रपात हुआ।
खो बैठी सारी सुध-बुध को, पत्थर मूरत सम हाल हुआ॥

संग में सभी राणियों को ले, रणभूमि मे आई है।
समवेदना लंक वासियों मे, जनता दु.ख बीच समाई है॥

महाराणी का संताप देख, सारे दल को सताप हुआ।
राणी का दुख अपार देख, श्रीराम को पश्चात्ताप हुआ॥
उस समय राम-अपने मन में, ऐसे कर स्वच्छ विचार रहे
और देख-देख दुख राणी का, अपना सिर भी कुछ मार रहे

गाना श्रीराम का विचारना

आज इनकी दुर्दशा मैं, देखता हूं कि किस तरह।
जैसे पत्थर दिल नहीं, आसू वहाता इस तरह॥१॥
कर्मों के आगे कहो यहां, पेश किसकी जा सके।
अरिहन्त से भी ना टले, मैं तो हटाऊं किस तरह॥२॥

श्रेष्ठाचारिण पतिव्रता, मन्दोदरी राणी सती।
लाल जिसके कैद मे, रावण मरा रहा इस तरह ॥३॥
छोड़ दूं यदि लाल इसके, शान्ति कुछ दिल को मिले।
इस पतिव्रता के अब आसू, बुझाऊ इस तरह ॥४॥
जीता न समझा भूप तो, मृतक का बन सकता है क्या।
ला चुका ये तो "शुक्ल" परभव मे जाकर बिस्तरे ॥५॥

दोहा

करुणा सागर के उठी, ऐसी दिली तरग।
स्वतत्र बस कर दिये, सब सूरे एक संग ॥

कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत शूरे, सब मेघवाहन आदि।
आखों से नीर बहाते है, सब देख झुरें निज बरबादी ॥
सब गोल इकट्ठा हुआ आन, जहाॅ लाश पड़ी दशकन्धर की।
वहाॅ सभी राणियां आ पहुँची, हालत खराब मन्दोदरी की ॥

दोहा

देख पति की लाश को, व्याकुल हुई अपार।
मोह के वश मन्दोदरी, बोली गिरा उचार ॥
हा प्रीतम हा प्राणपति, हा स्वामी सुखदान।
चले कहाॅ अब छोड़ कर, हमको जीवन प्राण ॥

गाना (ब० त०) रानी मन्दोदरी का विलाप

आज हालत ये आपकी कैसे हुई।
देखी जाती नहीं प्राणप्यारे पिया।
तुमने माना किसी का भी कहना नहीं।
आज गायब हुए हो सितारे पिया ॥१॥
एक नारी के पीछे दई जान खो।
गये परभव को करके किनारे पिया।

आज स्वतन्त्र सारा जगत् हो गया ।
सुन के मरना तुम्हारा हजारे पिया ॥२॥
अपनी शक्ति से तुम थे त्रिखंडी बने ।
आज सोये क्यों पांव पसारे पिया ।
तुम बिना अब मैं किसका सहारा लेऊँ ।
जाते लंका को आज विसारे पिया ॥३॥
मेरे खोटे कर्म दोष किसको देऊँ ।
तुम थे सुख दुःख के पूछन हारे पिया ।
आज पापिन ये धरणी भी फटती नहीं ।
जिसमे छिप जांय सब तन हमारे पिया ॥४॥
रोवें भाई खड़े आपके सामने ।
जरा इनको तसल्ली वधादो पिया ।
पाला-पुत्रों को तुमने था जिस प्रेम से ।
इनको वैसे ही हृदय लगावो पिया ॥५॥
हाय स्वप्न मेरा सब सत्य ही हो गया ।
ना हटे मैंने हरवार वारे पिया ।
यदि मरते "शुक्ल" नेक कर्त्तव्य लिये ।
पाते दुनियां मे यश तुम सारे पिया ॥६॥

दोहा

कुंभकर्ण आदि सभी, सुत राणी परिवार ।
और सभी नर नारियाँ, रोवें जारो जार ॥
दशरथ नन्दन फिर उठे, समझाने को आप ।
लगे कहन मधु वचन यों, मेटन को संताप ॥
वीर विभीषण मित्रवर, मोह अब दूर निवार ।
तेरे पीछे रो रहे, सब जन और परिवार ॥

राम—स्याने होकर के ऐसे अयाने बने,
किया जाता है जिसका जिकर ही नहीं।
बिलबिलाने से वापिस ये आता नहीं,
लाते दिल मे जरा भी सबर ही नहीं ॥१॥
जन्म लेकर हमेशा जो जिन्दा रहे,
ऐसा दुनियाँ मे कोई बशर ही नहीं।
एक दिन रास्ता सबने इसी चलना है,
सिवा सिद्धों के कोई असर ही नहीं ॥२॥

विभीषण—प्रभु हम सब को ऐसा ही मालूम है,
पर करे क्या ये मोह दिल से जाता नहीं।
जिसकी रक्षा लिए इतनी मेहनत करी,
सोही भाई नजर आज आता नहीं ॥१॥
यदि मरता ये ऐसे धर्म के लिये,
तो मैं फूला बदन मे समाता नहीं।
वन के इतिहास मरना बुरे काम का।
यह महा दुःख दिल मे समाता नहीं ॥२॥

दोहा (राम)

बिलकुल कहना ठीक पर, बन सकता क्या वीर।
संस्कार मृतक सभी, करना पडे आखीर॥

आगे पीछे अहो मित्र ये, काम तुम्ही ने करना है,
अब तो रावण की जगह देश, को तेरा ही एक शरणा है।
सामग्री सभी मंगाकर के, चन्दन की चिता चिना देवो,
जैसी भी रीति तुम्हारी है, वैसा ही शीघ्र बना देवो।

दोहा

सामग्री सब लंक से, लई तुरन्त मगवाय,
धूम धाम से भूप की, अर्थी लई उठाय।

उस समय दृश्य वहां जैसा था, लिखने मे नहीं आ सकता है।
थी भीड़ कई अक्षौहिणी की, अनुमान किया जा सकता है॥
गन्धर्व मंडली कई और, वाजों की ध्वनि निराली है।
श्रीराम उस समय संग ही थे, जब चला लंक का माली है॥
ले चले जिस समय अर्थी को, तब जमागोल अति भारा था।
उस समय एक वैराग्य भाव से, ऐसा गायन उचारा था॥

सबका गाना

बताया प्रभु ने जगत् मुसाफिर खाना।
जो आया सो रहा न कोई, सदा न यहा ठिकाना॥ टेर॥
अवतार सारे गये चक्री सिर मार गये,
वासुदेव गये, प्रति वासुदेव हार गये।
बलदेव गये, कामदेव अवतार गये,
केवल ज्ञानी गये महा लब्धि के धार गये।
बाहुबली गणधर आदि भव पार गये,
छत्रपति राणा योद्धा पृथ्वी के शृङ्गार गये।
ऋद्धि सिद्धि पुण्यवान् वैभव विसार गये,
सख्याते असख्याते यहाँ, गिनती क्या दो चार गये।
वह सब ही हुये रवाना॥ १॥
गये सब राजा और सारे ही, अमीर गये,
ऋद्धिशाली गये, रक राव क्या फकीर गये।
गये सब बादशाह, और सारे ही वजीर गये,
गये सब बली, निर्बल बलवीर गये।

ज्ञानी गये ध्यानी गये, मानी दानवीर गये,
बुद्धिमान् गये आगम पाठी पूर्वधार गये।
वादी दुर्वादी सब, मूर्ख और गवार गये,
रोगी क्या नीरोगी भोगी भँवरे साहूकार गये।
मिला अन्त कफन का बाना ॥ २ ॥
चौंसठ कला सारी, बहत्तर कलावान गये,
छोटे छोटे गये, और महान् से महान् गये।
बूढ़े बेशुम्मार गये, लाखों ही जवान गये,
गये जमींदार छोड, खेतों को किसान गये।
ठेकेदार गये सभी बड़े बड़े सेठ गये,
खुमचे विकैये गये व्यापारी महान् गये।
काल ने तमाचे मारे, सभी चित्त लेट गये,
शुभ कर्मी ऊंचे गये पापी नर्क हेठ गये।
रह गया पड़ा खजाना ॥ ३ ॥

दोहा

सस्कार मृतक किया, धूम-धाम के साथ।
निवृत्त हुये स्नान कर, गई बहुत जब रात ॥
प्रातःकाल श्रीराम ने, सबको लिया बुलाय।
औदारचित्त फिर प्रेम से, यो बोले सम्भाय ॥
सदा एक सा ना रहे, आयु साज समाज।
मिलजुल अब सब प्रेम से, करो लक का राज ॥
काल अनादि से यही, दुनिया का व्यवहार।
तुम सब को अब चाहिए, करना सोच-विचार ॥

धीरगति को प्राप्त दशानन, परभव को है सिधार गया।
सब राजपाट का भार समझ कर, योग्य तुम्ही पर डार गया ॥

अब यही हमारा कहना है, मिल-जुल कर अपना काम करो
और दशकन्धर की तरह आप, प्रसिद्ध लंक का नाम करो।

दोहा

सुने वचन श्रीराम के, खुशी सभी नरनार,
कुम्भकर्ण फिर उस समय, बोले गिरा उचार।



वैराग्य

दोहा (भानुकर्ण)

राजपाट की अब नहीं, इच्छा है सुखधाम।
दुनिया में दुखपूर है, तनिक नहीं आराम ॥

मेरा-मेरा करता ही प्राणी, एक दिन मर जाता है।
मित्र प्यारे क्या राजकोष, सब कुछ यहां ही धर जाता है ॥
जैसा करता कर्म कोई, वैसा ही सग ले जाता है।
कुछ पूर्व पुण्य यहां भोग, और यहां का आगे जा पाता है ॥
जो खिले फूल हैं बागों मे, आगे-पीछे मुरझायेंगे।
ये ही स्वभाव ससार का है, कोई जाते हैं कोई आयेंगे ॥
सयोग मूल दु:ख जीवों का, सर्वज्ञ देव बतलाया है।
कर्मों के सग हो मूढ़ जीव ने, अपना आप गवाया है ॥
यदि दुनिया मे कोई सुख होता, तीर्थंकर क्यों तजते इसको।
बिन त्यागे ससार मोक्ष का, राज कहो मिलता किस को ॥
शुभ बुद्धि सदा आत्मा को, ठोकर खाने से आती है।
यदि सभल गया तो उच्चगति, वरना दुर्गति मिल जाती है।

गाना भानुकर्ण जी की वैराग्य भावना

मिले जिस वार भी मौका, निकल जाय तो अच्छा है ।
फिसलता यदि कोई प्राणी, संभल जाये तो अच्छा है ॥१॥
जमाना छानकर देखा, कहीं भी सुख नहीं देखा ।
इसलिये मोक्ष पथ पर जीव, लग जाये तो अच्छा है ॥२॥
विना कारण कभी दुनिया से, घृणा हो नहीं सकती ।
श्री सर्वज्ञ की वाणी समझ, जाये तो अच्छा है ॥३॥
अनन्तीवार सब पुद्गल, खा-खा करके उगला है ।
नहीं सन्तोष आया किन्तु, आ जाये तो अच्छा है ॥४॥
यह फिरता नरक गति नरगत, पशुगति और सुरगति मे ।
प्रभु फेरा अनादि का यह, टल जाये तो अच्छा है ॥५॥
चढ़ गया रग असली अब ये, फीका हो नहीं सकता ।
ध्यान आया "शुक्ल" अब. सिद्ध बन जाये तो अच्छा है ॥६॥

दोहा (श्री राम)

संयम से बढ़कर नहीं, दुनियॉ मे कोई चीज ।
रागद्वेष का इस विना, नष्ट न होता बीज ॥

इस श्रेष्ठ काम की तो सबसे, पहले हम आज्ञा देवेगे ।
और कर्म अरि को काट आप, निश्चय आनन्द पद लेवेगे ॥
धन्य मात और तात आप यह. कुल जिसमे तुम जाये हो ।
वैराग्य भाव मे रगे हुए, सयम मार्ग चित्त लाये हो ॥

दोहा

इन्द्रजीत को भी चढ़ा, यही मजीठी रग ।
मेघवाहन को लग रहा, यह संसार भुजंग ॥

विरक्त हुआ दिल मन्दोदरी का, कई राणिया साथ हुई ।
या यों कहिये इनके दिल मे, समज्ञान की आ प्रभात हुई ॥

राजपाट समृद्धि की जिनके, हृदय मे प्यास नहीं।
उनको दुनियां मे क्षण मात्र भी, अच्छा लगता वास नहीं॥

दोहा

कुसुमोद्यान मे थे मुनि, अप्रमेय बल नाम।
चार ज्ञान थे प्रथम ही, आत्म गुण के धाम॥

था उसी रात में महा मुनि ने, ब्रह्म-ज्ञान का पास किया।
घनघाती चारो कर्मों का, तप जप संयम से नाश किया॥
कुम्भकर्ण आदिक सबने, जा चरणों मे शीश नवाया है।
केवल ज्ञानी सुख दानी ने, ऐसे उपदेश सुनाया है॥

दोहा

इस संसार असार मे, दुःख सयोग वियोग।
सुनो भव्य जन कान धर, जरा लगाकर योग॥

जब मिले मनोगम चीज जीव, तन-मन से खुश हो जाता है।
यदि मिले इसे प्रतिकूल वस्तु तो, देख देख मुरझाता है॥
यह संसार असार सार, इसमें न किसी ने पाया है।
जिसने इससे मन मोड़ लिया, वह मुक्ति धाम सिधाया है॥
उपदेश सार गर्भित ऐसे, अप्रमेय बल मुनि फरमाते हैं।
जिसको सुनकर ज्ञानीजन के, मुरझे दिल भी खिल जाते हैं॥
फिर इन्द्रजीत ने सर्वज्ञ के, चरणों मे मस्तक डारा है।
और हाथ जोड़ बड़ी नम्रता से, ऐसे वचन उचारा है॥

दोहा

जग चक्षु सर्वज्ञ प्रभु, दीन बन्धु हित कार।
पूर्व जन्म का हाल कुछ, भाषो जगदाधार॥

दोहा (मुनि)

पूर्व जन्म का हाल कुछ, सुनो लगाकर कान ।
सर्वज्ञ देव करने लगे, ऐसे प्रकट व्याख्यान ॥

चौपाई

इस ही भरत क्षेत्र के मांहीं. कौसुम्भी नगरी सुख दाई ।
प्रथम पश्चिम नाम तुम्हारा, शुभ संगति से पाप निवारा ॥
भगदत्त मुनि पास व्रत धारा, शांत कषाय पाप विष टारा ।
विचरत फेर कौसुम्भी आये, उपवन में निज आसन लाये ॥
ऋतु बसन्त खिली फुलवारी, ठडी पवन चले सुखकारी ।
नन्दी घोष राजा वहाँ आया, सग महाराणी अधिक सुहाया ।
पश्चिम मुनि को इच्छा जागी, राजकुमार बनूं लव लागी ।
मनुष्य जन्म का बन्ध लगाया, इक दिन काल मुनि का आया ॥

दोहा

इन्दुमालिनी राणी के, जन्म लिया उस धार ।
रति वर्धन शुभ नाम है. पुण्यवान सुकुमार ॥

प्रथम मुनि जप तप करके, जा स्वर्ग पाचवे वास किया ।
यहाँ विषय विकारों ने, रतिवर्धन को अपना दास किया ॥
अवधि ज्ञान से देख प्रथम, सुर ने आकर समझाया है ।
पूर्व भव का हाल देव ने, प्रेम से सभी बताया है ॥

जब हुई प्रेरणा भाई की तो, जाति स्मरण ज्ञान हुआ ।
और नाशवान दुनिया को तजकर, तप सयम मे ध्यान हुआ ॥
ब्रह्मलोक पहुँचा जाकर, सुर का तन वैक्रिय धार लिया ।
पूर्व भव का जो था निदान, कुछ उसके फल को टार दिया ॥

दोहा

इन्दुमालिनी आकर हुई, मन्दोदरी यहाँ नार।
स्वर्ग छोड़ तुमने लिया, जन्म इसी के धार॥
सुने वचन सर्वज्ञ के, पुण्य उदय हुआ आन।
यह संसार लगने लगा, महा दुःखों की खान॥

ईशान कोण की तरफ बढ़े, आभूषण वस्त्र उतार दिये।
केशों का अपने हाथ से लुचन, करके सभी उतार दिये॥
मुख वस्त्रिका मे डोरा डाल कर, मुख पर उसे सजाई है।
और रजोहरण लिया बगल बीच, कर मे झोली लटकाई है॥
दीक्षा उत्सव करवा करके, श्रीराम ने शीश झुकाया है।
फिर देव रमण मे जाने को, झटपट विमान सजाया है॥
सब योद्धों के साथ राम, सीता के पास सिधाये हैं।
उस तरफ कमलिनीवत् सीता ने, अपने नेत्र खिलाये हैं॥

सियाराम

दोहा

आगमन सुन राम का, सीता मन रही फूल।
सुख मे लीन होकर सती, गाने में रही भूल॥

सीताजी का गाना

पिया के दुःख ने मुझे, दुखिया बना रक्खा है।
उनसे मिलने के लिये, मन स्रोत बहा रक्खा है॥ १॥
भूल सकती मैं नहीं, तेरी भोली सूरत।
मैंने तो तुमको ही. सुरधाम बना रक्खा है॥ २॥

प्रेम के रंग में रंगी, तुमने ऐसी अद्भुत।
प्रेम के तन्तुने इक तार, बना रक्खा है ॥ ३ ॥
तेरे स्वागत के लिये, मन रोज सफर करता है।
और आँखों का फर्श, रास्ते मे बिछा रक्खा है ॥४॥
मन के मन्दिर में तेरी, करती हूँ आरति हर दम।
तुमने तो बदले मे दिल, वज्र बना रक्खा है ॥५॥

दोहा

ऐसे बैठी गा रही, मन मे अति उल्लास।
बार-बार देखन लिये, दृष्टि करे विकाश ॥

उधर विमान सरसर करते, देव रमण मे आये है।
उतारे पास ही सिया जी के, जयकार के नाद सुनाये है ॥
देख राम को जनक सुता, नेत्रों से जल भर लाई है।
और इधर राम क्या जनता ने, आंसुओं की झड़ी लगाई है ॥

दोहा

रामचन्द्र ने सिया को, लीना गले लगाय।
बाकी सब उस सती को, मस्तक रहे झुकाय ॥

चन्द्र प्रकाशी फूल शशि को, देख तुरन्त खिल जाता है।
या प्रातःकाल ही चकवी को, जैसे चकवा मिल जाता है ॥
ज्यों सूर्य प्रकाशी देख रवि को, फूला नहीं समाता है।
वह प्रेम दम्पतिका ऐसा, रसना से कहा नहीं जाता है ॥

दोहा

दुर्बल तन ऐसे हुआ जैसे द्वितीया चन्द्र।
द्वेष नहीं है किसी पर, इसका रण सानन्द ॥

भुवनालकृत हस्ति पर, जगदम्बा को बैठाया है।
और सिंहासन पर बैठ अगाड़ी, राम अति शोभाया है।

श्रीराम सिया के जयकारों से, देव रमण गुंजाया है ॥
है महासती ये व्योम बीच, देवों ने शब्द सुनाया है।

दोहा

लंका नगरी की यहां, शोभा कही न जाय।
प्रवेश समय चारों तरफ, ऐसी दई सजाय ॥
लंका में प्रवेश सब, लगे करन जिस वार।
ऐसे फिर गाने लगे, प्रेमभाव अनुसार ॥

सब का मिलकर मुबारकवाद देना—

गाना (तर्ज पंजाबी)

मिलकर के सब प्राणी तारीफ है गानी।
रामचन्द्र का आना भला ॥टेक॥

चल दुनिया दर्श को आई है, सब ओर से मिले बधाई है।
ध्वनि वाजिन्त्रों की छाई है, वर्षा स्वागत में आई है ॥
हों वारी बलिहारी सुखकारी, मिल कर के सब प्राणी ॥१॥

लंका में अति आनन्द छाया, श्रीराम ने दर्शन दिखलाया ॥
निज-निज घर में मंगल गाया, याचक गण मन में हर्षाया।
॥हों वारी बलिहारी ॥२॥

प्रभु दान का मेह वर्षाया है, कंगालों को धनी बनाया है।
कैदी समूह छुड़वाया है, आनन्द का बादल छाया है ॥
॥हों वारी बलिहारी ॥३॥

कृपा हम पर महाराज करो, लंका का सिर पर ताज धरो।
सब जनता का संताप हरो, हमरे सिर अपना हाथ धरो ॥
॥ हो वारी बलि० ॥४॥

हम लक्ष्मण को प्रणाम करें, सच्चे भाई वन काम करे ।
सेवा हम आठों याम करें, निज आत्मा का कल्याण करें ॥
॥ हां वारी वलि० ॥५॥

हर वार मुबारिक देते है, सब शरणा तेरा लेते है ।
देवो कृपा दान ये कहते है, शुभ "शुक्ल" ध्यान मे रहते है ॥
॥ हों वारी वलि० ॥६॥

दोहा

जा पहुंचे दरवार मे, धूम धाम के साथ ।
मिले परस्पर प्रेम से, मिला मिला कर हाथ ॥

श्रीराम से वीर विभीषण ने, फिर वाणी नम्र उचारी है ।
राज करो प्रभु लंका का, इच्छा वस यही हमारी है ॥
यहाँ राजे सभी विराजमान, और सभी आपको चाहते हैं
अभिषेक राज का करने की सब, सामग्री मगवाते हैं ॥

जन समूह कहने लगा, ठीक ठीक सब ठीक ।
सामग्री कहाँ दूर है, सब कुछ यहीं समीप ॥



विभीषण राजताज

दोहा (कवि)

महापुरुष करते सदा, निज गौरव का ध्यान ।
समविभागी नित्य समझते, परहित मे कल्याण ॥

वाकी सेवा स्वीकार किन्तु, ऐसी हा कब भर सकते थे ।
दे चुके वचन जिसको जैसा, उससे कैसे फिर सकते थे ॥
हँसकर बोले यों श्रीराम, मित्र क्यों हमें लजाते हो ।
आ वैठो आप सिंहासन पर, मस्तक पर तिलक सजाते हैं ॥

दोहा

उसी समय श्रीराम ने, पकड़ मित्र का हाथ ।
उदार चित्त कहने लगे, बड़े प्रेम के साथ ॥

अय मित्र हमारी खातिर तूने, सब कुछ अर्पण कर डारा ।
फिर राजताज क्या चीज भला, तैंने या मैंने सिर धारा ॥
दे चुके वचन अय वीर तुम्हें, सो पूरा आज निभायेंगे ।
और ताज लंक का तेरे मस्तक, ऊपर आज सजायेंगे ॥

दोहा

उसी समय श्रीराम ने, किया यही आदेश ।
उत्सव का करदो अभी, वंक्रिय और विशेष ॥
योग्य समय शुभ नियत कर, उत्सव किया अपार ।
तिलक किया जब राम ने, होने लगे जयकार ॥

फिर ताज राम ने मित्र के, मस्तक पर आप सजाया है ।
उस समय सभी ने मिलकर के, जय खुशी का नाद बजाया है ॥
कहीं गायन मुबारिक, वादी के नर नारी खूब सुनाते हैं ।
अपराधी सब स्वतन्त्र किये, सो भी मिल खुशी मनाते हैं ॥

दोहा

विदा होन की राम ने, फेर चलाई बात ।
रघुपति से मित्र लगा, कहन जोड़कर हाथ ॥
लीक आरिसे की तरह, किया आपने प्रेम ।
आप विना हम इस तरह, ग्रीष्म मे जिम हेम ॥

सर्दी विन महाराज बर्फ के, पर्वत भी ढल जाते हैं ।
स्वामी का फिरता हाथ नहीं, वो पान सभी गल जाते हैं ॥

कृपा आपकी से ही हमको, स्वामी है आनन्द अमन ।
यह नम्र निवेदन चरणों मे, इतनी जल्दी ना करे गमन ।

दोहा

विनती मित्र विभीषण की, लई राम ने मान ।
सुन करके इस बात को, जनता खुशी महान् ॥
सिंहोदर आदि राजे, निज सुता वहीं ले आये हैं ।
और उसी जगह सबके लक्ष्मण संग, पाणि ग्रहण करवाये है ।
श्रीराम लखन सीता को सब, लंका की सैर कराते हैं ।
अब नित्य प्रति उसका स्वास्थ्य, और प्रमोद अधिक बढ़ाते हैं ।

—***—

नारद

दोहा

इधर खुशी से लंक में, किया राम ने वास ।
मातायें सब अवध मे, होने लगी उदास ॥

पुण्य योग से नारद जी, वहाँ फिरते २ आये हैं ।
छा रही उदासी रणवासो में, देख मुनि घबराये हैं ॥
भाव भक्ति की नारद की, सिंहासन पर बिठलाया है ।
अब रंग ढग सब देख मुनि ने, ऐसे वचन सुनाया है ॥

दोहा (नारद)

आज कहो तुम किस लिये, आंसू रही बहाय ।
कारण आर्तध्यान का, देवो हमे बताय ॥

दोहा (कौश०)

दुख मोचन मुनि गम यही, घर ना आये लाल ।
आती हैं चाहे खबर पर, मिलने का अति ख्याल ॥

पुत्रों का मुख देखने को, दिल मेरा बड़ा तरसता है।
इस कारण से हे महामुनि, नयनों से नीर बरसता है॥
तभी शान्ति मिले हमें, जब राज कुंवर यहा आयेगे।
नहीं तो ये प्राण तरसते ही, परभव को शीघ्र सिधायेंगे॥
किस हालत मे है वैदेही, कब उसके दर्शन पाऊंगी।
वह धन्य दिवस होगा जिस दिन, सीता को गले लगाऊंगी॥
इस कारण सोच समुद्र मे, नित्य प्रति मै गोते खाती हूँ।
सुत वधु देखने की आशा मे, समय लघाय जाती हू॥

दोहा (नारद)

अय राणी पुत्रवधु, है तेरे सानन्द।
दशकन्धर का अन्त कर, बने सुरेन्द्र मानिन्द॥

यदि तुझे विश्वास नहीं तो, स्वय वहाँ मैं जाता हूँ।
जहाँ तक होगा सुतवधू तेरे, मैं जल्द बुलाकर लाता हूँ॥
श्रीरामचन्द्र से मिलने को, यह दिल मेरा भी करता है।
अब तो लङ्का में गये बिना, नारद को भी नहीं सरता है॥

दोहा

इतना कह करके मुनि, गये उडारी मार।
जा पहुँचे लङ्कापुरी, जहाँ मुख्य दरबार॥
इधर राम से मिलन को, भरत है अतिवन्त।
यों विचार थे कर रहे, बैठे आप एकान्त॥

गाना (भरत)

गिन गिन के दिन गुजारे नहीं रामचन्द्र आये।
रघुवर ने हमको दर्शन, अब तक नहीं दिखाये॥१॥
चौदह वर्ष हुवे पूरे, और दिन भी आज का है।
आने की खबर उनकी, नहीं भृत्यगण भी लाये॥२॥

माता बड़ी कौशल्या. रोती है नित महल मे ।
यह वीर की जुदाई, मुझ से सही न जाये ॥३॥
कहदे मुझे कोई आकर, वह राम आ रहे है ।
खुश हाल उसको कर दूं, यों "शुक्ल" मन मे आगे ॥४॥

दोहा

देख मुनि को लङ्क में, खुशी सभी नर नार ।
सिंहासन देकर किया, नारद का सत्कार ॥

नारद का स्वागत किया सभी ने, राम लखन हर्षाये है ।
और जनक सुता को भी रघुपति ने, मुनि के दर्श कराये हैं ॥
अन्न पान करवा करके, सिंहासन पर बैठाये है ।
तब रामचन्द्र को नारद मुनि, ने ऐसे वचन सुनाये है ॥

दोहा (नारद)

माताओं की ओर भी, करना चाहिये ख्याल ।
आप यहाँ आनन्द मे, उनका हाल बेहाल ॥

विरह पुत्र का माताओं से, हरगिज सहा न जाता है ।
वो धन्य पुत्र जो मात तात का, हृदय कमल खिलाता है ॥
मोह के वश होकर आर्त ध्यान मे, सारा समय विताया है ।
द्वितीया का चन्द्रमा जैसे, ऐसे तन सभी सुकाया है ॥
प्रथम सवा नौ मास उदर मे, माता पुत्र को रखती है ।
फिर वाल अवस्था की सेवा करती करती नहीं थकती है ॥
अव आपने और विलम्ब किया. तो निश्चय प्राण गवावेगी ।
फिर यहां रहे चाहे वहा जाय, माता न जीती पावेगी ॥

दोहा

नारद के ऐसे सुने, रामचन्द्र ने वैन ।
बुला विभीषण को प्रभु, लगे इम तरह कहन ॥

दोहा (राम)

मित्र विभीषण अब हमें, देवे आज्ञा आप।
पुत्र विरह का हो रहा, माताओं को संताप ॥

उपकार किये जो जो तुमने, हम बदला नहीं दे सकते हैं।
प्रसन्न रहो आनन्द रहो, आशीश यही कह सकते हैं ॥
अब तो माताओं के चरणों की, रज मस्तक पर लावेंगे।
और पुत्र विरहिणी दुखियाओं के, हृदय सर्द बनावेंगे ॥

दोहा (विभीषण)

रामचन्द्र के सुन वचन, गीले करके नैन।
वीर विभीषण प्रेम से, लगे इस तरह कहन ॥

हे नाथ अवश्य सब माताओं का, हृदय शान्त करना चाहिये।
पर एक हमारी विनती पर भी, ध्यान जरा धरना चाहिये ॥
कुल सोलह दिन तक और यहाँ, रहकर पावन स्थान करो।
बस यही कृपा कर आज हमारे, ऊपर करुणा दान करो ॥
मैं अवधपुरी में लंका के, कुछ शिल्पकार भिजवाता हूँ।
मानिन्द लङ्क के अवधपुरी, पन्द्रह दिन में बनवाता हूँ ॥
फिर बैठ के पुष्प विमान मे, आप वहाँ जाते शोभायेंगे।
और पीछे पीछे चरणों के सेवक, भी सारे जायेंगे ॥

दोहा

लङ्कपति की बात ये, लई राम ने मान।
नारद जी ने सब पता, दिया अयोध्या आन ॥

लङ्का के मानिन्द अवधपुरी, पन्द्रह दिन में बनवाई है।
श्री रामचन्द्र के आने से, पहले पहले सजवाई है ॥

इस तरफ राम ने भी अपना, पुष्पक विमान सजाया है।
बहु जनसमूह श्री रामचन्द्र संग, अवधपुरी सें आया है ॥

दोहा

स्वागत करने को गया, जनसमूह हर्षाय ।
आ रहे राम यह खबर सुन फूला नहीं समाय ॥

— —

अयोध्या

समस्त प्रजा का आनन्द मनाना

रामचन्द्र के दर्शन करने, चले अवध के नरनारी ।
कूचे गलियों बाजारों मे, नवल सजाई फुलवारी ॥टेक॥

बजे नफीरी अति सुरीली, खड़काये फिर नक्कारा ।
कोई बजावे सितार व ढोलक, किसी पै खंजरी इखतारा ॥
गधर्व गावें टोडी भैरों राग है धुरपत झपतारी ॥१॥
रावण मारा लङ्का जीती, मित्र को फिर राज दिया ।
तख्त नशीन विभीषण करके, लङ्का का सिर ताज दिया ॥
सब दुष्टों को रण मे मारा, देव हुए आज्ञाकारी ॥३॥
आगे आगे भरत जारहे, फूल माला लटके कर मे ।
सूर्यवंशी झण्डा लहरा, लपट भरी गुल केसर मे ॥
"शुक्ल" ध्यान कर देखो, आरही रामचन्द्र की असवारी ॥४॥

दोहा

जय जय नाद करते हुए, आ पहुंचे विमान ।
वर्णन नहीं कुछ कर सके, समझो छटा महान ॥

उतारा पुष्पक विमान को, झट बढ़े भरत महाराय।
रामचन्द्र ने भरत को, हृदय लिया लगाय ॥

उस समय जो आनन्द छाया था, यहां कहने में नहीं आया है।
सानन्द पहुच कर महलों में, माता को शीश निवाया है॥
अद्‌भुत छटा देख माताओं का, हृदय कमल प्रकाश हुआ।
मानिन्द स्वर्ग के अवधपुरी में, दृश्य एक यह खास हुआ॥
जनक सुता ने कौशल्या के, चरणों मे सिर डार दिया।
निज गले लगा वैदेही को, सासु ने अतितर प्यार किया॥
कभी पुत्रों का शीश चूम रही, कभी आगे पीछे फिरती है।
कभी वैशल्या पै प्रेम भाव से, बूंद हर्ष की गिरती है॥
मिलजुल करके सब माताऐं, लक्ष्मण का घाव निहार रही।
दुख-सुख की बाते पूछ-पूछ, तन मन धन सब कुछ वार रही।
बाजार गली कूंचा-कूंचा, सब जगह यह चर्चा भारी है॥
और राम लखन वैदेही पर, बच्चा-बच्चा बलिहारी है।
श्री भरत भूप ने कैदी जन सब, रियासत भर के छोड दिये॥
और लिये गरीबों के दने को, दान खजाने खोल दिये।
सब सेठ नगर के थाल मोतियों के, भर-भर के लाते हैं॥
चरणों मे मस्तक झुका-झुका खुश हो कर भेट चढ़ाते हैं॥

दोहा

पुण्यवान जहॉ पर वहॉ, हर्षानन्द अपार॥
प्रेमभाव से मृदु वचन, सब जन रहे उचार॥

गाना प्रजागण का आनन्द मनाना

श्री रघुवर अयोध्या मे, आज तशरीफ लाये हैं
आश्विन शुक्ला रवि द्वितिया, शोक सब के भुलाये हैं॥

चले हैं दर्श करने को, अयोध्या के सभी वासी।
सुधी अपनी है विसराई, नहीं फूले समाये है॥
महकते है गली कूंचे, महक घर-घर मे फैली है।
सजे अद्भुत दरो दिवार, मनोहर दृश्य लाये हैं॥
सभा में स्तम्भ स्वर्णों के, झलक रत्नों की न्यारी है।
जिधर देखो मकानों पर, दिये घी के जलाये हैं॥
मगन मन मे हैं मातायें, देख सिया राम की जोड़ी।
भरत और शत्रुघ्न ने भी, चरणों में सिर झुकाये हैं॥
छवि उस वक्त की कोई, "शुक्ल" कुछ कह नहीं सकता।
क्या शक्ति खनी की यहाँ, देवगण भी लजाये है॥

—**—

भरत मिलन

दोहा

जय जयकारो के शब्द, गूंज रहे चहु ओर।
भरत वीर श्रीराम से, यूं बोले कर जोड़॥

दोहा (भरत)

अब तो भार गरीब के, सिर से लेवो उतार।
राज पाट ये आपका, लेवो सभी सम्भार

धन्य-धन्य लक्ष्मण जी तुमको, धन्य हजारो वारी है।
जिसने जाये धन्य सुमित्रा, माता एक हमारी है॥
केवल एक निर्भाग्य मनुष्य मैं, दुष्कर्मों का मारा हूं।
अब तो सेवक को क्षमा करो, चरणों का दास तुम्हारा हूं॥

दोहा

रामचन्द्र ने भरत को, प्रेम से गले लगाय।
बैठा कर फिर पास मे, यों बोले समझाय ॥

दोहा (राम)

मालिक हो कर कर रहे, कैसी भोली बात।
पूर्ण तैंने ही किया, वचन पिता का भ्रात ॥

मिल आज परस्पर बैठे हैं, यह कृपा तुम्हारी ही तो है।
कौशल्या को वहाँ भिजवाना, यह प्रेम तुम्हारा ही तो है॥
धन्य कैकेयी मात जिन्हों के, ऐसे लायक पुत्र हुए।
रघुवंशिन के मणि मुकुट, तुम ही इक पुत्र सुपुत्र हुए॥

दोहा

प्रेम भाव से इधर यह, मिल रहे चारों वीर।
माताओ के भी उधर, बहे प्रेम का नीर॥

बार बार माताओं को, कुल वधुवें शीश निवाती हैं।
हम जैसी पुत्रवती हो तुम, यों सासु आशीश सुनाती हैं॥
अब निवृत्त हो इन कामों से फिर, मांगलिक एक सभा लगी।
और याचक गण दुखिया प्राणी, क्या सबकी किस्मत आन जगी॥

दोहा

राम लखन भाई भरत, और शत्रुघ्न जान।
जनक सुता, वहाँ पांचवी, शोभ रही गुणवान॥

जनता चहुँ ओर थी खड़ी हुई, जिसका था कुछ शुम्मार नहीं।
था फर्समणि और रत्नो का, वाकी शोभा का पार नहीं॥

मीठे स्वर से कुछ नर नारी, मिल जुल के गायन उचार रहे ।
सुन सुनयह वाणी मस्त हुए, शुभ भाव से जन्म सुधार रहे ॥

गन्धर्वों का उपदेशप्रद गाना

नर नारी सफल अवतार करो, सुनो ध्यान से ।
शिक्षा विचार करो ॥ टेक॥

श्रीराम सुपुत्र कहाया है,
जिन वचन पिता का निभाया है ।
कर्त्तव्य जो है दिखलाया है,
अनुकरण सभी नर नार करो ॥१॥

सुमित्रा जैसी माई बनो,
और लक्ष्मण जैसे भाई बनो ।
सब भाई के भाई सहाई बनो,
सब क्षीर नीर सम प्यार करो ॥२॥

सती सीता की महिमा अगाध कही,
जिसने निज आत्म साध लई ।
सती धर्म की महिमा याद रही,
पति धर्म पै सब न्योछावर करो ॥३॥

सब राज सुखों को त्याग दिया,
और वन मे पति का साथ दिया ।
नहीं छोड़ा जिन रघुनाथ पिया,
सत्य धर्म पै तन निसार करो ॥४॥

लक्ष्मण ने वन मे सेवा करी,
श्रीराम की आज्ञा शीश धरी ।

मित्र विभीषण की विपदा हरी,
तुम भी निज हृदय उदार करो ॥५॥

सत्य पुरुषों का अनुकरण करो,
जिन धर्म की आकर शरणपरो।

सब ऐसे ही पूर्ण प्रण करो,
दुखियों पर करुणा अपार करो ॥६॥

हनुमत से सेवक ना पावेंगे,
जो सत्य पै रक्त बहावेंगे।

स्वामी हित कष्ट उठावेंगे,
ऐसे सब पर उपकार करो ॥७॥

कुसंग विभीषण छोड़ दिया,
सत्यवादी का सग जोड़ लिया।

अन्याय से निज मन मोड़ लिया,
तुम सज्जन जन से प्यार करो ॥८॥

सच्चे सुग्रीव जैसे मित्र यहाँ,
और ऐसी भक्ति पवित्र कहाँ।

अब कलयुगी मित्र विचित्र कहाँ,
ऐसों का मत विश्वास करो ॥९॥

तुम भी राम लखन से योग्य बनो,
इस भारत का सब रोग हनो।

सतयुग जैसे धर्मी बनो,
शुभ ध्यान शुक्ल, सुखकार करो ॥१०॥

(समाप्तोऽय रामायणस्य तृतीयो भाग)

ओ३म् शान्ति: शान्तिः शान्ति:।

॥ ॐ श्री वीतरागाय नमः ॥

रामायण

चतुर्थ भाग

भरत वैराग्य

※ मंगलाचरण ※

दोहा—जिन वाणी नित्य दाहिने, अरिहन्त सिद्ध जगदीश ।
परमेष्ठी रक्षा करे, त्रिपद धार मुनीश ॥

गाना मंगल—तर्ज, राजा यौवन वरसन लागे ।

अब श्री जिनके गुण गावो ।

शुद्ध मन से निश दिन जो सुमरत, तन मन हर्षत सब रोम रोम ।
करते नित्य जय जय कार शब्द, है तीन लोक में धूम ॥
कर कर्मनाश पाते प्रकाश, चरणो के दास ले मोक्ष वास ।
इन्द्रगण मिल मङ्गल गावत, चरणों मे मस्तक नाय नाय ॥
नित्य नृत्य करें ध्वनि लाय लाय, पूजत भव सुरपति आए आए ।
क्या कथन करे वक्ता, शुभ 'शुक्ल' ध्यान सब ध्यावो ।

दोहा—सुनो भव्य जन जगत् के, जरा लगा कर कान ।
अवध पुरी में राम ने, किया वहुत कुछ दान ॥

भाग तीसरे मे रावण का, झगडा सभी समाप्त हुआ ।
यश कीर्ति राम की प्रगट हुई, रावण का पाप पर्याप्त हुआ ॥

आज अयोध्या मे सारे चहुँ, ओर से आनन्द बरस रहा।
नर नारी क्या बच्चा-बच्चा, श्री राम के दर्श को तरस रहा॥

दोहा—गये राम वनवास में, और आने पर्यन्त।
जो भी कुछ हुवा देखने, जमा हुवे एकान्त॥

नाट्यशाला मे लंका का, जो महायुद्ध था दिखलाया।
शक्ति लक्ष्मण की चक्र सुदर्शन, दृश्य भयानक बतलाया॥
जिस समय नाट्यशाला मे था, विमान उठाया रावण का।
श्मशान यात्रा समय गायन, का दृश्य था एक सुनावन का॥

गायन—दशकंधर को इस कुव्यसन ने, मुर्दार कर दिया।
कर्मों ने दोनों जहाँ में, गुनहागार कर दिया॥
यह त्रिखंडी राजनपति, रत्नों का ताज था।
सिरताज गिराकर धूली पर, नादार कर दिया॥
डरते थे योद्धे बड़े-बड़े, ऐसा प्रताप था।
यह जिस्म बड़ा बलवान् था, बेकार कर दिया॥
इसके थीं हजारों राणियाँ, आया न फिर सबर।
महाराणियों को कर्मों ने, निराधार कर दिया॥
कर्मों के आगे सूर्य चन्द्र, तारे घूमते।
मुख रूप चन्द्र जैसा था, सब ख्वार कर दिया॥
इस महापुरुष के मरने का, अफसोस है हमें।
हाय शूरवीर पे होनी ने, क्या वार कर दिया॥
फरमाया श्री जिनराज ने, विषय विष से खराब है।
इस कामदेव ने लाखो का, सुख छार कर दिया॥
स्पर्शेन्द्रिय के वश से हस्ती, फंसता कैद में।
और घ्राण विषय ने, भ्रमर को बेजार कर दिया॥
रसना के वश मे होकर, मछली देती प्राणों को।

और कर्ण राग ने तीर, हिरण के पार कर दिया ॥
जलते पतंग दीपक मे, नेत्रों के विषय से ।
इन पांचों विषयों ने, दु:खी ससार कर दिया ॥
ऐसी इच्छा ना करना कोई, नरनारी भूलकर ।
यह गायन सुना कर सबको, खबरदार कर दिया ॥
विषयों से मन हटा कर, अब शुक्ल ध्यान कर ।
श्री जिन की शिक्षा ने समूह. जन पार कर दिया ॥

दोहा—देख देख जनता हुई, आश्चर्य में लीन ।
हल कर्मी जन के हुवे, भाव योग शुद्ध तीन ॥

नौ रात्री ये खेल रहा, नवराते वही मनाते हैं ।
रावण मारा था वही दशहरा, दशवें दिन दिखलाते है ॥
यही राम-रावण लीला का खेल, एक ऐतिहासिक है ।
संसार में कोई निज गुण का, और कोई परगुण का आशिक है ॥

दोहा—विरक्त भरत पर और भी, पड़ा प्रभाव विशेष ।
सो भी सुनिये ध्यान से, बचा अगाड़ी शेष ॥

दोहा—पुण्यवान् का पुण्य सब, रहे सदा निज पास ।
महापुरुष जहाँ पर रहे, होता वहा प्रकाश ॥

मल रहित शशी को प्रेम से, सब नर नारी स्वयं निहारते है ।
श्रीराम को ऐसे देख रहे, दृष्टि न पीछे निवारते है ॥
उदारचित्त ने उसी समय, दो प्रेम के नेत्र घुमाए हैं ।
मानो कि सब की आखों मे, सुरमे की तरह समाए हैं ॥
दर्शन करता करता भानु, अस्ताचल पर जा पहुंचा ।
था नियम अनादि पूर्ण करना, यह भी कुछ दिल से सोचा ॥
की रामचन्द्र ने सन्ध्या करने को, निज आसन जमा लिया ।
और लिये घड़ी दो के मानो, निर्ग्रन्थ का बाना बनाय लिया ॥

दोहा—निवृत्त हो निज कर्म से, मित्र गणों के साथ।
सैर करन को चल दिये, दीनबन्धु रघुनाथ॥

सब दृश्य अवध का देख-देख, मन मे मुस्काते जाते थे।
मार्ग मे मिलते नर नारी, चरणों में शीश झुकाते थे॥
नर-नारी क्या पशु-पक्षी सब, प्रजा में था आनन्द अमन।
यह हाल देख मन मग्न हुआ फ़िर, तर्फ महल को किया गमन॥
प्रबन्ध भरत का देख-देख कर, महा प्रसन्न श्रीराम हुए।
जहां चरण धरे इस महा पुरुष ने, सिद्ध सभी के काम हुए॥
फिर सब ने ही आराम किया, निज शयन गृह मे जाकर के।
श्री भरत विचार मे जा बैठे, आसन पर ध्यान लगा कर के॥

दोहा—सब अनित्य संसार मे, भाषा श्री जिनराज।
बिन त्यागे संसार के, सरे न आत्म काज॥

संसार समुद्र ऐसा है, जिसका न आदि अन्त कहीं।
अवतार पुरुष भी छोड़ गये, जब देखा इस मे तन्त नहीं॥
जो भी कुछ रचना दुनिया मे, सब प्रकृति की माया है।
और नाशवान यह हाड मास, लहू चमड़े की काया है॥

गाना (भरत विचार मे)

कर्मों के सारे, देखो, कैसे है जाल जी।
जो निकला इस जंजाल से, वो ही निहाल जी॥ टेक॥
एक मृत्युलोक क्या स्वर्ग नर्क, सारे ही लोक मे।
इस मोह कर्म का शासन है, फैला विशाल जी॥१॥
एक सिवा श्री जिन देव. न कोई भी पा सका।
इस मोह कर्म की चाले हैं, गहरा कमाल जी॥२॥
फिरते हजारों गुप्तचर, एक-एक चेतन पर।
विषयों से बचना आत्म को, बेशक मुहाल जी॥३॥

यह दुनिया भूल भुलैया, इसका जेल खाना है।
त्रिखण्डी क्या चक्री सुर भी होते बेहाल जी ॥ ४ ॥
अपराधी पर अपराधी हम जैसे अधिकारी है।
इस उल्ट-पुल्ट से टकरा, हम होये पामाल जी ॥ ५ ॥
फसते स्वय यह जीव जैसे मकड़ी जाल मे।
विन अरिहन्त न हुआ हल टेढ़ा सवाल जी ॥ ६ ॥
यदि चूका नर तन पाकर के तो फिर पछताऊगा।
मोह के वश कछुवे पर जैसे छाया शेवाल जी ॥ ७ ॥
निश्चय, शुक्ल, मुझ को हुआ दुनिया सब झूठी है।
अब तो श्री जिनवर के चरणों मे ख्याल जी ॥ ८ ॥

दोहा—इसी तरह से ध्यान में, हो आया प्रभात।
सेवक जन आ सामने, खडे जोड़ कर हाथ ॥

हाथ एक के दातुन तो, दूजे के कर मे झारी है।
फूलों की माला लिये खड़ा, और कोई पान सुपारी है।
अवधेश को जब मालूम हुआ, और देखा नयन उठा करके ॥
अति नम्रता से सेवक जन को, यों बोले समझा करके।

दोहा—अय भाई अब तो हमे, रही न इनकी प्यास।
आज्ञा लेने को चलू, रामचन्द्र के पास ॥

सेवक स्वामी का भ्रम सभी, अब हृदय से काफूर हुआ।
और राज खजाने महलों से भी, सौ सौ योजन दूर हुआ ॥
अब तो हम सारे भ्रम छोड़, कर्मो से युद्ध मचावेंगे।
स्वतन्त्र आत्मा करने को, श्री जिन दीक्षा ले जावेंगे ॥

दोहा- वृत्तान्त सभी यह भृत्य ने, कहा राम से जाय।
उसी समय आ भरत से, बोले गले लगाय ॥

आज भ्रात जी अब तलक, मिले न मुझको आये।
या पाठ आप करने लगे, बैठे आसन लाए॥

दातुन मंजन भी किया नहीं, सेवक सम्मुख सब खड़े हुवे।
क्या शय्या पर भी नहीं सोए, सब फूल खिले ही पड़े हुवे॥
शीघ्र करो स्नान समय, दरबार का होने वाला है।
सूर्य है कितना चढ़ा हुआ, बादल भी काला काला है॥

दोहा—इन सब बातों से हुई, घृणा मुझको आज।
अब तो आज्ञा दीजिये, सारूं आत्म काज॥

यह मंजन और स्नान नहीं, आत्म निर्मल कर सकते हैं।
सम ज्ञान दर्श चारित्र तप, इसके मल को हर सकते हैं॥
अब राजमहल यह फूलों की, शय्या नहीं मन को भाती है।
यह नजर मुझे सारी दुनियां, शूलों के मानिन्द आती है॥
चढ़ गया मंजीठी रंग कभी, यह नहीं उतरने वाला है।
चाहे एक कहो या लाख भरत, संयम व्रत लेने वाला है॥
कुछ सेवा न कर सका आपकी, क्षमा दोष फरमा दीजे।
संसार समुद्र से बेड़ा यह, पार मेरा करवा दीजे॥

दोहा—कैसी भोली बात यह, लगा करन तू वीर।
वचन विरह का सुनत ही, लगा कलेजे तीर॥

अभी करो साधन घर में, मुनिव्रत निशंक फिर ले जाना।
पर दुख विरह का इस हालत में, मुझे न भाई दे जाना॥
वर्ष हुए चौदह तेरे दर्शन के, लिए तरसता था।
और लिए तुम्हारे मिलने को, नयनों से नीर बरसता था॥
अब तक आज्ञा पाली तुमने, अब भी कहना स्वीकार करो।
मानिन्द मीन के तड़प रहा, मेरे मन का सन्ताप हरो॥

सुग्रीव आदि भी आ पहुँचे, सब तेरी तर्फ निहार रहे।
यह ख्याल अभी परित्याग करो, दिल में क्या सोच विचार रहे॥

दोहा—जो कुछ मुख से कह चुका, है पत्थर की लीक।
अब ज्यादा मोह आपका, भ्रात नहीं है ठीक॥

जिसको समझे तुम भरत वीर, यह भाई अब वह भरत नहीं।
दुनिया में फंसने वाली कोई, मानूंगा मैं शरत नहीं॥
जिसने था मुझे भुला रक्खा, उस मोह शत्रु का नाश हुआ।
सर्वज्ञ देव की कृपा से अब, अनुभव ज्ञान प्रकाश हुआ॥

गाना (भरत और राम)

राम—फिर हम तुमको समझाते हैं, संयम न वीर सुखाला है।
तू राज महल में फूलों की, शय्या पर सोने वाला है॥
भ०—जिनको दुनिया कि ख्वाहिश, विषय सुख उनको लगतावाला है।
पर मुझे नजर आता भव भव में, दुःख यह देने वाला है॥

राम—क्षुधातृषा सर्दी गर्मी, आदि दुख वीरन भारी है।
आगार नहीं कोई जिसमें, दर दर का बने भिखारी है॥
भ०—जब तक घृणा जिसको इससे, तो समझो दीर्घ बीमारी है।
आत्म के निर्मल करने को, यही साधन हितकारी है॥

रा०—जब रोग शोक कोई आन लगा, तो फिर क्या यत्न बनाओगे।
आयुपर्यन्त अकेले ही कैसे, वोह समय बिताओगे॥

भ०—बस यही भ्रम है दुनिया में, जिसने सबको भर्माया है।
यह अमर आत्मा ज्ञानमयी, बाकी पुद्गल की माया है॥

रा०—हमने भी देखे मस्त बहुत, पर आपसा नहीं जमाने में।
दिल में कोई सोच विचार करो. क्या लोगे हमें सताने में॥

भ०—जी हां वह नकली मस्त सभी, जो आते नजर जमाने में।
हम जिनवाणी पर मस्त हुवे, क्या लोगे हमें फँसाने में॥

दोहा—जो कुछ इच्छा आपकी, हमें वही स्वीकार।
किन्तु आप व्यवहार का, कुछ तो करें विचार॥

पहिले यह हृदय सर्द करो जो, मुख्य कर्तव्य तुम्हारा है।
कुछ दिन के बाद चले जाना, फिर कोई न वर्जन हारा है॥
स्वयमेव आप हम उत्सव से दीक्षा तुम्हे दिलावेंगे।
वह धन्य दिवस होगा जिस दिन हम भी इस पथ पर आवेंगे॥

दोहा—भाई मुझ को नहीं रहा किसी वस्तु से राग।
समय समय पर बढ़ रहा कमरूप विष बाग॥

सर्वज्ञ देव ने निश्चय से, पहले व्यवहार बताया है।
क्योंकि इसके बर्ताव बिना, न मोक्ष किसी ने पाया है॥
बस आज्ञा तो मिल गई हमे, अब आपका कहना करते हैं।
और स्वल्प दिनों के लिये भ्रात का, वचन शीश पर धरते हैं॥

दोहा—एक दिन सब रण वास की, सीता आदिक नार।
सैर करन को चल दई, भरतेश्वर के लार॥

था निर्मल नीर सरोवर में, जल क्रीड़ा सभी लगीं करने।
कई नौकाओं पर घूमरहीं, कई लगी भुजाओं से तरने॥
मदमस्त हुआ सहसा हस्ती, फिरता बन्धन से बाहिर हुआ।
खूर्न। हाथी को देख भगे, चहु ओर से हा हा कार हुआ।
जो मिला सूंड से पकड़ २ कर, उसे फेंकता जाता था॥
तब देख-देख यह हालत नर, नारी समुह घबराता था॥
जब पहुँचा पास सरोवर के, तो सभी रानिया घबराई।
बस समझ लिया कि आज हमारा, काल आगया चिल्लाई॥

दोहा—देकर सब को धैर्य बढ़े भरत बलवीर।
हाथी सम्मुख भरत के आया जैसे तीर॥

महाबली क्षत्रिय योधा भी बस, खडा वहां बेखोफ रहा।
वह हस्ती सन्मुख आन भरत को, देख-देख कुछ सोच रहा॥
पुण्योदय से उस समय करी को जाति स्मरण ज्ञान हुआ।
और पूर्व जन्म के हाल देख कर, दूर सभी अज्ञान हुआ॥
बकरी का जैसे कान पकड़, पाली आगे कर लेता है।
हस्ती भी ऐसे शान्त हुआ, अवधेश को कुछ नहीं कहता है॥
इतने में योद्धा आ पहुंचे, जो कि गजराज के पीछे थे।
कई बाजी गज पर थे सवार कई विकट गाड़ी कई नीचे थे॥

शेर—शान्त जब आकर लखा गजराज को श्रीराम ने।
शीतल स्वभावी बन गया, कैसे भरत के सामने॥

जन्मांतरों को देख कर हस्ती किया विचार।
पशुयोनि मैंने लई मनुष्य जन्म को हार॥

उस भुवनालंकृत हस्ती का, लाकर गजशाला में छोड दिया।
और सम दम खम को धार हृदय, मन कौतूहल से मोड़ लिया॥
कुल भूषण और देश भूषण, उस तर्फ बाग में आकर के।
है समवसरे केवल ज्ञानी, दई खबर भृत्य ने जाकर के॥

दोहा—सुन कर माली के वचन, मन में खुशी अपार।
दिये राम ने भृत्य को, आभूषण सभी उतार॥

समृद्धिवान हुआ माली, मालीपन उसका दूर हुआ।
अब तारण तरण जहाज आगये, सभी जगह मशहूर हुआ॥
यहां सहित सकल परिवार राम ने, जाकर दर्शन पाए हैं।
नर नारी क्या बच्चे बच्चे, सब बाग की ओर सिधाए हैं॥

दोहा—धन्य आज का दिवस यह, करें सभी गुण ग्राम।
जनता के आगे खडे, सीतापति श्री राम॥

जब लगी ज्ञान वर्षा होने, श्रोता जन अमृत पीने लगे।
विषयों से चित्त हटा कर के, वैराग्य भाव मे सीने लगे॥
और पांचों अंग निमा कर के, मुनियों के चरण मे पडते हैं।
सम्यकत्व बीज बोने के लिये, उपदेश मुनि यों करते हैं॥

दोहा—गतागति मे जीव को, हुआ अनादि काल।
बना नरेन्द्र सुर कभी, समृद्धिवान कंगाल॥

मन वाणी और काय से, कर्म शुभाशुभ होय।
वैसा ही सुख दुःख मिले, दिया जिस तरह बोय॥
वाणी काया से प्रथम, मन की लहरे थाम।
मन जीते बिन किस तरह, बने जीव का काम॥

महा सागर की लहरों से, मन की लहरें नही कमती हैं।
वह एक रूप में रहे सदा, यह नाना रंग बदलती है॥
बाल्यकाल पर मुग्ध कभी, मन कभी जवानी पर मरता।
जरा काल को रोगग्रस्त लख, मन प्रतप्त आहे भरता॥
कभी देख निज समृद्धि को, मन फूला नहीं समाता है।
सुवर्ण भवन में वास करूं, कभी ऐसा ध्यान जमाता है॥
कभी निवृत्त बनकर औरों को, सन्तोष विशाल दिखाता है।
अनर्थ का कारण जान इसे, कभी अपने को समझाता है।
दुःखी जनों को देख कभी, उपहास्य उन्हों का करता है॥
और दीन दुःखी को देख कभी, मन करुणा अद्भुत करता है।
विद्याधर सुर बनने की कभी, इच्छा इस मन को होती है॥
कभी कर्मबन्ध को देख तेरी, वह पूर्व धारणा मोती है।
विषयासक्त कभी मन होकर, चाह स्वर्ग की करता है॥

कई धार धार करके कुभेष, निज को ऋषि मुनि कहलाने लगे।
कन्द-मूल तो दूर रहा मद मांस, तलक भी खाने लगे॥
कई तापस बन कर अग्नि से, तप तप कर पाप कमाने लगे।
अज्ञान कष्ट खुद भोग भोग, धूनी मे जीव जलाने लगे॥

दोहा – कायर जन होते सदा, महा ढोंग मे लीन।
मिथ्यावश इस जीव की, होती है मति क्षीण॥

छन्द—प्रह्लादन सुप्रभ दो, तापस की वृत्ति पाल कर।
चन्द्रादय सूर्योदय, अगले जन्म हुवे आन कर॥
चन्द्रोदय का जन्म फिर, जन्मान्तर से गजपुर हुआ।
चन्द्रलेखा मात नृप भानु का, कुलंकर सुत हुआ॥
गजपुर मे ही विश्व भूति के, एक अग्निकुंडा नार है।
सूर्योदय जन्मा वहां, श्रुतिरति नाम कुमार है॥
नृप पद कुलंकर को मिला, नीति मे रहते थे मग्न।
सैर के लिये भूपति एक रोज, बन मे किया गमन॥

दोहा—विराजमान थे बाग मे, ज्ञानी मुनि महान्।
नमस्कार कर भूपति, बोले मधुर जबान॥
उपदेश कुछ सत्यधर्म का, भाषो दीना नाथ।
क्या सम्बन्ध है कर्म का, जीवात्म के साथ॥

दोहा—इस संसार समुद्र का, कहीं न आदि अन्त।
जैसे तिल में तैल यों, आत्म का वृत्तान्त॥

तेली जैसे यन्त्र से, खल तेल अलग कर देता है।
बस इसी तरह शुभ साधन से,आत्म निर्मल कर लेता है।
फूल से इतर पृथक होकर, फिर फूल नहीं बन सकता है॥
या यों समझे कि दग्ध बीज का, अंकुर नहीं जम सकता है।

जब देखा भरत नरेश्वर को, हाथी का मद सब दूर हुआ।
और बिना किये पुरुषार्थ ही, मद हस्ती का काफूर हुआ॥

दोहा—प्रश्न राम का सुनत ही, मुनिजन के सिर मौर।
ब्रह्म ज्ञानी कहने लगे, सुनो सभी कर गौर॥

दोहा—श्री ऋषभ देव भगवान ने, त्यागा जब संसार।
देखा देखी होगये, संग मुनि चार हजार॥

संग मे हो तैयार सभी ने, पांच महाव्रत धार लिये।
और रात्रि भोजन त्याग पवित्र, सब ने शुद्ध विचार किये॥
पांच सुमति और तीन गुप्ति को, धार के शुद्ध व्यवहार किये।
तप जप संयम में लीन हुए, सब पाप अठारह टार दिये॥

दोहा—तब तक सारे शूरमा, जब तक जुडे न जग।
किन्तु सैकड़ों मे कोई, योधा डटे निश्शक॥

कर्म अरि के सम्मुख जाकर, महा पुरुष ही अडते हैं।
कायर दुर्बल का काम नहीं, जो पद पद पर गिर पडते हैं॥
एक एक के सम्मुख जब, बाईस परिषह पडने लगे।
वीरों को लाली चढ़ने लगी, दुर्बल कायर घबराने लगे॥
मुँहपत्ती मुख से उतार दई, कई लगे पाखंड रचाने को।
कोई क्षुरमुंडित कोई नग्न जटा, धर लग गये अलख जगाने को॥
फिर तीन सौ त्रेसठ पाखंडों का, धर्म उन्हों से जारी हुआ।
जो फंसा इन्हों के फंदे मे, सो भी कर्मों मे भारी हुआ॥
कई जड़ पूजक बन कर वोह, मंदिर मठ लगे बनाने को।
वर्ण गन्ध रस विषय स्पर्शों को, वहां लगे सजाने को॥
अन्ध श्रद्धालु पक्षपात, मिथ्यात्व मे ऐसे लीन हुये।
लगे नाचने भक्ति वश, हिंसक बने बुद्धि मलीन हुये॥

सर्वज्ञ देव ने सत्य कहा, मिथ्यात्व महा विष भारा है।
मिथ्यात्व की करणी ने आत्म, ससार कूप मे डारा है॥
सम्यक् ज्ञान दर्शन चरित्र, बिन आत्म दुःख पाता है।
कर्म सग हो मूढ जीव. संसार का चक्र लगाता है॥

जैसा भी कारण मिले, वैसा ही कार्य होय।
कुसगति से आत्मा, आत्म गुण दे खोय॥
मुनि जन के उपदेश से, राजा बना सुपात्र।
रानी थी भूपाल की, व्यभिचारिणी कुपात्र॥
रानी का कुराग था, श्रुति रति के साथ।
स्त्री के प्रपंच को, नही समझा नर नाथ॥

नहीं समझा नर नाथ और, यह खोटी सगति ऐसी है।
जिसके समान जीवात्म का न दुनिया मे कोई द्वेषी है॥
शुद्ध आत्म ज्ञान विना विद्या, चाहे पढ़ जावे कोई कैसी है।
मानिन्द दर्वी के विद्वान् को, पशु कहो चाहे वहसी है॥

दौड़—कुलंकर नृप घर आया, भेद रानी ने सुन पाया।
लगी दिल मे घबराने
श्रीदामा पाप छिपाने कों, यो लगी अक्ल दौड़ाने॥

दोहा—पाप छिपाने के लिये, करते कपट अपार।
इस कारण अज्ञान से, रुले जीव संसार॥

यह भ्रम पड़ गया रानी को, नृप को ज्ञानी की संगति है।
यदि इसे मिल गया भेद सभी, तो मेरी बने विषम गति है॥
ऐसे ज्ञानी गुरु के द्वारा, यदि इसे पता लग जायेगा।
तो श्रुति रति से भी पहिले, मुझ पर आपत्ति लायेगा॥

दोहा—अच्छा है कि प्रथम ही, देऊ इसको मार।
नहीं तो यह मेरा कभी, देगा चर्म उतार॥

दोहा—धर्म कथन द्विविध कहा, तीर्थंकर भगवान्।
साधन कर यह आत्मा, पावे पद निर्वान॥

सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र, बिन कुछ भी नहीं बन सकता है।
और कर्मरूप शत्रु से बिन, शक्ति रण नहीं ठन सकता है।
बस शक्तिवान ही कर सकते हैं, आत्म का कल्याण सदा।
शुभ शक्तिहीन मिथ्या धर्मी, कर्मों से पृथक् न होय कदा॥

दोहा—विना ज्ञान करनी वृथा, केवल कष्ट अनेक।
उनमे से व्यक्ति प्रगट तुम्हे बतावे एक॥
तापस इस बन खड मे, धूनी रहा जलाय।
उस मे एक भुजंग है, देवो जल्द बचाय॥

उपदेश फेर सुनना बाकी, पहिले उसका सताप हरो।
है पिछले भव का पिता तुम्हारा, काम शीघ्र यह आप करो॥
जहा दया नहीं वहां धर्म कहा, साराश यही सब धर्मों का।
नव तत्त्वका जिनको ज्ञान नहीं, वहां नित्यप्रति बन्धन कर्मों का॥

दोहा—तापस के डेरे पर गये, उस समय भूपाल।
धूनी से उस काष्ट को, देखा बाहिर निकाल॥

जब भृत्य से लकड़ पड़वाया तो, निकला एक भुजग बली।
है धन्य मुनिका कथन जो इसकी, जान बची थी घड़ी भली॥
धिक् ऐसी तापस वृत्ति पर, जो निश दिन पाप कमाते हैं।
फिर साधु पन का ढोंग बना कर, वृथा ही काल गंवाते है॥

दोहा—ज्ञान विना करनी सभी, कर्म बन्ध का काम।
भ्रमण करें ससार मे, वृथा जला कर चाम॥
आज्ञा ले मुनि चल दिये, लगा धर्म की लाग।
देख हाल पीछे हुआ, भूपति का वैराग्य॥

दोहा—रुल कर के संसार में, इभ घराने आय।
विनोद सेठ का सुत हुआ, नाम धनद सुखदाय॥

धनद का सुत आ रमण हुआ, और लक्ष्मी जिसकी माता है।
पूर्ण सुख साज समाज मिला, और भूषण नाम कहाता है॥
भूषण को स्त्री परणाई बत्तीस, थी इभ घराने की।
शक्ति न लेखिनी जिह्वा मे, सारे शुभ गुण कथ गाने की॥

दोहा—श्रीधर ऋषि महान् ने, पाया केवल ज्ञान।
उत्सव करने देवता, लगे उधर को जान॥

भूषण भी चल दिया, श्री मुनिराज के दर्शन पाने को।
पर काल चली सम्मुख आया, आगे धर एक बहाने को॥
विष धर एक भुजङ्ग बली ने, उछल पैर पर डङ्क धरा।
सब नस नस में विष गया फैल, भूषण अन्तमे हा तग मरा॥

दोहा—शुभ परिणामों मे तजे, सेठ पुत्र ने प्राण।
आगे जहां पैदा हुआ, सुनो लगाकर कान॥

विदेह क्षेत्र में रत्नपुरी, नगरी थी स्वर्ग समानी।
अचल नाम था चक्रवर्ति, हिरणी तिसकी पटरानी॥
जन्मा आन प्रियदर्शन यहां, नाम दिया सुखदानी।
बालपने से प्रेम धर्म मे, आगे सुनो कहानी॥
दौड़—बारह व्रत धारण कीने, दान दया मे चित दीने।
पौषधोपवास व्रत करके॥
आयु पूर्ण कर पैदा हुआ, ब्रह्म स्वर्ग में जाकर के॥
दोहा—दूजा भाई धनद भी, पोतनपुर मे जाय।
शकुनाङ्गी मुख्य विप्र के, पुत्र जन्मा आय॥

मृदुमति नाम रक्खा इसका, यहां खोटी संगत होने लगी।
अविनीत समझ पितु ने काढ़ा, पर माता मोह में रोने लगी॥

इस कारण फिर लाये घर में, थे सातो व्यसन धूर्त भारी।
मुनि महाराज की मिली उसे, फिर सगति थी अति सुखकारी॥

दोहा—संयम व्रत धारण किया, किन्तु सहित प्रपञ्च।
दर्जा कैसे पा सके, कहो रत्न का कंच॥

पञ्चम देवलोक पहुचे, पर विराधक पदवी पाकर के।
तिर्यंच गति का बन्ध पड़ा, वहा माया और कमाकर के॥
पंचम दिव को छाड़ गिरी, वैताड़ मे यह गजराज हुआ।
उस तर्फ अमरपद तज प्रिय दर्शन, आन भरत महाराज हुआ॥

उस हस्ती को पकड़ भूप ने, गजशाला बन्धवाया था।
जव भर यौवन मे आया हाथी, तव वन्धन तोड़ भगाया था॥
जव देखा भरत नरेश्वर को तो, जाति स्मरण ज्ञान हुआ।
और सुत वान्धव सम्बन्ध समझ, कर दूर सभी अज्ञान हुआ॥

दोहा—सम दम खम को धारकर, शांत हुआ गजराज।
कारण यह आकर मिला, सुनो रविकुल ताज॥

दोहा—सुनते ही व्याख्यान यह, सबके खुल गये नैन।
भरत उस समय राम, से बोले ऐसे वैन॥
आज्ञा तो देही चुके, थे पहिले महाराज।
अव संयम व्रत धार कर, सारू आत्म काज॥
रामचन्द्रजी भरत को, समझा सके ना मूल।
संयम को श्रेय मान कर, अत्यम हुए अनुकूल॥

उसी समय वस्त्राभूषण, तन से सभी उतार दिये।
ईशानकोण की तर्फ वढ़े, सव केश लुंच कर डार दिये॥
अष्ट पड़त की मुंहपत्ति, प्रमाण का डोरा सजने लगा।
जव वार्भी मुखपे स्वलिङ्ग वने, तव खुशी का वाजा वजनेलगा॥

समुट्ठान सूत्र में दीक्षा धारण की, सभी विधि बतलाई है।
सकोच रूप में कहा विधि, यहां लिखने मे नहीं आई है॥
और संग भरत के हलु कर्मी, जीवों ने सयम धारा है।
यह समझ लिया कि नाशवान, दुनिया सब धुंद पसारा है॥

गाना (भरत जी का सयम ग्रहण)

सयम भरत ने धारा, दुनिया से किया किनारा ॥टेक॥
अवधेश ने हुक्म सुनाया, तीन लाख सोनैया दिलाया।
ओघा पात्र मंगवाया, नाई का दु:ख निवारा ॥स० १॥
स्वलिंग मुख पत्ति धारी, पचम गति देवन हारी।
हुए चार महाव्रत धारी, प्रवचन सारा सुखकारा ॥स० २॥
सम ज्ञान कर्श चित्त लाया, चारित्र से कर्म खपाया।
पुरुषार्थ मित्र बनाया, निर्मल हो मोक्ष पधारा ॥स० ३॥
आदर्श हुए मुनि त्यागी, त्रियोग शुद्ध वैरागी।
इम करे सोही बड़ भागी, ध्यान "शुक्ल" शुद्ध सारा ॥स० ४॥

दोहा—कैकेयी ने भी उस समय, ऐसा किया विचार।
पत्र फूल फल के विना, समझो वृक्ष निसार॥

चौपाई

झूठा ज़ाल जगत्त सब छोड़ा, तप जप में आत्म को जोड़ा।
वर्ण गध रस से मन मोड़ा, संयम रस जिन खूब निचोड़ा॥

दोहा—चार कर्म जब हन दिये, प्रगटा केवल ज्ञान।
अन्त समाधि भरत ने, शत्रुञ्जय लई आन॥

कर्म काट, कैकेयी माता ने, अन्त मोक्ष पद पाया है।
शुद्ध अनशन करके हस्ती, पञ्चम सुरलोक सिधाया है॥
जो सच्चिदानन्द हुवे उनका, कर्तव्य हृदय मे धरना है।
अब वासुदेव बलदेव की पदवी, का वृत्तान्त यहा करना है॥

राज्याभिषेक

दोहा—मिल जुल के सब ने किया, भारी एक दरबार।
सुग्रीव आदि आए सभी, बडे बड़े सरदार ॥

न शक्ति कलम जबान मे है, उत्सव का कैसे कथन करें।
जो कहें राम अपने मुख से, स्वीकार सभी वह वचन करें ॥
कलश सुगन्धि जल का, लक्ष्मणजी के सिर पर डुला दिया।
वासुदेव अष्टम यह कह कर, जय जय कार बुलाय दिया ॥

दोहा—दूसरा डुलाया राम पर, अष्टम यह बलदेव।
हाथ जोड नर असुर क्या, करें विमानिक सेव ॥

गाना—त्रिखण्डी ताज पहनाना, मुबारिक हो मुबारिक हो।
किया उत्सव शहाना, मुबारिक हो मुबारिक हो ॥

दोहा—लवण समुद्र से लगा, वैताढ्य गिरि पर्यन्त।
तीन खण्ड के अधिपति, भाष गये अरिहन्त ॥

मुकुट बन्ध सोलह सहस्र, भूपति आज्ञा में रहते हैं।
सोलह हजार देशों के स्वामी, पुण्य किया सो लेते हैं ॥
लाख बैतालिस हाथी और, इतने ही अश्व होते हैं।
संग्रामी रथ भी इतने ही, जब जुडे जंग तब शोभते हैं ॥
विकट गाड़िये लाख बैतालिस, अद्भुत कला निराली है।
अड़तालिस करोड़ पैदल सेना, योद्धों की छवि मतवाली है ॥

दोहा—धर्मी नृप के शासन मे, सब धर्मी बन जांय।
धर्म नीति प्रताप से, दुःख सभी टल जांय ॥

सभी लगे आनन्द करने, डाकू चोरों का काम नहीं।
जहां मर्जी जो कुछ पड़ा रहे, लेने वाला इन्सान नहीं ॥

क्षीर नीर सम प्रेम सभी मे, जात पात का भेद नहीं।
दान शील शुभ धर्म भावना, करते वहां कुछ खेद नही ॥
क्रोध मान और लोभ कपट, वहां प्राय. सभी यह पतले थे
और सदाचार में लीन हर समय, पाप कर्म से बचते थे ॥
थी सतोगुणी बुद्धि जिनकी, घृत दूध दही के खाने से।
वे बने सदाचारी रहते थे, आत्म ज्ञान पढाने से ॥
अवतार बीसवे मुनिसुव्रत, स्वामी का जहा पर शासन था।
शुभ दया धर्म की शिक्षा का, प्रत्येक के दिल मे आसन था ॥
क्या शक्ति कलम जवान की है, जो सारे सुखों का वयान करें।
थे फरश मणि और रत्नो के, बाकी पाठक खुद ध्यान धरे ॥

दोहा—जहाँ दया धर्म वहां धन वढ़े, धन बढ़ मन्न बढ़ होय।
मन बढ़ता सन्सार में, बढ़त बढ़त सब कोय ॥

राजा प्रजा क्या सब धर्मी, इसलिये अतुल सुख बढ़ने लगा।
मानिन्द रवि के पुण्य सितारा, अद्भुत गौरव चढ़ने लगा ॥
औदार चित्त ने देख समय, दिल को दरियाव बनाया है।
और सबसे प्रथम विभीषण को, लकेश का तिलक सजाया है ॥
सुग्रीव को वानर द्वीप और, हनुमान् को श्रीपुर का इलाका।
कुछ क्रम से पहिले था जिनका. उनजन को राज दिया वहां का ॥
वीर विराध को पाताल लंक,और नील को ऋक्ष पुर नगर दिया।
प्रतिसूर्य को हनुपुर के साथ, कुछ प्रान्त नया एक और दिया ॥
और रथनुपुर भामंडल को, कुछ प्रान्त स्वरूपाचल का था।
देवोपगीत दिया रत्न जटी को, एक प्रान्त हखारी दल का था ॥
यथा योग्य सबको खुश करके, योद्धों को जागीरें दई।
विमुख नहीं कोई रक्खा, अन्त मे सबकी तस्वीरें लई ॥

दोहा—राजनगर जागीर सब, लेकर खुशी अपार।
शत्रुघ्न खाली रहा. करते राम विचार ॥ ✓

तीन खंड में जो लगे, अच्छा तुझको देश।
राज वहां का कीजिये, यह मेरा उपदेश॥
चरण कमल में ही मुझे, भ्रात अति आनन्द।
यदि देना ही है मुझे, तो वनो वचन पावन्द॥
हां लक्ष्मण और राम का, जहां-जहां पर अधिकार।
जो मर्जी सो मांग लो, भ्रात मुझे स्वीकार॥
अधिकार का वचन निकाल के, करो वचन प्रकाश।
फेर तुम्हे बतलाए दूं, जो कुछ मेरी आश॥
पेचदार इस बात को, पहले दो समझाय।
क्या मन में है आपके. पता हमें लग जाए॥
अच्छा लो अब आपको, कहें साफ सरकार।
मथुरा नगरी के सिवा, और न कुछ स्वीकार॥
भाई सोच विचार कर, ले बुद्धि से काम।
स्वतन्त्र मथुरापुरी, मधुराजा का धाम॥
प्रथम तो चीज पराई है, फिर कैसे तुमको दे देवें।
कोई कारण नजर नहीं आता, वृथा कैसे झगड़ा लेवें॥
बात तीसरी लकपति ने, जब हम पर आघात किया।
उस समय मधुक ने दशकन्धर का, किसी तरह नहीं साथ दिया॥
इसलिये वीर यह ख्याल तजो, मथुरा नगरी से बढ़ करके।
हम शोभन देश तुम्हे देंगे, जो होगा सबसे चढ़ करके॥

दोहा—नम्र निवेदन कर चुका, चाहे सुरपुर होय।
मथुरा नगरी के सिवा, मुझे न भाता कोय॥

यह बात आपने ठीक कही, मथुरा का राज्य पराया है।
और कारण नजर नहीं आता, यह भी मेरे मन भाया है॥
जो रावण का न बना सहायक, सो अपना आप बचाया है।
किन्तु आधीन था रावण के, किसने स्वतन्त्र बनाया है॥

प्रति वासुदेव का अन्त करे, सो वासुदेव कहाता है।
फिर कौन रहा स्वतन्त्र हमारी, समझ नहीं कुछ आता है॥
दूत भेज कर या तो उसको, आज्ञा मे प्रवेश करो।
नहीं तो मैं स्वयं समझ लूंगा, कृपया करके आदेश करो॥

दोहा राम—अय भाई तू मधु की, झेल सके न चोट।
विजय करना कठिन है, मथुरा गढ का कोट॥

त्रिशूल एक चमरेन्द्र ने, मधु मित्र को दे रक्खी है॥
मानो सारी दुनिया की शक्ति, निज कर मे ले रक्खी है॥
इसी कारण रावण ने, अपना जामात बनाया था।
क्या पता हमे किस नीति से, आधीन न उसे बनाया था॥

दोहा राम—कई योजन तक मधु की, करे मार त्रिशूल।
वहा जाने से ही प्रथम, कर देवे निर्मूल॥

उस देवमयी शस्त्र की बतला, रोक कौन कर सकता है।
और ऐसा योद्धा कौन वहां, जाने का दम भर सकता है॥
अब इस विचार को दूर करो, भाई यह ख्याल हमारा है।
तुम खुद ही आप विचार करो, क्या ठीक यह ध्यान तुम्हारा है॥

दोहा—त्रिखण्डी भूपाल की, करी आपने छार।
मधुक विचारा कौन है, दिल मे करो विचार॥

धरणेन्द्र देव की दई हुई, रावण पे क्या शक्ति न थी।
और सहस्र एक साधी विद्या, पुत्रो मे क्या भक्ति न थी॥
सुर सुन्दर आदि राजे सब, दशकधर का दम भरते थे।
सब ने साथ दिया रावण का, पीछे पाव न धरते थे॥
तुमने सब शक्ति मसल दई, उस महा बली त्रिखण्डी की।
फिर क्या शक्ति मेरे आगे, उस कायर मधु पाखण्डी की॥

रघु कुल दिनेश तुम दशरथ सुत, मैं भी तो आपका भ्राता हूँ।
शक्ति बिन आगे कदम धरूं, ऐसा मैं भी नहीं चाहता हूँ॥
कृपा और आज्ञा बस आप से, बात यही दो चाहता हूँ।
फिर देखो कैसे मधुक को मै, कांटा सा काढ़ भगाता हूँ॥
निज पराक्रम से सब शक्ति मधु की, निष्फल मैं कर डारूंगा।
मैं मान मर्दन करके उस को, अपने चरणों मे डारूंगा॥

दोहा—सच मुच बच्चों की तरह, चढी तुम्हें जिद वीर।
आज्ञा है जाकर करो, जैसा कहे जमीर॥

जैसा कहे जमीर किन्तु, यह शिक्षा उर धर लेना।
जैसे हो त्रिशूल पै तुम, अधिकार प्रथम कर लेना॥
बेखटके फिर सेना अपनी, ठेल अगाड़ी देना।
यदि पास मधुक के हो त्रिशूल, तो हरगिज काम बनेना॥

दौड़—त्रिशूल जब होवे भाई, आयुधशाला के माही।
शीघ्र फुर्ति तब करना
सिवा एक त्रिशूल और शक्ति का कोई डरना॥

दोहा...जो कुछ भाषा आपने, सभी मुझे प्रमाण।
भय मुझको क्या आप जब, बैठे हैं पुण्यवान॥

सूर्य वंशी पर भाई मैं, अगुली नहीं आने दूंगा।
अधिकार सब जगह करूं, नहीं त्रिशूल तलक जाने दूंगा॥
हाथ शीश पर धर दीजे, अब देरी का कुछ काम नहीं।
बिना लिए मथुरा नगरी, मेरे दिल को आराम नहीं॥

दोहा : निज सारथी राम ने, दिया यमवदन नाम।
वज्रावर्त लक्ष्मण ने दिया, बनें सिद्ध सब काम॥

सिद्ध बने सब काम धनुष, ले महलो मे आया है।
सिंहासन पर बैठ युद्ध का नक्शा बैठाया है॥

सोच सभी तजवीज शत्रुघ्न, दिल मे हर्षाया है ।
और सभी कुछ ठीक हुआ, पर एक नुक्स पाया है ॥

दौड...खबर बिना घेरा लावे, तो क्षत्रापन घट जावे ।
अक्ल ने चक्कर खाया
कुछ सोचन के बाद और एक ढग नजर मे आया ॥

दोहा पहिले लिख एक पत्रिका, भेजूं मधु के पास ।
यदि उत्तर कुछ न दिया, मिले मुझे अवकाश ॥

देख पत्रिका मधु जरा भी, ध्यान नहीं कुछ लायेगा ।
किन्तु वह व्यर्थ समझ पत्र को, रद्दी में गिरवायेगा ॥
कारण जब बन जाता है, कार्य होने मे देर नहीं ।
रस्ता हम को मिल जायेगा, नीति में खतरा फेर नहीं ॥

दोहा शत्रुघ्न ने झट लिया, कागज कलम दवात ।
मथुरागढ पत्र लिखा, सिद्ध श्री कुशलात ।

यहां पर है सब कुशल, आप की कुशल सदा चाहता हूँ ।
सर्व उपमावान आप, क्षत्रिय को सुन पाता हू ॥
अपरञ्च यहां जो हुआ सभी, कुछ तुम को समझाता हूँ ।
देवो जल्दी उत्तर नहीं, मैं स्वय आप आता हु ॥

दोहा... रामचन्द्र ने कर दिये, देश सभी तकसीम ।
खबर आपको कुछ नहीं, क्या चढ रही अफीम ॥

यह सभी देश मथुरा नगरी, मेरे अधिकार मे आई है ।
अब आप मेरे अधीन बने, इसलिए बात समझाई है ॥
तीन दिवस अन्दर ही, उत्तर इसका देना चाहिये ।
समय देख कर योग सम्बन्ध, अपना सब कर लेना चाहिये ॥

कड़ा कवि...प्यारे जी जल्दी देवो जवाब शत्रुघ्न यह लिखवाया।
दे पत्रिका हाथ दूत को वहां पठाया॥

दोहा...दूत अयोध्या से चला, पहुंचा मथुरा जाय।
मधुराजा को जा दई, मस्तक प्रथम नवाय॥

मस्तक प्रथम नवाय मधु ने, पत्र हाथ जब लीना।
पढ़ कर के सब हाल समझ कर, फैंक किनारे दीना॥
कहा दूत से जाकर कह दो, पत्र उसने रख लीना।
बात समझ मामूली नृप ने, ध्यान नहीं कुछ कीना॥

दौड़... दूत ने वापिस आकर, कहा सब कुछ समझाकर।
शत्रुघ्न आनन्द पाया
दल बल लेकर चल दिया, नदी तट पर विश्राम कराया॥

दोहा . गुप्तचरों से हर समय, रखते खबर तमाम।
एक दिन आ कहने लगे, लगी होन अब श्याम॥

वन कुबेर की सैर को, गये इस समय भूप।
भ्रमण कर रहे बाग मे, रानी संग अनूप॥

मगन हो रहे भूप सैर मे, दिल मे नहीं फिकर कोई।
त्रिशूल है आयुध शाला मे, और खाली नृप के कर दोई॥
आन अनुपम समय मिला, अब देरी का कुछ काम नहीं।
यदि पता लग गया कहीं विजय, होगा फिर मथुरा धाम नहीं

दोहा---सुनते ही शत्रुघ्न ने दिया कूच करवाय।
मथुरा के चारों तरफ लिया घेरा लगाय॥

अधिकार शस्त्र शाला पे जाकर, अपना प्रथम जमाया है।
फिर तोप एक दम चला दई, मारू बाजा बजवाया है॥

लवण कुमार ने उसी समय, आ सन्मुख युद्ध मचाया है।
इस तर्फ लगा संग्राम होन, उस तर्फ मधुचल आया है॥

दोहा---लवण कुमर संग्राम में, परभव गया सिधार।
सुत मरना सुन मधु को, छाया रोष अपार॥

किन्तु पुण्य विना प्राक्रम, मानिन्द फूस के होता है।
और विना पुण्य यह जीव हाथ, मस्तक पर धरकर रोता है॥
देख रूप विक्राल शत्रुघ्न, के योद्धे घबराये हैं।
जो गये सामने मधुवीर के, वह सब मार भगाये है॥
दोहा---देख हाल यह मधुक का, चढा शत्रुघ्न आप।
लगा मधुक से कहन यों, चढ़ा धनुष शर चाप॥
क्यों साहिब अब किस लिये, रहे चौकडी भूल।
कहा गई शक्ति तेरी, दिखा हमें त्रिशूल॥

कहां गई त्रिशूल कहो जो, चमरेन्द्र वाली थी।
जिस शक्ति पर तुमने पत्रिका, फाड़ गर्द डाली थी॥
परवाह तक न करी अक्ल से, क्या बुद्धि खाली थी।
स्वाद उसी का मिला चाल, उल्टी तुम ने चाली थी॥

दौड़- --यदि है जान प्यारी, मान लो शर्त हमारी।
आज्ञा में चलना होगा॥
दोहा—दे त्रिशूल क्षमा मांगो, नहीं कर मल रोना होगा।

कपट कर मधु आयुध शालाला घुसे सूने घर जिम श्वान॥
अब जीवित तुम को नहीं, दूं गा हरगिज जान॥
देऊन तुझको जान उछलकर, बातें करे अकड़ की।
सिंह कभी डर सकता है क्या, धमकी से गीदड़ की॥
परभव भेजूं तुझे हकूमत, देकर मथुरागढ की।
त्रिशूल कहां तू सह न सकेगा, मार एक थप्पड़ की॥

दौड़—बध बख्तर तड़के है, मेरे भुजबल फड़के है,
जरा आगे तो आओ।
क्षत्रिय का यह वार आज, खाकर परलोक सिधाओ॥

दोहा—गर्म गर्म दोनों तर्फ, हुई परस्पर बात।
फिर क्या था संग्राम में, चलन लगे दो हाथ॥

गाना—संग्राम का वर्णन

तर्ज—लावणी लङ्गड़ी सिकस्त।

तीर सरासर चले समर में, खांडा खट खट खटक रहा है।
धनुष विकम्प करे जैसे कोई, फनियर फण को पटक रहा है॥
पांव न पीछे अश्व धरे, खा शस्त्र अगाड़ी सटक रहे हैं।
पैर फसाकर काठी अन्दर, विना ही सिर धड़ लटक रहे हैं॥

शेर—आता हुआ जब वार मधु का, शत्रुघ्न को जॅच गया॥
फुर्ति से रथ को छोड़ लग कर भूमि से झट बच गया॥
खाली गया वह वार अणी से, शत्रुघ्न जब बच गया।
मधु नृप के हृदय मे मानों, शोर सा एक मच गया॥
बचा के मधु का वार शत्रुघ्न, आके सम्मुख मटक रहा है।
तीर सरा सर चले समर मे, खाण्डा खट खट खटक रहा है॥

दौड़—वज्रावर्तज धनुप को, चिल्ले लिया चड़ाय।
संग्रामी रथ मधुक के, सम्मुख दिया अड़ाय॥

सम्मुख दिया अड़ाय फेर, टंकार धनुप को लाया है।
फट गया गोल सब शत्रु का, पर मधु नहीं घबराया है॥
खैंच चाप दशरथनन्दन ने, अपना तीर चलाया है।
जा लगा मधु के हृदय मे, झट शरण धरण को आया है॥

दौड—हृदय वस फट गया सारा, छुटा है रक्त फुव्वारा।
पड़ा है रण भूमि मे—
शूर वीर अलबेला यह अब पड़ा धरण खूनी मे।

दोहा—तीर खा कर मधु ने, दिल मे किया विचार।
सदा न यहां कोई रहा, यह ससार असार॥

चक्रवर्ति से चले गये, उन के न भूमि साथ गई।
थे सुन्दर तन अवतारों के, उनकी भी एक दिन राख हुई॥
सयोग मूल दुखका कारण, शास्त्र मे यही बताया है।
अफसोस मनुष्य तन पाकर के, मैंने यह वृथा गॅवाया है॥
आगे का न कुछ ध्यान किया. पिछली पूंजी को खा बैठा।
फॅस कर इस झूठी माया मे, आयु भी आज गवा बैठा॥

तप किया न करसे दान दिया, विषयों मे समय गंवाया है।
औरों को शत्रु समझ समझ, शत्रु को मित्र बनाया है॥
वैर विरोध को त्याग भूपने, शुद्ध भावना भाई है।
फिर समता के प्रभाव तीसरा, स्वर्ग मिला सुखदाई है॥

दोहा—शत्रुघ्न मथुरा लई, मधु दिव पहुँचा जाय।
त्रिशूल वही चमरेन्द्र को, दई देव ने आय॥
दई देवने आय मधु, मथुरा का हाल सुनाया।
मित्र तुम्हारा मधु शत्रुघ्न, ने परभव पहुँचाया॥
छल फरेब से मथुरा पर, आकर अधिकार जमाया।
समय हुआ मेरा पूरा, त्रिशूल आप को लाया॥

दौड़ लीजिये शक्ति अपनी करू प्रमाण मै अपनी,
आज्ञा दो अब जाता हूँ।
सुत भी मारा गया मधु की खबर तुम्हे देता हूं॥

दोहा---चमरेन्द्र ने जब सुना, मधु मित्र का हाल।
कोप काल सम कर लिया, रूप अति विकाल ॥

किया रूप विकाल क्रोध से, मस्तक पर बल पडे हुवे।
दांतो से होठ चबाने लगा, और नेत्र दोनों चढ़े हुवे ॥
शत्रुघ्न को मारन के लिये, इन्द्र ने कदम उठाया है।
तब वेणुदेव ने रोक इन्द्र को, ऐसे वचन सुनाया है ॥

दोहा---आप प्रभु कहां पर चले, करके कोप आपार।
हम को भी समझाइये, चले आप के लार ॥

शत्रुघ्न मथुरा लई, मधु मित्र को मार।
इस कारण उस दुष्ट का, लाऊं शीश उतार ॥

दोहा—बेशक स्वामी आपका, मधु से प्रेम अपार।
किन्तु हमारी अर्ज पर, कुछ तो करे विचार ॥

वासुदेव बलदेव अर्धचक्रि, उनका यह भाई है।
जिनकी ताकत पर आन, मधुराजा की करी सफाई है ॥
तीन खण्ड में महाबली, रावण का पुण्य सितारा था।
हुँकार से धरा कॉपती थी, उसको लक्ष्मण ने मारा था ॥
धरणेन्द्र की शक्ति भी, सब इनके आगे हार गई।
और सहस्र एक विद्या रावण की, सारी पांव पसार गई ॥
पुण्य रघुवंशियों का, नर सुर चरणों में गिरते हैं।
फिर किस शक्ति पर बुद्धिमान, हो करके आप बिगड़ते हैं ॥

दोहा—वैशल्या ने आन कर, शक्ति दई निवार।
दशकन्धर अन्याय से, गया जन्म को हार ॥

कुछ सीता माता के शाप ने, दशकन्धर को मारा है।
कुछ नियम अनादि ने भी. अपना काम सभी कर डारा है ॥

प्रति वासुदेव को वासुदेव ही, पैदा होकर हनते हैं।
और तीन खण्ड का ताज शीश धर, सबके स्वामी बनते है॥
अन्याय किया शत्रुघ्न ने, निर्दोष मधु को मारा है।
तो उसका भी अब काल शीश पर, आकर आज पुकारा है॥

दोहा—इतना कह कर चल दिया, चमरेन्द्र तत्काल।
मथुरा नगरी का सभी, लगा देखने हाल॥

देखा मथुरा का हाल सभी, प्रसन्न चित्त नर नारी हैं।
घर घर मगलाचार और, व्यवहार सभी सुखकारी है॥
कई भूमिये महल और, अद्भुत जहां सजी अटारी है।
अति ऋद्धिशाली बड़े बड़े जहा, इभ्भ सेठ व्यापारी है॥
जहा चोर जार का काम नहीं, एक दूजे का हितकारी है।
और प्रेम परस्पर ऐसा जैसे, मिला दूध मे वारी है॥
मुख पर शुभ लाली दमक रही, कुछ द्वेष न माया चारी है।
खोटी सगत का नाम नहीं, जहा शुभ शिक्षा हितकारी है॥
कष्ट किसी को जरा नहीं, सब इन्तजाम सरकारी है।
अनाथ अपाहिज भूखा प्यासा, देखा न कोई भिखारी है॥
वेश्या लुच्चे गुंडे डाकू न, शराब न मांसाहारी है।
खाते हैं दूध दही मेवा, मिष्टान्न की शक्ति भारी है॥
व्याख्यान धर्म स्थानों मे, जाकर सुनते नरनारी है।
जहां समोसरे महाव्रत पालक, निर्ग्रंथ मुनि तपधारी हैं॥
तालाब सरोवर बाग बगीचे, खिली जहां फुलवारी है।
क्या कहू वहां की शोभा जिसने, इन्द्र की मतिमारी है॥
सब साज बाज गायन मीठे, स्वर-ध्वनि लगे अति प्यारी है।
जिह्वा लेखिनी दोनों ने मिल, करके अर्ज गुजारी है॥
कैसे सब हाल बयान करे, एक से एक मे गुण भारी है।
बस कोई उपमा दे डालो, यह आया समझ हमारी है॥

दोहा—उधर बाग में आन कर, समोसरे मुनिराज।
केवल ज्ञानी देश और, कुल भूषण महाराज॥

जब लगा पता श्री रामचन्द्र को, और सभी कुछ भूल गये।
मुनि दर्शन को चल दिये बाग मे, संग वहुत से मनुष्य लिये॥
उपदेश बाद कर नमस्कार, श्री राम ने वचन उचारा है।
सम्बन्ध शत्रुघ्न मथुरा का, सुनने का ख्याल हमारा है॥

दोहा राम—मथुरा से शत्रुघ्न का, क्यों इतना है प्यार।
तारणतरण जहाज तुम, संशय मेटन हार॥

दोहा—मथुरा मे शत्रुघ्न ने, जन्म लिये कई बार।
इस कारण शत्रुघ्न का, पिछले भव से प्यार॥

श्रीधर नामा विप्र एक, मथुरा नगरी में रहता था।
जिसने देखा सो कामदेव का, रूप उसी को कहता था॥
एक दिन रानी की नजर पड़ी, झट विप्र महल मे बुलवाया।
इच्छा थी इससे प्रेम करूं, पर उधर अचानक नृप आया॥

दोहा—देखा जब भूपाल को, रानी मन घबराय।
उधर विप्र को भी गया, भय से चक्कर आय॥

झट अपना आप बचाने को, रानी ने बात बनाई है।
विश्वासघात किया विप्र से, परभव का भय नहीं लाई है॥
जो नारी का विश्वास करे, उसने निज बुद्धि गंवाई है।
रोनी सी सूरत बना रानी, नृप को यों कहने आई है॥

दोहा—देखो तो महाराज यह, कौन महल मंझार।
कहता है देवो मुझे, आभूषण सभी उतार॥

भूषण सभी उतारो जल्दी, वस्त्र भी देवो ला करके।
घोंट गला वरना मारूं, कहता है धौंस दिखा करके॥

पुण्य योग तुम आ पहुंचे, कुछ उमर हमारी बाकी है।
ऊपर से बुगला भक्त विप्र. यह अन्दर से महा पापी है॥

दोहा . देख हाल सुन भूप को, चढा क्रोध विकराल।
बन्दी करवा कर उसे, दई हथकड़ी डाल॥

हुक्म दिया बध भूमि मे, ले जाकर इसको मरवादो।
जिसकी मर्जी आकर देखे, सब जगह यह डोंडी पिटवादो॥
उस तरफ मुनि एक आ निकले, जिस तरफ इसे ले जाते थे।
करुणा सागर वोह महामुनि, जो इसे बचाना चाहते थे॥

दोहा... कल्याण मुनि के कथन से, दिया भूप ने छोड़।
श्रीधर ने भी व्यसन से, निज मन को लिया मोड़॥

समझ लिया कि धर्म बिना, दुनिया में कोई मित्र नहीं।
जब काम पड़े तब बनें मित्र, पीछे दिखलाते छित्तर वही॥
कल्याण मुनि ने आज मुझे, कल्याण का मार्ग दिखाया है।
दुनियां को झूठी समझ विप्र ने, तप संयम चित लाया है॥

दोहा... संयम व्रत को पाल कर, पहुचा स्वर्ग मंझार।
फिर मथुरा मे आन कर, लिया जन्म यहां धार॥

चंन्द्रप्रभ नृपराज हरिकांता, एक पटरानी थी।
अचल नाम सुत पुण्यवान्, की अद्भुत पेशानीथी॥
आठ पुत्र थे और उन्हो की, मात पृथक् मानी थीं।
भानुप्रभादि आठों की, मति उलटी मस्तानी थी॥

दौड़— विरूध थे अचल भ्रातसे, द्वेश था उस की जात से
खत्म करना चाहते थे,
किन्तु पुण्य था अचलकुमर का, समय नहीं पाते थे॥

वह मनुष्य ही क्या दुनिया में जिसको, हानि लाभ का ज्ञान नहीं।
अज्ञान के वश इस आत्म को, दुर्गति तक का ध्यान नहीं ॥
जो सत्पुरुषों का कहना है, उस पर तो आप विचार करो।
चाहे प्राण कण्ठ तक आ जावें, पर इतनों पर ना वार करो॥
कए ऋद्धि धार दूजे गँवार, तीजे जो श्रेष्ठाचीरी हो।
पंचम गोत्री और छठा कोई, जो धर्मों पर उपकारी हो ॥
सप्तम स्त्री अष्टम क्लीब, और क्षमा का जो अधिकारी हो।
दसवें कोई कर्म उदय वाला, एकादश अनाथ भिखारी हो।
द्वादशवे न्यायी भूप तेरहवें, धर्म मुनिव्रत धारी हो।
सम्यक् धारी चौदहवें, पन्द्रहवे, जो कोई समता धारी हो ॥
वैर विरोध कभी आस पास, वालों से नहीं करना चाहिये।
दुर्भाव कभी बदला लेने का, दिल में नहीं धरना चाहिये ॥

दोहा.. जो जो तुमसे किसी ने, किया फरेब और फंद।
तुमको सब हितकर हुआ, क्योंकि पुण्य बुलंद ॥

क्योंकि पुण्य बुलन्द किन्तु, अब मानो कथन हमारा।
तो फिर यहाँ पर जगह द्वेष की, बरसे प्रेम फुव्वारा ॥
सदा सहायक रहा आपका, आगे रहूँ तुम्हारा।
बुद्धिमान को होता है बस, काफी एक इशारा ॥
दौड़—कहा अब मानो हमारा, मिटाओ झगड़ा सारा।
आपस मे मिलना चाहिये
वैर विरोध तज कर भाइयों को, गले लगाना चाहिये ॥

दोहा—जो कुछ मर्जी आपकी, मुझे वही स्वीकार।
ऐसे मिलने से उन्हें, होगा महा अहंकार ॥
तुम प्राणदान दाता मेरे, इसलिये सभी स्वीकार मुझे।
पर उन को भी कोई बूटी दो जिस तरह ईर्ष्या द्वेष बुझे ॥

जो रास्ता आप बतावेगे, उस पर मैं चलना चाहता हूं।
प्रतिकूल आप की मर्जी के, कुछ भी नहीं करना चाहता हूँ॥

दोहा—मन्त्री ने झट परस्पर, करवा दिया तब प्रेम।
फिर क्या था दोनो तरफ, लगा बरसने क्षेम॥

राज तिलक मथुरा नगरी का, अचल भूप को करवाया।
पूर्व पुण्य जो किया जहाँ, भोगन का अवसर शुभ आया॥
भाई बान्धव क्या सभी प्रेम से, एक हुक्म में चलते है।
प्रत्येक चौधरी बने जहाँ,वहाँ, सारे ही कर मलते है॥

दोहा...मुख्य नृतकों का वहाँ, आया नट गिरोह एक।
बांसों पर नट नाचते, रहा भूपति देख॥

जिसने कांटा काढ़ा था, सो अंक नजर वहाँ आया है।
उसी समय पहिचान भूप ने, अपने पास बुलाया है।
प्रदान किये गांव कई, मन्त्री पद पर आरूढ़ किया।
यदि मित्र हो तो ऐसा हो, मित्र को सुख भरपूर दिया॥

दोहा—बिन्दु से सिन्धु करे, यही बड़ों की रीत।
कष्ट कुसंगत से मिले, जो चलते विपरीत॥
श्री समुद्राचार्य, मुनि पधारे आन।
नृप ने जा सेवा करी, सुना धर्म व्याख्यान॥

वैराग्य मजीठी रंग चढ़ा, सब राज पाट को छोड दिया।
यह नाशवान दुनिया झूठी, विषयों से मनको मोड़ लिया॥
पंचम देवलोक पहुचा, तप जप करनी करके भारी
सो अचल आन शत्रुघ्न हुआ, यह भ्रात तुम्हारा हितकारी॥
अंक जीव संग्रामी रथ का, बना सारथी आ करके।
इस कारण प्रेम था मथुरा से, सब कहा तुम्हें समझा करके॥

कई जन्म वहाँ पर किये इसने, कोई प्रेम पुराना पडा हुआ।
पूर्व प्रेम से मांगी मथुरा, था चित्त उसी मे अड़ा हुआ ॥

गाना—कर्म पूर्व जन्म के पेश, सब जीवों के आते हैं।
जीव सुख और दुःख अपने, ऐमालों से ही पाते हैं ॥टेक॥
कसौटी नेक बद ये परखने की एक किस्मत है।
भली याके बुरी किस्मत ये प्राणी खुद बनाते हैं ॥१॥
जीव बलवान् है जब कि ज्ञान मंत्री को ले संग मे।
धर्म पुरुषार्थ करने से कर्म सब भाग जाते हैं ॥२॥
सदाचारी वफादारी से कर उपकार दुनिया में।
ज्ञानी पुरुष दुनिया के न झगड़ों बीच आते हैं ॥३॥
नरक तिर्यंच के दुःख देने वाली ये कषाये हैं।
मिले निर्वाण पद उनको जो चारों को मिटाते है ॥४॥
दान और शील तप करना भावना नेक हो जावें।
तरे संसार में वो ही जो प्रभु के गीत गाते है ॥५॥

दोहा—श्री प्रभापुर नगर मे, श्री नन्दन एक भूप।
रानी जिसके धारणी, पुत्र सात अनूप ॥

बड़ा पुत्र सुरनन्द और, दूसरा श्रीनन्द कहाता था।
तिलक नाम तीसरे का, जयचन्द नाम चोथे का था ॥
पंचम सुन्दर चमर छठा, जयमित्र सातवां सुखदानी।
पुत्रों सहित नरेन्द्र को, वैराग्य हुआ सुन जिन वानी ॥

दोहा—अष्टम छोटे पुत्र को, दिया भूप ने राज।
प्रीतिकर गुरु पास जा, सारा आत्मकाज ॥

राज ऋषि जा मोक्ष विराजे, ब्रह्मज्ञान को पाकर के।
इत जघा चार हुई लब्धि, सातों भाइयों को आ करके ॥

सातों मुनियों ने मथुरा, नगरी मे चौमासा आन किया ।
अष्टम दशम द्वादशादि तप, सयम रस को छान पिया ॥

दोहा—आहार न मिलता सूझता, मथुरा नगरी मांय ।
अन्य ग्राम सातों मुनि, करे पारणा जाय ॥

उनकी तप जप करणी से, सब रोग शान्त हो जायेगा ।
लब्धि धारक मुनि के चरणों में, जो कोई मस्तक नायेगा ॥
गरुड़ सामने सर्प इस तरह, समझो रोग न पायेगा ।
चमरेन्द्र कृत सब रोग हटे, घर घर मे मगल छायेगा ॥

दोहा—एक दिवस सातों मुनि, पुरी अयोध्या आय ।
लेन पारणा सेठ के, घर में पहुँचे जाय ॥

छन्द—फिरते चौमासे मे कहां, अर्हदत्त को शका भई ।
भावबिन कर जोड़ कुछ, भोजन मिठाई सब दई ।
सोचता दिल मे रहा, किस काम का आचार है ।
भेष तो साधु का पर, भगवान् की लोपी कार है ॥
द्युतिवर आचार्य जो, उपाश्रय मे रहते थे यहाँ ।
आहार करने के लिए, सातों मुनि आये वहाँ ॥
मुनि द्युतिवर आचार्य ने, स्वागत मुनि जन का किया ।
प्रणाम कर भोजन चुकाने, के लिए कमरा दिया ॥

दोहा—द्युतिवर ने उन्हों से, पूछा सब वृत्तान्त ।
हाल सभी बतला दिया, आदि अन्त पर्यन्त ॥

द्युतिवर के सिवा किसी ने, जरा नहीं सम्मान किया ।
और आत्मार्थी मुनियों ने, अपमान पै ना कुछ ध्यान दिया ॥
गगन गति कर गये मुनि, मथुरा मे चरण टिकाया है ।
अर्हदत्त इस तरफ सामायिक, करन उपाश्रय आया है ॥

दोहा—शिष्य सभी गुरुराज से, लगे पूछने हाल।
कौन मुनि यह कहाँ से, आये यहां पर चाल॥
जिनमत भूषण महामुनि, हैं असली निर्ग्रन्थ।
छोड़ दिया संसार सब, साध रहे शिव पन्थ॥
लब्धिवन्त महन्त जब, सुने मुनि निर्दोष।
अर्हद्दत्त करने लगा, कर मल मल अफसोस॥
अर्हद्दत्त मथुरा गया, क्षमा मांगने हेत।
मुनियों से मांगी क्षमा, सेठ ने विनय समेत॥

सम दम क्षम के धार सप्त, वह महामुनि कहलाते हैं।
आत्म निर्मल करने को, तप संयम ध्यान लगाते हैं॥
चमरेन्द्र कृत रोग सभी, अब जल्दी जाने वाला है।
पहिले जैसा समय वोही मथुरा में आने वाला है॥

दोहा— पूर्व भव वृतान्त सुन, हुए खुशी नर नार।
नमस्कार कर चल दिये, सब निज २ घर बार॥

शत्रुघ्न भूप अब खुशी खुशी, मथुरा नगरी में आया है।
सब रोग शोक उपशान्त हुआ, यह देख हाल हर्षाया है॥
सप्तर्षिन के चरणों में जा, पांचों अंग निमाए हैं।
स्तुति सहित शत्रुघ्न ने, फिर ऐसे वचन सुनाये हैं॥

गाना

तर्ज—(गउओं की) रोवे विच वन वन दें
गउवां की सुनो पुकार २

सब मिल गावें गुण मुनिवर के। कर दिया बेड़ा पार २ ॥टेक॥
लवधि धारक गुरुवर प्यारे। पुण्य योग से आय पधारें।
नमें चरन हरबार बार ॥१॥ सब॰

सकल रोग को दूर हटाया। जलवा लबधि का दरशाया॥
सुखी किये नरनार नार ॥२॥ सब०

शत्रुघ्न नृप हरषित भारा। नमें मुनि को वारम्वारा॥
सप्त ऋषी सुखकार कार ॥३॥ सब०

चमरेन्द्र जो रोग फैलाया। धन्य गुरु तुम दूर हटाया॥
वरत्या मगलाचार चार ॥४॥ सब०

मथुरा पावन करने आये। जिनमत भूषण दुःख मिटाये॥
भूलेगे ना उपकार कार ॥५॥ सब०

जंघाचार मुनिवर प्यारे। अतिशय ने सब कष्ट हटाये॥
भवोदधि से तार तार ॥६॥ सब०

हे नाथ आपकी कृपा से, यह रोग शोक सब दूर हुआ।
नरनारी बच्चों बच्चों का, चरणों मे ध्यान जरूर हुआ॥
अब यही प्रार्थना है स्वामी, यहा से न कहीं विहार करे।
हम जैसे पतियों की विनती, पर भी स्वामी कुछ ध्यान करें॥

दोहा—आए हमको हो गये, यहां महीने चार।
राजन् अब हम नियम से, हैं बिल्कुल लाचार॥

नव कल्पी शुद्ध बिहार, मुनिराजो का जिन फरमाया है।
जो विन कारण मर्यादा तोड़ें, सो विराधक कहलाया है॥
जिस कारण घर बार तजा, सो भी कुछ कार्य करना है।
जो आज्ञा श्री जिनवर की है,सो सिर मस्तक पर धरना है॥

दोहा—चलता पानी स्वच्छ रहे, ठहरा गंदला होय।
त्यागी जन चलते भले, दाग न लागे कोय॥

सर्वज्ञों की आज्ञा मे, जो चले वही जन सच्चा है।
बस नहीं तो पेट भराऊ ढोंगी, साधुपन मे कच्चा है॥

धर्म ध्यान तप जप करने से, कभी न दुःख सताते हैं।
सब रोगों की दवा तुम्हे, एक श्री जिन धर्म बताते हैं॥

तर्ज—(रब मिलदा गरीबी नाले)

सत धर्म को पाले प्राणी। जो सुख पाना चाहते हैं।
क्यूं जनम अमोलक हीरा। नरतन वृथा गवांते हैं॥टेक॥
जितने जीव जगत के प्राणी। उनको प्यारी है जिंदगानी।
मत करो किसी की हानी। गुरुवर यूं फरमाते हैं॥१॥
दिल मे रंज कभी न लाना। अभिमान को दूर भगाना।
जो तजे कपट सो श्याना। प्रभु जिनवर फरमाते हैं॥२॥
साधु श्रावक धर्म बताया। जिस पाला सो सुख पाया।
समता धर्म जैन बतलाया। जिसको सुरपति गाते हैं॥३॥
साधु पांच महाव्रत प्यारा। बारा व्रत श्रावक ने धारा।
हो गया उसका निसतारा। जिनके ये मन भाते हैं॥४॥
पराया धन कंकर अनुसारी। जानो माता सम परनारी।
सन्तोषी बन के तृष्णा मारी। ओही मुक्ति पद पाते हैं॥५॥
दुनिया से प्रेम क्या करना। होगा एक दिन निश्चय मरना।
इसलिये धर्म मन धरना। जिससे दुःख नस जाते हैं॥६॥
लगे सेवा धर्म मे रहना। पडे कष्ट जो तन पर सहना।
यही धर्म गुरु का कहना। सुखमयी राह बताते हैं॥७॥

दोहा—वैताढ्य गिरी पर्वत भला, दक्षिण श्रेणी मान।
रत्नपुरी नगरी जहा, नृप रत्नरथ बलवान॥

रत्नरथ भूपाल चन्द्रसम, चन्द्रमणी रानी थी।
मनोरमा पुत्री धर्मन, और बुद्धि लासानी थी॥
एक रोज लगा दरबार, भूप ने परीक्षा करवानी थी।
मनोरमा है चतुर सब तरह, कोयल सम वाणी थी॥

दौड़—भूप का भवन बड़ा था, जन समूह अडा खड़ा था।
समय परीक्षा का आया
होनहार उस तरफ आन नारद ने दरश दिखाया ॥

गाना—तुरत कर जोड़ राजा ने, सिंहासन पर बैठाया है।
परीक्षा लडकियां देगी, भेद सारा बताया है ॥ टेक ॥
लगी परीक्षा सभी देने, विदुषी लडकिया क्रम से।
धर्म शास्त्र व वैद्यक की, कला संगीत गाया है ॥ १ ॥
कला चौसठ की सब ज्ञाता, काव्य छन्दों का क्या कहना।
ज्ञान सम दर्श चारित्र, और नौ तत्त्व दिखाया है ॥ २ ॥
विवेचना अष्ट कर्मों की, राजकुमारी ने दर्शाई।
प्रजा राजा मुनि क्या सब, को ही आश्चर्य आया है ॥ ३ ॥
स्यादवाद न्याय की व्याख्या, सभी कह कर सुनाई है।
मुनि नारद ने भी अब नेत्रों, को ऊपर उठाया है ॥ ४ ॥
चली जब सप्त भंगी पर, अकल हैरान है सबकी।
क्या जिनवाणी सरस्वती ने, वास इसके ही पाया है ॥५॥
क्रोध और मान माया का, दिखाया खैंच कर चित्र।
फेर भूपाल ने प्रशसा, कर प्रश्न सुनाया है ॥ ६ ॥

दोहा—कौन अरी ससार मे, दु:ख देवे भरपूर।
मित्र कौन ऐसा कहो, करे कष्ट सब दूर ॥

प्रमाद अरि सबके लिये, देता दुःख अति क्रूर।
उद्यम सज्जन के मिले, बने कष्ट काफूर ॥

कौन कहो ऐसा दुनिया मे, जो सबको प्यारा लगता है।
और किसका नाम स्मरण करने से, अन्दर क्रोध भभकता है ॥
धर्म चीज ऐसी दुनिया में, जिसको सब कोई चाहता है।
पाप शब्द ही बुरा जगत में, नहीं किसी को भाता है ॥

दोहा—इत्यादिक भूपाल ने, किये प्रश्न कई और।
नारदजी का मन कहीं, लगा रहा है दौड़॥
प्रणाम कर कुमारी चली, सभी सहेली साथ।
पीछे से भूपाल ने, कही इस तरह बात॥

दोहा—जैसी गुणवन्ती सुता. ऐसा कोई राजकुमार।
जिस के सग शादी करे, मेरा यही विचार॥

राजा के सुन कर वचन, रहे सोचते और।
नारद जी भूपाल से, लगे कहन इस तौर॥
जैसा चाहिये आप को, उससे भी चौ चन्द।
लक्ष्मण भाई राम का, दशरथ नप का नन्द॥

नारद...तीन खण्ड में लक्ष्मण जैसा, राजकुमार नहीं पावेगा।
देख देख खुश होवोगे, जब यहाँ पर व्याहने आवेग॥
शक्ति किस की माँग लखन की, और कोई ले जावेगा।
इससे यदि विपरीत किया, तो हे राजन् पछतावेगा॥

गाना.. सोच सब दूर कर दो, हम उसे बिल्कुल मना देगें।
बंधा कर मुकुट और कगाना, तेरे दर पर ढुका देगे।
लग्न लिखवा के अब यहाँ से, भेजो केशर लगा करके।
मुहूर्त देख कर बारात, हम वहां से चढ़ा देगे॥

दोहा...सुनी काट करती हुई, बाते सभी अपार।
रत्नरथ का कोप कर, बोला राजकुमार॥
ओ बूढ़े बन्दर मुखे, मुंह सम्भाल के बोल।
क्यों यहां खुलवाने लगा, उन ढोलों का पोल॥
क्यों शत्रु की प्रशंसा करके, हृदय में बर्छी लाता है।
जाति वैर जिन्हो से, उनके आगे हमें झुकाता है॥

तेरे जैसा टुकड़े खोर ही, ऐसो के गुण गाता है।
जान बचा कर भाग यहां, क्यों अपनी मौत बुलाता है ॥

गाना---आया व्याह रचाने वाला, उन दुष्टों का।
अब जा जा जा बस चल चल चल (आय)

आंखे दाढी सब पीली, खड़ाऊंओ के ऊपर चढ़ा हुआ।
शेखी क्या मारता है, पाजी यहाँ खड़ा हुआ।
अब जा जा जा बस चल चल चल ०

(गाना--थियेटर)

तू कौन न व्याहने वाला, इस लड़की का।
ले टीलि लीलि टीलि टीलि टीलि लीलि ॥
ला और कोई दूसरी, बना कर शक्ल।
तब न व्याहना इस, लड़की को अय वे अक्ल ॥

चल चल तू कौन न व्याहने वाला इस लड़की का।
ल टीलि लीलि टीलि टीलि टीलि लीलि ले टीलि ॥

दोहा=ओ बूढ़े तूने अक्ल, दई कहाँ पर खोय।
तुझको क्या संसार मे, जो मर्जी सो होय ॥

गाना व०त० . बाबा जाकर के, आत्म का साधन करो।
हा हा खाकर के, चूमे तुम्हारे कदम ॥
बूढ़ा खूंसट हुआ, खोई सारी उमर।
अब यहाँ से पधारो, यह कीजे करम ॥
तुमको किसने कहा, व्याह सगाई लिये।
सच कहो यहा सभा मे, उठा के धर्म ॥
कुछ का कुछ बकते हो, क्यो पागल को तरह
जा यहा से चला जा, कुछ करके शर्म ॥

गा० ना०...:जा जा मूर्ख अनाड़ी, निर्बुद्धि अधम ।
तू है अविनीत क्योंकि, नहीं है शर्म ।।
कुछ का कुछ बकते हो, पागल की तरह ।
यह कहो उससे, जिससे हो राहो रस्म ।।
उठा धर्म मुझको, कहता तू खोटा कर्म ।
मैंने लेली है क्या तुमसे, विवाह की रकम ।।
दिल में आवे उसे ही, ब्याहो दुलारी को तुम ।
इस मर्ज की दवाई, क्या कुछ भी न हम ।।

दोहा ना०.. मनोरमा अब हो चुकी, लक्ष्मण की ही मांग ।
चाहे जितना नाच और, कर ऊपर को टांग ।।

दोहा...नारद का व्याख्यान सुन, चढ़ा क्रोध विकराल ।
अर्ध चन्द्र धक्का दिया, मुनि धरण में डाल ।।

लगे लात और मुक्कों से, नारद की पूजा करने को ।
कभी ताने लाकर कहते हैं, लो राम लखन के शरने को ।।
रत्नरथ महाराजा ने, नारद जी को छुड़वाया है ।
जान बचाई भाग दौड़ कर, पुरी अयोध्या आया है ।।

दोहा...लक्ष्मण जी ने मुनि का, चेहरा लखा उदास ।
आदर से पूछन लगे, बैठा करके पास ।।

किस कारण आनन रहा, मुनि आज कुमलाय ।
कृपया हमको भी जरा, देवें भेद बताय ।।

करने को ही तो यहां, आये आज पुकार ।
पर कारण हम दुःख सहें, आदत से लाचार ।।

होन हार ले गई मुझको. कल रत्नपुरी में उठा करके ।
रत्नरथ नृप बैठा था. अपना दरबार लगा करके ।।

मनोरमा कुमारी ने परीक्षा, दई वहाँ पर आ करके।
कुछ भीड़ देख हम भी जा बैठे, नृप का आदर पा करके ॥
मनोरमा की करूं प्रशंसा, शक्ति नहीं जबां से है।
जो दृश्य बैठ कर देखा था, मैंने वहाँ खास सभा में है ॥
अद्भुत वस्त्र थे तन ऊपर, थी जवाहरात जड़ी सारी।
मानिंद सूर्य के मस्तक, पर तेज था शुभ लक्षण भारी ॥
थी नागिन सी दो जुल्फ मांग, मोतिन की लगे लड़ी प्यारी ॥
और मंद मंद मुस्कान छबीली, सम्मुख इन्द्राणी हारी ॥
शक्ति नहीं इतनी मुझमें, कैसे सब हाल बयान करूं।
रोना आता है रघुकुल की बेइज्जत। पर जो ध्यान धरू ॥

छन्द नारद हाल आगे का कहूं, तबियत तो यह चाहती नहीं।
यदि न कहूँ तो पाप है, अन्दर समाती भी नहीं ॥

ख्याल था मेरा याद, लक्ष्मण की यह रानी बने।
कोयल सी जब बोले सभी, रणवास लाशानी बने ॥
लेने के देने पड़ गये, आगे जरा सुन लीजिये।
और लाज सूर्य वंशियो की, भूपति रख लीजिये ॥
नृप ने कहा जैसी कुमारी पण्डिता गुणवान है।
ऐसा ही होना चाहिये, कोई कुंवर भी पुण्यवान है ॥

दोहा--लक्ष्मण सा मैंने कहा, पुण्वान न कोय।
सूर्यवंशिन के सिवा, सभी जगत लो टोह ॥

यह शब्द उन्हो के हृदय पर. मानिन्द तीर के जा बैठा।
नृप रत्नरथ का पुत्र उस समय, गुस्से में भर कर ऐंठा ॥
कुछ लात और मुक्कों से मेरी, कुगति वहां पर कर डारी।
हैं द्वेषानल में जले हुये. रघुवंशिन को देते गारी ॥

दोहा---लिये आपके हम फिरें, खोते अपनी जान।
किन्तु तुमको कुछ नहीं, रहा हमारा ध्यान॥

इस बात में आपने क्या सोचा, हमको भी जरा बता देवे।
या भय के मारे छिप बैठे, या कुल की आन बचा लेवें॥
अब मनोरमा को और कोई, राजा यदि ब्याह ले जावेगा।
तो रघुवंशियो का दाग, कभी हरगिज न धोया जावेगा।

दोहा---नारद ने पालिश दई, अच्छी तरह चढाय।
अक्षर अक्षर अनुज के, हृदय गये समाय॥

फिर तो लक्ष्मण का तेज राम के, कहने से भी रुका नहीं।
आखिर उनके अनुकूल हुए, जब देखा कि यह झुका नहीं॥
झट शूर वीर तैयार हुए, जंगी रणतूर बजाया है।
सीमा पर सेना डाल फेर, ऐसे एक पत्र लिखाया है॥

दोहा---सिद्ध श्री सर्वोंपमा, रत्नरथ गुणधाम।
कल सीमा पर आपकी, आगये लक्ष्मण राम॥

आगये लक्ष्मण राम कुशल, जो नित्यप्रति सबकी चाहते हैं।
और तुमको गुणगभीर समय, सोचन वाला सुन पाते हैं॥
जो कुछ तुमने कहा सुना, उसको तो क्या बतलाना है।
जो बुरी तरह पीटा अनाथ, नारद क्या सूना जाना है॥
अब मनोरमा का डोला देदो, खुशी खुशी यह कहना है।
यदि नहीं तो बस रण भूमि में, यहा रक्त फुव्वारा बहना है॥
अच्छा है प्रसन्नता पूर्वक, यह काम सभी सम्पन्न बने।
शान्ति से होवे काम सभी, जिससे न कोई अप्रसन्न बने॥

दोहा .. परवाना लिख मन्त्री ने, दिया दूत के हाथ।
रत्नरथ को जा दिया, प्रथम नवाकर माथ॥

जब पढ़ा पत्र तो क्रोधानल ने, सहसा लाट दिखाई है।
धक्का दे दूत को काढ दिया, नयनो मे सुर्खी छाई है॥
रत्नरथ ने पुत्र का, समझाने मे न कसर करी।
पर होनहार ने भी अपनी, गहरी आकर के नीम धरी॥
दल बल सबल विमान सजा, कर आन मोरचा लाया है।
इधर लखन ने भी अपना, दल सन्मुख जाय अड़ाया है॥
निज संग्रामी रथ का जब, लक्ष्मण ने पेच दबाया है।
तब रत्नरथ ने सम्मुख आकर, ऐसे बचन सुनाया है॥

दोहा—कौन सुभट ने आन कर, लिया नया अवतार।
दुर्जय क्षत्रिय भूप पर, पकड़ी है तलवार॥

पकड़ी कर तलवार, कौनसी क्षत्राणी ने जाया है।
यह किसने कर अभिमान, रत्नपुर पति को पत्र पठाया है॥
अब डोला लेने वाले का, तलवार से शीश उड़ाना है।
बस एक न जीता जाय, सभी को परभव आज पठाना है॥

दोहा—मैं क्षत्रिय पैदा हुआ, रघुवंशी अवतार।
मान आप का तोड़ने, आया हूँ सरकार॥

पुत्र जमाई यह दोनो, बस एक सार कहलाते हैं।
पर बुद्धिमान् इन से उल्टी, जिह्वा न कभी चलाते हैं॥
मात सुमित्रा क्षत्राणी ने, अतुल बली मैं जाया हूँ।
पत्र भेजा श्री राम ने था, मै आज्ञा पालन आया हूँ॥

दोहा—बातो बातों मे चढ़ी, दोनों की तकरार।
फिर क्या था संग्राम मे, लगी बजन तलवार॥

त्रिखंडी रावण को जिसने, मार धूल कर डाला था।
अनुमान सभी कर सकते हैं, यह राजा कौन विचारा था।

शस्त्रादि का घाव औषधि, लाने से भर सकता है।
पर सौकन से जो किया घाव, कोई पूरा नहीं कर सकता है॥
यह नागिन से भी बुरी नागिनी, सौत नागिनी होती है।
शाकिनी डाकिनी से भी बढ़कर, सौत पापिनी होती है॥
अग्नि मे वह ताप नहीं, जितना दुसह्य दुःख इसका है।
वह कालकूट में जहर नहीं, जितना कि इसके विष का है॥
कांजी पय का मेल कभी, न हुआ न होने पायेगा।
कलधौत* कुधात से मेल करे, तो अपना नाश करायेगा॥

दोहा---सीता के करने लगी, कपटमयी सब प्रेम।
शुक्ल अगाड़ी देखना, कैसा वरते क्षेम॥

यह कर्म महा बलवान जीव के, उदय भाव जब आते हैं।
तब बने सहायक कौन किसी का, सब के दिल फिर जाते हैं॥
जनकसुता को दुःख देने मे, कारण सौतें कहाने लगीं।
कुछ कर्मबन्ध का खयाल नहीं, आपस में यों बतलाने लगीं॥

दोहा—चलो सिया के महल मं, फिर होवेगी रात।
क्या कुछ लंका में हुआ, सब पूछेंगी बात॥

सब पूछेंगी बात आज सब, चलो महल उसके नारी।
कुछ आगे पीछे होकर के, सीता के महल पहुचो सारी॥
रावण ने क्या प्रपंच किया था, पूछेंगी बनकर प्यारी।
कैसे पतिव्रत धर्म रक्खा, कोई लाज शर्म तो न हारी॥

दौड़—लंका नगरी कैसी थी, शोभा रावण की कैसी थी।
हाल सब यह पूछेंगी॥
लेकर के सब भेद, ढिंढोरा फिर उसका पीटेंगी॥

* १ स्वर्ण।

दोहा----करके सारा मशवरा, फूली न अंग समात।
सज धज कर आने लगी, सिया से करने बात॥
सीता ने सब का किया, स्वागत और सम्मान।
बातों बातों मे लगी, अपना ढंग रचान॥
अयि सीते दशकंधर से, डरता था संसार।
उस रावण का था कहो, कैसा रूप अपार॥

कैसा सुन्दराकार कहो, नित्य पास तुम्हारे आता था।
क्या शब्द बोल धमकी देदे, क्या २ तुमको समझाता था॥
क्या खान पान सेवा आदि, सब तेरे लिये मगाता था॥
कैसे उसके शुभ लक्षण, तुझको रंग रूप दिखाता था।

गाना

तर्ज--प्रभु वीर ने हमको फरमाया नित्य पंच प्रमेष्टी नमो॥२॥

क्या बात कही तुमने मुखसे, क्या शर्म ज़रा नहीं लाई हो।
अनुचित बातें सब बोल रहीं, जब की तुम यहां पर आई हो॥
तुम आई हो यहां पर जब की, क्या अक्ल गई मारी सब की।
कुछ सोच करा बन्दी रब्ब की, क्या ओछी बात सुनाई है॥
मैंने देखा नहीं कोई मुख छाती, क्या मूर्ख थी धोखा खाती।
नहीं कसम अंगूठे की खाती, ना ऊपर नजर उठाई है॥

दोहा----किया इशारा एक ने, दूजी को समझाए।
कागज साही लेखनी, सम्मुख रक्खो लाए॥

कागज दवात मंगा करके झट, कलम सिया आगे कीनी।
चित लगा तुम्हारे महलों में, क्या पवनें चले धीमी धीमी॥
उस रावण के चरण अंगूठे का, इस कागज पर नक्शा कीजे।
कैसा था बलवान हृदय, हम को भी कुछ दिखला दीजे॥

दोहा—भोली सीता ने किया, चित्र अंगूठा अंग।
सभी भाव दिखला दिये, भरा बीच में रंग ॥

भरा बीच में रंग सिया की, बुद्धि नहीं वरनी जावे।
वह चित्र देखकर चित्रकार भी, अपने मन में शरमावे ॥
ऊपर से प्रेम दिखाती हुई, सौकन निज महल सिधाई हैं।
समय देख श्रीराम सामने, बातें वही चलाई हैं ॥

गाना

सीता की सौतों का राम को बहकाने की कोशिश करन

तर्ज—सच्चा भक्त बन जाऊँ, प्रभु देश धर्म गुरुजन का।
मै तो बात सिया की पाई, नहीं जाती बात सुनाई।
ध्यान इसे रहता रावण का, भेद न तुम को इसके मन का !
यह तो धर्म डिगा कर आई ॥ मैं तो ॥ १ ॥
रखती न ध्यान धर्म मे सीता, ताक किया कागज का रीता।
तस्वीर चरण की बनाई ॥ मैं तो ॥ २ ॥
यह रावण का चरण दिखाया, अंगूठे का चित्र बनाया।
दिल में नहीं शरमाई ॥ मैं तो ॥ ३ ॥

दोहा—स्त्रियों के इस तरह, होते सदा क्लेश।
कौन मगज खाली करे, दे इनको उपदेश ॥

दे इनको उपदेश सदा, रटती है इसी कहानी को।
कोई दोष नजर मे नहीं आता, क्या सुने इन्हा की वाणी को ॥
पूछेगे इसकी बात कहा हम, कभी सिया महारानी को।
और कहा-तुम सब दूर करो, अपनी अपनी नादानी को ॥

दोहा क्रोधित हो रानी गई, खास महल दर्म्यान।
पास बुला सबको लगी, उल्टा ज्ञान पढान ॥

श्रीराम ने इस बात पर, तनिक न लाया कान ।
ऐसा करना चाहिए, हमे सुनो अब आन ॥
सुनलो सारी आन आज, ऐसा मैं यत्न बनाऊँगी ।
सीता के हाथो का नक्सा, घर घर मे सभी दिखाऊँगी ॥
इस अंगूठे को देख देख, प्रेमी का स्मरण करे सिया ।
बेशक रावण सग लंका में, सीता ने व्यभिचार किया ॥
लेजा बांदी तू तस्वीर री, रावण के चरण अगूठे की ॥ टेक ॥
सकल घरों में जाकर दिखाओ, अय दासो अब देर न लाओ ।
यह उपाय आखीर री है ॥लेजा ॥१॥
नगर नगर मे चर्चा फैलादूं, इन महलों से सीता कढादूं ।
तुम धारो सब मन धीर री ॥ लेजा ॥ २ ॥
सीता का सत देख लिया मै तब, यत्न अब ऐसा किया मैं ।
क्या अच्छी तस्वीर री ॥ लेजा ॥ ३ ॥

दोहा.. लेकर के तस्वीर को, बांदी चली सचेत ।
रस्ता ऐसे तप रहा, जैसे बालू रेत ।

शिखर दोपहरी धूप तेज से, काया सब कुमलाई है ।
बह रहा पसीना ऐसे जैसे, हिम पिघल कर आई है ॥
नारही होश मन व्याकुल है, गर्मी से घिरनी खाई है ।
बोली खुद बैठी महलों मे, मुझ पर आपत्ति लाई है ॥

दोहा. प्रत्येक से यो कहने लगी क्या लाई हू देख ।
सीता तो बदकार है, तुम समझी थी नेक ॥

दासी तुम समझी थी नेक, पाप सीता का प्रकट होआया है ।
उस कामी रावण से जिसने, अपना सब धर्म डुबोया है ॥
कभी बात न चली महल मे, सब हम से भेद छिपाया है ।
यह रवी वंश मे है कलंक, जो बीज पाप का बोया है ॥

दोहा .. सीता को करने लगी, जगह जगह बदनाम ।
फिरते फिरते हो गई, बांदी को भी शाम ।।
सीता को पैदा हुआ, एक दिन दोहला आन ।
श्री रामचन्द्र का इस तरह, लगी सभी समझान ।।

दो० सीता . इच्छा करती है मेरी, सब सखियों के साथ ।
एक महल में बैठकर, सुनो अगाड़ी नाथ ।।

सीता---भांति भांति के भोजन और, मेवा मिष्टान्न मंगा लेवो ।
और अच्छी शोभा सहित यहां, उत्सव की जगह बना देवो ।।
फल फूल सुगन्धी सहित बाहर, अन्दर से सभी सजा द वो ।
स्वर ताल सहित स्तुति गायन. ऐसा प्रबन्ध करा देवो ।।
करवा कर अन्न जल पान सभी को, फिर मैं अन्न जल पान करूं।
और धार्मिक संस्थाओं मे, कुछ अपने कर से दान करूं ।।

दोहा---प्रबन्ध राम ने भृत्य से, करवाया तत्काल ।
सीता को जाकर कहा, मण्डप का सब हाल ।।

सब रानी रणवासों की क्या, अवधपुरी थी संग सभी ।
कई देख देख कहते थे, पहिले बंधा न था यह रंग कभी ।।
जनक सुता की जो आशा थी, दोहले की सब बन आई ।
बहुदान पुण्य क्रिया हुई शाम, तब महलों के अन्दर आई ।।

दोहा—इच्छा है मेरी प्रभु, चलें बाग प्रभात ।
आप भी कष्ट उठाइये, जाने का मम साथ ।।

तारों की छाया मे करती मैं, सैर चलूं दिल चाहता है ।
सभी दासियां सग बाग में, चले यही मन भाता है ।।
आज्ञा भेजो माली को, झटपट जो खोले दरवाजा ।
और कहो भृत्य से जोड़ यान को, महलों के सम्मुख आजा ।।

दोहा—आज्ञा पाकर भृत्य झट, लाया यान जुडाय।
और भृत्य जा बाग मे, यों बोला समझाय॥
अय माली झट हो खड़ा, त्याग निद्रा घोर।
आलस्य मे क्यों पड़ा है, होने वाला भोर॥

भाई आंखें खोल बाग की, सब देखो तुम क्यारी।
सिया राम की अभी, आ रही बागों मे असवारी॥
इधर फव्वारा खोल नीर का, खिल जावे फुलवारी।
काट छांट कर जल्द बना ले, गुलदस्तो की क्यारी॥

दोहा—यहां सवारी अवध से, होकर के तैयार।
रामचन्द्र और दासियां चली संग सिया नार॥

मन्द मन्द चलती वायु, प्रसन्न चित्त करने वाली।
कुछ अन्य दिनो से थी सवेरे, कुछ चाली भी थी मतवाली॥
वसन्त ऋतु भी अपने यौवन मे, इतराई फिरती थी।
मानिन्द मोतियों से उड़ते, जुगनु से झलक निकलती थी॥
दोनों पासे भरकर अंजली, फूलों की डाली खड़ी हुई।
कई मन्द मन्द मुस्कान सहित, टेढी दरख्त पर पड़ी हुई॥
उभय तर्फ ठडे मार्ग पर, वृक्ष पंक्तियाँ अडी हुई।
ऊपर से ऐसे हिले शिखर, मानो आपस मे लड़ी हुई॥

दोहा—महेन्द्रोदय बाग मे, जा पहुँचे श्रीराम।
छोड़ सवारी बाग मे, घूमन लगे तमाम॥

सब संग दासियों के सीता, जिस तरफ घूमने जाती है।
उस तरफ डालिये सीता के, चरणों मे फूल चढाती हैं॥
इस तरफ इन्हों पर यौवन था, उस तरफ वसन्त न कमती थी।
स्वागत करने को वनस्पति, मानो सम्मुख आ नमती थी।
पक्षी चहु ओर मीठे स्वर से, खुशी खुशी सब बोल रहे॥

जहा पुष्प खोल मुख हंसते थे, कई हंसने को मुख खोल रहे।
जैसे मेरु पर नन्दन वन मे, सुरगण आनन्द करते हैं॥
इसी तरह महेन्द्रोदय बन के, गुण अर्ति हरते हैं॥

दोहा—एक जगह सब बैठ के, लगे लेन विश्राम।
होनी ने तब सिया को, दिया आन पैगाम॥

नेत्र दाहिना सिया का, ऊपर से लगा फड़कने को।
यह हाल देख महारानी का, दिल भी कुछ लगा धड़कने को॥
आर्त ध्यान के चिन्ह जरा, सीता के मुख पर होने लगे।
श्री रामचन्द्र जी जनक सुता की, आकृति को जोहने लगे॥

दोहा—सोचा इसको देर तक, रह न सके चुपचाप।
हाल पूछने के लिये, बोल उठे स्वयं आप॥
किस कारण सीता हुआ, चेहरा जरा उदास।
जो भी दिल का ख्याल है, सभी करो प्रकाश॥

महेन्द्रोदय बाग उदासी, सारी दूर नसाता है।
फिर ऐसा कहो कौनसा दुःख, जो तुमको आन सताता है॥
मन का दुःख या काया का, दोनों में किसका कारण है।
जो भी कुछ तुमको फिकर हुआ, करदो सब साफ उच्चारण है॥

दोहा—लगा फुरकने इस समय, प्रभु दाहिना नैन।
साफ नजर आता मुझे, होगा कोई कुचैन॥

क्या खबर मुझे कुछ और रही, कर्मों की देनी बाकी है।
यह आंख फुरकना नहीं, कोई कर्मों की आई झांकी है॥
इस कारण मुझको अर्ति है,. यह मन धैर्य नहीं धरता है।
जिन वचनों पर विश्वास मुझे, जो करता है वह भरता है॥

दोहा—प्रिये अधीर न हो इतनी, तुम हो चतुर सुजान।
जान बूझ क्यों वृथा ही, दुःख को लगी बुलान॥

मतलब अंग फुरकने का भी, कई तरह का होता है।
बाकी कर्मों की गति भुगतता, जीव जिस तरह बोता है॥
जो हुआ सभी कुछ देख लिया, होगा सो देखा जावेगा।
सौ रोगों का रोग शुक्ल, यह तुमको फिकर सतावेगा॥
दुःख सुख में साहसिक रहो, यह जिनवरजी का कहना है।
जो बन्ध निकाचित् कर्मों का, भुगते विन कभी न रहना है॥
आर्त ध्यान मिटाने को, शुभ धर्म ध्यान ध्याना चाहिये।
और वृथा भ्रम मे पड़कर, आत्म को नहीं कलपाना चाहिये॥
दान पुण्य करने से, निद्यत कर्म सभी टल जाते हैं।
तपी जपी के सम्मुख तो, यह कर्म हाथ मल जाते हैं॥
इस सुस्ती को छोड़ प्रिया, अब सावधान चोला करलो।
दान पुण्य करने में अब, कुछ हाथ और पोला करलो॥

दोहा—बैठ यान में चल दिये, रामचन्द्र सिया नार।
महलों में जा इस तरह, करने लगी विचार॥

गाना (सीता की उदासी मे कर्म स्वरूप विचार)

तर्ज—पाप का परिणाम प्राणी भोगते संसार में "सोहनी"

अए कर्म मुझ पर मुसीबत, और क्या २ लायेगा।
यह डर मुझे तेरा खबर, किन उलझनों मे फसायेगा॥१॥

फाड़ हृदय मेरा तू, देखले निर्दय कर्म।
तुझसा निठुर दुनिया मे, कोई दूसरा न पायेगा॥२॥

प्रथम दिया भाई का दुःख, दूजे स्वयम्बर का दिया।
तीजे दिया बनवास का दुःख, जोड़ कौन लगायेगा॥३॥

चौथे दिखाया द्वीप राक्षस, हायरे तूने कर्म।
सुन रोम होते हैं खड़े, कैसे कोई कथ गायेगा॥४॥

आंख फुरकाई है पंचम, फिर से तूने आन के।
कुछ तो बतादे कौनसी आपत्ति मुझ पर लायेगा ॥५॥
कैसा कहां होता है सुख, मै आज तक देखा नहीं।
इस जन्म से तू भी मेरा, पीछा न तज कर जायेगा ॥६॥

दोहा—इसी तरह से फिकर मे, बैठ रही मन मार।
दान पुण्य करने लगी, दिन दिन प्रति सिया नार॥

आयंबिल तपस्या करे कभी, सयम शुभ ध्यान लगाती है।
सामयिक नित्य नियम, और श्रेष्ठ भावना भाती है॥
और कर्म निकाचित बिन भोगे, होनी कैसे टल सकती है।
वमन उछलने पर औषधि भी, रोक नहीं कर सकती है॥

दोहा—रामचन्द्र के साथ थे, योद्धा ड्योढीवान्।
सच्चे सेवक थे सभी, शूर वीर बलवान्॥

नाम एका विजय शूर दूजे का था सुखदेवनजी।
पिंगल तीजा चौथा मध्यानन, पंचम कालक्षेपनजी॥
षष्टम शूल सुधर नामक, सप्तम अवधान कहता था।
सावधान पहरे पर इनसे, शंक काल भी खाता था॥

दोहा—एक दिवस कहीं सिया का सुन आये अपवाद।
करते करते बात यह, हो आया प्रभात॥

शय्या से उठ रामचन्द्रजी, उसी तरफ चल आये हैं।
तो देख राम को सहसा, ड्योढीवान् सभी घबराये हैं॥
समझा कि आज हमारी बातें. सुनके स्वामी आये हैं।
प्रतिकूल सिया के हम से, कोई शब्द प्रभु सुन पाये हैं॥
इसी भ्रम को धर हृदय मे, सब ही लगे कांपने को।
दशरथ नन्दन इस आकृति को, दिलमें लगे जांचने को॥

मन में यह विश्वास हुआ, भय इनके मन पर भारी है।
पूछन के लिये रघुपति ने, फिर ऐसे गिरा उचारी है॥

दोहा—क्यों भाई तुम किस लिए, कांप रहे हो आज।
साफ साफ हमसे कहो, अपने दिल का राज॥

आज तलक यह हाल तुम्हारा, कभी न मैंने देखा था।
जो कम्पन वायछिड़ी तुम पर, यह रोग किस तरह बैठा था॥
सत्य सभी कुछ बतलावो, कोई भय न जरा मन में करना।
नहीं सांचको आंच कभी लो, सत्य धर्म का तुम शरना॥

दोहा—मुख छोटे बातें बड़ी, पड़े किस तरह पार।
शक्ति कहने की नहीं, साफा साफ सरकार॥

सम्मुख कहने की शक्ति, हम में स्वामी नहीं पड़ती है।
यदि नहीं कहें तो स्वामी द्रोह के, पाप से आत्मा डरती है॥
इस उल्ट पेच को देख देख, यह मन काया घबराती है।
अब ग्रही छछुन्दर सर्प, न खाई जाय न छोड़ी जाती है॥
जो भी कुछ हमने कहना है, सो स्वामी को दुखदायी है।
सब दोष हमारे क्षमा करें, चरणों में यही दुहाई है॥

दोहा—कैसा ही तुमने किया, होवे आज कसूर।
अभय दान हमने दिया, करो भ्रम सब दूर॥

सत्य सभी कहदो जल्दी, देरी लाने का काम नहीं।
सत्य बराबर दुनिया में, सुखका कोई दूजा धाम नहीं॥
झूठ और प्रपंच बड़ा, दुःखदाई जाल भयकर है।
सत्यशील सन्तोषी जन को, सब ही देश स्वयघर है॥

दोहा—स्वामी सब सुन लीजिये, जरा लगाकर कान।
जो भी कुछ हमने सुना, अवध पुरी दर्म्यान॥

अपवाद सब जगह सीता का, स्वामी सुनने मे आता है।
हैं गौरवहीन शब्द ऐसे, जहां कान दिया न जाता है॥
यह जिह्वा नहीं हमारे मुख में, जिससे सब हाल बयान करें।
जो भी कुछ हमने सुना आप, उस पर भी न कुछ ध्यान धरें॥

दोहा—जिस कारण लंकेश ने, हरण करी सिया नार।
बिन भोगे कैसे रहा, इसमे कौन विचार॥

स्वादिष्ट वृक्ष पर पक्षी, ताडन करने पर भी आते हैं।
भूखों को भोजन मिलने पर, खाए बिन कभी न जाते हैं॥
सुगन्ध लिये बिन फूलों की, भमरा कैसे रह सकता है।
आंधी आने पर हिला नहीं, यह वृक्ष कोई कह सकता है॥
लेखनी और पुस्तक नारी, पर हस्त में होती है गते गते।
इस न्याय सिया पतिव्रत धर्म की, कैसे रख सकती है विजये॥
किसी शूरवीर योद्धा आगे, अबला कैसे बच सकती है।
क्या सिंह के सम्मुख आने से, बकरी बच कर भग सकती है॥
जल मिलने पर तृषातुर, कैसे प्यासा रह सकता है।
अग्नि संग तो घृत पिघलेगा, पर कभी नहीं जम सकता है॥
शराबी को तो स्त्री चाहिये, पुत्री बहिन तलक नहीं टलता है।
कामांध काम को तजे नहीं, चाहे संसार मे रुलता है॥
अब सोचो रावण के यहां पर, सीताजी थी चिरकाल रही।
फिर कैसे कहो यह जनक दुलारी, शीलरत्न की खान रही॥

दोहा—बडे घरों की छूत का, लगता नहीं लवलेश।
छोटों के ऊपर सदा, मढ़ते सभी क्लेश॥

बड़ा सरोवर गन्दा होने, पर भी स्वच्छ ही रहता है।
चलते जल को निर्मल कहते, चाहे विष्टा लेकर वहता है॥
कई गमी ग्रहण में वेचारे, पानी को जल्द डुलाते हैं।
मधु तेल घृत सामग्री का, हरगिज न कोई गंवाते हैं॥

छोटी धातु के बर्तन को, सब मांज मांज शुद्ध करते हैं।
चांदी सोने को भूठ नहीं, लगती सब अन्दर धरते हैं॥
शक्तिशाली जन निर्बल को, तो लुच्चा गुण्डा कहते है।
और जो मर्जी सो करें बडे, पर शुद्धाचारी रहते है॥
चिरकाल रही रावण घर, सीता फिर भी सती कहाती है।
यह बड़े पुरुष की रानी है, क्या पेश किसी की जाती है॥
अब नम्र हमारी विनती पर भी, ध्यान प्रभु धरना चाहिये।
जिससे अपवाद यह दब जावे, वह काम शीघ्र करना चाहिये॥

दोहा—श्री ऋषभदेव से आज तक, शुद्ध रहा यह वंश।
दाग न लाया किसी ने, रहे सभी प्रशंस॥

जनकसुता के कारण, सारा वंश कलंकित बनता है।
अब लगी कीर्ति नष्ट होने, यह कहे सामने जनता है॥
एक सिया हुई न हुई, रानियों की कुछ आपको कमी नहीं।
और एक बार यह गिरी हुई इज्जत, फिर किसी की बनी नहीं॥

दोहा—इन बातो ने राम का, हृदय दिया विदार।
उत्तर मे गम्भीर वन, यों बोले सरकार॥
जो भी कुछ तुमने सुना, साफ सुनाया आन।
इस पर मै प्रसन्न हूं, देख तुम्हारी वान॥

रविवंश पर अय भाई, हम धब्बा नहीं आने देंगे।
इसका गौरव सबने रक्खा, फिर हम कैसे जाने देंगे॥
इन प्राणों की परवाह नहीं, फिर कौन विचारी सीता है।
निर्मल है कीर्ति दुनिया में, बस वही मनुष्य एक जीता है॥

दोहा—एक खास था गुप्तचर, जिसका था विश्वास।
रघुवर ने एकान्त मे, कहा इस तरह भाप॥

गाना (रामचन्द्र जी का गुप्तचर से कहना)

तर्ज—होजा फिदा धर्म पर ।

घर घर मे फिर के आओ, कुछ देर न लगाओ ।
खुफिया पुलिस के वस्त्र, तन पर अभी सजाओ ॥ टेर ॥
कहते हैं पुरुष क्या क्या, सुनो बात कान सारी ।
रैयत का हाल सारा, आकर हमें सुनाओ ॥ १ ॥
क्या जिकर है हमारा, करता हो कोई बातें ।
जो बात हो यथार्थ, मुझको भी फिर दिखाओ ॥ २ ॥
तुम भेष को बदल कर, फिरना तमाम रातें ।
दूंगा इनाम तुझको यह, रहस्य सारा लाओ ॥ ३ ॥

दोहा----आज्ञा सुन श्रीराम की, भेष बदल कर दूत ।
लगा नगर में घूमने बन कर वो अवधूत ॥
एक माजरा देख कर, आया खुफिया दौड़ ।
चरण कमल मे शीश धर, बोला यों कर जोड़ ॥

गाना (गुप्तचर का रामचन्द्र से कहना)

आनन्द में अवध है झूठी न बात राई ॥
निन्दा है पर सिया की, घट घट में है समाई ॥ टेर ॥
क्या बात मैं सुनाऊँ, हृदय में दुःख भरा है ।
धोबी के आज घर मे, कुछ हो रही लड़ाई ॥ १ ॥
औरत से कह रहा था मैं रामचन्द्र न हूँ ।
रावण पै रही सीता, फिर घर में ला बसाई ॥ २ ॥
बातें अयोग्य सुन कर, मैं चल पड़ा वहां से ।
कुछ अंश मात्र, बाते आकर तुम्हें सुनाई ॥ ३ ॥

दोहा----परीक्षा कारण चल दिये, भेष बदल सरकार ।
गली गली में घूमते, बन कर पहरेदार ॥

अपवाद सिया का फैल रहा, जैसे चिकनाई पानी पर।
कोई कहता है धिक्कार राम, और सीता की जिन्दगानी पर॥
कई कहते हैं सुन्दर शरीर, को दोष नहीं कोई लगता है।
और धिक ऐसों का नाम, बना गन्दा नाला सा बनता है॥

दोहा---आगे बढ़ एक महल के, तले बैठ गये राम।
ऊपर बातें कर रहे, एक पुरुष दो वाम॥
बसते है धर्मात्मा, तुम जैसे महाराज।
स्वर्गपुरी जैसा समय, अवधपुरी मे आज॥

जहां चोर जार का नाम नहीं, सब पुण्यवानों का रहना है।
मैं आई जबसे देख रही, सब जवाहरात का गहना है॥
इस नगरी में पुण्यवान ही, आकर पैदा होते हैं।
अन्य जगह उत्पन्न होकर, बेशक कर्मों को रोते हैं॥
जिससे सारे सुख बतलाऊ, वह जिह्वा नहीं मेरे मुख में।
सब ही आकर मिल जाते है, यहा एक दूजे के सुख दु:ख मे॥
शुद्ध सामयिक नित्य नियम, प्रेम से सब नर नारी करते है।
और पांचों अंग झुका करके, गुरु के चरणों मे गिरते हैं॥
कुछ पुण्य किया था मैंने भी, चरणो की सेवा पाई है।
जो मात पिता ने तुम जैसे, पुण्यवान के संग परणाई है॥

दोहा—बेशक सिया राम है, महा पुरुष पुण्यवान।
जिन की कृपा से मिला, सब को सुख सामान॥

महा सती सीता माता, रघुकुल में पुण्य निशानी है।
मानिन्द स्वर्ग के बनी हुई, यह अवध पुरी सुख दानी है॥
यह वही अवध है दशकधर, का भय यहा पर भारी था।
छिपता फिरता था महाराज, दशरथ राजा लाचारी था॥

चोर जार भी उसी समय, सब अपना दाव चलाते थे।
लुच्चे गुंडों से भले पुरुष, मुशकिल से जान बचाते थे॥
वीर विभीषण ने लंका से, शिल्पकार भिजवाये थे।
मानिंद लंक के अवधपुरी, को यहां बनानें आये थे॥
वहां सिया राम के आने से, कुछ पहिले थी तैयार करी।
पुण्य राम सिया लक्ष्मण के से, नगरी मालो माल भरी॥
ऋषभदेव से आज तलक, यह शुद्ध रवि वंश कहाता है।
और लिये प्रजा के भूप यहां, का अपना रक्त बहाता है॥

दोहा—सीता जैसी नार यहा, हुई नहीं कोई और।
शील रत्न की खान है, पतिव्रता सिर मौर॥

यह सिया राम का पुण्य सभी, नगरी जो ऋद्धिवान् हुई।
और स्वर्गपुरी के मानिन्द यह, दुनियां में एक विशाल हुई॥
रघुवंशिन का पुण्य सितारा, प्रजा आनन्द करती है।
जहा व्यभिचारी राजा रानी, वहा आपत्ति आ पड़ती है॥

दोहा—सुनकर इस व्याख्यान को, रह न सकी चुपचाप।
तेजी से करने लगी, दूसरी नार आलाप॥
बस जी रहने दीजिये. सेठ साहिब यह बात।
ऐसा न हो गिर पडे, ऊपर से कहीं छात॥

दो चार और हों सीता सी, महाकष्ट यहा पर आजावे।
प्रलय काल की तरह गर्क हो, अवध रसातल को जावे॥
हां रूप रंग कह सकते हैं, सीता जैसी कोई और नहीं।
पर पतिव्रता में सेठ साहिब, हरगिज सीता सिरमौर नहीं॥
इन बातो की क्या खबर आप, गद्दी पर लेटे रहते हैं।
चिरकाल रही यह रावण के, फिर भी पतिव्रता कहते हैं॥
सेठ साहिब खुल गया ढोल का, पोल सभी रणवासों में।

क्या धूल उड़ाकर आई है जो, गई थी संग वनवासों में ॥
लंकपति से प्रेम सिया का, अबतक भी न दूर हुवा ।
कर्त्तव्य बड़ी पटरानी का, हर घर में यह मशहूर हुआ ॥
चरण युगल चित्र सीता पै, दशकंधर का निकल आया ।
क्या पता आपको सेठ साहिब, घर-घर में सब को दिखलाया ॥

दोहा—सुन्दरताई पर फिरे, मुग्ध हुवे श्री राम ।
खबर नहीं रविवंश की, उड रही धूल तमाम ॥

दश अंधों मे अधा बेशक, राम राग में अन्धा है ।
कुछ पता नहीं दुनियां में, हो रहा अच्छा या कि मन्दा है ॥
शक्ति मे वदबू किसी की, ढकी न ढकने पाएगी ।
यदि थोडे दिन भी रही सिया, तो वंश की खाक उड़ाएगी ॥

दोहा—राग सुगन्ध खांसी खुरक, द्वेष खून मद पान ।
कभी छिपाये न छिपे, प्रगटें सन्मुख आन ॥

सो सेठ साहिब कुछ ख्याल करें, यह पाप कहीं छिप सकता है ।
जो दाग लगा रविवंशिन पर, इस हालत मे मिट सकता है ॥
प्रशंसा करने वाला भी, कर्मों का बन्धन करता है ।
वह गिरा हुआ पशुओं से, जो बदनामी लेकर मरता है ॥
धिक्कार है ऐसे बड़प्पन पर, लानत हजार जिंदगानी पर ।
धिक् धिक् है बड़े घरानो को, धिक् पटरानी अभिमानी पर ॥

दोहा—श्री राम आगे चले, छोड़ इसे दरम्यान ।
धोबी का एक आ गया, सुन्दर बड़ा मकान ॥

दोहा—धोबी को थी हो गई, बहुत घाट पर देर ।
घर आने पर न मिली, धोबीन घर में फेर ॥
विवाह के वस्त्र देने थे, जिस कारण देर लगाई थी ।
कुछ था क्षुधा का जोर बढ़ा, जिससे आत्म घबराई थी ॥

कुछ पहर रात के बीते पर, मटकू की मां घर आई थी।
इस कारण धोवन पर चाबुक, धोबी ने खूब जमाई थी ॥

दोहा—इधर उधर से रुदन सुन आ पहुँचे नरनार।
गुस्से में धोबी भरा, बोला वचन उचार ॥
ओ बेहूदी बेशर्म, पगली गन्धी हैवान।
समझा क्या तूने हमें, बिल्कुल ही अनजान ॥

बिल्कुल ही अनजान फिरे, कुत्ती सी इधर उधर को।
भय नहीं तुझ को रहा किसी का, सूना तज गई घर को ॥
चुपकर छिनाल आज मैं समझा, तेरे सभी मकर को।
समझ लिया क्या मेरा कुल, तैंने जैसा रघुवर को ॥

दौड़—निकलजा मेरे घर से, उड़ादूं सर को धड़ से।
रचा क्या तूने फंदा—
रामचन्द्र जैसा मुझ को भी, समझ लिया क्या वन्दा ॥

दोहा—अब तुम को मिलना नहीं, मेरे घर अवकाश।
रामचन्द सा मैं नहीं, रक्खूं तुझ को पास ॥

गाना—पीठ यहां से दिखा जल्दी, शक्ल तेरी न भाती है।
चली जा पापनी सन्मुख, मुझे क्यूं मुह दिखाती है ॥
वड़े लोगों के घर में देखलो, ना शर्म कुछ होती।
वे कर लेते है मनमानी जो, मनमें उनके आती है ॥१॥
गई रावन के घर सीता, उसे फिर राम घर लाये ॥
उन्हे न पूछते कोई, बुराई छिप ही जाती है ॥२॥
वर्तन पीतल का सब मांजे, न मांजे स्वर्ण का कोई।
न दूंगा आने घर माही, मुझे क्या राम पाती है ॥३॥

—***—

रामचन्द्र के सीता के प्रति विचार

दफे हो दूर हो दुष्टन् नालायक बेशहूरन तू ।
जो कुलटा कामिनी होवे, सदा ठोकर ही खाती है ॥
चाहे मैं गरीब हूं धोबी तो भी पर्वा नहीं तेरी ।
निकल जा मेरे घर से तू, बुरी का कोई न साथी है ॥६॥

दोहा—वज्राघात हृदय हुआ, सुन धोबी की बात ।
रामचन्द्र निज महल में, आपहुंचे प्रभात ॥

कर मजन स्नान सामयिक, नित्य नियम का काम किया ।
फिर करके अन्न जल पान जरा, सुख शय्या पर आराम किया ॥
चतुर गुप्तचर रामचन्द्र ने, सभी जगह फैलाये हैं ।
वही बात और वही कहानी, सुनकर सारे आये है ॥

दोहा—सुनते ही श्रीराम के, दिल में उठी तरङ्ग ।
मन ही मन कहने लगे, होकर के अति तङ्ग ॥
अहो कर्म तूने किया, कैसा डेरा आन ॥
महा कष्ट भोगे मगर, छुटे न अब तक प्राण ।

बचपन में भामंडल का, दुःख सीता ने बर्दाशत किया ।
फिर कर्म स्वयंबर रचवा करके, कष्ट उसे यह खास दिया ॥
खाक छनाई बन बन की, अय निष्ठुर तूने फिरवाकर ।
लाखों का रक्त बहाया फिर, रावण से हमको भिड़वाकर ॥

दोहा—कष्ट अतुल हम पर पड़े, कह न सके जबान ।
फिर भी तू बेढब लगा, आगे और सतान ॥

गाना—अय कर्म तूने अचानक, यह मुझे धोखा दिया ।
घर का न छोड़ा घाट का, यह क्या, अजब मौका लिया ॥१॥

अपवाद प्यारी का हुआ, कुल की भी बदनामी हुई ।
इस बात पेचीदा ने मेरा, मास तन का खा लिया ॥२॥
निर्दोष सीता को निकालूं, यह सरासर भूल है ।
न निकालूं तो रविवंशन पे, धब्बा लगा लिया ॥३॥
कर्म जो चिकना बन्धा, हरगिज वह टल सकता नहीं ।
किस कदर होनी ने चहु तर्फो, से घेरा ला लिया ॥४॥

दोहा—ऐसा मन मे रामजी, बैठे करें विचार ।
देख आकृति राम की, बोले अनुज उचार ॥
क्यों भाई तुम किस लिए, हो गये आज उदास ।
क्या कारण इसका सभी, करिये आप प्रकाश ॥

राम---दुःख अपने की मै कथा, धूल कहूँ या खाक ।
होनहार टलती नहीं, यत्न करो चाहे लाख ॥
करते करते सोच उड़ गये, तोते मेरी अक्ल के ।
होनहार ने आज इस तरह, मारा मुझे पथल के ॥
अपवाद सिया रविकुल का सुनकर, रहा हाथ मल मल के ।
सिवा प्राण कुछ रहा न तन मे, सब गुण गये निकल के ॥

दौड़—लाज हेम हीरे हारों में, रहे न एक चारों मे ।
तर्फ एक करना होगा
लाज रखो रघुकुल की नहीं, जीते जी मरना होगा ॥

दोहा लक्ष्मण---भ्रात सत्य के सामने, कैसे ठहरे झूट ।
आगे चतुर सवार के, कैसे उछले ऊँट ॥

किस की शक्ति है दुनियां मे, रघुवंशिन का अपमान करे ।
और क्या मजाल है जनक सुता के, विरुद्ध यदि कोई नाद करे ॥
पुण्य अखण्ड प्रचंड आज, संसार में वीर तुम्हारा है ।
कौन फिकर तुमको, जब तक, दुनियां मे लक्ष्मण प्यारा है ॥

दो० राम—पुण्य हमारे मे अभी, है कुछ कसर जरूर।
शक्ति का करना नहीं, चाहिये कभी गरूर॥
वह जादू असली होता है, औरों के सिर चढ बात करे।
महा आँधी उसको कहते हैं, जो दिन के होते रात करे॥
बुद्धिमान् वही होता है, जो बुद्धि का प्रयोग करे।
पुण्य उसे कहते हैं जिससे, शत्रु जन भी शुद्ध योग करे॥

दो०राम—तीर्थंकर न कर सके, अभव्य को भव्य जीव।
अग्नि को ठडा करे, शीतल नीर सदैव॥
शक्ति के दिखलाने से, अपवाद नहीं रुक सकता है।
हा नरमाई से नर तो क्या, देवो का मन झुक सकता है॥
पर घर भजन हार लोक होते, क्या मुझको अक्ल नहीं।
पर जनक सुता को रखने की, कोई भी बनती शक्ल नहीं॥

दो० लक्ष्मण—जनक सुता मे दोष क्या, करलो स्वय विचार।
अबला को घर से बाहर क्यों करते सरकार॥
पानी में पत्थर तर जावे, अग्नि में कोई जले नहीं।
सागर मर्यादा तज देवे, स्थल पर से पानी ढले नहीं॥
कमल बेल पत्थर पर भी, जड जमा करे विस्तार कहीं।
अनहोनी बाते बने सभी, पर सीता लोपे कार नहीं॥
अमृत बन जावे कालकूट, चन्द्रमा अग्नि बरसावे।
चकवा चकवी नित्य रहे पास, न विरह रात्रि का आवे॥
दिशामूढ भानु होवे, मेरु स्वभाव से चल जावे।
उल्लू को दिन मे नजर पड़े, अभिमान सिंह का ढल जावे॥
अल्प मति श्रुति ज्ञानी हो, कायर मैदान में डट जावे।
सत्यवादी विश्वास किसी को, देकर के फिर नट जावे॥
चचल मन से कोई पुरुष, सुखकार हमेशा ध्यान धरे।
पर सीता बदले शील रत्न के, तन मन धन कुर्बान करे॥

दो० राम—निज गुण निज मुख से कहे ;गुणी बना न कोय ।
परमुख से गुण की ध्वनि उठे, साही गुण होय ॥

गुण सहित अश्व की देशान्तर, जाने से शोभा बढ़ती है ।
मिट्टी में पड़ने से हीरे की, चमक कभी नहीं घटती है ॥
अन्य जगह जाने में क्या, कोई खौप सिंहनी खाती है ।
सुगन्ध पर पर्दा पाने से क्या, गन्ध कहीं छिप जाती है ॥
सोने पर डाल सुहागा, फिर अग्नि में खूब तपाते हैं ।
मल रहित कीमती पासे का, सोना तब उसे बनाते हैं ॥
इसी तरह यदि सीता में, गुण हैं तो स्वयं दिखावेगी ।
स्वर्णवत् निर्मल बन करके, संसार में इज्जत पावेगी ॥

दो०राम—मैं नहीं चाहता सिया के, करूँ गुणा का नाश ।
वज्र हीरा होता है, लगे चोट ज्यं पास ॥

इस समय जो झूठा प्रेम करूं निश्चय सीता का दुश्मन हूँ ।
गौरव सीता का रहे जिस तरह, उसी बात में खुश मन हूँ ॥
कर्मों का कर्जा रहा सहा, चुपचाप जरा चुक जाने दो ।
जो भी आपत्ति आयेगी, सह लेगी सब कुछ आने दो ॥

दोहा- जो कुछ भाषा आपने, सो है बिल्कुल ठीक ।
किन्तु हमको ही जरा, देवो आज यह भीख ॥

यह वोही सिया जिसकी खातिर, वनवास मे रोते फिरते थे ।
आखों से आंसू चलते थे. मूर्छा खा खा कर गिरते थे ॥
वहां लाखों पुरुषों का अपने, हाथों मे रक्त बहाया था ।
और एक सिया की खातिर इतना, अत्याचार कराया था ॥
सब जगह आपकी नरमाई ने ही, यह फूल खिलाये हैं ।
बदला न अभी वह स्वभाव, जिसने सब दु:खी बनाये है ॥

दुनियां सब दुष्ट दुरंगी को. डण्डा ही सदा दबाता है।
जो करे इन्हों से लालपाल, वह अपना आप गवाता है॥
तन से छाया घन से बिजली, क्या दूर कभी हो जाती है।
क्या धर्म लिये मरने वाले, की भी किसमत सो जाती है॥
सागर क्या निजगुण तज कर के, छोटे तालाव बन जाते हैं।
औदार चित्त क्या जरा जरा, सी बातो पर तन जाते हैं॥
विद्यमान है वीर विभीषण, निश्चय उनसे करलेवें।
हां निकले दोष यदि कोई तो, फिर सीता को तज देवे॥

विभी०—समझ इशारा अनुज का, पास विभीषण आन।
आदि अन्त पर्यन्त तक, लगे सभी समझान॥

दोहा—सर्वज्ञ क्षमा और अहिमणि, सती शील प्रधान।
यह निजगुण तजते नहीं, तज देते हैं प्राण॥

वह जिह्वा नहीं मेरे मुख में, जिससे माता के गुण गाऊं।
संसार में आती नजर नहीं, दे उदाहहरण क्या समझाऊं॥
मैंने अपने नेत्रों से नित्य, सीता का तेज निहारा है।
वचनों का कोड़ा दशकन्धर पे, समय समय पर मारा है॥
तुम जैसो का भी दशकन्धर, आगे हृदय घबराया था।
इस महासती क्षत्राणी ने, रावण से भय नहीं खाया था॥
वास्तव में इस आत्मशक्ति से, विजय आपने पाई थी।
किस खयाल मे बैठे आप कोई, हम तुम की नहीं चढ़ाई थी॥

दोहा—माता का अपमान है, करूं सफाई पेश।
सीता मे स्वामी नहीं, कालिस का लवलेश॥

सतियों में है शिरोमणि, सीता विश्वाधीश।
तजो वहम दिल का सभी, कृपा करो यह ईश॥

शील रत्न की शक्ति से, बढ कर न कोई शक्ति है।
और अष्टापद के आगे सब सिंहों की भी क्या हस्ती है ॥
आत्म शक्ति वालों को ससार, न मिल कर गिरा सके।
अभव्य आत्मा को तीर्थंकर, भगवन्त भी नहीं तरा सके ॥

दोहा—ज्ञात सभी कुछ है, मुझे क्या बतलाते और।
होनी के आगे कहो, चले किस तरह जोर ॥

गाना—जानता हूँ इसमें सीता की, खता कुछ भी नहीं।
पतिव्रता मे दोष का लव--लेश तो कुछ भी नहीं ॥१॥

पाच सौ चेले मुनि खदक, के घानी में पिले।
किस तरह टालें कर्म, चलता जफा कुछ भी नहीं ॥२॥
भगवान् आदिनाथ को, एक वर्ष न अन्न जल मिला।
क्या दोष उनका कर्म से, होती वफा कुछ भी नहीं ॥३॥
है अनादि नियम क्षत्रिय, पुरुप तीर्थंकर बने।
उन्नीसवां स्त्री बना क्या, नियम था कुछ भी नहीं ॥४॥
अजना के साथ सबका. प्रेम था वहा किस तरह।
शत्रु बने सब क्योंकि, कर्मो से नफा कुछ भी नहीं ॥५॥
बेशक मैं रोता था वनों में, अब क्या रोऊँगा नहीं।
'शुक्ल' भावी टल नहीं सकती, पता कुछ भी नहीं ॥६॥

दोहा—नर्म गर्म कह सभी ने, समझाये सब तौर।
एक न मानी किसी की, रघुकुल के सिर मौर ॥
वज्र के मानिन्द किया, हृदय निष्ठुर तमाम।
मन ही मन में कह रहे, मन को यों श्रीराम ॥

गाना—आज सिया के लिये मेरे दिल, बेशक तू खंजर बन जा।
उत्तर अंकुर देत किसी को, दिल कल्लर बजर बन जा ॥१॥

चाहे प्रेम सिया का रग रग मे, है कूट कूट कर भरा हुआ ।
धन खरबूजे वत् ऊपर से, क्रोधी जन का अफसर बन जा ॥२॥
कुछ धर्माधर्म नहीं जग मे मन, .जरा कल्पना ऐसी कर ।
इस उल्ट पेच मे बचा जान, हैरान तू ही रहेबर बन जा ॥३॥
चीर फाड़ के वक्त मसीहा, रहम दूर कर देता है ।
तू भी मन आज सिया की खातिर, तेज धार शस्त्र बन जा ॥४॥
जुल्म सितम चाहे कितना हो, इक लक्ष्य सामने वश का रख ।
जितना मर्जी कोई समझावे, नर्मी को तज पत्थर बन जा ॥५॥
कृतान्त बदन के साथ बनो मे, जल्द सिया को पहुचा दे ।
इसी फैसले पर जम दिल, पत्थर वत् क्या वज्र बन जा ॥६॥

छंद—सेनापति कृतान्त को, श्रीराम ने बुलवाय के ।
रहस्य सब एकान्त में, समझा दिया बैठाय के
कागज के ऊपर लिख दिया, एक लेख खूब बनाय के ॥
कृतान्त बदन के हाथ देकर, यों कहा समझाय के ।

(गाना राम)

श्रीराम का यूं समझाना हुवा, कृतान्तको ऐसा सुनाना हुवा ॥टेक॥
देखो रखना यह ध्यान, कहूं कान दरम्यान ।
करना किसी को न बयान, जो गुप्त तुम्हे जितलाना हुवा ॥१॥
जाके वन मझार, छोडो सीता यह नार ।
मत सुननी पुकार, हुक्म पूरा करो फरमाना हुवा ॥२॥
तजी सीता की प्रीत, देखो दुनियां की रीत ।
कौन करे प्रतीत, सतीजी को दु ख सागर वहाना हुवा ॥३॥
हुवा सुन के हैरान, कृतान्त वदन तब जान ।
हुवा वहा से रवाना, क्यो के भूपति का हुक्म बजाना हुवा ॥४॥
देखो कर्मों की चाल, करते छिन मे बेहाल ।
इसका टालो जंजाल, सीता जी का वनों मे जाना हुवा ॥५॥

सीता वनवास

दो० राम—यान विकट में सिया को, और दासी विरवाल।
ले जावो बन खण्ड मे, मौन धार तत्काल॥

रथ से वहां उतार उन्हे फिर, हाल यह सभी बता देना।
यदि और तुम्हें कुछ कहे सिया, तो पत्र उन्हे सुनादेना॥
है कर्मों की चाल बता करके, वापिस रस्ता लेना।
यह नित्य नियम का आसन, और पुस्तक का जो बस्ता देना॥

दोहा—सेनापति रथ ले गया, जनक सुता के द्वार।
सीता सरल स्वभाव थी, झटपट हुई तैयार॥

यह कर्म महा बलवान्, जीव को नाना रंग दिखाते हैं।
कभी रङ्ग महल मे सुख विनोद, कभी बन की खाक छनाते हैं।
झट रथ की कला दबाई तो, गंगा सागर के पार हुये।
जब मध्य अरण्य मे पहुँचे, आगे चलने से लचार हुये॥

चौपाई—रथ से उतरो हे जगदम्बा, देखो नैन उठाय अचम्भा।
है बनखण्ड भयानक लम्बा, देख तेरा दु.ख मम दिल कम्पा॥

दोहा—जनक सुता ने जिस, समय देखा नयन उठाय।
दृश्य भयानक देख कर, यों बोली घबराय॥

दोहा—अए भाई रथवान यह बेयाबान उद्यान।
साफ साफ जो बात है, करो सभी व्याख्यान॥

छन्द—पहिले थे जिस बनवास में, वैसा ही आता है नजर।
सोऊ या जागू आ रहा. या स्वप्न कोई क्या खबर॥
अवध के महलों में हूं, क्या स्वप्न आया था मुझे।
जल रहा हृदय मेरा यह, तप्त अब कैसे बुझे॥

तू ही बता कृतान्त अब, श्री राम लक्ष्मण हैं कहां।
देकर दगा क्या राम लक्ष्मण, भी मुझे तज गये यहां॥
रो रहा रथवान सम्मुख, मैं इधर हूं रो रही।
हे प्रभु कर्मों की गति यह, क्या खबर क्या हो रही॥
आई थी मैं तो भ्रमण को, माहेन्द्रोदय उद्यान में।
किन्तु खड़ी हूं इस भयानक, अरण्य के मध्यान्ह में॥
हैरत में हैरत हो रही, क्या माजरा नायाब है।
वन भृत्य रथ दासी मैं पंचम, क्या अजब यह ख्वाब है॥

दोहा—सब रोगों से है, बुरा परतंत्रता रोग।
पराधीन नर को रहे, सदा निरन्तर शोग॥

पाप कर्म के उदय भाव से, पराधीनता मिलती है।
फिर निशदिनरहता भयदिलमें,हृदयकीकलिनहीं खिलती है॥
पराधीन स्वप्ने सुख नाहीं, महा पुरुष बतलाते हैं।
कर्म बन्ध के काम सभी, जन भृत्यों से करवाते हैं॥
सर्दी गर्मी आंधी बारिश, से मारे मारे फिरते हैं।
फिर भी स्वामी घुर घुराय, कर बेचारों पर गिरते हैं॥
पराधीनता के वश में कई, अनर्थ करने पड़ते हैं।
सप्तभया में भृत्य एक, आजीविका भय से डरते हैं॥
हे मात जरा अब धीर धरो, इस रोने से क्या बनता है।
सब कष्ट देख कर के तेरा, पत्थर का कलेजा छनता है॥
कुछ धीर धरोगी तुम पहिले, तबही कहने में पाऊंगा।
नहीं तो यह देख रुदन तेरा, मैं रो रो कर मर जाऊंगा॥

दोहा—पर दुःख भंजन कारणे, सीता दिल को थाम।
बोली लो कह दो मुझे, भाई हाल तमाम॥

दु खदायी सव मात जी, कहूँ तुम्हे जो हाल ।
अवध पुरी तुम से छुटी, छोड़ो रंज मलाल ॥

क्या कहू हाल माता तुम को, आत्मा मेरी घवराती है ।
इस कर्म रेख आगे सीता, क्या पेश किसी की जाती है ॥
लङ्कपति ले गया इसी का, भ्रम सभी जन करते हैं ।
शील हुआ खडित वहा तुम पे, दोष सभी यह धरते है ॥
घर घर मे क्या नरनारी में, सब जगह यह चर्चा भारी है ।
और गली गली कूचे कूचे, बच्चों तक यही विमारी है ॥
भेष बदल श्रीराम रात को, गली गली में फिरते थे ।
अपशब्द तुम्हारे प्रतिकूल, उनके कानों में गिरते थे ॥
रामचन्द्र को लक्ष्मण जी ने, सभी तरह से समझाया ।
भावी वश रघुकुलादिनेश पर, एक नहीं दिल में लाया ।
गौरव रघुकुल का रखने को,तुमको यहा बाहर निकाला है ।
हो बुद्धिमान् माता तुमको, पर्याप्त जरा इशारा है ॥

दोहा—सेनापति के वचन सुन, गिरी मुच्छा खाय ।
हो सचेत फिर फिर सिया, पड़े धरण पर जाय ॥
सेनापति भी दुःखित हो, मन मे अति घवराय ।
हो सचेत बोली सिया, मन मे यों अकुलाय ॥

आश्चर्य मुझको हुआ, रहा न शोभन ध्यान ।
अहो कर्म कहां से कहां, लाकर पटकी आन ॥

सीता का विलाप

गा० सी०—आहे कर्म तूने मुझे, कैसे रुला के मारा ।
जिस्म चकचूर हुआ, जिगर यह पारा पारा ॥१॥
मुझ-सा दु'खिया न कोई, होगा कर्म दुनिया मे ।
कैसा पापी यह धरा, तूने है मुझ पै आरा ॥२॥

पशुओं के भी सहायक, आते हैं नजर दुनिया से ।
मेरा यह कष्ट नहीं, दुनियां मे मेटन हारा ॥३॥
आज उपालम्भ किसी, को देऊँ तो क्या ।
कर्मों के चक्कर मे मेरा आया, है पुण्य सितारा ॥४॥
मेघ धारा से पहाड़ों, तक भी तर होते है ।
बून्द चातक न लहे, साफ ग्रन्थों में उचारा ॥५॥
आज संसार का, आधार रविकुल है ।
रहना मेरा ही नहीं, कर्मों को आज गवारा ॥६॥

दोहा—क्यों भाई कुछ और भी, कहा तुम्हे श्रीराम ।
सो भी बतला दो मुझे, पति का हुक्म तमाम ॥

दोहा। पत्र एक मुझको दिया है स्वामी ने मात ।
खबर नहीं मुझको लिखी क्या इसमे है बात ॥

दोहा—ले पत्र रथवान से, पढ़ा सिया ने खोल ।
लेख में ऐसे राम ने, लिखे शब्द अनमोल ॥

दोहा जड़ चेतन का लोक में, जो जो नित्य स्वभाव ।
नित्य स्वभाव का न हुआ, न होगा कभी अभाव ॥

जो आत्म सो ज्ञान ज्ञान, सो ही आत्म कह लायेगा ।
यह निजगुण ज्ञान आत्म का, न गया कभी न जायेगा ॥
संयोग अग्नि का मिलने से, जल उष्ण हुआ कहलाता है ।
पर निज गुण उसका शीतलता, वह कभी कहीं नहीं जाता है ॥
इसी तरह निश्चय में न मै, तेरा न तू कुछ मेरी है ।
बाकी सब रंग बिरंगी यह, कर्मों की चढ़ी अन्धेरी है ॥
किन्तु ऐसी अवस्था मे अब तक, हम तुम नहीं आये हैं ।
क्योंकि आत्म प्रदेशों पर, कर्मों के बादल छाये हैं ॥

दोहा—अब आगे कुछ है सिया, पढ़ना करके गौर।
निम्न लिखित जो उदाहरण, भाव इन्हों मे और ।।

कुछ वह स्वभाव हैं दुनिया मे, जिनका विभाव भी होता है।
वैसा ही फल मिलता, जैसा बीज आत्मा बोता है ।।
सम्यक् ज्ञान दर्श चारित्र, को जो हृदय धरते हैं।
प्रवाह से कर्म अनादि का, भी अन्त वही जन करते हैं ।।
अन्तक्रिया करने वालों के, चार भाग बतलाये हैं।
सर्वज्ञ देवने देखो तो, किस तरह जीव समझाये हैं ।।
अल्प कर्म वाले प्रथम, चक्री की तरह बतलाये हैं।
स्वल्प वेदना लम्बी आयु, भोग परम सुख पाये हैं ।।
शिष्य पांच सौ खंदक के, पालक ने घानी पिलवाये ।
सम दम खम को धार अटल, आसन जा मुक्ति में लाये ।।
स्वल्पायु और महा कर्म, इस को भगवन् फरमाते हैं।
अन्त क्रिया अब तीजी का भी, कुछ भेद तुम्हे दर्शाते हैं ।।
महा कर्मी दीर्घायु वाले, सन्तकुमार कहलाए हैं।
सोलह रोगोंने हे सीता! वह, सात सौ वर्ष सताए हैं ।।
चौथी क्रिया अल्प कर्म, वाले प्राणी में आती है।
अष्ट कर्म कर नाश आत्मा, अक्षय मोक्ष पद पाती है ।।
हम तुम दोनों इस दुनिया मे महा कर्म भोगने वाले हैं।
इस कर्म मिमासा के प्यारी, दुनिया में रग निराले हैं ।।

दोहा—कर्म शुभाशुभ जो किये, पूर्व भव के मांय।
बिन भोगे छुटते नहीं, लाखों करो उपाय ।।

निश्चय मे है बात यही, बाकी संसार मे कारण हैं।
कर्म भोगने पड़े चाहे, सुरनर मुनि लब्धि चारण हैं ।।

और बहुत क्या बतलाऊं तुम, जिन शास्त्रो की वेत्ता हो।
निश्चय मे कोई मनुष्य नहीं, दुःख मे विभाग जो लेता हो॥

दोहा—निश्चय नय की बात यह, आगे सुन व्यवहार।
सामजस्य दोनों कहे, आगम के अनुसार॥

व्यवहार जिन्हों का शुद्ध उन्हीं का, निश्चय निर्मल होता है।
जो करे एक से घृणा वह, मिथ्यात्व नींद में सोता है॥
व्यवहार बिना दुनिया का, कोई चलता कारोबार नहीं।
यही तो एक कसोटी है, इस बिन होता भवपार नहीं॥

दोहा—प्रेम तुम्हारे से मेरा, हुआ न होगा दूर।
भावी वश अन्तर पड़ा, आगे पढ़े जरूर॥

उदाहरण देते है जिनका, मतलब आप समझलेगी।
प्रेम मेरा प्रगट होगा, शिक्षाये तुम्हे मदद देगा।
बूंटी एक लज्जावती वहा, वनस्पति कहलाती है।
कभी अपना गुण न तजे पुरुष, की छाया से मुर्झाती है।
सोना गुण न तजे सुहागे, से झट मेल बनाता है॥
पर सिक्के से न मिले चाहे, वह अपना आप गंवाता है।
अग्नि जल को तपा तपा, करके स्टीम बनाता है॥
पर निज गुण शीतलता का, जल के तन से कभी न जाता है।
काल अनन्त एकेन्द्रीय मे, यह जीव अतुल दुःख सहता है॥
फिर भी निज गुण ज्ञान आत्मा, की सत्ता में रहता है।
जड चेतनभी हे जनक सुता, अपना कोई तजे स्वभाव नही॥
बस इसी तरह से प्रेम मेरे का, तुझ से हुआ विभाव नहीं।

गाना—जिसने गौरव न अपना, बचाया प्रिया।
उसने वृथा ही जन्म, गंवाया सिया॥टेर॥

सिंह अपशब्दों को प्यारी, झेल सकता ही नहीं।
काल के भी सामने हो, पीछे टल सकता नहीं॥
इस के गुण को सभी ने, सराहा सिया ॥१॥
टुकड़े करने से भी हीरे की चमक जाती नहीं।
सत्पुरुषों को स्वप्न में, भी बदी आती नहीं॥
चाहे जितना किसी ने, सताया सिया ॥२॥
आग में धरने से कुंदन की, चमक जाती नहीं।
तोड़ देने से भी मोती, की दमक जाती नहीं॥
चोगा हंसों का, येही बताया सिया ॥३॥
बादलों से कड़क बिजली की, कभी रुकती नहीं।
ढकने से पर्वतके आतिश,की भड़क छुपती नहीं॥
किसने गिरीशृंग को, वहां से हटाया सिया ॥४॥
खौफ खतरे में बदल, सकता नहीं धर्मी का खूं।
रगड़ने से जा नहीं, सकती कभी चन्दन की बू॥
निर्मल स्फटिक रत्न, कहाया सिया ॥५॥
देश आत्म कुल का गौरव, जिनकी रगरग मे बसा।
पीछे हट सकता नहीं, धर्मी मुसीबत मे फंसा॥
कर्म शत्रु उसी ने, मिटाया सिया ॥६॥
क्या हुआ गरदिश में यदि, तेरा सितारा आज है।
धीर धर दिलमें शुक्ल, खुल जायेगा यह राज है॥
गुण धैर्य में सब ने, बताया सिया ॥७॥

दोहा—मानिंद स्फटिक रत्न के मल नहीं तुम में कोय।
किन्तु कृत्य पूर्व कर्म, गया प्रकट अब होय॥

सर्वज्ञ देव ने मित्र कहा है, कसर मिटाने वाले को।
और अरि बताया राग भाव से, पाप छिपाने वाले को।

वस यही भावना है मेरी, तुम से न कोई कसर रहे।
फिर अंगुली करने वाला तुम पर, बुरा न कोई बशर रहे॥
आप भविष्य में सतियों के, लिये उदाहरण बन जाओगी।
ससार में नाम प्रगट होगा, और अन्त मोक्ष पद पवोगी॥

प्रिया तुमको संकट देकर के, आराम न कोई पायेगा।
और समय समय पर आकर के, सबको ही कर्म सतायेगा॥
हूँ निशंक मैं यहां बैठा, मन मारा मारा फिरता है।
वस बुद्धिमान् के लिये पर्याप्त, होता जरा इशारा है॥

दोहा---अय भाई रथवान् अब, तुम मत बनो अधीर।
जो जो पड़े अवस्था, सो सो सहे शरीर॥

स्वामी की आज्ञा पालन करना, शुभ कर्त्तव्य तुम्हारा था।
यहां अन्य किसी का दोष नहीं, योंही वस कर्म हमारा था॥
श्री रामचन्द्र के चरणों मे, कह देना मेरी वात सभी।
इस जन्म में आशा टूट गई, परभव मे देना दर्श कभी॥

जो कुछ आपने किया मेरे संग, सोच के ठीक किया होगा।
या पिछले भव का बदला मुझ से, आपने कोई लिया होगा॥
फेरों के समय जो किये प्रण, सो मुझ से नहीं पले होंगे।
या आपके ध्यान से हे स्वामिन्, कुछ देर के लिये टले होंगे॥

वस यही भावना है मेरी, पुण्य रूप आप का वाग रहे।
एक सीता हुई न हुई तो क्या, रघुकुल को न कोई दाग रहे॥
निश्चय में कर्म हमारा आपने, वात ठीक बतलाई है।
व्यवहार की तो पर हे स्वामी, कुछ आती नजर सफाई है॥

व्यवहार को रखते हुए आप, मालूम तो मुझ से कर लेते।
कुछ ख्याल नहीं मुझको आता, चाहे शूली पर धर देते॥

कोई सेना तो नहीं मुझ पर थी, जो आपकेसाथ मे जंग लड़ती।
धरना देकर के हे स्वामी मैं, आप को तग नहीं करती॥

दोहा—क्रोध नहीं मैं आप पर, करती कुछ लवलेश।
शाप नहीं देती तुम्हें, करके कोई क्लेश॥

महलों पर से गिर करके, अपना अपघात नहीं करती।
कभी अग्नि में प्रवेश नहीं, न पानी में पड़ कर मरती॥
शस्त्रादिक से भी तो मेरी, ऐसे अपघात नहीं होती।
विष आदि खाकर के मैं, चुपचाप नहीं अन्दर सोती॥
और ऐसे दोषारोपण से, घबरा कर कभी नहीं रोती।
बाद में जो मर्जी करते, मुझको कोई उजर नहीं होती॥
यह अच्छा था निज हाथों से, तलवार मेरी गरदन धरते।
पर करके यों अपमान मेरा, सहसा तुम पृथक् नहीं करते॥
सब मेरी शुभ आशाओं पर भी, तुमने पानी फेर दिया।
और चुने हुवे मन के बेरों को, कैसे आज बिखेर दिया॥

दोहा—आशा थी कुछ दिनों में, होंगे राजकुमार।
वरतेगा इस खुशी का, घर घर मंगलाचार॥

व्योम कुसुवत् सब मेरी, आशाएं निष्फल कर डारी।
हे! कर्म कहां हाथी विमान, अब नहीं गधे की असवारी॥
यह क्या साधा व्यवहार आज, निराधार वनों में छोड़ दई।
सब प्रीत काच की रेखावत्, कैसे आपने तोड़ दई॥

वड़वानल सागर के जल को, नित्य उठ खूब जलाता है।
फिर भी वह सागर वडवानल को, कभी न दूर भगाता है॥
अभ्र छायावत् प्रीत आपकी, आज सामने दूर हुई।
या यो समझें जल छाछ की मानिन्द, आपकी प्रीत जरूर हुई।

सब तरह आपका संशय करती, दूर चाहे करवालेते।
कम से कम कोई गुण लखकर, धीरज से काम जरा लेते ॥
बस और कहूँ क्या आप से मैं, तुम जिन शास्त्र के वेत्ता हो।
अति पुण्यवान रघुकुल दिनेश, तुम तीन खड के नेता हो ॥

सिन्धु से गम्भीर सौम्य शशि, शीतल स्वभाव में चन्दन हो।
तेज प्रताप प्रचण्ड आपका, पुण्यवान रघुनन्दन हो ॥
वसन्त ऋतु सम तुमने, सबके हृदय कमल खिलाये है।
क्या दोष आपका मुझ निभागिन को, यदि सुख नही पाये है।

दोहा सीता–पूर्व भव मिथ्यात्व मे, बांधे कर्म अपार।
पांचों आश्रव न तजे, दुखी किये नर नार ॥

शरने चार नहीं अधे, न धर्म चार प्रकार किया।
त्रिकर्ण शुद्ध न किये योग, औरो को दुःख अपार दिया ॥
करी ना वश पांचों इन्द्रीय, हर समय चार विकथा करी।
तीव्र कषाय करी चारों जिस, कारण मुझ पर व्यथा पडी ॥

है दोष सभी मेरे कर्मों का, स्वामी का लवलेश नहीं।
ऋण कर्मों का दिये बिना, आत्मा का मिटे क्लेश नहीं ॥
संयोग मूल दुःख जीवों को, अरिहन्त देव यों कहते हैं।
इस मोहनी कर्म के वशीभूत हो, वृथा जीव दुःख सहते हैं ॥

दोहा सीता—जिस कुल घर या नगर में, वड़ा देश में होय।
उसकी रक्षा करन से, रक्षा सब की होय।

इसलिये राम की सेवा करना, मुख्य कर्त्तव्य तुम्हारा है।
लक्ष्मण जी को भी कह देना, शिक्षाप्रद वचन हमारा है ॥
बस और नहीं कुछ कह सकती, यह सर मेरा चकराता है।
तन मे न शक्ति रही मेरे, बस गिरी तिमारा आता है ॥

दो० कवि—इतना कह करके सिया, गिरी मूर्छा खाय।
देर बाद आ चेत मे, यों बोली घबराय॥
बेशक स्वमी के लिये, बनी आक का फूल।
ऊपर लाली दमकती, अन्दर विष का मूल॥

स्वामी फूल गुलाब किन्तु, मैं लिये उन्हों के कांटा थी।
वह स्फटिक रत्न हीरे जैसे, मैं अनघड़ पत्थर भाटा थी॥

बावना कौशिक चन्दन का, सब कोई लेने वाला है।
ऐरण्ड निकम्मी लकड़ी को, कोई जगह न देने वाला है॥

दोहा सीता—सज्जन ऐसा चाहिये, जैसे रेशम तन्द।
धागा धागा खंड हो, विरह न करे पसन्द॥

श्रीराम तो बेशक हैं सज्जन, मैं ही निर्भाग नकारी हूँ।
हैं रङ्ग मजीठी प्रेम उन्हों का, मैं कर्मों की मारी हूँ॥
पाप कर्म के उदय भाव से, वेद स्त्री पाता है।
जिसका न जोर कहीं चलता, वह इस पर धौंस जमाता है॥

दोहा सीता—दोष नहीं कुछ राम का, सुन सेनापति वीर।
उपालम्भ सबका हुआ, सुनो आज आखीर॥

गाना—करूं किस पे जाकर मैं, किस की शिकायत।
कहो कौन मेरी, करेगा हिमायत॥ १॥

मुझे ख्याल है तो, सिर्फ एक ही है।
प्रभु ने सुनी न हमारी शिकायत॥ २॥
पिया को यह कहना, मुझे माफ करदें।
यदि मुखं से निकली, तुम्हारी शिकायत॥ ३॥
कर्म कर्जा मेरा न पिछला ही उतरा।
तो आगे किसी की, करूं क्या शिकायत॥ ४॥

जो उपकार मुझ पर, किया था पति ने।
क्या कृतघ्न हूँ मैं, जो करूंगी शिकायत ॥ ५॥
मुझे कोई दुःख है तो, इस बात का है।
करे न कोई मम, पति का शिकायत ॥ ६ ॥
खत्म सब कहानी, व शिकवे हमारे।
गई छूट प्रभु की यह, हम से शिकायत ॥ ७ ॥
मुबारिक यह तुमको, तुम्हारी अवध हो।
सुनेगा अरण्य ही, हमारी शिकायत ॥ ८ ॥
फलो फूलो स्वामी, रहो खुश हमेशा।
यहां मेरी वनचर सुनेगे शिकायत ॥ ९ ॥
यह निर्मल सदा ही, रहे कुल तुम्हारा।
करेगा न कोई अब, इस की शिकायत ॥१० ॥
सबर के सिवा बस, करूं तो करूं क्या।
जबां पे न लाऊंगी, कोई शिकायत ॥ ११ ॥
सदा रंग बरसे, तुम्हारी अवध में।
मेरी भावना यही, समझो शिकायत ॥१२ ॥

दोहा—सज्जन जन सुन लीजिये, जरा लगा कर कान।
रोती तज रोता चला, वापिस अब रथवान।
चौपाई—वन में फिरती जनक दुलारी, हिंसक जीव जहां दुखकारी ॥
देख भयानक दृश्य अपारी, तृषातुर विपदा की मारी ॥
यूथ भ्रष्ट हिरणी सम डोले, शब्द भयानक वनचर बोलें ॥
चीता एक शिकार टटोले, बैठी आप वृक्ष के ओले ॥

दोहा—कभी कभी गश खा गिरे, रहे न कुछ भी होश।
या रोती निज कर्म को, या रहती खामोश।

कर्म आते हैं किसी को, जब सताने के लिये।
युक्ति कोई चलती नहीं, उन को हटाने के लिये ॥१॥
थाल स्वर्ण के कभी, छत्तीस व्यंजन के भरे।
अब तरसती है सिया, एक दाने दाने के लिये ॥ २
स्वर्ण की झारी में सुगन्धित, नीर मिलता था कभी।
आज फिरती है सिया जल, बून्द पाने के लिये ॥३॥
राजमहलों में सरदखानो में, रहती थी कभी।
आज न सामान तप्त, लूं हटाने के लिये ॥ ४ ॥
फूलों की शय्या पर सदा, सखियां सुलाती थीं जिसे।
आज धूली पर पड़ी कुछ, न सिरहाने के लिये ॥ ५ ॥
कल खडे कर जोड़ रथ, विमान सेवक थे सभी।
अब कोई मिलता नहीं, रस्ता बताने के लिये ॥ ६ ॥
पूछते थे कल सभी, महारानी क्या चाहिये तुम्हे।
अब यहां कोई नहीं, धीरज बँधाने के लिये ॥ ७ ॥
ढूंढ़ भाल विचार देखा, कर्म रेखा है अटल।
'शुक्ल' एक जिन धर्म है, इनसे बचाने के लिये ॥ ८ ॥

दोहा—वृक्ष तले बैठी सिया, रोवे जारो जार।
अहो कर्म कैसी करी, छुड़वाए भरतार ॥

गाना (सीता)

अरि कर्मों ने कैसा सताया मुझे,
ऐसा झूठा कलंक लगाया मुझे ॥ टेर ॥
क्या खबर मेरा सभी से, वैर था किस जन्म का।
आता नजर मुझको नहीं, कोई कर्म इस जन्म का ॥
जिसने ऐसी मुसीबत में, पाया मुझे ॥ १ ॥

वचन और सब प्रण भी, तैंने बहाए नीर में।
राम जैसे की भी तूने, फर्क डाला धीर में॥
तो ही वन में, अकेली पठाया मुझे॥ २॥

चाल है कर्मों की यह, मुझको कलंकित कर दिया।
बेदर्द विधना ने भी लाकर, किस जगह पर धर दिया॥
कैसी विपदा में आज फंसाया मुझे॥ ३॥

किस जगह किस तरफ जाऊं, अए कर्म यह तो बता।
आता नजर कोई नहीं, पूछेंगे किससे क्या पता॥
भूखी प्यासी को चक्कर सा आया मुझे॥ ४॥

दोहा—इतना कह कर के सिया, गिरी धरणी मंझार।
देर बाद आ चेत में, रोवे जारो जार॥

जब लगे कोई डर नमोकार, मन्त्र को पढ़ने लगती है।
जब रोती है तब आंखों से, पानी की धारा बगती है॥
देख सिया का रुदन वहां, पत्थर का कलेजा छनता है।
अब देखो कष्ट टलने का भी, आकर क्या कारण बनता है॥

दोहा—दासी कहे रानी सुनो, क्षुधा रही सताय।
इस दुर्गम उद्यान में, करना कौन उपाय॥

पीपल का वह वृक्ष सामने, देख नजर जो आता है।
आप यहां बैठें मैं उसके, फल लाऊं मन चाहता है॥
पानी का भी संयोग मिला तो, वहां देख कर आऊंगी।
यदि पात्र नहीं तो चीर, भिगोकर लाकर तुम्हें पिलाऊंगी॥

दोहा सीता—बहु बीजे सब फलों का, मेरा तो है नेम।
तेरी तू जाने बहिन, जो आत्म को क्षेम॥

आज अष्टमी है पानी भी, कोई सचित पीना ही नहीं।
नियम भंग करके मुझको, अच्छा लगता जीना ही नहीं॥
हां मै यहां पर बैठी हूँ, तुम वहां पर देर लगाना नहीं।
एक परमेष्ठी का शरणा लो. बस दिल मे कुछ घबराना नहीं॥

दोहा—आज्ञा ले दासी चली, चढ़ी वृक्ष पर जाय।
फल तोड़ने से प्रथम, बोली यूं अकुलाय॥

छन्द—पहले खिला करके सिया को, पीछे खाती थी सदा।
साथ उनके ही नियम, करती थी मैं भी यदा कदा॥
संग उनके मरना जीना ही, मेरा कर्त्तव्य है।
जो करे सीता वही, करना मेरा मन्तव्य है॥
ऐसा कह उतरी तले, विश्राम छाया में लिया।
जो कहे सीता वही, करना प्रण मन में किया॥

दोहा—पहले ना तुझको सिया, ले गई वन मे साथ।
कर्त्तव्य अब पालन करूं, रहूँ संग दिन रात॥

इस अन्तर मे कष्ट दूर, होने का कारण बनता है।
उपयोग शुद्ध जिनके, शुभ प्रकृति का ताना तनता है॥
निज कर्म आत्मा के शत्रु, बाकी तो निमित्त बहाने हैं।
पाप उदय हों कष्ट, पुण्य के उदय ठाठ शहाने हैं॥

दोहा—विभीषण का खास था, सिद्ध पुरुष एक मित्र।
ये भी नारद की तरह, था शुद्ध व्यक्ति विचित्र॥

नारद होता कलहप्रिय, पर यह समता रस पीता था।
विद्याधर शुद्धात्मा, जिसने कामदेव को जीता था।
वीर विभीषण ने इसको, था गुप्त रूप से समझाया।
और गुप्त रूप से सीता की, रक्षा के कारण पहुँचाया॥

दोहा—रहस्य पुरुष थे सिया का, रखता था नित्य ध्यान।
कष्ट असह्य ना पड़े, कोई अचानक आन॥

श्री वज्रजंघ मिलाप

दोहा—'पुंडरिकपुर' का भूपति 'बन्धु श्री' अंगजात।
'वज्रजंघ' शुभ नाम है, 'गजबाहन' नृप तात॥
गजबाहन का पुत्र 'रत्नसुन्दर' एक पटरानी थी।
धर्मन रूप अपार देख, इन्द्राणी शरमानी थी॥
पतिव्रता सुविनीत नियम, तप जप में अगवानी थी।
प्रजा पालक थे भूप स्वर्ग, सम सभी राजधानी थी॥

गाना (राजा वज्रजंघ की श्रद्धा का वर्णन)

देव अरिहन्त की शिक्षा, दया में धर्म जाना था।
था निश्चय आप्त वचनों पर, गुरु निर्ग्रन्थ माना था॥१॥
व्रत बारह के थे धारक, रवि सम तेज था जिनका।
लक्षण समदृष्टि का पहिला, मित्र सारा जमाना था॥२॥
गुणी के गुण को लखते थे, रहें मध्यस्थ निर्गुणों से।
शुद्ध वचन मन काया से, वह करुणा का खजाना था॥३॥
सिवा निज नार के माताएँ, भगिनी सम थी सभी नारी।
सदा सत् संगति ही में, जिन्हों का आना जाना था॥४॥
'सुमति' प्रधान था जिनका, निपुण नीति सर्व गुण में।
दूध घी फूल फल सेवा सभी, का स्वच्छ खाना था॥५॥
यथा राजा तथा प्रजा, सभी थे धर्मी नर नारी।
त्याग सातो कुव्यसनों का, 'शुक्ल' सब मन समाना था॥६॥

दोहा—इत्यादि गुण का धनी, वज्रजंग भूपाल।
कारण हस्ती पकड़ने, आया बन में चाल॥

साथ सुमति प्रधान और, कुछ सैनिक योद्धे भारी हैं।
और विकट गाड़ियों मे, खाना पीना तम्बू सरकारी हैं॥
हस्ती लेकर यह आ निकले, जहा रोती जनक दुलारी थी।
देख सिया को कुछ योद्धों ने, ऐसी गिरा उचारी थी॥

दोहा—क्या बन की देवी कोई, बैठी आसन मार।
चमक दमक चेहरा करे, शशि बदन अनुहार॥

बन रूपी रजनी में यह, मनिंद शशि के शोभ रही।
तेज प्रतापप्रचंड महा, भानु के मन को छोभ रही॥
इसमें शीतलता छटक रही, उसमे गर्मी का दूषण है।
यदि वह है रत्न व्योम का तो, यह भी इस बन का भूषण है॥
वह दुःखदाई है किसी किसी को, यह सब को सुखदाई है।
उसे ग्रहण भी लगता है, इसकी नित्य कला सवाई है॥
ज्योतिष चक्र से या कोई, कल्प लोक से आई है।
शुभ लक्षण हैं सब तेज जिन्होंने, शोभा अति बढ़ाई है॥
स्वर्णतार सच्चे मोती अदभुत, पोशाक जड़ी सारी।
हैं हार गले मे पचरंगी, माला भी शोभ रही न्यारी॥
और कभी कभी यह चहूँ ओर, क्या नजर घुमाकर देख रही।
कुछ कारण नजर नहीं आता, बन में आकर क्यों बैठ रही॥

दोहा—सीता का था उस समय, नमोकार में ध्यान।
फिर से आकर के लगा, आर्तध्यान सतान॥

शब्द भयानक रोने के, जिस समय भूप को आने लगे।
तो सोच सोच फिर सब के सब, अनुमान इसी का लाने लगे।
वह वज्रजंघ सत्य धर्मी राजा, सप्तस्वरों का ज्ञाता है।
कुछ सोच समझ इस तरह भूप, मन्त्री को वचन सुनाता है॥

चौपाई—गर्भवती यह रानी कोई, जो इस समय चिंता से रोई।
आप्त वचन मे भेद स्वर जोई, खबर नहीं विधना क्या होई॥

दोहा—पता लेन उस सती का, चले उसी की ओर।
सुन आहट कुछ सिया के, दिल मे मच गया शोर॥

सोचा कि अरण्य भयानक मे, यह चोर लूटने वाले हैं।
अपना धर्म बचाने लिये, आभूषण सभी निकाले हैं॥
सब सम्मुख उनके फैंक दिये, यह देख भूपति आया है।
और नम्रता से जनक सुता ने, ऐसे वचन सुनाया है॥ ८

दोहा—अए भाई तुम इस तरफ, आए हो जिस काम।
लो आभूषण यह सभी, पहुँचो निज-निज धाम॥

करोड़ों का यह माल तुम्हे, इस जन्म के लिये पर्याप्त है।
किस लिये क्यों और मनुष्यो पर, डालोगे जाकर आफत है।
अनुग्रह करके मुझको कोई, रास्ता तो जरा बता देवो।
कुछ होगा भला तुम्हारा यह, आभूषण सभी उठा लेवो॥
वह साथन मेरी आजावे, पीपल की गाले खा करके।
आने वाली है क्षधातुर, कुछ अपनी भूख मिटा करके॥

दोहा—शब्द और कर्त्तव्य लख, भूपति करे विचार।
महासती निश्चय कोई, जिस पर कष्ट अपार॥

दोहा—धर्म लीन अबला कोई, शील रत्न की खान।
समझ ठीक कहने लगा, वज्रजग बलवान्॥

दोहा—बहिन जरा भी मत करो, दिल मे सोच विचार।
भाई हूँ मै धर्म का, अर्ति दूर निवार॥

पता चिन्ह अपना कहदो, किस कारण वन मे आई हो।
क्या कष्ट मिला तुमको कोई, जिससे इतनी घबराई हो॥

मत फिकर करो अपने मन में, मैं कष्ट तुम्हारा टारूंगा।
जो भी मुख से कह चुका बहिन, मैं वचन कभी नहीं हारूंगा॥

यह गहने तुम्हे मुबारिक हों, मुझको इनकी दरकार नहीं।
हां परोकार के सिवा मेरे, दिल में दूजा व्यवहार नहीं॥

दोहा—दुखियारी का देख दुःख, लगा कलेजे तीर।
मन हीं मन रोने लगा, भर नयनो में नीर॥
मन्त्री गुण भूपाल के, करने लगा प्रकाश।
और सिया को इस तरह, देने लगा विश्वास॥

दोहा—पुंडरीकपुर का भूप है, वज्रजघ शुभ नाम।
गज लेने के वास्ते, आए हैं इस धाम॥

नवतत्त्व पदार्थ के ज्ञाता, सर्वज्ञ वचन के श्रोते हैं।
पुण्य यहां पिछला पाया, शुभ बीज अगाड़ी बोते हैं॥

द्वादश व्रत के हैं पालक, पर नारी भगिनी माता है।
सर्वस्व तलक ला करके भी, पहुँचाते पर को साता है॥

भृत्य और अधिकारी क्या, सब के सब इनके धर्मी हैं।
और खोटे व्यसन तजे सारे, इसलिये सभी शुभ कर्मी हैं॥
वह जिह्वा नहीं मेरे मुख में, जिससे सब गुण व्याख्यान करूं।
बस और तो क्या यह कहे वहां, कुर्बान मैं अपने प्राण करूं।
प्रजा की कौड़ी तक खाना, बस इनके लिये गंदगी है।
शीतल चन्दन जैसा स्वभाव, नहीं आती कभी रंजगी है॥
अपना करके काम आप, खाना बस इन को भाता है।
तन मन धन सर्वस्व प्रजा के, हित में सहर्ष लगाता है॥
जिसको जैसा कहते मुख से, वैसा करके दिखलाते हैं।
यदि गिरे पसीना जहां किसीका, अपना खून बहाते हैं॥

और दु:खी जनों को देख हृदय मे, स्वयं आप मुरझाते है।
जब तक न उनका कष्ट मिटे, तब तक नहीं अन्न जल पाते है

दोहा—सीता को आने लगा, जरा जरा विश्वास।
भूपति फिर करने लगे, अपने भाव प्रकाश॥

दोहा—बहिन पता कुछ आपका, देवो हमे बताय।
किस कारण विपदा पड़ी, आई इस वन मांय॥

दोहा- अए भाई अपना पता, खाक कहूँ या धूल।
कर्मों की मारी फिरूं, रही चौकड़ी भूल॥
जनक भूप की हूं सुता, और विदेहा मात।
सीता मेरा नाम है, भामडल नृप भ्रात॥
पिछले जन्मों में किये, मैंने पाप अपार।
जाती हूँ मैं जिस जगह, करते कर्म लाचार॥

गाना—सीता का अपनी विपदा को बताना (कव्वाली)

तर्ज— चुरा कर ले गया कोई मेरी जंजीर साने की)

जिधर घूमी मैं दुःख देने, उधर ही कर्म आ निकले।
किन्तु यह प्राण इस तन से मेरे, अब तक भी न निकले ॥१॥
बालपन में जुदाई अपने, भाई की सही मैंने।
उठा कर ले गया पितु को, कोई पर्वत पे जा निकले ॥२॥
तग आकर पिता ने, था स्वयंवर व्याह रचा मेरा।
मेरा यह जी जलाने को कर्म, वहां पर भी आ निकले ॥३॥
ख्याल था साथ पुण्यवानों के, अब कुछ न दु:ख पाऊंगी।
कर्म ने फिर धकेला दूर, कही अटवी में जा निकले ॥४॥
वनों का दुःख कहूँ कैसे, कलेजा मुंह का आता है।
चुराया मुझ को रावण ने तो, हम लका मे जा निकले ॥५॥

पति ने जो किया उपकार, कैसे भूल जाऊं मैं ।
बचाया है धर्म मेरा तो हम, फिर अवध आ निकले ॥६॥
सबर फिर भी न आया, दुष्ट इन बेदर्द कर्मों को ।
कलंकित कर निकाला मुझको, यहा इसवनमे आ निकले ॥७॥
कर्म मेरे उदय आये, किसी का दोष क्या इस मे ।
रुदन मेरा "शुक्ल" सुन कर, इधर से तुम भी आ निकले ॥८॥

दोहा—समझ लिया मैंने सती, तुम हो अति गुणवान् ।
बहिन समझ लो आप के, कष्टों का अवसान ॥

सिवा धर्म के बहिन जीव का, कोई न जग मे साथी है ।
नदी नाव संयोग बिछड़ जावे, जिस तरह बराती है ॥
भामंडल समझो मुझ को, अपने दिल का संताप हरो ।
धर्म ध्यान में रहो सदा, अरिहंत देव का जाप करो ॥
तू महासती गंभीर सती, तेरे गुण कैसे गाऊ मैं ।
अहो भाग्य तुमरे चरणों की, रज निज मस्तक लाऊं मैं ॥
मिथला नगरी से बढ़ कर समझो, यह पिहर तुम्हारा है ।
धन्य भाग धन्य घड़ी, मिले दर्शन कुछ पुण्य हमारा है ॥
रघुकुल दिनेश तुमको तजकर, न नींद सुखों की सोएंगे ।
और कलंक लगाया जिन्होंने तुमको, सिर धुन-धुन कर रोएंगे ॥
सुसर गृह से रूसे लड़की, तो पिहर में आ जाता है ।
बस यहां से आगे ठौर कहीं, सतियों को नजर न आती है ॥

इतने मे ही आगई, वह दासी विरवाल,
शुभ प्रकृति ने लिया, पलटा तुर्त कमाल ।
दोनों ने उपवास शुद्ध कर लिये थे चौविहार,
शुद्ध तपस्या के सामने, बने कर्म लाचार ।

दोहा—सीता का अब टल गया, जो था सभी क्लेश।
पुंडरीकपुर मे ले गया, आदर सहित नरेश॥

ऐसे धर्मी के घर में, रानी भी फूल हजारा थी।
हा राजा था यदि धर्म शशि तो, वह भी नेक सितारा था॥
नृप से बढ़ कर के रानी ने, सीताजी का सत्कार किया।
मस्तक दिया डार सार चरणों मे, मेवा और मिष्टान्न दिया॥
नित्य ननद ननद करती रानी, सेवा मे निशदिन रहती है।
सीता भी उसको भाभी, और भाई राजा को कहती हैं॥
मुखपत्ति मुख पर बांध, समय पर संध्या नित्य प्रति करती है।
विना किये नित्य नियम कभी वह, जल की घूंट न भरती है॥
एक हाथ में ले पुस्तक, पढ़ दूजे से समझाती है।
देती सब को उपदेश इस तरह, अपना समय बिताती है॥

दोहा—खबर लेन सिया बहिन की, आया जब भूपाल।
दूरंदेशी सोच यों, कहे सिया निज हाल॥

दोहा—भाई शरने आपके, आई हूं यहां चाल।
एक बात पर आप को, रखना होगा ख्याल॥

अव्वल तो भाग्य कहां इतने, कोई मुझे देखने आवेगा।
यदि आया भी तो देख बनों, मे वापिस ही मुड जावेगा॥
इस हालत में मैं भाई, हरगिज न अयोध्या जाऊंगी।
यदि जाऊंगी तो गौरव से, नहीं तो यह प्राण गवाऊंगी॥

दोहा—जो भी कुछ आशा मेरी, व्योम कुसुमवत् जान।
यदि वह पूरी न हुई तो, करु यहां अवसान॥

प्रकट करुं आशाओं को, बुद्धिमानी से बाहिर है।
कहने से सार नहीं रहता, यह उदाहरण जग जाहिर है॥

कहना उसको जो करे कहना, नहीं करे तो फिर क्या कहना है।
बैठो उस पे जो लखे गुणको, नहीं तो बेइज्जती से रहना है॥
गुण अवगुण की पहिचान नहीं, वहां पांव नहीं धरना चाहिये।
बेइज्जती का टुकड़ा खाने से, तप जप करके मरना चाहिये॥
इसलिये आप ने कुछ दिन तक, जो देना मुझ को शरना है।
तो राम से. मेरी जाकर के. न कोई विनती करना है॥
सत्य मेरा प्रगट होगा, यह समय एक दिन आवेगा।
नहीं तो पूर्व कृत कर्म का, कर्जा ही टल जावेगा॥
निश्चय मुझ को जिनवाणी पर, यह कष्ट काटने वाली है।
अब शुक्ल मुनि ने भी आकर, इस बात पे धूनी डाली है॥

दोहा—जो कुछ आज्ञा आप की, पालूं बहिन जरूर।
आप से जो प्रतिकूल. वह मुझे नही मंजूर॥

कह चुका वीर भामंडल सम, मै सचा वीर धर्म का हूं।
सर्वज्ञ देव की कृपा से, कुछ ज्ञाता सभी कर्म का हूँ॥
जैसा हूँ वैसा हाजिर हूं, सेवा करने को खडा हुआ।
एक सिवा धर्म के दुनिया मे, बाकी है भी क्या पड़ा हुआ॥

दोहा—सिया यहां रहने लगी, आर्त सभी निवार।
वहां पहुँचा रथवान भी, रामचन्द्र के द्वार॥

॥ सीता के वियोगजन्य दुःख से सन्तप्त रामचन्द्र ॥

दोहा—रामचन्द्र थे विरह मे, निर्बल दुखित शरीर।
सेनापति कहने लगा, भर नयनों में नीर।

नौ० दोहा कृतान्त वदन सेनापति

सूर्यवंश कुल मणि मुकुट हे, स्वामी जगताज।
आज्ञा आप की सब तरह, बजा दई महाराज॥

वजा दई महाराज किन्तु, मन मेरा घबराता है।
कहा नहीं कुछ जाय, इस समय मस्तक चकराता है॥
पाव नहीं जमते धरती पर. तन गिरना चाहता है।
लगने पर भी पियास, न पानी हलक तले जाता है॥

गाना-कृतान्त वदन सेनापति की दुख से घबराहट वर्णन

तर्ज—(पड़ी है नाव चक्कर में तिरा दोगे तो क्या होगा)।

आह! माता यह मुख से कह, गिरा एक चक्कर खा करके।
तुरन्त फिर रामने पूंछे, सभी आंसू बिठा करके॥१॥
किया उपचार शीतल, नीर, मुख पर राम ने छिड़का।
दिया पंखे तले मखमल की, गद्दी पर लिटा करके॥२॥
दृश्य बनका भयानक घूमता. था! आगे आखों के।
पिलाई तर बतर चीजे, दई गर्मी मिटा करके॥३॥
हुआ दिल धड़कने से बन्द, फिर कुछ चेत मे आया।
गिरा श्री राम के चरणों मे, निज मस्तक झुका करके॥४॥

दोहा—क्या कुछ सीता ने कहा, क्या था उसका हाल।
हृदय यदि अब ठीक है तो, कहो सभी तत्काल॥

दोहा—देख अरण्य को होगई. माता तौर बेतौर।
समझ भेद व्याकुल हुई, सुनो रवि कुल मौर॥

मूर्च्छा पर मूर्च्छा आने से, कई बार धरनी पर गिरती थी।
देख भयानक वन काला, भयभीत हुई अति डरती थी॥
नयनों से पानी वहता था, अपने कर्मों को रोती थी।
बनती थी हाल बेहाल कभी, आराम जान को खोती थी॥
वह जिह्वा नहीं मेरे मुख में, जिससे सब हाल बयान करूं।
सिर चकराता है आज मेरा, जब उनके दुःख पर ध्यान करूं॥

जो जो सीता ने बतलाया, सोही मैं कथा चलाता हूं।
सारी याद न रही मुझ को, कुछ २ चुन कर बतलाता हूं॥

॥ दोहा कृतान्त सीता की तरफ से ॥ (सीता संदेश)

दोष नहीं कुछ राम का, निश्चय मम कर्म अपार।
किन्तु नहीं व्यवहार पर, आपने किया विचार॥

कृतान्त (सीता सन्देश)

व्यवहार और नीति का तो, लवलेश नजर नहीं आया है।
जो बिना खबर इस तरह आज, अटवी में मुझे पहुँचाया है॥
अपना अपघात नहीं करती, कुछ दोष न देती स्वामी को।
वह केवल आप की आज्ञा से, तज देती मैं राजधानी को॥
बस और कहूं क्या स्वामी को, पर्याप्त यही इशारा है।
कुछ सोच समझ कर ही मुझ को,स्वामी ने आज निकारा है॥
जिस तरह आपकी मर्जी हमने, उसी तरह से रहना है।
पर एक जरूरी बात याद आई, सो तुम को कहना है॥

दोहा कृतान्त (सीता सन्देश)

अन्य जनों के कहने से, तजा मुझे भर्तार।
इसी तरह कुछ और न. तज देवे सरकार॥

राज खजाने महल नार यह, फेर हाथ आ सकते हैं।
भाई बन्धु और मित्र आत्मा, सङ्ग नहीं जा सकते हैं॥

एक धर्म ही ऐसा है, जो संग जीव के जाता है।
अष्ट कर्म मल टाल इसी से, अक्षय मोक्ष पद पाता है॥
अन्य किसी के कहन से, धर्म न तजियो पीव।
सुख दाता संसार में, ये ही अमर सदैव॥

क्षमा सभी अब कर देना, जो कुछ अपराध हमारा हो।
यही भावना है मेरी, युग युग में भला तुम्हारा हो॥
खत्म शिकायत हुई आज से, सारी खत्म कहानी है।
प्रसन्न रहो सुख शान्ति से, और अवधपुरी राजधानी है॥
सर्प बीन पर मस्त इस तरह, राम शीश को पटक रहे।
और श्वेत श्वेत मोती की, मानिंद आंसु नीचे टपक रहे॥

दोहा—सुन सुन कर के मूर्च्छा, रघुवर को गई आय।
जरा देर के बाद फिर, यों बोले अकुलाय॥
दोहा—आज किया मैंने बुरा, सीता दई निकाल।
निर अपराधिन पर दई, क्या आपत्ति डाल॥

एक सिया के बिना, सभी महलों में घोर अंधेरा है।
कर्मों ने कैसे आन अचानक, भंग रंग में गेरा है॥
आते याद सिया के गुण, हृदय मे बर्छी लगती है।
इस प्रेम ने ऐसे, तग किया आंसुओ की धारा बहती है॥
दोहा—एक नहीं दो चार क्या, गुण थे भरे अनेक।
जिसका गुण मैंने नहीं, धारा हृदय मे एक॥

मैत्री भाव सभी पर सीता, तीन योग से रखती थी।
सत्य वचन कहने में उसकी, शक्ति अद्‌भुत बढ़ती थी॥
पर पुरुष देखने मे अन्धी, विकथा सुनने मे बहरी थी।
कुवचन कहने मे थी गूंगी, बुद्धि सागर सम गहरी थी॥
पर घर जाने मे थी पंगुली, नहीं कर थे पर धन हरने में।
सब थी कषाय चारों पतली, न भय था उसको मरने में॥
सम्मति देने मे मंत्रीवत्, थी काम संवारण को दासी।
और पाप जरा से को भी वह, समझे थी गर्दन की फांसी॥
सब एक से एक बढ़कर गुण थे, वह चौसठ कला की ज्ञाता थी।

दोहा—हाल देख यह राम का, बोले लक्ष्मण वीर ।
चिन्ता को अब छोड कर, चलो विपिन रघुवीर ॥

दोहा—गई बात को जाने दो, आगे करो विचार ।
सीता को लाने लिये, चले अभी सरकार ॥

अन्य किसी के जाने से, सीता न वापिस आएगी ।
रात सामने आती है, फिर कैसे जान बचाएगी ॥
रहने दो सभी युक्तियों को, कृतान्त के साथ चले जाओ ।
विमान सामने खड़ा हुआ, सीता को जल्दी ले आओ ॥

दोहा—बैठे तुरत विमान में, झट पट अब श्रीराम ।
कृतांत राम को ले गया, उसी समय वन धाम ॥

इधर उधर क्या चहुं तर्फ, श्रीराम वनों में फिरते हैं ।
सीता का नाम निशान नहीं, आंखों से आंसु गिरते हैं ॥
जहां सिंह बघेरे हाथी चीते, फिरते दौड़ लगाते हैं ।
यह हाल देख श्रीरामचन्द्र, विश्वास इस तरह लाते हैं ॥

दोहा- महा भयानक सब तरह, है दुर्गम उद्यान ।
सीता अबला किस तरह, बचा सके थी प्राण ॥

प्रथम तो देख भयानक बन. सीता ने प्राण तजे होंगे ।
फिर मांसाहारी जीव वहां, सीता की ओर भगे होंगे ॥

जानवरो ने भक्ष लई, सीता का समझो अन्त हुआ ।
जनक सुता हो गई जुदा, बस खत्म सभी वृतान्त हुआ ॥

सीता का अवसान हुआ, बाकी तो सभी बहाना है ।
छान छान वन ढूंढ लिया, यहां से न अब कुछ पाना है ।
विमान को उल्टा फेर लिया, लाचार अवध में आये हैं ।
दुखित हृदय से रामचन्द्र ने, ऐसे वचन सुनाये हैं ।

दोहा—कर्म हीन को कब मिले, शुभ वस्तु का योग ।
यदि मिल भी जाव ं कभी, होता शीघ्र वियोग ॥

(गाना)

आज किस्मत ने हमे, नाच नचाया कैसे ।
सुख का एक दिन न मिला, हमको सताया कैसे ॥१॥
वर्ष चौदह तो महा, कष्ट के काटे बन में ।
वहां भी कर्मों ने कई, बार फसाया कैसे ॥२॥
युद्ध रावण से हुवा, शक्ति भाई कों लगी ।
तूने हृदय यह मेरा, आज जलाया कैसे ॥३॥
खून लाखों का किया, जिसके कारण हमने ।
आज उस से ही मेरे, मन को फटाया कैसे ॥४॥
लाखों के सम्मुख मुझको, भर्तार बनाया उसने ।
फर्ज मेरे से मुझे, किस्मत ने हटाया कैसे ॥५॥
सब ने समझाया मगर, एक न मानी मैंने ।
अक्ल मेरी पे हाय, पर्दा यह छाया कैसे ॥६॥
मेरा अपराध भी सीता से, क्षमाने न दिया ।
आज होनी ने अजब, ढंग रचाया कैसे ॥७॥
मिथिलेश सुता रघुकुल, की वधु श्रेष्ठ सती ।
शुक्ल विधिना न टली, तन को गवाया कैसे ॥८॥

दोहा—कर्तव्य अपने पर रहे, रामचन्द्र पछताय ।
लक्ष्मण जी कहने लगे, ऐसे सम्मुख आय ॥
क्यों भाई हमने प्रथम, समझाया हरवार ।
किन्तु न मानी किसी की, ऐसा चढा खुमार ॥
यह उसी बात का मिला तुम्हें, फल आंसु भर भर रोते हो ।
न सोये अब तक नींद सुखों की, सोवोगे न सोते हो ॥

सख्ती करने के समय तुम्हे, नरमी कुदरत सिखवाती है।
नरमी की जहा जरूरत है, क्या खबर कहां छिप जाती है॥
इस नरमी के कारण मिथिला में, जनक भूप के वचन सुने।
दूसरे अवध को छोड़ गये, वनवास जहां फल फूल चुने॥
तीसरे आप की नरमी ने, वहां पर आपत्ति डाली थी।
बबर शेर के पजों से, मुश्किल से सिया निकाली थी॥
नरमी की यहां जरूरत थी, अब सख्ताई पर अड़ बैठे।
और तीन खड की आज, रोशनी सीता को गुम कर बैठे॥
अब हाथ मलो चाहे पछतावो, इन बातों से क्या बनना है।
जैसा बोया है बीज आपने, वैसा ही फल पाना है॥

दोहा—किन्तु भाई एक बात, पर आया मरा ध्यान।
सीता बिल्कुल मर गई, क्या तुम को है ज्ञान॥

वह महा सती गम्भीर सती, और आत्म शक्ति वाली है।
सत्य धर्म सहायक है उस का, आयु भी अब तक बाली है॥
क्या शक्ति वनचर जीवों की, रावण जैसो से मरी नहीं।
सब कष्ट सती ने सहे, अतुल पर आत्महत्या करी नहीं॥
इसलिये आप मन धीर धरो, सीता न मरने वाली है।
क्या दोष आपका औरों का, कोई अशुभ कर्म की चाली है॥
अर्कजटी सुग्रीव नरेश को, जैसे नग में पाया था।
श्री जनक सुता को हे भाई, उसने सब पता बताया था॥
पुरुपार्थ कहा मुख्य हमें, कहीं फिरने से ही पाएगी।
मत फिकर करो निश्चय मुझको, सीता तुमको मिल जाएगी॥

दोहा—वन मे फेर तलाश कर, आ बैठे मन मार।
कुदरत से सब को मिले, आखिर सबर करार॥

दोहा – हस्ती जग मे बहुत हैं, ऐरावत गज एक ।
अश्व उच्चैश्रवा कहां, घाडे फिरें अनेक ॥

चौ० —गंधोदक है एक जगत् मे, जलाशयों का पार नहीं ।
क्षीरोदधि समुद्र जैसा उदधि कोई और नहीं ॥
मणियों मे चिन्तामणि कही, दानों मे अभयदाना वड़ा ।
देवों में अरिहन्त देव और, तपस्या मे ब्रह्मचर्य वडा ॥

दोहा—मन्त्रों में मन्त्र कहा, परमेष्ठी नमोकार ।
कल्पवृक्ष जैसा नहीं, वृक्ष कोई सुखकार॥

नग मे एक सुदर्शन नग, कुछ और नगो का अन्त नहीं ।
वीतराग के धर्म सिवा, बाकी धर्मो मे तन्त नहीं ॥
हैं पतिव्रता नारी अनेक, पर सीता सी नहीं पाएगी ।
अव 'शुक्ल' अगाड़ी इसी सती की. कथा सुनाई जाएगी ।

दोहा कवि—युगल पने दो सुत हुए. सिया के पिछली रात ।
रूप रंग संस्थान मे, एक जैसे दोनों भ्रात ॥

इस समय सिया की खुशियो का, सर्वज्ञ देव ही ज्ञाता है ।
खुश खबरी सुन कर वज्रजंघ, नृप फूला नही समाता है ॥
राज चिह्न के सिवा सभी, आभूषण तुरत उतारे हैं ।
हार सहित सव ही आभूषण, दासी को दे डारे हैं ॥
मस्तक तिलक किया दासी के, दासीपन को दूर किया ।
धर्म सस्थाओं को नृप ने, दान वहुत भरपूर दिया ॥
रियासत भर के थे जितने वैदी, सव स्वतन्त्र कराए है ।
था जन्मोत्सव का पार नहीं, घर घर में मङ्गल गाए हैं ॥

दोहा—अनंगलवण शुभ नाम है, शशी वदन सुखकार ।
मदनांकुश था दूसरा. सुन्दर राजकुमार ॥

देवलोक से बचकर आये, पुण्यवान अति प्यारे हैं।
पांच धाय माता पाले, और सभी खिलावन वारे हैं॥
देख अवस्था राजा ने, फिर विद्या उन्हे पढ़ाई है।
हुए वहत्तर कलाओं के ज्ञाता, सब शस्त्र कला सिखाई है।
तीक्ष्ण बुद्धि देख देख, अध्यापक प्रेम बढ़ाते हैं।
और नमस्कार त्रिकाल कुंवर, मामे को करने जाते हैं॥
रत्न सुन्दरी रानी भी अति, प्रेम उन्हों पर करती है।
समय समय पर खान पान, सामान अगाड़ी धरती है॥

दोहा—देख देख सुत अपने, सीता खुशी अपार।
मन ही मन करने लगी, ऐसे जरा विचार॥

दोहा----वन से आ मैंने दिया, ससु चरणों में शीश।
कहा ससु ने था मुझे, शुभ ऐसा आशीश॥

हम जैसे पुत्र जन्मोगी, वैशल्या भी थी साथ मेरे।
और वामनकोशी तेल उस समय, लगा हुआ था साथ मेरे॥
प्रत्यक्ष ससु के आशीसों का, फल मैं सम्मुख पाई हूँ।
बाकी है मेरे कर्म अशुभ, किसी जन्म से लेकर आई हूँ॥
भाग्यहीन मैं कहां ससु के, चरणों में नित्य प्रति पडती।
तब ही यह जन्म सफल होता, कुछ उनकी मैं सेवा करती॥
धन्य घड़ी धन्य दिन होगा, जब ससु के दर्शन पाऊंगी।
जो लगा हुआ मेरे कलङ्क, इसको भी दूर हटाऊंगी॥

दोहा—सीता ऐसे कर रही, अपना निजी विचार।
सिद्ध पुरुष वही आगया, जनक सुता के द्वार॥

एक हाथ में झोली थी, दूजा कर खाली लटक रहा।
मुख पर मुखपत्ती लगी हुई, मस्तक लाली से दमक रहा॥

था रजोहरण बायीं कक्ष में, और उसकी दंडी नंगी है।
आकाश गामिनी है विद्या, अनुव्रत धारी मन रंगी है॥
चादर और चोल पट्टा, साधु की तरह दिखाता है।
समझ गई सीता अनुव्रती, भोजन कारण आता है॥
जप तप करके विद्या साधी, ज्योतिष का पूरा ज्ञाता था।
था रामचन्द्र से मुख्य प्रेम, ब्रह्मचारी जग विख्याता था॥

दोहा—प्रेम भाव से सिया ने, दिया उसे अन्न पान।
हाल पूछने के लिये, बोली मधुर जबान॥
कहां घूम कर आ रहे, भाई कहो तमाम।
नाम काम अपना कहो, जाते हो किस धाम॥

सिद्धार्थ—सिद्ध पुत्र कहते मुझे, असल सिद्धार्थ नाम।
निर्ग्रन्थों के दृश को. फिरूं एक यह काम॥

सर्वज्ञ देव की वाणी कुछ। वहां, पर कानों में गिरती है।
और भिक्षा करके उदर पूर्ण, करना मेरी वृत्ति है॥
अपना कुछ हाल कहो भगिनी, यह कौन अवस्था धारी है।
नेत्रों में पानी भरा हुवा, निकली आवाज कुछ भारी है॥

दोहा सीता—हां भाई कुछ कर्म का, है ऐसा ही दौर।
विधना ने आगे कहो, चले किस तरह जोर॥

आदि अन्त पर्यन्त सिया ने, अपने दुःख सुनाये हैं।
राजकुमार उस तरफ मात को, शीश झुकाने आये हैं।
माता ने दोनों राजकुमर, श्रावक के चरणन लाये हैं।
उस समय सिद्धार्थ ने सीता को, ऐसे वचन सुनाये हैं॥

दोहा सिद्धार्थ-पुत्र तेरे पुण्यवान हैं, भगिनी दिल मन नेर।
सभी ठीक हो जायगा, है कोई दिन का फेर॥

अतुल बली योद्धा दोनों, सब नक्ष तेज अति पड़े हुवे।
यथा योग्य शुभ लक्षण हैं और दात परस्पर अड़े हुवे॥
सर्वज्ञ देव ने बतलाये, शास्त्रों मे जो शुभ लक्षण हैं।
सब आते नजर इन्हों मे हैं, और बुद्धि के बड़े विलक्षण है॥

दोहा---विनती एक भाई मेरी, इस पर देवे ध्यान।
विद्या इनको दीजिये, विधि सहित कुछ ज्ञान॥

सुनी प्रार्थना सीता की, सिद्धार्थ का दिल नर्म हुआ।
कुछ पुण्य सितारा बच्चों का भी, और शुभ कर्मोदय हुआ॥
विद्या विविध प्रकार उन्हों को, विधि सहित सिखलाई है।
और कुछ दिन मे ही सिद्धार्थ ने, सारी पास कराई है॥

दोहा---देखा कि अब होगये, विद्वान् सुकुमार।
सीता के सुपुर्द किये, बोला वचन उचार॥

सिद्धार्थ-दोनों सुत तेरे हुये, विद्याओं में पास।
कुछ दिन में भगिनी तेरा, होगा पुण्य प्रकाश॥

मनुष्यमात्र तेरे पुत्रों को, नहीं जीतने पावेगा।
अन्तिम निराश होगा इन पर, जो आक्रमण करके आयेगा॥
नाम प्रगट तेरा संसार मे, अए सीता करने वाले हैं।
सुत विनयवान् हैं भव्य जीव, न किसी से डरने वाले हैं॥
पुत्र समर्थ तेरे हैं, अब मेरी ड्यूटी पूर्ण हुई।
तेरी सेवा मे रहा नित्य, मेरी चिन्ता भी चूर्ण हुई॥
हे जगदम्बा उपकारी, एक विभीषण वीर है दुनिया मे।
समदृष्टि अद्वितीय, वज्रकरण सा और न सुनिया में॥

दोहा—इतना कह करके चला, सिद्धार्थ निज काम।
सीता से सम्मान का, केवल लिया इनाम॥

———

लवणांकुश की शादी

वज्रजंघ की थी सुता, शशिकिरिणा शुभ नाम।
माता जिसकी रेवती, पुण्यवान अभिराम॥

अनंग लवण के संग भूप ने, निज कन्या परणाई है।
दिल खोल नृप ने दान दिया, पहले से प्रीत सवाई है॥
मदनांकुश की शादी का, अब दिल मे ध्यान जगाया है।
कलम दवात लिखने को, पत्र कागज हाथ उठाया है॥

दोहा वज्रजंघ-सिद्ध श्री सर्वोपमा, विराजमान गुण खान।
वज्रजंघ की प्रार्थना, पर कुछ करना ध्यान॥

प्रणाम करो स्वीकार, गुणोदधि हमने तुमको जाना है।
सुता कनकमाला को तुमने, अन्त मे कहीं विवाहना है॥
मदनांकुश जैसा राजकुमार, दूसरा कहीं नहीं पाना है।
कृपया उत्तर जल्दी देवो, यदि तुमने विवाह रचाना है॥
नम्र निवेदन किया आपसे, न कोई धौंस जमाता हूं।
और केवल आपसे हां] न का ही, उत्तर लेना चाहता हूँ॥
आज आपकी सेवा में, इस कारण दूत पठाया है!
खाली न इसको भेजोगे, मेरे दिल यही समाया है॥

दोहा—लिखं पत्र महाराज ने, दिया दत के हाथ।
और जवानी इस तरह, कही भूप ने वात।

शुद्ध महीपुर तुम जाओ, पृथु भूप को पत्र दे देना।
और नमस्कार अपना करके, प्रणाम हमारा कह देना॥
करें यदि स्वीकार अमृता, रानी से भी कह आना।
नहीं तो जैसा उत्तर देगे, लेकर चुपचाप चले आना॥

दोहा—दूत पत्र लेकर गया, राजा के दरबार।
नृप के सम्मुख रख दिया, करके प्रथम जुहार॥

जिस समय पत्र को पढ़ा, भूप ने मस्तक पर बल डाले हैं।
गुस्से मे चेहरा लाल हुआ, नेत्रों ने रंग निकाले हैं॥
पत्र को फाड़ धरण फेंका, ऊपर को नयन उठाये हैं।
फिर वशीभूत हो क्रोध अरि के, ऐसे वचन सुनाये है॥

दोहा—अक्ल बेच खाई कहा, वज्रजंघ ने आज।
बिन सोचे किसने धरा, इसके सिरपर ताज॥

अक्ल आँख दोनों के अन्धे, ने क्या पत्र पठाया है।
भेजा है दूत खिजाने को, कुछ भय न मुझ से खाया है॥
कुल जातकी खबर नहीं जिनकी, क्या खबर कहांसे आये हैं।
आगे पीछे का नाम नहीं, जिनको कुलटा ने जाये है॥
अर्धचन्द्र धक्का देकर के, दूत को बाहिर किया जावे।
मोरी के रास्ते लेजाओ, ये ही सम्मान दिया जावे॥

दोहा—बेइज्जत करके दूत को, भेज दिया तत्काल।
वज्रजघ को आन कर, सभी बताया हाल॥

बेइज्जती अपनी और सीता की, सुनते ही आमर्ष आया है।
तब हुक्म दिया सेनापति को, मारु बाजा बजवाया है॥
दल बल से सबल विमान, मोर्चा रणक्षेत्र में लाया है।
उस तर्फ पृथु राज ने भी, सब अपना कटक सजाया है॥

दोहा—पृथु भूप का सहायक था, पोतन पुर का भूप।
दोनों ने आकर वहां, रोपा जग स्वरूप॥

जब आन परस्पर मेल हुआ, तो चमका तेज दुधारा भी।
कहीं अग्निबाण कहीं धुन्द बाण, कहीं चलता सांग कटारा भी॥

उस तर्फ शक्तियां दो भारी, इस तर्फ एक कहलाती है।
वज्रजंघ की फौज भगी, जब देखा पेश न जाती है॥

दोहा—वज्रजंघ के सुतो ने, देखा जब यह हाल।
तेजी मे आकर चढ़े, होकर के विकराल॥

मानिंद सिंह की कूद पड़े, सब दल में हाहाकार हुआ।
जहाँ तोप दनादन चलती है, गैसों का उडे अपार धुंआ॥
पृथु भूप की फौज भगी, तब इन्होंने हल्ले बोल दिये।
भानु अस्ताचल पर पहुँचा, शूरो ने शस्त्र खोल दिये॥

दोहा—प्रात. काल ही फिर लगा, होन कठिन सग्राम।
योद्धा दोनों ओर से, गये बहुत परधाम॥

पृथु भूप ने तेजी से, आकर घमसान मचाया है।
और वज्रजघ की सेना को, बिल्कुल ही आन दबाया है॥
पैर उखड गये सेना के, तब वज्रजंघ घबराया है।
बलहीन पक्ष हुआ मातुलका, लवणाकुश ने सुन पाया है॥
क्योंकि सूर्य वशजों का वह, तेज कहा छुप सकता है।
क्या क्षत्राणीका दूध जौहर, दिखलाए बिन रुक सकता है॥
तन पर बख्तर सजा लिया, तलवार कमर मे लटक रही।
अद्भुत संस्थान अनुपम था, मस्तक पर लाली छटक रही॥
सज धज पास माता के आए, चरण युगल मे शीश निमाए।
नेत्र स्नेह से सियाने उठाए, लवण कुमर ने वचन सुनाए॥

दोहा—माता आज्ञा दीजिये, अब मत लावो देर।
यदि समय चूका अभी. पछतावोगे फेर॥

पछतावोगे फेर धर्म, गौरव दोनों जायेंगे।
मामा लिया दबाए अरि ने, घेरा यहां लायेंगे॥

अब लवणांकुश का देख तेज, शत्रु का दल सब भाग पडा।
हथियार डाल दिये योद्धों ने, पृथु भूप देख रहा खड़ा खड़ा॥
समझा जब इनको काल रूप, नृप ने भी पांव हटाये हैं।
तब लवणांकुश ने देख हाल, भूपति को वचन सुनाये हैं॥

क्यों साहिब अब किस लिये, होते तौर बेतौर।
गौरव है यदि वंश का तो, लाओ शक्ति और॥

ला शक्ति कुछ और, कदम पीछे न जरा हटाना।
नहीं तो इस क्षत्रापन पर, थूकेगा सभी जमाना॥
अज्ञात वंश वालों से भी, नेत्र तो जरा मिलाना।
पीठ दिखा कर क्षत्रापन को, दाग न कोई लगाना॥

दौड़—आज भुजबल फड़के हैं, वन्घ वख्तर कड़के हैं।
जंग का स्वाद न आया,
हाथ उठाकर मुर्दों पर, बस आज प्रथम पछताया॥

दोहा—देखा जब भूपाल ने सारा जग मैदान।
सन्धि का फिर दे दिया, अपने आप निशान॥

दोहा—पराक्रम से ही वंश की, हुई मुझे पहिचान।
दोष क्षमा करके सभी, कीजो अभय प्रदान॥

दोहा—माफी देने का पृथु, मुझे नहीं अधिकार।
मातुल के चरणों लगो, अपना मस्तक डार॥

वज्रजंघ के चरणों में फिर, माफी की दरख्वास्त करी।
और पुत्री का डोला देने को, पत्रिका लिखकर पास धरी॥
वज्रजघ नृप की शर्तें सब, पृथु भूप ने मानी हैं।
द्वेषानल जहां चमकी थी, वहां वहे प्रेम का पानी हैं॥

दोहा—नारदजी भी आगये, फिरते उसी स्थान।
प्रेम भाव सबने किया, आदर और सम्मान॥

वज्रजंग से नारद ने, कुछ रहस्य जरा सुन पाया है।
फिर पृथु भूप के पास मुनि ने, निज आसन जा लाया है॥
कहो मुनि मदनांकुश किस, वंश का राज दुलारा है।
भेद बताने को नारद ने, ऐसे वचन उचारा है॥

दोहा—नित्य उठ करता है सदा, अन्धकार का नाश।
आता है सबको नजर, देख रवि प्रकाश॥

आदिनाथ का बड़ा पुत्र जो, चक्री भरत कहाता था।
सूर्यश था पुत्र भरत का, तेज सहा नहीं जाता था॥
सूर्यश से सूर्यवंश यह, चला तभी से आता है।
राम पिता सीता माता और, कुल रविवंश कहाता है॥
गर्भ में जब यह दोनों थे, कुछ लोगों ने अपवाद किया।
उसी समय श्रीरामचन्द्र ने, सीता को बनवास दिया॥

वह महासती है पतिव्रता, कालिश कैसे लग सकती है।
कभी तेज सूर्य का घटे नहीं, चाहे कुछ दुनियां बकती है॥

दोहा—सूर्य वंश सुन पृथु को, छाई खुशी अपार।
डोला लड़की का किया, उसी समय तैयार॥

धूम धाम से विवाह किया, कुश को जामात बनाया है।
दिल खोल भूप ने दान दिया, राजा से प्रेम बढ़ाया है॥
वज्रजंघ राजा की जो शुभ. थी विचार सो फल आई।
पहिले थी जैसी आज मधुरता, पृथु भूप को दर्शाई॥

दोहा—नारद मुनि कहने लगा, लवणांकुश को बात।
चलो मिलावे आप को, राम लखन के साथ॥

चौ०—राम लखन तुमको दिखावें, अवध पुरी यदि जाना चाहवें।
वह अतुल बली महाशूर कहावें, सुर नर जिनकी सेवा बजावें॥

उस समय आप जो कहते थे. अब काल है दर्श दिखाने का।
कुछ देर नहीं अब एक ध्यान है, आपकी आज्ञा पाने का॥

दोहा—-जो कुछ करना आपने, मुझे वही स्वीकार।
किन्तु ऐसे काम में, करना ठीक विचार॥

आज्ञा देने में तुम को है, कुमर मुझे इन्कार नहीं।
मैं कारण बनूं क्लेशों का, और निकलेगा कुछ सार नहीं॥
यह झगड़ा सभी घरेलू है, औरों का इस में दखल नहीं।
लड़ना तो उन से दूर रहा, वहां काम करेगी अक्ल नहीं॥
त्रिखंडी उन से हार गये, हम तुम तो हैं किस पानी में।
मिलना तो मिलो प्रेम से, क्यों दुःख पावोगे नादानी में॥
कुछ विघ्न हुआ वहां पर तुमको, यहां जनकसुता दुःख पावेगी।
आपस में इनको लड़ा दिया, बदनामी मुझ को आएगी॥
मेरी तो यही सम्मति है, सीता से आज्ञा ले आवो।
देने को मैं तैयार साथ, जो भी कुछ तुम करना चाहो॥

लवणांकुश और राम का युद्ध

दोहा—उसी समय दोनों कुमर, गये मात के पास।
नमस्कार कर के किये, अपने भाव प्रकाश॥

दोहा—खुश हो कर दे दीजिये, आज्ञा हम को मात।
अवधेश पिता के दर्श को, चलें करें दो बात॥

दोहा—जान गई आकृति से, बेटा प्राण आधार।
दर्श करन का आप का, बिल्कुल नहीं विचार॥
आता नजर मुझे ऐसा, तुम जाते जंग मचाने।
जंगी बख्तर पहिन शस्त्र, बांधे सब आज ठिकाने॥

मुझ कर्मों की मारी को, क्यो लगे पुत्र कलपाने।
बेटा करो विचार लगे क्यों, सोता काल जगाने॥

छन्द—दर्शन को जावो लाडलो, मै रोकती तुम को नहीं।
जग करने चले स्वीकार, यह मुझ को नहीं॥
जिन की शक्ति से धरण और, स्वर्ग लर जाता सभी।
सोते कर्म मेरे कुमर फिर, न जगा देना कभी॥

दोहा—विनय करे कर जोड़ कर, चरण निवाये शीश।
आज्ञा देनी मात जी, होगी विश्वावीस॥

दोहा—नरमाई से मात जी, मिलते कायर क्रूर।
मिले तेग की धार से, योद्धा क्षत्री शूर॥

करने को संग्राम मात, अवधेश से हम जावेगे।
दई न तुम को जगह, उन्हे कर अपने दिखलावेगे॥
दुनिया से भी पुत्र मात, तेरे न दहलावेगे।
काढ दई थी उस के पुत्र, हम कभी न कहलावेगे॥

गाना—लवणांकुश का माता को धैर्य देना (व० त०)

माता पुत्र तेरों को विजय कर सके।
ऐसा दुनिया मे कोई बसर ही नहीं॥
राम लक्ष्मण के संग सारी दुनिया चढ़े।
तो भी दिल में हमारे, खतर ही नहीं॥
हो के क्षत्राणी माता क्यों कायर बने।
मेरी शक्ति की तुम को खबर ही नहीं॥
शक्ति भुजबल की उन को दिखाये बिना।
माता आयगा हम को सबर ही नहीं॥

गाना—सीता का पुत्रों से कहना (वहर तवील)

तुम हो रणधीर दोनों मेरे लाडलो ।
और लड़ने में तुम न रक्खोगे कसर ॥
उन से कर के समर कोई जीता नहीं ।
चहे कैसा ही हो कोई सुर या असुर ॥१॥
यह तो निश्च कि सिर धड़ की बाजी लगे ।
यहां हुआ कहीं होता या होगा समर ॥
मुझ को दोनों तरफ से महा कष्ट है ।
अब करूं तो करूं क्या बताओ कुमर ॥२॥

दोहा—माता मरना जन्मना, लगा हुआ है लार ।
भय मरने का शूरमा, करते नही लगार ॥

जो खिला बाग में फूल माता, सोतो एक दिन कुमलायेगा ।
आ जन्म लिया जिसने माता, कृतान्त सभी को खायेगा ॥
जिनका न गौरव दुनिया में, धिक्कार उन्हीं का जीना है ।
सागर का कड़वा जल अच्छा, निरादर का पय क्या पीना ॥

दोहा—गौरव बेटा किसी का, खोस सके ना कोय ।
यश अपयश जैसा किया; पूर्व वैसा होय ॥

पिता सामने पुत्रों का तो, विनय सदा ही सोहता है ।
गौरव उसका बढ़ता संसार में, तीन लोक को मोहता है ॥
मात पिता के सन्मुख लड़ने, से गौरव गिर जाता है ।
पुण्य सितारा गिरने से फिर, सब का दिल फिर जाता है ॥

दोहा--समय समय पर मात जी, शोभें सारी बात ।
सर्दी गर्मी समय पर, होती है बरसात ॥

रुग्ण मनुष्य के हे माता, हृदय को देखा जाता है ।
फिर उसे वैद्य भी नरमी या, सख्ती से दवा पिलाता है ॥

प्रमाद मान की है माता, दुनिया में बड़ी बिमारी है।
नरमी से वहाँ न काम बने, जिसको चढ रही खुमारी है॥
किसमिस की तरह औषधी, मीठी सब से श्रेष्ठ कहाती है।
बादाम के मानिन्द दूजी, जो अन्दर से अच्छी पाती है॥
ऊपर नर्मी अन्दर सख्ती, जैसे की बेर छुहारा है।
चौथे मानिन्द सुपारी के, आप्त ने वचन उचारा है॥
मात पिता से पहिली संख्या, की ही विनय हमारी है।
या दूजी संख्या की समझे, दिल से न दर बिसारी है॥
हे मात सिंह का बच्चा पंजों, से ही विनय बजाता है।
क्षत्रिय का विनय समर में ही, शस्त्रों से परखा जाता है॥
बेशक वह है सिंह मात तो, हम भी उनके बच्चे हैं।
तुम निर्भय हो जाओ माता, हम किसी रण मे नही कच्चे हैं॥

दोहा—नमस्कार कर के चले, दे माता को धीर।
सीता को धरनी पड़ी. दिल में धीर आखीर॥
सीता आंसू गेरती, हो कर के हैरान
क्योंकि दोनों तर्फ है, अपना ही नुकसान॥
जंगी बिगुल बजा दिया, हुवे वीर तैयार।
योद्धाओं को छा रही, दिल मे खुशी अपार॥

था वज्रजंघ और पृथु नरेश्वर, सग मे पोतनपुर वाला।
लम्पाक कालाम्बु पति और, सुकन्तचूल था मतवाला॥
शलभानल आदि नरेश, लवणांकुश के संग आए हैं।
श्री राम लखण की सीमा पर, जा तम्बू डेरे लाए हैं॥
विमान गगन मे घूम रहे, संग्रामी रथों का पार नहीं।
और विकट गाड़ियां गूंज रही, तोपों का हुआ पसार नहीं॥

तुम हम मित्र पुराने हैं, इसमे कुछ भी सन्देह नहीं।
वैसा ही प्रेम हमारा है, तुम से टूटा कुछ नेह नहीं॥
किन्तु प्यारा हो ब्याज मूल से, बुद्धिमान् यों कहते हैं।
और सोच समझकर शूर वीर, बस, न्याय पक्ष को लेते है॥

दोहा—सुत दोनो श्रीराम के, सीता के अंगजात।
लवणांकुश मम भानजे, युगल जात दो भ्रात॥

रामचन्द्र ने सीता पर जो, महा विपत्ति डारी थी।
न अवधपुरी में मिली जगह, बन-बन फिरती दुखियारी थी॥
यह दोनों सिंह उसी के हैं, श्रीराम को कुछ भी खबर नहीं।
निज म.तका बदला लिये बिना, इनको बस आता सबर नहीं॥

दोहा—तुम भी अब इस पक्ष को, करो मित्र स्वीकार।
सीता के दर्शन करो, फैंको सब हथियार॥

काम बिगड़ न जाए कहीं, इस कारण शस्त्र उठाया है।
रहस्य बात का मित्र आज, हमने तुमको बतलाया है॥
अब हम तुमने ही मिल करके, इनकी सधी करवानी है।
फिर किस कारण किससे लड़कर, आपस की करनी हानि है॥

दोहा—भामण्डल से जब सुनी, सभी बात सुखकार।
संग उन्हों के जा मिले, फेंक सभी हथियार॥

सेना सहित सभी योद्धा, जा भामण्डल के साथ मिले।
यह दृश्य देख सब सेना क्या, श्रीराम लखन के हृदय हिले॥
एक तर्फ जा लवण वीर ने. राम की सेना घेरी है।
तरफ दूसरी होकर कुश ने, अपनी की हथ फेरी है॥

दोहा—आए काबू में कई, भगे डार हथियार।
रामानुज दोनों चढ़े, होकर के लाचार॥

क्या जादू है कोई शत्रु पर, जो सबको वश करते है।
जिन पर था विश्वास वोही जा, अरि चरणों मे पड़ते हैं॥
सब करते करते यों विचार, श्री राम समर में आये हैं।
तब लवणाकुश ने उधर, सामने आकर बचन सुनाये हैं॥

दोहा—नजर कोई आता नहीं, रघुवंशिन को सूर।
लकपति को मारकर, इतना चढ़ा गरूर॥

इतना चढ़ा गरूर किसी, नीनि का भी न ख्याल रहा।
कुछ सोचो सदा किसी का यहां, न एक सरीखा हाल रहा॥
सहस्र अक्षौहिणी हनी वहां, यहा पर भी कुछ दिखलायेंगे।
शक्ति देखे बिन आप की बस, हम भी न यहां से जायेंगे॥

दोहा—लवणांकुश को देख कर, राम लखन हैरान।
रूप रंग संस्थान को, दिल में लगे सराहन॥
क्या दोनों आकर हुवे, नल कुबेर अवतार।
संस्थान सब एक सा, सुन्दर रूप अपार॥

क्या नन्हीं सी उमर किन्तु, तेजी का लगता पार नहीं।
भोलापन मुख पर बरस रहा, गुस्से के कोई आसार नहीं॥
चाहे शत्रु हैं पर इन से हमारा, दिल मिलने को चाहता है।
बस देख देख इनको अन्दर, से प्रेम उबलता आता है॥

दोहा—क्या जादू के आगये, बनकर दोनो वीर।
बख्तर शस्त्र सब किस, तरह सोभ रहे हैं तीर॥

सुग्रीव आदि सब योद्धा पर, भी यही मोहिनी डारी है।
कुछ असर हमारे दिल पर भी, वोह करने लगी बिमारी है।
हम पहिले इनको समझा दें, क्यों वृथा प्राण गमायेंगे।
नहीं तो शत्रु से प्रेम ही क्या, परभव इनको पहुचायेंगे॥

दोहा—किस राजा के पुत्र तुम. किसके हो अंगजात।
छोटे मुख से कर रहे, बड़ी बड़ी जो बात॥

शेर राम—नाम लवणांकुश सिवा, हमको खबर कुछ भी नहीं।
सहसा जगाया काल आ, तुमको खबर कुछ भी नहीं॥

दोहा लवणांकुश—हीरे को क्या गर्ज है, कहे खान और जात।
सम्मुख आ गजराज के, सिह करे गर्जात॥

शेर लव०----अबला डराई है सदा, जाना मर्म कुछ भी नहीं।
वोही जगातें काल को, जिनका धर्म कुछ भी नहीं॥

शेर राम—जा दूध पीवो मात का, रो रो के प्राण गवायेगी।
यह मार है तलवार की, तुमसे न सही न जाएगी॥

शेर लव०---खेल बच्चों का समझ, धोखा न बिल्कुल खाइये।
सम्भल कर के ही जरा, आगे को पांव उठाइये॥

दोहा—अए लड़कों तुम खूब हो, बातों में होशियार।
फिर भी कहता हूँ तुम्हे, कठिन समर की मार॥

क्षत्रापन हो गया अदा, अब साता तुम्हे पिछाड़ी है।
और किस पर हम हथियार उठावें, उमर तुम्हारी वारी है॥
तब तक है कल्याण की जब तक, शस्त्र नहीं सम्भाले हैं
त्रिखण्डी रावण जैसों के सब, मान हमी ने गाले हैं॥

दोहा-लवणाकुश पृथ्वी टरे अम्बर टरे. रवि शशि टरजांय।
समर किये बिन आपसे, हम टलने के नांय॥

छोटे बच्चे सिंहो के, हस्ती के सम्मुख जाते हैं।
क्षत्राणी के छोंटे बच्चे, सब समर खेलने आते हैं॥
समझ गये हम आज आप, कुछ रण करने से डरते हैं।
और पीछा अपना छुटवाने को, ऐसी बाते करते हैं॥

दो०-लक्ष्मण— बालक हठ इन को चढ़ा, क्या समझाते वीर।
मरने दा यदि आगया, इनका आज आखीर ॥

अभी दूध के दान्त नहीं, माहिर हैं कुछ इस फन के।
वित्त से बाहिर करें बात, मेंढ़क से उछल उछल के॥
बदल बदल कर आंख हमें, धौसावें लड़के कल के।
एक वार न झेल सकें, रह जावेंगे कर मल के॥

सवैया (लक्ष्मण)

मूर्ख बाल गुमान भरे मन मांहि, न खाए किसी की शंका।
काल को आए डराय रहे शठ, तेग दिखाए हुए रण बंका॥
अन्न जल आज उठा इनका, लंकेश का काल हुआ जिम लंका।
क्या पेश चले जब आयु घटी, सिर काल ने आन बजाया डंका।

दौड़—दया तुम पर लाते हैं, जिस लिये समझाते हैं।
क्योंकि दोनों बच्चे हो
इस रण के फन मे आए लड़को, बिलकुल तुम कच्चे हो॥

दोहा—बसजी बस यह दया की, है ऊपर की बात।
दया करी सो देखले, हृदय पर धर हाथ॥
बालक हम को समझ कर, धोखा न खा जाय।
आज समर में अकल के, सब तोते उड़ जांय॥

तोते सब उड़ जाएं, यदि हम हैं कुछ असल नस्ल से।
सुग्रीव आदि सब भूप कहां हैं, सोचे जरा अक्ल से॥
तेज दिखाएंगे हम तुम को, आज तेग के बल से।
पड़ा नहीं था पाला अब तक, आपका किसी सबल से॥

गाना (व० त०) कह के बालक ही बालक डराते हमें।
इनकी शक्ति की कुछ भी खबर ही नहीं॥

कितना हाता पवनियां सर्प का जिस्म।
भारी नागों में इतना जहर ही नहीं ॥१॥
तुमने रावण से मारे तो डरते हो क्यों।
आओ करनी मे रखना कसर ही नहीं ॥
तुम भी भाई हो दो हम भी भाई हैं दो।
रहता दुनियां में कोई अमर ही नहीं ॥२॥

अच्छा आई कजा तो फिर हम क्या करें।
आए खोटे उदय अब तुम्हारे कर्म ॥
हमने समझाये तुम बाज आये नहीं।
ताने खा खा के कब तक करेंगे रहम ॥
अब संभल कर के तैयार जल्दी से हो।
क्योंकि जाने को दोनों हो मुल्के अदम ॥
वरना भागो यहां से बचा जान को।
जाओ माता का मेटो तुम रंजो अलम ॥

दोहा—लवणांकुश ने जब सुने, लक्ष्मण जी के बैन।
धनुष बाण खैंचा तुरत, अरुण वर्ण कर नैन ॥

दोहा—कृतान्त सारथी राम का, लवण का वज्रजंग।
वीर विराध था लखण का, अकुश पृथु निशंक ॥

राम लवण का युद्ध और, लक्ष्मण अंकुश थे जुटे हुए।
अस्त्र सस्त्र विमान परस्पर, चले सरासर छुटे हुए ॥
नमस्कार का तीर राम के, चरणों बीच पठाया है।
श्री रामचन्द्र का वार लवण ने, आता हुआ बचाया है ॥

दोहा—लक्ष्मण जी के शरण मे, कुश ने भेजा तीर।
नमस्कार करके हुआ, सावधान बलवीर।

राम लखन के वार सभी, खाली के खाली जाते है ॥
इस तरफ निशाना बचा बचा, यह दोनों वार चलाते है ।
विमान गगन मे घूम रहे, योद्धा धरती पर लडते है ॥
महा भयानक देख युद्ध, कायर भूमि पर पड़ते हैं ।
देवाधिष्ठित अस्त्र सभी निज, कुल पर कभी न चलते हैं ।
देख वार सब के सब खाली, राम लखन कर मलते है ॥

दोहा—अस्त्र शस्त्र दे गये, आज सब तरह जवाब ।
साक्षात ही लड रहे, या आया कोई ख्वाब ॥

छन्द—राम वार सब खाली गये क्यों, समझ मे आता नही ।
सिर पर चढ़ा आता अरि, शका जरा खाता नहीं ॥
क्या खेल जादू का हमारे, साथ यह सब हो रहा ।
या कोई अशुभ कर्मो का दौरा, शुभ कर्म है सो रहा ॥
वज्रावर्तज धनुष भी, मुख फेर बैठा हार के ।
अखिल दलन मूसल रत्न, भी गिर पड़ा सिर मार के ॥
अंकुश अरि गंजन महा, यह भी दगा अब दे गया ।
दीखता है आज सब, मैदान शत्रु ले गया ।

दोहा—इसी तरह लक्ष्मण बली, कर रहा सोच अपार ।
आज अरि के सामने, पड़े किस तरह पार ॥

दोहा—आज हमे सब तरफ से, आ रहा आर्तध्यान ।
महा सबल योद्धा अरि, देखन मे नादान ॥
युक्ति कोई आज नहीं चलती, सिर मे चक्कर सा आया है ।
होनहार ने आज खबर क्या, कैसा जाल बिछाया है ॥
किस वज्र के हैं बने हुए, शत्रु न मारे जाते है ।
आक्रमण करते हुए आज, बस हमे दबने आते हैं ॥

दोहा—लक्ष्मण जी कुश पर चढ़े, खाकर जोश अपार ।
कुश ने झट पट कर दिया, लक्ष्मण जी पर वार ॥

लक्ष्मण जी का वार गया खाली, कुश का हृदय पर बैठा है ।
मूर्छागत सहसा होकर के, लक्ष्मणी जी रथ में लेटा है ।
वीर विराध ने उसी समय, सग्रामी रथ को फेर लिया ।
और कैम्प में ले जाने को, रथ सीधी सड़क पर गेर लिया ॥

दोहा— कुछ दूरी पर जाय के, लक्ष्मण हुए सुचेत ।
बोले वीर विराध से, चलो अभी रण खेत ॥

लक्ष्मण जी ने फेर से आकर, योद्धों को जोश दिलाया है ।
और संग्रामी रथ अपना कुश के, सम्मुख आन मिलाया है ॥
कुश देख लखन को हर्षाया, और अपना धनुष उठाया है ।
तब दशरथ नन्द लक्ष्मण जी, ने ऐसे वचन सुनाया है ।

दोहा—अय लड़को तुमको रहा, अब तक पुण्य बचाय ।
चक्र सुदर्शन वार से, अब बचने के नाय ॥
शेर—अमोघ चक्र देख लो, पहिले दिखाता हूँ ।
हस्ती तुम्हारी आज, दुनिया से मिटाता हूँ ॥
चक्र के सिवा बस खतम, शक्ति जान पाता हूँ ।
देखो चला कर, तोड़ मे, इसको बगाता हूँ ॥

तुम से हजारों भी नजर, इससे मिला सकते नहीं ।
सिर जुदा धड़ से करे, दम भी हिला सकते नहीं ॥
पुरुषार्थ सारा आपका, निष्फल बना दूंगा ।
हजारों आप जैसों का, यहां पर दिल हिलादूंगा ॥

दोहा—सुने काट करते हुए, कुश के ऐसे वैन ।
चक्र घुमाया अनुज ने, बना रक्त दो नैन ॥

सन सनाट करता तब चक्र, कुश की तरफ सिधाया है।
देख चक्र को लवणांकुश का, सारा दल घबराया है॥
प्रदक्षिणा देकर के कुश की, लक्ष्मण के कर पर जा बैठा।
या जैसे पक्षी उड़ करके फिर, निज स्थान पर आ बैठा॥

दोहा—फेर चलाया अनुज ने, खा कर जोश अपार।
कुल वंश पे कर सकता नहीं, चक्र सुदर्शन वार॥

वार तीसरी फेर अनुज ने, मारा चक्र घुमा करके।
परिक्रमा देकर उसी समय, लक्ष्मण कर बैठा आकरके॥
देख वार तीनों खाली, रामानुज अति हैरान हुए।
लगी अक्ल चक्कर खाने, दिल मे कुछ ऐसे ध्यान हुए॥

दोहा—आज सब तरह हो गये, शक्ति मे कमजोर।
शत्रु सिर पर चढ़ रहे, मचा मचा कर शोर॥

छंद—था भरोसा चक्र पर, सो भी दगा अब दे गया।
क्या खबर है आज शक्ति, कौन सारी ले गया॥
अस्त्र कभी खाली न जाते, वश अंश को टाल के।
कर दिये निष्फल अरि ने, आज जादू डाल के॥
बलदेव वासुदेव क्या, पैदा हुवे दो वीर हैं।
उमर है छोटी जिन्होंकी, युद्ध मे अति धीर हैं॥
सब पराया राज्य यह, होने मे अब क्या देर है।
यदि रहा यह हाल तो, बस कुछ ही दिनो का फेर है॥

दोहा—बन्द लड़ाई हो गई, हुई जिस समय रात।
तैयारी होने लगी, होते ही प्रभात॥

दातुन मंजन से निवृत्त हो, श्रीराम सभा मे बैठे हैं।
तैयार हुए अनुक्रम से लाकर, शस्त्र योद्धा लेते हैं॥

सिद्धार्थ के सहित उधर से, नारद चल कर आये है।
चेहरा देख उदास राम का, मुनि ने वचन सुनाये हैं॥

दोहा—चेहरा खिलता था कभी, देखत हमें अपार।
किन्तु आज किस सोच में, बैठे गर्दन डार॥
पूर्व पुण्य पूरा किया, मिला सभी सुख साज।
सकल सिद्ध कार्य हुए, भूप तुम्हारे आज॥

सिद्ध हुआ सब काम आपका, सुयश चहुँ दिशा छाया है।
पर कृपणता ने आज आपके, दिल पर डेरा लाया है।
अतुल खुशी का आज दिवस, मनवांछित तुमने पाया है।
किन्तु यहाँ पर उत्सव का कोई, चिन्ह नजर नहीं आया है॥

दोहा—जगह खुशी की आपको, हो रहा आर्तध्यान।
उडे हुये सब दीखते, चेहरे के अवसान॥

कुछ तोपें आज खुशी की, तुमने हे राजन् दगवानी थी।
और उत्सव की सब समग्री, एकत्र यहाँ करवानी थी॥
अवधपुरी में आज अद्वितीय, नूतनता दिखलानी थी।
शुभ दान पुण्य खुल्ले दिल से, देकर नौबत बजवानी थी॥

दोहा— राम लखन समझे मुनि, ताने रहा लगाय
इसको हांसी सूझती, देश हमारा जाय॥
वीर परस्पर सज रहे, करने को संग्राम।
नारद जी को इस तरह, बोल उठे श्रीराम॥

दोहा—आज मुनि क्यों घाव पर, रहे नमक बुरकाय।
रघुवंश का आज सब, जो था गौरव जाय॥

छन्द—आज पराक्रम थक गये हैं, सब तरह आते नजर।
शत्रुओं का भेद अब तक भी, न कुछ पाया मगर॥

सुग्रीव भामंडल पे क्या, जादू अरि ने है किया।
अस्त्र शस्त्रों ने भी हमको, आज बस धोखा दिया॥
जीते बड़े मैदान थे, शंका कभी खाई नहीं।
पर आज दो लड़कों के आगे, पार बस पाई नहीं॥

दोहा--- जैसी जिसकी नीत हो, वैसी होय मुराद।
जैसे हों माता पिता, वैसी हो औलाद॥

सीता को तुमने दुःख दिये, यह उसका ही फल पाया है।
उस महा सती के लालों ने, तुमको हैरान बनाया है॥
लवणांकुश दोनों भाई, सीता के पुत्र कहाते हैं।
अपनी माता का दूध लजाना, रघुवंशी नहीं चाहते हैं॥
देवाधिष्ठित शस्त्र सभी, निज वश पे कभी नहीं चलते हैं।
समय खुशी के आज आप, कर सोच वृथा कर मलते हैं॥
आदिनाथ के पुत्र भरत बाहुबल का, जब युद्ध हुआ।
न चला चक्र बाहुबल पे क्योंकि, नहीं वश विरुद्ध हुआ॥
बस पुत्र सपुत्र सिंहनी का ही, साथ सिंहो के लड़ता है।
गंध हस्ती का ही बच्चा, हाथी के सम्मुख अड़ता है॥

दोहा—नारद का यह वचन सुन, हर्ष न हृदय समाय।
मूर्च्छा खा धरणी गिरे, लीना तुरत उठाय॥

उस खुशी को कैसे दर्शाए, यहा लिखने मे नहीं आता है।
शक्ति न लेखनी जिह्वा की, सर्वज्ञ देव ही ज्ञाता है॥
शस्त्र सब राम ने फैंक दिये, सब जंगी वस्त्र उतारे हैं।
झट हस्ती रथ विमान सुतों को, लाते लिये शृंगारे हैं॥

दोहा—राम लखन दोनों चले, और हजारों साथ।
लवण उधर से चल दिये, मदनांकुश सङ्ग भ्रात।

भामंडल सुग्रीव उधर, लवणांकुश के सग आये हैं।
राम लखन के चरणों में, दोनों ने शीश निवाये हैं॥
रामानुज ने पकड़ पुत्र, दोनों निज हृदय लगाये हैं।
और प्रेम के आँसू उसी समय, सबके नेत्रों में आये हैं॥

दोहा—देखा जब यह सिया ने, मिट गया सब संताप।
बैठी तुरत विमान में, पुंडरीकपुर गई आप॥

श्री रामचन्द्र ने आकर एक, भारी दरबार लगाया है।
नर नारी क्या बच्चे बूढ़े, जन समुह देखने आया है॥
लवणांकुश को नर नारी, बच्चे बूढे क्या सभी निहार रहे।
सीता को दोष दिया जिस जिसने, निज आत्मा धिक्कार रहे।
राजकुमारों को राजे सब, झुक झुक विनय बजाते हैं।
सम्बन्धी सारे आ करके, अति प्रेम से लाड लडाते हैं॥

दादी चाची सब प्रेम भाव से, दोनों का शीश चूम्बती हैं।
छोटी माताएँ प्रेम भाव से, चारों ओर घूमती हैं॥
देख देख कर लवणांकुश को, सब आश्चर्य पाते हैं।
भाट चारण स्तुति करने वाले, कथ कथ मंगल गाते हैं॥

पुत्र जैसी चीज नहीं, ससार मे कोई प्यारी है।
शोभन लक्षण बत्तीस अंग पर, रूप कला कुछ न्यारी है॥

पुत्र नहीं जिनके घर मे, वहाँ सदा अन्धेरा रहता है।
मेरु समान भी धन होकर, सुत विन काया को दहता है।
जय जय शब्दों की ध्वनि सहित, अब नगरी मे प्रवेश किया।
कैदी जन छोड़ दिये नृप ने, सब दान खूब दिल खो दिया।
बाजार दो तरफी छज्जो पर, माताएँ जहाँ अपार खड़ी।
स्वागत करने के लिये व्योम, में मेघ घटा सुखकार चढ़ी॥

देख देख उस उत्सव को, इन्द्र भी लज्जा खाता है।
सोच रहा इनका जलूस, यह मेरी शान घटाता है।

दोहा— इसी तरह सहर्ष सब, पहुँच गये दरबार।
भूम झाम चहुँ ओर से, आ पहुंचे नर नार।।

अवधपुरी मे आज प्रेम की, बारिस अद्भुत बरस रही।
अर्ति सभी विदा होकर, कर मल मल अपने तरस रही।।
अङ्गद लखन विभीषण और, सुग्रीव आदि सब आ करके।
श्री रामचन्द्र को लगे कहन, यों नम्र वचन समझा करके।

दोहा अब तक सीता ने सहे, बन मे कष्ट अपार।
वर्तमान अब हाल पर, स्वामी करे विचार।।

किसी तरह पक्षिणी अण्डों को, दिन रात बैठकर सेती है।
फिर इधर उधर से घूम घाम कर, चोगा लाकर देती है।।
हिरणी अपने बच्चो को नित्य प्रति, देख देख खुश होती है।
देख विरह को खाना पीना, त्याग रात दिन रोती है।।
निर्बुद्धि सुत पर से भी, तो माता का प्रेम न जाता है।
पागल पुत्र को भी देखे बिन, खाना उसे न भाता है।।

दोहा—सीता के जैसे लाल न, दुनिया मे कोई और।
जनक सुता अपना समय, काटेगी किस तौर।।

प्रथम मास सवा नौ, जिसने गर्भवास मे पाले हैं।
फिर निराधार होने पर भी, कैसे गुण इनमे डाले हैं।।
अब सोचो आप जरा दिल मे, कैसे वह समय बितावेगी।
पुत्र विरहिनी मात सिया, तज खान पान मुर्झावेगी।।
अब उनको भी हे नाथ, तसल्ली देकर ले आना चाहिये।
या पुत्र वहा भेजे उनके, या आप वहां जाना चाहिये।।

दोहा राम—हर तरह से आपका, सब है ठीक विचार।
पूर्व वाला अब तलक, हुआ न ठीक विचार॥

वही समस्या कठिन सिया, और कुल की शान घटावेगी।
पहिले से ज्यादा इसमें अब, आपत्ति फिर कुछ आवेगी॥
क्या दोष जानकर छोड़ी थी, अब क्या गुण करके लाए हैं।
इसका उपाय भी बतलादो, जो विनती करने आए हैं॥

दोहा—इस दुनिया के बीच में, भांत-भांत के लोग।
कहा असाध्य सबने जिसे, लगे हैं भ्रम के रोग॥

हीरे की जौहरी परख करे, मूर्ख ने रोड बताना है।
गुणियों की सेवा करे गुणी, दुष्टों ने खूब सताना है॥
एक रंग दुनिया सारी न, हुई न होने पावेगी।
नेकों के दिल में नेकी और, बद के दिल बदी समावेगी॥
जिसकी जैसी है प्रकृति, आयु पर्यन्त न जाएगी।
अमृत से सींचो नीम चाहे, अन्तिम कडुआई आएगी॥
दुनिया का दौर दुरंगा है, सर्वज्ञदेव न मिटा सके।
और एक अभव्य आत्मा को भी, करके भव्य न दिखा सके॥

दोहा—जो कुछ भी तुमने कहा, है सब ठीक जवाब।
किन्तु दुनियादार को, रखनी चाहिये आब॥

जिसने निज गौरव भुला दिया, उसकी दुनिया मे आब नहीं।
जब आब नहीं शुभ ध्यान कहां, फिर रहे किसी पर दाब नहीं॥
निज गौरव को रखकर ही तो, उपकार कोई कर सकता है।
फिर कष्ट हजारों आ जावें, दुनिया से नहीं डर सकता है॥
व्यवहार शुद्ध अपना रखना, यह सबके लिये जरूरी है।
व्यवहार विना दुःख देने वाली, होती सदा गरूरी है॥

विना दोष के आंख दबानी, वीर पुरुष नहीं चाहते हैं।
क्षत्रिय कुल पर न दाग लगावे, खेल जान पर जाते हैं॥

दोहा—हम तुम सबको ज्ञात है, सीता में नहीं दोष।
औरों पर भी न हमें, करना चाहिए रोष॥

शंका से ही श्रेष्ठों का गुण, अवगुण देखा जाता है।
सामुद्रिक का ज्ञान सभी, रेखा देखन से आता है॥
रखते हैं सभी कसौटी पर, निर्मल सोने को शंका से।
धौंसे की परीक्षा करते पहिले, चोट लगा कर डङ्का से॥
जवाहरात के तोलन को, होती एक कण्डी छोटी है।
धर्म की परीक्षा करने को भी, होती कोई कसौटी है॥

सीता के पतिव्रत नियमों में, कुछ जन समूह को शंका है।
व्यवहार में है भी ठीक क्या कि, वह रही अकेली लंका है॥
परीक्षा देकर ही अपना, गौरव सीता रख सकती है।
वरना ऐसी है कौन जगत में, पेट नहीं भर सकती है॥
सहर्ष बात स्वीकार करे, तो फिरसे पूछो जाकर के।
निज पर यदि उन्हे भरोसा है, तो परीक्षा देवे आकर के॥
निश्चय है मुझको सीता, इस बात से न घबरायेगी।
और खुशी खुशी परीक्षा देने, कारण यहां जल्दी आवेगी॥

दोहा—आज्ञा पा श्री राम की, कपिपति बैठ विमान॥
पुण्डरिकपुर को चल दिये, धर हृदय शुभ ध्यान॥

इधर राम ने पास बाग के, एक मैदान बनाया है।
और अद्भुत मण्डप सजवाकर, सामान सभी रखवाया है॥
वहां जनक सुता को जाकर के, सुग्रीव ने शीश झुकाया है।
फिर विनय सहित अति नम्रता से, ऐसे वचन सुनाया है॥

दोहा—माता तुम को धन्य है, धन्य हजारों वीर।
सती सती त्रिखण्ठ में, हा रही गूंज अपार ॥

हो रही गूंज अपार, लाल तुम ने ऐसे जाये हैं।
देख तेज श्री राम लखन, दोनों ने भय खाये हैं ॥
नाम किया तेरा प्रसिद्ध, अति योद्धा कहलाये हैं।
नम्र निवेदन आप से कुछ, हम करने को आये हैं ॥

दौड़--अवध में दर्श दिखाओ, पावन सब देश बनाओ।
खुशी सब का दिल होवे—
पुरी अयोध्या मात तुम्हारे, बिन बिल्कुल न सोहे ॥

दोहा—जो कुछ मैं तुम को कहूँ, सो यदि हो स्वीकार।
तो फिर मुझ को भी, नहीं जाने में इन्कार ॥

अग्नि का कुंड बना देवें, सब खैर काष्ठ गिरवा कर के।
कोई शेप न बाकी रहे अवध, सारी वहां बैठे आकर के ॥
रघुकुल दिनेश फिर कहेमुझे, सबके सम्मुख झुंजला करके।
यदि सच्ची हो तो कूद अग्निमे,दो निज धर्म दिखा करके ॥

दोहा—बातें सब होंगी वहां, विनती करो स्वीकार।
अवधपुरी क्या जगत को, आपका है आधार॥

दोहा—वही अवध वहीं महल, वही स्वजन वही नाम।
जनक सुता मैं हूं वही, वही लखन वही राम ॥

लवणांकुश जाकर मिले पिता से, खुशी मेरे मन भारी है।
अब अवध पुरी मे ऐसे जाऊं, मुझे साफ इन्कारी है ॥
एक मेरे कारण रवि वंश, शुद्ध कुल को धब्बा आता है।
इसलिये किसीकोदु:ख देना, यह मुझको भी नहीं भाता है ॥

जैसा भी मुझ पर समय पड़ा, सहलिया और कुछ सहलूंगी।
कहना सुनना क्या किस का है, अपने कर्मों को कह लूंगी॥
कौन किसी के पास कष्ट मे, आया और कब आता है।
छोड़ अन्धेरे में तन का, साया भी दूर पलाता है॥

दोहा—माता अब यह ख्याल, सब मन से करदो दूर।
भेजे आये श्री राम के, हम चरणों की धूर॥

वह समय सभी अब बीत गया, क्यों दिल मे इतनी डरती हो।
और जली दूध की छाछ का भी, विश्वास आप नहीं करती हो॥
प्रबल सिंह है पुत्र तुम्हारो. से सब दुनिया डरती है।
वह आत्म शक्ति हे जगदम्बा, काम तुम्हारी करती है॥

दोहा—जिस कारण काढी मुझे, आरोपण कर दोष।
जब तक वह न दूर हो, मुझे नहीं संतोष॥

फिर अवधपुरी में शुद्ध हुए, बिन भाई मैं नहीं जाऊंगी।
सब पूर्व कृत कर्म मेरे, न दोष किसी को लाऊंगी॥
बनवास दिया है स्वामी ने, सहर्ष वही स्वीकार मुझे।
न दिल है न कुछ इच्छा न सुख, जाने का मै कहू तुझे॥

दोहा—परीक्षा कारण ही सही, चलो आप उस धाम।
अग्नि कुंड जैसा, कहो रचवा देगें राम॥

दोहा—यह तो मैं भी कह चुकी, मुख से स्वयं उचार।
मेरी इच्छा अनुकूल जो, मुझ वही स्वीकार॥
कुंड एक क्या पाच मै, करु सभी स्वीकार।
निश्चय मुझ को धर्म पर, यही सदा सुखकार॥

दोहा - खुशी सहित विमान मे, बैठ गई सिया नार।
माहेन्द्रोदय बाग मे, लाकर दई उतार॥

उसी समय आ लक्ष्मण ने, चरणों मे शीश निमाया है।
और वीर विभीषण आदि सब, राजों ने दर्शन पाया है॥
अब नर नारी बच्चे बच्चे, सब तर्फ बाग की धाये हैं।
एक से एक ने आगे हो, सीता को शीश झुकाये है॥

दोहा—महल हधारन की करी, सब ने विनय अपार।
लेकिन सीता ने करी, एक नहीं स्वीकार॥

चौपाई—पास सियाके रघुपति आया, जनक सुताने शीश निमाया।
देखत नयन नयन भर आये, रामचन्द्र ने बचन सुनाये॥

दोहा – प्रिये रानी तैंने सहे, आज तलक दुःख भूर।
कारण इस मे मै बना, तेरा नहीं कसूर॥

दुःख सहे उधर तैंने बन में, तो मै ने क्या सुख पाया है।
मेरी जिह्वा नहीं कह सकती, जितना दुःख उठाया है॥
अब तेरी इच्छा सहित और एक कष्ट मैं देना चाहता हूँ।
महा खेद आज इस बात को कहते, जरा न लज्जा खाता हूँ॥

दोहा—अग्नि कुंड यह आप की, मर्जी के अनुसार।
फिर भी तुम अपना सिया, करलो निजी विचार॥

दोहा—प्राण पति प्रीतम मेरे, जीवन प्राण आधार।
जो कुछ भी मैंने कहा, सहर्ष मुझे स्वीकार॥

आप तो रक्षक हैं सब के, किस्मत ही बुरी हमारी थी।
यदि यही कुंड पहिले होता, तो क्या मुझ को इन्कारी थी॥
स्वर्ण भी निर्मल करने को, अग्नि मे तपाया जाता है।
फिर आत्मा का मल हरे विना, कहो कौन मोक्ष पद पाता है॥
इसी तरह से आज मुझे, दुनिया अजमाया चाहती है।
तो अग्नि कुंड में खुशी खुशी, से सीता छाल लगाती है॥

इस में विघ्न डालने वाला, भी शत्रु कहलालेगा।
उपकारी उस को मानूं गी, जो मुझ को साहस दिलायेगा॥

दोहा—चन्दन काष्ट गिराय कर, अग्नि दई लगाय।
जली हुताशन इस तरह, लपट सही न जाय॥

देख तेज उस अग्नि का, जनता का हृदय कांप गया।
सुग्रीव लखन आदि सब के, मानों हृदय पर सांप गया॥
सब कहते है हो गई परीक्षा, आप मे कोई कसर नहीं।
संसार मे दोष लगाने वाला, तुम को कोई वशर नहीं॥

दोहा—सागर टरे मेरु टरे, धरनी भी टर जाय।
मैं बिल्कुल टरती नहीं, पड़ूं अग्नि के माय॥

बिना हाड़ की इस जिह्वा को, हिलते लगती देर नहीं।
जो समय आनके मिला मुझे, अनमोल यह मिलना फेर नहीं॥
एक बार अग्नि में कूदूंगी, फिर बाद मे देखा जायगा।
पहिले में क्या कह सकती हूं, कि क्या मेरे मन भायगा॥

दोहा—सज्जन गण सुन लीजिये, जरा लगा कर कान।
और एक घटना हुई, उसी समय मे आन॥

वैताढ्य गिरी उत्तर की श्रेणी, हरि विक्रम नृप रहता था।
जयभूषण था सुत पुण्यवान्, जो पर कारण दुःख सहता था॥
किरण मडला नार वासना, उसको अधिक सताती थी।
हेम शिखर पति के मामे के, सुत से मिलनी चाहती थी॥

दोहा—इश्क मुश्क खासी खुरक द्वेष खुन मद पान।
कभी छिपाए न छिपे प्रगट होय प्रयत्मान॥

जयभूषण को लगा पता, मेरी नारी व्यभिचारिणि है।
राज्य से बाहिर निकला था, उस कुल्टा को तज धारण है॥

होकर दुखित वह रानी मरी, आयु का खेल तमाम हुआ।
वह राक्षसी व्यन्तरणी, और विद्युद्दष्टा नाम हुआ॥

दोहा—जय भूषण तज दिया, बुरा जान ससार।
सयम व्रत को धार कर, तप जप किया अपार॥

अवधपुरी के बाग में आकर, ध्यान मुनि ने लाया था।
वहां उसी राक्षसी ने आकर, मुनिराज को खूब सताया था॥
सम दय खम को धार मुनि, निश्चल रहे ध्यान लगा करके।
केवल ज्ञान हुआ जिन को, घनघाती कर्म खपा करके॥

दोहा—आए उत्सव करन को, स्वर्गपुरी से देव।
इन्द्रादिक करने लगे, समोसरण स्वयमेव॥

इधर सिया तैयार खड़ी थी, अग्निकुंड में पड़ने को।
एक देव भेद लख इन्द्र को, यों लगा बेनती करने को॥
अग्निकुण्ड मे पड़ने को, स्वामी सीता तैयार खड़ी।
निर्दोष सती पर आज विपत्ति, देखो आन अपार पड़ी॥

दोहा—सुनते ही शक्रेन्द्र ने, लाया निज उपयोग।
उसी समय कहने लगे, टालन को यह शोक॥

दोहा—अग्निकपांत जावो अभी, जरा न लावो वार।
कष्ट सती पर जो पड़ा, आवो सभी निवार॥

दोहा—आज्ञा पा सुर कुण्ड के, झटपट पहुँचा पास।
शीलवान के होते हैं, देवनपति भी दास॥
पढ़ा सती ने उस समय, परमेष्ठी नमोकार।
शरना ले अरिहन्त का, वोली वचन उचार॥
वीतराग भगवान को, सर्व जगत का ज्ञान।
केवल ज्ञानी साधु सुर, तुम भी देना ध्यान॥

रजनी साक्षी चन्द्रमा, तारा मडल साथ।
नित्य प्रति आते हो, यहां तुम भी हे दिवानाथ ॥
लोकपाल लेते खबर, चारों समय तमाम।
जितने जग मे पुरुष है, टाल एक श्री राम ॥

सिवा राम के अन्य पुरुष, मन वच काया कर चाहा हो।
स्वप्न मात्र भी अशुभ ध्यान, मेरा विषयों पर आया हो ॥
विषय वासना वर्धक का, कोई शब्द जिह्वा पर लाई हूँ।
लगा आज से होश सभाली, तब क्या जब से जाई हूँ ॥

दोहा—मेरे पतिव्रत धर्म मे, साक्षी हो सब आप।
यदि मुझे कोई लगा, विषय सम्बन्धी पाप ॥
पक्षपात मेरा कोई, करना नहीं लगार।
दोष यदि मेरा कोई, तो जल बल होऊँ छार ॥

नहीं तो अग्निकुण्ड आज, एक जलाशय शुभ बन जावे।
यदि अंश मात्र भी दोप कोई, तो तन मेरा सब जल जावे ॥
ध्यान है द्वादश व्रतों पर, अब है आगे को धरती हूँ।
स्तुति एक पढते ही भगवन्, अग्निकुण्ड मे पड़ती हूँ ॥

तर्ज—मरता मरता रे मातनी आजादी गावे।
इस हवन कुण्ड पे रे, सिया परमेष्ठी गुण गावे ॥ टेक ॥

पंच परमेष्ठी सिया और कुछ, मुझ को नहा भावे ॥
अरिहन्त देव को रे, सिया हृदय से सिर नावे ॥ इस ॥ १ ॥
ज्वाला अपना तेज प्रभु, यह कैसी दिखलावे ॥
हो आपकी कृपा रे, प्रभु यह पानी बन जावे ॥ इस ॥ २ ॥
प्रलय काल की भीति आकर के, हम को घबरावे ॥
सिद्ध प्रभु को रे जपन से, सब विलीन पावे ॥ इस ॥ ३ ॥

आचार्य श्री की शिक्षा से, कर्म वीर कहलावे ॥
सर्वस्व लगा कर रे, शील की महिमा प्रगटावे ॥ इस ॥४॥
उपाध्याय के ज्ञान की महिमा, आत्म शक्ति पावे ॥
मरते मरते रे शील सत्य की, महिमा चाहवे ॥ इस ॥ ५ ॥
तारण तरण जहाज मेरे, निर्ग्रन्थ मुनि कहलावे ॥
"शुक्ल" ध्यान से रे सदा, परमानन्द पद पावे ॥ इस ॥६॥
कितनी शक्ति शील धर्म मे, आज प्रगट बतलावे ॥
इतिहास भविष्य मे रे, सभी को मार्ग दर्शावे ॥ इस ॥ ७ ॥

दोहा—अग्निकुण्ड मे सती ने, मारी सहसा छाल ।
ज्वाला का सुर ने किया, निर्मल जल तत्काल ॥

सिंहासन की रचना सुरने, अद्भुत एक विकुर्वी है ।
आस पास जल से चहुँ तर्फा, भरी हुई सब उर्वी है ॥
पंकज ऊपर हंसनी ज्यों, ऐसे बैठो जनक दुलारी है ।
देख दृश्य यह जय जय की, जनता ने ध्वनि उचारी है ॥

दोहा—शील रत्न की देख कर, महिमा सकल जहान ।
लगे परस्पर एक को, एक ऐसे समझान ॥

दोहा—शील रत्न जैसी नहीं, शक्ति है कोई और ।
कर्म काटने के लिये, शील शस्त्र सिर मौर ॥

शीलवान पर तन्त्र मन्त्र यन्त्र, कोई नहीं चल सकता है ।
आपत्ति जो कोई पडे आन, अन्त मे सबको मल सकता है ॥
आज सामने अग्नि का, जिसने पानी कर डारा है ।
जनक सुता ने जनता का, सशय सब दूर निवारा है ॥
इस ही आत्मशक्ति ने, त्रिखण्डी रावण को मारा था ।
शील रत्न की शक्ति ने लक्ष्मण का कष्ट निवारा था ॥

और हनुमान ने लंका का, आशाली कोट विडारा था।
अक्षकुमार रावण का बेटा, धरनी बीच पछाड़ा था॥
फिर देखो दशकन्धर के, मस्तक का ताज गिराया था।
इसी सिया की शक्ति से, वह जान बचाकर आया था॥
इस महासती को दोष लगा कर, घर के बाहर निकाला था।
उस समय बताओ किसने वहा, जाकर के दिया सहारा था॥
शीलवान का शील सदा, रक्षक भगवन् बतलाते हैं।
आपत्ति सारी दूर भगे, शास्त्र सभी दर्शाते हैं॥

दोहा—पतिव्रत के दो हुवे, आन अमोलक लाल।
जिनकी आज बराबरी, कौन करे भूपाल॥

राम लखन भी जिनके सन्मुख, लड़ करके पछताते थे।
वह इसी सती की शक्ति थी, सुत रण में तेज दिखाते थे॥
जनक पिता को धन्य मात, वैदेही जिसने जाई है।
नगर धन्य कुलवंश धन्य, और धन्य जिसने परणाई है॥

धन्य धन्य ये महासती, आकाश में देव पुकार रहे।
जिन जिन ने दोष लगाया था, वह निज आत्म धिक्कार रहे॥
सब क्षमा मांगते आकर के, चरणों में शीश निमाते हैं।
कई देकर के उपदेश शील, पालन का नियम दिलाते हैं॥

दोहा—भूचर खेचर भूपति, करें सभी प्रणाम।
पास सती के आन के, यों बोले श्री राम॥

दोहा—वीतराग की कृपा से, सिद्ध हुआ सब काज।
आज सभी के सामने, खुल गया असली राज॥

यह खुशी मेरे मन भारी जो, उतरा कलंक तेरे शिर का।
सूर्यवंश की लाज रही, निश्चल गौरव मेरे घर का॥

बाकी जो तुमको दुःख दिये, मैं क्षमा सभी की चाहता हूं।
शीतल स्वभाव चन्दन तेरा, हर समय देख यह पाता हूं॥

दोहा—ऐसी बातें मत कहो, लगता मुझको दोष।
मेरा कुछ भी है नहीं, जरा किसी पर रोष॥

यह सभी आपकी कृपा है, जो कष्ट सामने दूर हुआ।
और आपके नाम के साथ साथ, मेरा भी कुछ मशहूर हुआ॥
कृपा आपकी ने स्वामी, मेरा अपवाद मिटाया है।
बचा अग्नि से सिंहासन पर, तुमने आज बिठाया है॥
भूमि रज की क्या शक्ति है, भानु की प्रभा को मन्द करे।
उपकार सभी यह वायु का, जो चढ़ी व्योम आनन्द करे॥
जब आन सर्प के मस्तक पर, मेंढक भी नाच दिखाता है।
स्वभाव सभी यह मन्त्र का, जो आहे न उसे मिटाता है॥
वसन्त ऋतु में कोयल की, क्या मीठी वाणी होती है।
यह गुण आम्र कलिका में है, जो कंठ के मल को खोती है॥

दोहा—पारस के प्रसंग से, लोहा भी सोना होय।
क्षीर नीर के मेल को, दूध कहे सब कोय॥

महापुरुष की संगत से, पापी जन भी तर जाते हैं।
जो लगे रहे शुभ कर्मों में, वह नाम अमर कर जाते हैं॥
प्रत्येक जीव सब कर्मों के, फल को दुनियां में पाते हैं।
बिन भोगे छूट नहीं सकते, सर्वज्ञ देव बतलाते हैं॥

दोहा—मेरे कारण जो सहे, आप ने कष्ट अपार।
क्षमा आप से हे, प्रभु मांगूं बारम्बार॥

उदारचित्त महाराज सदा, शान्ति करते ही आये हैं।
लिये अन्य के आपत्ति निज, सिर पे धरते ही आये हैं॥

सुग्रीव विभीषण हनुमान, आदि सब की आभारी हूँ।
उपकार एक लक्ष्मण जी का, देने से मैं लाचारी हूँ॥
सभी अवध के नर नारी, अब क्षमा मुझे बतलायेंगे।
ऐसा यह दान सभी देकर, मुझको कृतार्थ बनायेंगे॥
दोहा—हृदय से सिया कर रही, सब से क्षमा की आस।
जनता सीता से करे, माफी की दरखास॥
सुरमे की मानिन्द सीता जी, सब के नयनो मे समा गई।
अरिहन्त देव की सम दम क्षम, वाणी हृदय में जमा लई॥
मन वच काया से नर नारी, झुक झुक चरणों मे पड़ते हैं।
श्री राम लखन सुग्रीवादिक, इस तरह प्रार्थना करते हैं॥
दोहा—हाथी रथ विमान क्या, हैं सब ही तैय्यार।
अवधपुरी में चलन का, जल्दी करो विचार॥
तप्त हृदयों को हे सीता चल, कर के शान्त बनाओ तुम।
अवध बाग पतझड़ सब को, फिर से फल फूल लगाओ तुम॥
पुष्प कली सब मुर्झाई, हृदय के कमल खिलाओ तुम।
सुनसान पड़े उन महलों मे, कर के उत्सव दिखलाओ तुम॥
दोहा—छान बीन कर के सभी, देख लिया ससार।
मृगतृष्णावत् जीव सब, भोगे दुःख अपार॥

सीता का वैराग्य

गाना।

तर्ज:—(पाप का परिणाम ...)

अनुभव से मैं ससार की, सब मित्रताई देखली।
आश थी जिन से अधिक, उनकी सफाई देखली॥१॥
बेरहमी से छोड़ी मुझे जन, शून्य इस वन खंड में।
प्रेम दर्पण रेखावत्, नीति सफाई देखली॥२॥

सच्च है दुर्भाग्य से, संसार सब मुंह मोड़ले।
कर्म वस जो देखनी थी, सब बुराई देखली ॥३॥
सुख दिया अद्भुत मुझे, देखो हृदय को चीर कर।
मन के दर्पण से सभी, की आशनाई देख लो ॥ ४ ॥
छान कर देखा जमाना, दुनिया में तो सुख है नहीं।
पूर्व कर्मों ने आपत्ति, जो दिखाई देख ली ॥ ५ ॥
भूल कर के भी किसी को, अपना समझना पाप है।
ठोकरें खा खाके बस, सब की रसाई देख लो ॥ ६ ॥
छोड़ कर के भ्रम सारा, 'शुक्ल' अपना ध्यान कर।
सर्वज्ञ वाणी के सिवा, नकली पढ़ाई देख लो ॥ ७ ॥

दोहा सीता—नाथ आज मेरा हुआ, ध्यान और से और।
निज आत्म अन्दर लखा, एक ठग दूजा चोर ॥

यह शत्रु काल अनादि से, मुझ को भरमाते आते हैं।
कभी नर्क गति मे ले जाकर, मुझ को अत्यन्त सताते हैं ॥
तिर्यञ्च गति के दुःख स्वामी, नहीं जिह्वा से कहे जाते हैं।
एक गर्म दूजा मीठा नहीं तरस, किसी पर लाते हैं ॥

दोहा सीता—मुश्किल से यदि मनुष्य का जन्म जीव ले धार,
राग द्वेष फिर भी इसे, ले निज फंदे में डार ॥

मोह कर्म अरि के फन्दे में, आत्म को खूब फंसाते हैं,
फिर निकल नहीं सकता दिल से, यह ऐसा असर जमाते हैं ॥
दुनिया की रंग विरंगी चीजों, पर इस का भरमाते हैं।
दृष्टान्त न जिस का मिला, 'शुक्ल' यह ऐसे मस्त बनाते हैं ॥
कोई निज हाल मस्त कोई माल मस्त, कोई ऐश्वर्य के पाने में।
कोई रंग महल में मस्त फिरे, कोई मस्त है विवाह कराने में ॥

कोई क्रोध मस्त कोई मान मस्त, कोई मस्त है दगा कमाने मे ।
कोई नाच रग मे मस्त फिरे, कोई हार शृङ्गार बनाने मे ॥
कोई आभूषण को पहिन मस्त, कोई मस्तक तिलक लगाने मे ।
कोई कृपणता मे मस्त कोई, लालच से गला कटाने मे ॥
अन्याय पन्थ पर सदा मस्त, कोई अपना ठाठ बनाने मे ।
कोई दुर्व्यसनों में परम मस्त, कोई मास गन्दगी खाने मे ॥
जूआ खेलने में मस्त कोई, वेश्या गन्दी पे जाने मे ।
कोई परनारी पर पुरुष मस्त, कोई रंगकर वस्त्र सजाने में ॥
मदिरा पीकर के मस्त कोई, औरो को दोष लगाने मे ।
कोई भंगवे वस्त्र पहिन मस्त, कोई मस्त है जटा रखाने मे ॥
कोई जग्न मस्त कोई मग्न मस्त, कोई मस्त भाग के खाने में ।
कोई दुःख देने में मस्त किसी की, हस्ती सफा मिटाने मे ॥
कोई अदभुत दृश्य को देख मस्त, रहता है उसी ठिकाने मे ।
मैं जिन वाणी पर मस्त हुई, अरि कर्म का वश मिटाने मे ॥
बस राग द्वेष के वशीभूत, यह जीव मस्त हो जाता है ।
दुःख भोग भोग कर मस्ती मे, अनमोल रत्न खो जाता है ॥

दोहा सीता—सुरपुर की इच्छा कभी, होती इसे अपार ।
बाजीगर के खेल ज्यों, वह भी सदा असार ॥

आयु के पूरा होने पर, सुरपुर भी तजना पडता है
यह वृथा जीव मेरी मेरी कर, मान मे यों ही अकडता है ॥
भव भ्रमण अनादि अनन्त चार, गति चोरासी का चक्कर है ।
सम्यक् ज्ञान दर्श चारित्र, विन खाता दुःख टक्कर है ॥

दोहा सीता—सुर नर क्या अरिहन्त के, तन नहीं जावे लार ।
महा दुःख ससार मे, कुछ नहीं निकले सार ॥

संयोग मूल दुःख जीवों को, सर्वज्ञ देव बतलाते है।
अज्ञान अन्ध में पड़े हुए, न स्वर्ग अपवर्ग पाते हैं ॥
राग द्वेष के फदे में, निश्चय अब मैं नहीं आऊँगी।
छोड़ दिया सयोग अवध के, महलों में नहीं जाऊँगी ॥

दोहा राम—शब्द विरह के हे प्रिया, मुख से कहो न भूल।
दुखित हृदय पर लग रहे, जैसे तीक्ष्ण शूल ॥

गाना—ऐसी बातें जबां पर, न लाओ सिया।
मेरे दिल को दुखी न बनाओ सिया ॥

तेरी शिकायत क्या करूं, कोई नजर आती नहीं।
तू किसी का दिल दुःखाना भी, जारा चाहती नहीं ॥
चल कर महलों की शान बढ़ाओ सिया।
शेर के पजे में पड़ कर भी धर्म तोडा नहीं ॥
प्रेम मेरा उस समय पर भी, जरा छोड़ा नहीं।
अब भी मुझ से न दिल को चुराओ सिया ॥
मेरी खातिर भागती दुःख साथ, बन बन मे फिरी।
अब बनाया सख्त दिल किस, सोच सागर मे गिरी ॥
जख्मी दिल पर न, नमक लगाओ सिया।
मैंने तजा था तुझको क्या दिल फट गया इस बात से ॥
और ही तुमको था कोई. रंज मेरी जात से।
अपने मन का तो भाव बताओ सिया ॥
इस हुतासन कुंड में तुमने लगाई छाल है।
महल मे चलने से फिर क्यों आपको इन्कार है ॥
पिछली बातों को दिल से भुलाओ सिया।
नीर अग्नि का किया तुझ मे नहीं कोई कसर ॥

है धर्म अवतार तू प्रत्यक्ष मे आया नजर।
मुरझे हृदय सभी के खिलाओ सिया ॥

दोहा सीता—पहिले ही मैं दे चुकी, सब का उत्तर तमाम।
दुनिया से रखा नहीं, मैने कुछ भी काम ॥

राम—मत रंग में भंग डाल सिया, मैं बार बार समझाता हूँ।
एक बार अवध के महलों मे, ले जाना तुमको चाहता हूं ॥

सीता—आगे पीछे भंग रंग मे, अवश्यमेव ही पड़ना है।
यह महल नहीं बन्दी खाने मे, वृथा मुझे जकड़ना है ॥

राम—प्रिये त्याग अवस्था में आयु, पर्यन्त कोई विश्राम नहीं।
रूखी वृत्ति ऐसी है जिस में, कोई भी आराम नहीं ॥

सीता—जी हां यह बिलकुल ठीक किन्तु, सयम विन सुधरे कामनहीं
जिनको आराम की इच्छा है, उनको मिलता सुख धाम नहीं।

राम—कोई रोग लगा यदि आन तुम्हें, तो फिर क्या यत्न बनाओगी
दु.ख दर्द मिटाने का सीता, संयोग वहा न पाओगी

सीता—अग्नि कुंड से बढ़कर के, वहां रोग कौन सा आवेगा।
यदि आया भी तो तप रूपी, अग्नि मे जल जावेगा ॥

राम—जंगल में सोना धरनी का, नहीं गद्दी तकिया पाना है।
सर्दी गर्मी का दु.ख भयानक, दिल तेरा घबराना है ॥

सीता—यह सभी आपकी कृपा ने, पहिले ही मुझे सिखाया है।
वनवास मे रह करके अपने. तन को मैंने अजमाया है ॥

राम—दर दर की बने भिखारिन तू, और माग के टुकड़ा खाना है।
क्यों कटुक वचन सहे लोगों के. नाहक निज मान घटाना है

सीता—चक्रवर्ती क्या तीर्थंकर भी, भिक्षा ही करके खाते हैं।
जबतक ना मान हटे मन से, तब तक ना मुक्ति पाते हैं ॥

दोहा राम--भाग्य हीन अंगूर तज, खावे खट्टे बेर।
अवध ठिकाना छोड़ कर, पछतावोगी फेर॥

सीता का उत्तर ठिकाने का

॥ गाना ॥ तर्ज---चुराकर ले गया कोई मेरी जंजीर सोने की

ठिकाना बे ठिकानों का, कहां कहदूं ठिकाना है।
हैं रमते राम दुनिया में, सभी किसका ठिकाना है ॥टेक॥

है वस्तु तीन दुनिया मे, प्रकृति जीव परमात्म।
ठिकाना उनका क्या जब तक, नहीं इनको पिछाना है ॥१॥
लक्ष परमात्मा का रखकर, हटा व्यवधान कर्मों का।
नियत उपादान कारण और, फिर साधन जुटाना है ॥२॥
ठिकाना एक सिद्धस्थान के, नहीं और कहीं देखा।
गतागत मारा ताड़ी में, कहां आसन बिछाना है ॥३॥
महा अज्ञान वश चेतन, प्रकृति जाल में फस कर।
चराचर में फिरे किन्तु, नहीं निज को पिछाना है ॥४॥
ये आकर्षण सदा होता है, जैसे लोहे चुम्बक का।
फंसा ऐसे ही चेतन जड़ में, पर बस आना जाना है ॥५॥
गई दुनिया चली जावेगी, चलती देखलो प्रत्यक्ष।
मिले जैसी जगह हमको, समय वहाँ पर बिताना है ॥६॥
अमीरी मे न आनन्द था, गरीबी मे न सुख दुःख है।
मुसाफिर हैं सभी हम ने, कहां फिर घर बसाना है ॥७॥
सदा कर्त्तव्य पालन कर, चलेंगे लक्ष के सम्मुख।
न सोयेंगे न खोयेंगे, सफर करके दिखाना है ॥८॥
जंग है कर्म शत्रु से, फेर विश्राम कब लेंगे।
आत्म पुरुपार्थ से शत्रु, रहित मार्ग बनाना है ॥९॥

विदा किया मोह स्वार्थ का, फेर अपना पराया क्या ।
जहां की स्पर्शना होगी, वहॉ विस्तर लगाना है ॥१०॥
न शत्रु है न मित्र है, हमारा कोदुनिया में ।
निवृत्ति भाव से जीवन, हमें सयमी वनाना है ॥११॥
शील शृंगार है अपना, और शृगार सब फीके ।
परीसे सह के तप जप से, कर्म दल को खपाना है ॥१२॥
कहो क्या सग लाये थे, कोई ले जाएंगे भी क्या
पड़ा रह जाएगा सब यहां, हमे परभव मे जाना है ॥१३॥
प्रलोभन आत्मा करके, हजारो चोटें खाते है ।
हमे पर परणति तज कर, सदा आनन्द पाना है ॥ ४॥
कर्म जंगमें "शुक्ल" आपत्तियां, आना स्वभाविक है ।
मगर सम दम व क्षम से ध्यान, शुभ दो हमने ध्याना है ॥१४॥

दोहा—रामचन्द्र ने सब तरह, समझाई हर वार ।
किन्तु न मानी एक भी, सतवन्ती सिया नार ॥

चौ०--जयभूषण मुनि पास सिधाये, चरण कमल जा शीश निमाये ।
समवसरण छवि वरणि न जाये, ब्रह्म ज्ञानी ने वचन सुनाये ॥

दोहा—इस संसार समुद्र का, वार न है कहीं पार ।
जो इस की चाहना करे, उस की मिट्टी ख्वार ॥

दोहा—वीतराग का जब सुना, रघुपति ने उपदेश
हाथ जोड़ कर विनय, से ऐसे कहे नरेश ॥

दोहा—देता है प्रभु आपको, वस्त्र का कोई दान ।
भोजन चार प्रकार का, रहने लिये मकान ॥

जनक सुता का दान आज, यह मेरा भी स्वीकार करो ।
ससार समुद्र से इसको, दीक्षा देकर भव पार करो ॥

इस दुनियां से भयभीत हुई, यह शरण आपकी आई है।
सर्वज्ञ आप से क्या छानी, यह वैदेही की जाई है॥

दोहा–ईशान कोण की तर्फ हो, लुंच किये सब केश।
मुखपत्ति मुख बांध कर, किया आर्या का भेष॥

जयभूषण केवल ज्ञानी ने, दीक्षा का पाठ पढ़ाया है।
समुठान सूत्र मे कथन सभी, यहां लिखने में नहीं आया है॥
विधि सहित सीता माता ने, चार महाव्रत धारे हैं।
अब तप संयम में लीन हुई, सब आश्रव दूर निवारे हैं॥
तीन योग से सुव्रता, गुरुणी की विनय बजाती है।
सम दम क्षम को धार ज्ञान, शक्ति नित्यमेव बढ़ाती है॥
बार बार श्री राम केवली, के चरणों में पड़ते हैं।
अति नम्रता से हाथ जोड़ कर विनती ऐसे करते हैं॥

दोहा—आप जगत मे हे प्रभु, तारन तरन जहाज।
प्रश्न पूछना एक मैं, चाहता हूँ महाराज॥

सुलभबोधी या दुर्लभबोधी, मैं किस मे कहलाता हूँ।
चर्म अचर्म शरीरी का भी, निर्णय भगवन् चाहता हूँ॥
भव्य और अभव्य इन्हों मे, मेरी संख्या किस में है।
और चारित्र लेना मैंने, किसी और जन्म या इसमें है॥

वासुदेव प्रति वासुदेव, चक्री और बलदेव।
भव्य सभी होते सदा, अवतार कहे स्वयमेव॥

सुलभ बोधी हे राजन तुम, भव्य जीव कहलाते हो।
जो कुछ करते नियम उसे, हृदय से पालना चाहते हो॥
छोड़ सभी खट पट दुनिया का, संयमव्रत को धारोगे।
तुम चर्म शरीरी इसी जन्म में, राजन् मोक्ष सिधारोगे॥

दोहा—कारण से कार्य सभी, होते दुनिया मांय।
मिलना है कारण तुम्हे, मोह तजने का आय॥

बलदेव की पदवी का राजन्, अवसान जिस समय आवेगा।
उस समय आप को संयम लेने, का कारण मिल जावेगा॥

आप्त के सुनकर वचन राम, के हृदय मे सुख भारी है।
अवसर देख विभीषण ने, फिर ऐसे गिरा उचारी है॥

पूर्व जन्म वर्णन

दोहा—नाथ आप को धन्य है, धन्य श्री जैन धर्म।
अल्पज्ञों के आप से, मिटते अशेप भ्रम॥

कौन कर्म अनुसार हरी, रावण ने जनक दुलारी थी।
फिर लक्ष्मण के हृदय चर्छी, अमोघ विजय क्यो मारी थी॥

दशकन्धर को लक्ष्मणजी ने, रण भूमि में मारा था।
पूर्व का कुछ था सम्बन्ध, या नया वैर अब धारा था॥

भामण्डल सुग्रीवादिक यह, लवणांकुश जो सारे हैं।
किस कर्मानुसार सभी के सब, श्री राम के भक्त यह भारे हैं॥

तारण तरण जहाज आप, सब जीवों के हितकारी हो।
कुछ व्याख्या पूर्वभव सुनने से, शंका सब दूर हमारी हो॥

दोहा—कान लगाकर के सुनो, आज सभी नर नार।
कर्म शुभाशुभ भोगते, जग में जीव अपार॥

चौ०—दक्षिण भरत 'क्षेमपुर' जान, 'नयदत्त' सेठ बसे कुलवान।
नार सुनन्दा चतुर सुजान, धनदत्त वसुदत्त सुत पुण्यवान॥

दोहा—'याज्ञवल्क' एक मित्र था, दोनों का प्रधान।
अब आगे जो कुछ हुआ, सुनो लगा कर कान॥

'सागर' वणिक इसी नगर का, दूजा रहने वाला था।
'गुणधर' नामक पुत्र 'गुणवती', कन्या रूप विशाला था॥
सागरदत्त ने पुत्री की, 'धनदत्त' से करी सगाई थी।
'रत्नप्रभा' नारी को पर, लालच ने आज दबाई थी॥

दोहा—'श्रीकान्त' एक सेठ था, बूढ़ा साहूकार।
रत्नप्रभा ने व्या हदई, कन्या उसके लार॥

याज्ञवल्क मित्र ने, मित्रों को यह बात बताई है।
वह मांग आपकी अए मित्र, श्रीकान्त सेठ ने व्याही है॥
वसुदत्त छोटे भाई का, सुनकर गुस्सा आया है।
कोई समय देख श्रीकान्त सेठ के, मारन को चल धाया है॥

दोहा—वसुदत्त ने क्रोध से, मारा एक प्रहार।
श्रीकान्त ने शत्रु के, मारा खेच कटार॥

विंध्या अटवी में हिरण, हुवे पैदा यह दोनों जाकर के।
फिर गुणवन्ती भी आयु पूरण, कर हिरणी हुई आकर के॥
उस हिरणी के लिये उन मृगों ने, लड़ कर प्राण गवाये हैं।
जन्म मरण के चक्कर में, कर्मों ने खूब सताये हैं॥

दोहा—धनदत्त ने जाकर लखि, वसु भ्रात की लाश।
भ्रात विरह में अति फिरा, होता कहीं उदास॥

एक दिवस रजनी समय, साधु जन के पास।
क्षुधा वश करने लगा, भोजन की दरखास॥

महाराज मुझ है इस समय, भोजन की दरकार।
यदि हो तो कुछ दीजिये, थोड़ा मुझे आहार॥

अय भाई ले लीजिये, है सन्तोष आहार।
हम जैसे बस आप भी, देवें समय निवार॥

सन्तोष सिवा दूजा भोजन. नहीं मुनि रात को करते है।
दिन में न संचय करे रात, को पास न अपने धरते है॥
रात्रि भोजन करने वाले, मनुष्य निशाचर होते है।
फिर साधु होकर करे तो, करनी पानी वीच डवोते है॥

दोहा—मनुष्य मात्र को चाहिये, रात्रि भोजन त्याग।
उनका तो कहना ही क्या, जिनके दिल वैराग्य॥

दुर्लभ मिलता मनुष्य जन्म, फिर पुण्य से आयु मिलती है।
मानिन्द बर्फ के सो भी तो, देखो प्रति दिवस पिघलती है॥
सन्तोष बिना तृष्णा प्राणी की, कभी न मिटने पाती है।
अग्नि मे जितना घी डालो, उतनी ही लपट दिखाती है॥

दोहा—राजा और यम देवता. पेट समुद्र घर।
भरे न भरने के कभी, याचक वैश्वानर॥

महापुरुष भी पेट रूप, इस गढ़े को भर भर हार गये।
सब अनुभव अपना कर करके, बस अन्त मे सिर को मार गये॥
अनन्त वार यह सर्व लोक का, सारा पुद्गल खाया है।
किन्तु फिर भी हे भाई, इस जीव को सवर न आया है॥
अब भी यदि ये हाल रहा तो, मनुष्य जन्म खुस जायेगा।
फिर नहीं खबर कि कालान्तर के, वाद फेर कब पायेगा॥
जिसने निज आतम को दमा नहीं, औरो के पास दमाना है।
बस पछतावोगे फेर सोच लो, समय हाथ नहीं आना है॥

दोहा—सुने वचन मुनिराज के, हुई ठीक श्रद्धान।
कुछ-कुछ आत्म को लगा, होने अनुभव ज्ञान॥

त्याग किया रात्रि भोजन, और देश व्रतों को धारा है।
जा स्वर्ग सुधर्म में देव हुवा. जहा संपत्ति और सुख भारा है॥

अब आगे का सब हाल सुनो, जहां पर जन्मा यह जाकर के।
अच्छी सगत के अच्छे फल, ही लगे सर्वदा आकर के॥

दोहा—'महापुर' नामक नगर था, 'मेरुसेठ' सुजान।
सेठानी थी 'धारिणी', जन्मे उसमे आन॥

'पद्मरुचि' था नाम ज्ञान, विद्या बुद्धि का सागर था।
द्वादश व्रत धारे जिसने, सुमति करुणा का आगर था॥
परोपकार के लिये हमेशा, निशिदिन तत्पर रहता था।
और देख दुखित को दुखित हुवे, के नयनों से जल बहता था॥

दोहा—एक दिन रस्ते मे पड़ा देखा बैल अनाथ।
ऊपर सिर पर थी खड़ी, आने वाली रात॥

अति शोचनीय थी दशा और, अज्ञानी लोग सताते थे।
रास्ते में जो था पड़ा हुआ, ऊपर से आते जाते थे॥

और हेमन्त ऋतु भी अपने यौवन में, इतराई फिरती थी।
आँखों से आँसू दुखित बैल के, मुख से लारें गिरती थी॥

दोहा—पद्म रुचि ने बैल को, एक तरफ ले जाय।
ऊपर की जा वेदना, सारा दई मिटाय॥

इधर उधर जो लगा हुआ था, दूर सभी दुर्गन्ध किया।
औषध आदि खान पान, और छाया का प्रबन्ध किया॥

किन्तु आयुष्य पूर्ण हुई को, कहो कौन बधाने वाला है।
जैसा कर्म करे वहाँ जाता, प्राणी जाने वाला है॥

मन्त्रराज का दे शरणा, उस बैल का कार्य सारा है।
त्रियँचगति को त्याग मनुष्य. तन रत्न आन के धारा है॥

दोहा—'छत्रछाय' भूपाल के 'श्रीदत्ता' पटनार।
'वृषभध्वज' पुत्र हुआ, पुण्यवान सुकुमार॥

क्रीड़ा करता राजकुमार, एक दिवस वहाँ पर आ पहुँचा।
जहाँ बैल मरा था देख एक कुटिया, कुछ मन ही मन सोचा॥
जाति स्मरण ज्ञान हुआ, देखा उपयोग लगा कर के।
बनवा कर एक भवन वहाँ, शुभ रत्नालय दिया बना कर के॥

दोहा—पद्म रुचि को कुमर ने, अपने पास बुलाय।
हृदय लगा कर प्रेम से, यों बोले मुस्काय॥
परोपकारी तुम मेरे, गत भव के गुरु राज।
कृपा तुम्हारी से मिला, नरतन सब सुखसाज॥

महा कष्ट त्रियँच गति का, आप ने सभी हटाया है।
ससार समुद्र से तुमने ही, मुझे किनारे लाया है॥
ससार में चीज नहीं कोई, जिसको दे प्रत्युपकार करु।
गुरुराज आपके चरणों मे. अपना यह आज निढाल धरु॥
राजपाट क्या जिस्म तलक, यह सभी आपकी माया है।
पर्याप्त मुझको केवल आपके, चरण कमल की छाया है॥

दोहा—महाराज आपका यह सभी, पुण्य उदय हुआ आय।
बाकी मिलते है सभी, कारण दुनिया माय॥

मैंने तो अपने हृदय की पीड़ा, उस समय मिटाई थी।
निश्चय मैं अपनी औषधि थी, व्यवहार मे तुम्हे पिलाई थी॥
नमोकार मंत्र तुमने श्रद्धा था, जो जिनवर की वाणी है।
बस यही जीवको मनुष्य जन्म, क्या, मोक्ष सुखों को दानी है॥

दोहा—दोनों ने धारण किये, द्वादश व्रत सुख कार।
आयु पूर्ण कर गये, दूजे स्वर्ग मझार॥

वैताढ्यगिरि 'नदावर्त नगरी, अद्भुत एक नजारा था।
और कनक प्रभा' थी पटरानी, 'नन्दीश्वर' राजा प्यारा था॥

पद्मरुचि आकर जन्मा, दूसरे स्वर्ग से आ कर के।
'नयनानन्द' नाम धरा सुतका, शुभ मात पिता ने चाह करके ॥

दोहा– राज संपदा भोग कर, फिर संयम लिया धार।
पंचम सुर फिर जा लिया, जिस्म वेक्रिय धार ॥

पूर्व विदेह 'क्षेमा नगरी,' एक खास राजधानी थी।
'विमलवाहन' था भूप चतुर, 'पद्मावति' पटरानी थी ॥
'श्रीचन्द्र' हुआ पुत्र जिन्होंने, मुख्य दया मानी थी।
सभी तरह आनन्द, श्री जिनवर की मेहरबानी थी ॥

दौड़—'समाधिगुप्त मुनि आया, चरण जा शीश निमाया।
समझ जग धुन्द पसारा—
मुनि पास श्रीचन्द्र कुँवर ने तप संयम व्रत धारा ॥

दोहा—ब्रह्म लोक पचम लिया, बार दूसरी जाय।
दिव तज दशरथ सुत हुवे, रामचन्द्र यह आय ॥

'वृषभध्वज' का जीव आन, सुग्रीव यही तो जन्मे हैं।
इस कारण श्री रामचन्द्र की, भक्ति इनके मन में हैं ॥
जैसा कोई बोवे कर्म बीज, उसका वैसा फल पायेंगे।
अब 'श्रीकान्त' का हाल तुम्हें, पहिले यहां कुछ दर्शायेंगे ॥

दोहा—'मृणालकन्द' एक नगर, 'वज्रकंठ' नरेश।
'हेमवंती' रानी भली, सुन्दर सारे वेष ॥

वही श्रीकान्त जन्मान्तर से, इनके यहां राजकुमार हुआ।
'शम्भु' नाम धरा जिस का, अति रूप कला सुखकार हुआ ॥
राज पुरोहित 'विजय' नाम, थी रत्न चूलिका पुरोहितानी।
'वसुदत्त' इनके आकर, 'श्रीभूति' पुत्र हुआ सुखदानी ॥

दोहा—'सरस्वती' नामक ब्राह्मणी, 'श्रीभूति' की नार।
गुणावती ने इसके उदर, जन्म लिया शुभ धार॥

'वेगवती' था नाम. कला सब, चौसठ की वह ज्ञाता थी।
राग द्वेष के वशीभूत, मृषावादिनी विख्याता थी॥
कर्मों के संग मूढ हुआ, यह जीव अतुल दुःख पाता है।
और जिसने नीचे गिरना हो, वह पर निन्दक बन जाता है॥

दोहा—एक मुनि वहां नित्य प्रति, करते थे शुभ ध्यान।
जनता सब ऋषि का, करती थी सम्मान॥
'वेगवती' ने एक दिन, निन्दा करी अपार।
जनता से कहने लगी, ऐसे गिरा उचार॥

दोहा—ढौंगी है बिल्कुल बुरा, यह साधु मक्कार।
मैंने देखा सामने, करता हुआ व्यभिचार॥

समझ दुराचारी उसको, बहुतो ने सगत छोड़ दई
कइयों ने निन्दा करी खूब, कइयो ने तबियत मोड लई॥
देख धर्म की हानि कुछ, साधु के मन मे ख्याल हुआ।
यह दूषण दूर-हटाने को, प्रतिज्ञा पर अब ध्यान हुआ॥

दोहा—यही प्रतिज्ञा आज से, करता हूँ भगवान्।
दूषण दूर हुवे बिना, खोलूंगा नहीं ध्यान॥

सूज गया मुख वेगवती का, सुर ने हाल बेहाल किया।
और समझ गये सब इस पापिन ने, मुनि को झूठा आल दिया॥
मुख से नहीं बोल निकलता है, स्रोत सबके सब बन्द हुवे।
और लगे कॉपने नर नारी, घर के भी सारे तग हुवे॥

दोहा—झूठा था मैंने दिया, मुनिराज को आल।
बोली सबके सामने, आया मेरा काल॥

फिर मुनिराज से जाकर के, सबने अपराध क्षमाया है।
निर्मल आत्म है साधु की, सबके दिल यही समाया है॥
दोष दूर होगया समझ, मुनिराज ने अन्न जल पान किया।
वेगवती को भी ऋषिराज ने, निर्भयता का दान दिया॥
वेगवती श्री भूति सबने, देशव्रत को धारा था।
कर्म बन्धन का हेतु महा, मिथ्यात्व को दूर निवारा था॥

दोहा—शम्भु नृप मोहित हुआ, वेगवती को देख।
इसी तरह बनती सदा, खोटी विधना रेख॥

मिथ्यात्वी समझ के श्रीभूपति ने, विवाह न उसके साथ किया।
शक्ति से छीनी वेगवती, और श्रीभूति का घात किया॥
दुःखदाई होऊ राजा को, श्रीभूति निदान कर डाला है।
कुछ दिन में वेगवती को नृप ने, घर से बाहर निकाला है॥

दोहा—निराधार बाला हुई, होती फिरे उदास।
आर्यिका जाकर बनी, हरिकान्ता सती पास॥

पंचम देवलोक पहुंची, शुभ तप जप ध्यान लगा कर के।
महा ब्रह्लोक तज जनक भूप के, जन्मी सीता आ करके॥
सब झूठा दूषण मुनिराज को, इसने वहां लगाया था।
अपवाद यहां पर हुआ सिया का, उस भव का फल पाया था॥

भव भव मे रुला अपार भूप, शंभु का हाल सुनाना है।
जिसने आकर के लंकपति. दशकन्धर नाम कहाना है॥

दोहा—'कुशध्वज' नामक विप्र था, 'सावित्र' तसु नार।
शम्भु इनके सुत हुआ, 'प्रभास' नाम सुखकार॥
संयम लिया प्रभास ने, 'विजयसिंह' मुनि पास।
महाव्रत धारण किये, कर मिथ्यात्व विनास॥

दुष्कर करनी करी मुनि ने, सभी परिषह जीते हैं।
और संयम व्रत में निश्चल मन से, वर्ष बहुत से बीते हैं॥
एक 'कनकप्रभ' विद्याधर, राजा दर्शन करने आया था।
तब ऋद्धि उसकी देख प्रभास, मुनि का मन ललचाया था॥

दोहा—तप जप का मुझको मिले, इसी तरह फल आय।
निदान कर पैदा हुआ, स्वर्ग तीसरे जाय॥

स्वर्ग तीसरा छोड़ यहा, जन्मा दशकन्धर आकर के।
याज्ञवल्क तू हुआ विभीषण, आये प्रथम बता कर के॥
और श्री भूति था विप्र जो कि शम्भु राजा ने मारा था।
वह वशीभूत कर्मों के होकर, पहली नरक सिधाया था॥

दोहा—नर्क भोग पैदा हुआ, विदेह क्षेत्र में जाय।
'पुनर्वसु' खेचर बना, विद्याधर सुखदाय॥
'पुण्डरीक' एक नगरी है, महाविदेह मंझार।
चक्री 'त्रिभुवनानन्द' को, जाने सब संसार॥

'अनंगसुन्दरी' उस चक्रवर्ती की पुत्री एक कहाती थी।
थी रूप कला में अद्वितीय, सर्वज्ञ देव गुण गाती थी॥
पूर्व पुण्य से रूप ऋद्धि, सब साधन था शोभन पाया।
धर्मरत गौरव वाली, सदाचार था मन भाया॥
उडकू विमान में बैठ एक दिन चली सैर को जाती थी।
भोगी भँवरे गोठी ले दो, पुरुषों की टोली जाती थी॥

दोहा—दोनों विद्याधर हुये, मोह कर्म वश लीन।
राज कुमारी का लिया, विमान व्याज से छीन॥
दोनों विद्याधर कुमारी को, वश में करना चाहते थे।
किन्तु दुष्ट विचारों को वो, सफल न करने पाते थे॥

इस अन्तर में था पुनर्वसु, विद्याधर सम्मुख आ पहुँचा।
देख कष्ट मे अबला कुँवारी को, अपना कर्तव्य सोचा ॥

दोहा—पुनर्वसु का परस्पर, हुआ उन्हों से जंग।
किन्तु भाग निकले वहां, दोनों होकर तग ॥

राज कुमारी के उड़कू, विमान को कर बेकार गये।
उल्टा षडयंत्र रच डाला, क्योंकि असफल हुए हार गये ॥

पुनर्वसु ने लड़की को, अपने विमान में विठलाई है।
उसके स्थान पहुँचाने को, चलने की कला दबाई है ॥
पीछे से चक्रवर्ती की, दौड़ विमानों की आई।
यह देख हाल लडकी, अपनी इज्जत के कारण घबराई ॥
थी निश्चय शुद्ध आत्मा, पर यह दुनियाँ बड़ी दुरगी है।
फिर षडयंत्र कोई रच डाले. फिर तो व्यवहार बिरगी है ॥
जातिवान कुलवान सदा, चाहे खेल जान पर जाते हैं।
पर निश्चय और व्यवहार में, कोई धब्बा नहीं लगाते हैं ॥

दोहा—सुभटों ने उसका किया, झटपट पीछा जाय।
दोनों लख इस हल को, दिल में गये घबराय ॥

फिर सोचा कि मैं पुनर्वसु अपरचित्त संग पाजाऊगी।
और पीछे पिता पास जाकर, अपना क्या मुख दिखलाऊंगी ॥
ऐसा सोच अनंगसुन्दरी. उस जगल में कूद पड़ी।
अब विना धर्म मेरा बचाव, होगा नहीं ऐसी सूझ पड़ी ॥

दोहा—दुबक छुपक निकली कहीं, सयम व्रत लिया धार।
संग्रह नित्य करने लगी, तप जप व्रत सुख कार ॥

पुनर्वसु जैसे तैसे हुआ, दाव पेच से निकल गया।
किन्तु दुखी था उपकारी हृदय जिसका हो विकल गया ॥

परमार्थ करने पर भी कभी कष्ट सामने आता है।
कर्मों के कुछ क्षयोपशम से, सीधा रास्ता मिल जाता है॥

दोहा—संयम व्रत धारण किया, हो कर के लाचार।
तप जप शुभ करनी करी, मन अपने को मार॥

तप संयम करनी निदान, से वासुदेव पद पाते है।
उस पूर्व बात का स्मरण कर, अब निदान करना चाहते हैं
मैं अनंग सुन्दरी को पाऊं, ऐसा निदान कर डारा है।
फिर छोड़ के इस औदारिक तन का, जिस्म वैक्रिय धारा है॥

दोहा—देवलोक पुण्य से मिला, सभी सुख भरपूर।
किन्तु सभी अनित्य यह, बने एक दिन दूर॥

छोड़ स्वर्ग नृप दशरथ के. घर जन्मा लक्ष्मण आकर के।
यहां पूर्व पुण्य फल भोग रहे, है वासुदेव पद पाकर के॥
श्री अनंग सुन्दरी ने भी तो, तप सयम खूब कमाया था।
और अन्तसमाधि मरणत्याग, तनको शुभ ध्यानलगाया था॥

दोहा—एक अजगर ने सती को, बना लिया निज आहार।
स्वर्ग दूसरे काल कर, पहुँची समता धार॥
त्याग स्वर्ग आकर हुई, वैशल्या सुख कार।
प्रेम लखन संग इस तरह, पूर्व पुण्य अनुसार॥

चौपाई—गुणवती का गुणधर भाई, प्रथम नाम सना बतलाई।
कुण्डल मंडित जन्मा जाई, विषयों ने आत्म भरमाई॥
एक दिन पास मुनि के आया, साधु ने उपदेश सुनाया।
त्याग कुव्यसनों का करवाया, गृहस्थधर्म जिसके मन भाया॥

दहा—देशव्रत धारण किया, किन्तु राज्य में ध्यान।
कुंडल मंडित मर कर हुआ, भामंडल यह ज्ञान॥

जनक भूप का पुत्र सती, सीता का भ्रात कहाता है।
अब लवणांकुश का हाल सुनो, संयोग चला क्या आता है॥
काकन्दी था नगर वहां पर. 'वामदेव' एक धर्मी था।
एक 'श्यामा' नार कहाती थी. परिवार सभी शुभकर्मी था॥

दोहा—श्यामा के दो पुत्र थे, पुण्यवान सुखकार।
नाम 'सुन्द' 'वसुनन्द' था, सुन्दर रूप अपार॥

वहाँ एक मास का लेने पारणा, मुनिराज घर आया था।
तब उल्ट प्रणामों से दोनों, भाइयों ने आहार वेहराया था।
पुण्य प्रकृति बांध लई, आयु का खेल तमाम हुआ।
उत्तर कुरु में भोग के सुख, फिर प्रथम स्वर्ग जा धाम हुआ॥

दोहा—काकंदी का भूपति, 'रतिवर्द्धन' शुभ नाम।
थी पट नार 'सुदर्शना, राजा को अभिराम॥

प्रथम स्वर्ग से आ कर के, दोनों ने यहां पर जन्म लिया।
और जन्मोत्सव का खुशी खुशी, राजाने सब सामान किया॥
नाम 'प्रियकर' और 'स्वयंकर', दोनों के शोभाते थे।
ससार से चित्त उदास हुआ, सयम व्रत लेना चाहते थे॥

दोहा—त्याग अनित्य संसार को, महाव्रत लिये धार।
सम दम खम को धार के, तप जप किया अपार॥

नवग्रैवेक स्वर्ग में जाकर. सुख मनोगम पाये हैं।
'लवणांकुश दोनों भाई उस, स्वर्ग से चलकर आये हैं॥
पुंडरीकपुर में जनक सुता, ने दोनों पुत्र जाये थे।
वहां अनुव्रत धारी सिद्धार्थ ने, दोनों भ्रात पढ़ाये थे॥
यही सिद्धार्थ पूर्व दूसरे, भव की मात सुदर्शना थी।
उसी प्रेम अनुसार पढ़ाने की, आ मिली स्पर्शना थी॥

दोहा—जन्मान्तरो की बात सुन, गये भव्य जन कांप।
कइयों ने संसार का, त्याग दिया सन्ताप॥

संयमव्रत को धार लिया, आत्म के निर्मल करने को।
कई वीतराग की अमृत वाणी, लगे हृदय में धरने को॥
देशव्रत को धार कई, दिल मे आनन्द मनाते हैं।
सम्यक् दृष्टि बन गये बहुत, तीर्थंकर के गुण गाते हैं॥

जैसी भी जिसकी शक्ति थी, उसने वैसा व्रत धार लिया।
और कर्म बन्ध का कारण सब, ने मिथ्या भ्रम निवार दिया॥
उसी समय रघुकुल दिनेश फिर, पास सिया के आये हैं।
अति नम्रता से विधि सहित, शिक्षाप्रद वचन सुनाये हैं॥

दोहा—सती तुम्हारे जन्म को, धन्य धन्य हरबार।
मोह कर्म चाण्डल के, सिर में डारी छार॥

कुछ कहना तुमको जैसे, सूर्य को दीपक दिखाना है।
किन्तु फेर भी व्यावहारिक, हमने कर्त्तव्य बजाना है॥
अबतक तुमने जो कष्ट सहे, सयम का उनमें भारी है।
ना पाल सके यहां बड़े बडे, योद्धा ने हिम्मत हारी है॥
क्रुद्ध सिंह के सम्मुख भी, जाना आसान बताया है।
कालकूट को अमृत जैसा, खाने में सुन पाया है॥
हो सकता है कोई पर्वत को, मस्तक से तोड फैंक देवें।
और इन्हीं हाड़ के दातो से, लोहे के चने चबा लेवें॥
तलवार पकड़कर के उल्टी, शत्रु को मार गिरा देवें।
और महासमुद्र मे हाथों से तर, कर कोई प्राण बचा लेवें॥
किसी निमित्त से कर सकता है, इन अनहोनी बातों को।
पर संयम व्रत को कहा कठिन, जीते जो आठों कर्मों को॥

दोहा---हृदय से तुमने तजा, यह संसार असार।
तो अब दुनिया का नहीं, करना जरा विचार॥

स्वलिंग बन गयों आज से जो, तुमने मुखपत्ति धारी है।
तो अपने प्राणों से भी इसको, रखनी होगी प्यारी है॥
जिसने इसे विसार दिया, आगे जो इसे विसारेगा।
उस से धोबी का श्वान भला, दूजे दिन मति संभारेगा॥
बुद्धिमान् समदृष्टि जन को, एक इशारा काफी है।
दुष्ट आत्मा तो जैसे, सुल्फई चिलम की साफी है॥

दोहा—इतना कह श्री राम ने, निवा सती को माथ।
अवध पुरी को चल दिये, लेकर निज संग साथ॥
अनिक पति कृतान्त भी, लकर संयम भार।
दुष्कर करनी कर गया, पञ्चम स्वर्ग मंझार॥

साठ वर्ष तक जनक सुता ने, तप जप खूब कमाया है।
तेतीस दिवस का अनशन कर, जा स्वर्ग बारहवां पाया है॥
स्त्रीबेद छेदन कर के, बाईस सागर तिथी पाई है।
अच्युत इन्द्र बना सभी पर, हुक्म अधिक पुण्याई है॥

लवणांकुश की शादी

दोहा—वैताढ्य गिरी पर नगर था, कंचन पुर सुप्रसिद्ध।
विद्युतक्रान्ति भूपति, पुण्यवान समृद्ध॥

मंदाकिनी और चन्द्रमुखो दो, सुता भूप को प्यारी थी।
अब शादी कारण करी स्वयम्वर, मण्डप की तैयारी थी॥
पुत्रों के परिवार सहित श्री, राम लखन बुलाये हैं।
और यथा योग्य स्वागत कर सब का, मण्डप में बिठलाये हैं॥

दोहा—वर माला ले पुत्रिये, आई मंडप मांय।
यथा योग्य समझा रही, सब कुछ माता धाय॥
मंदाकिनी ने लवण को, पहिनाई वर माल।
अंकुश के गल मे दई, चन्द्रमुखी ने डाल॥

लक्ष्मण के पुत्रों का भी, बैठा था समूह बड़ा भारा।
जल गये ईर्ष्या से सारे, निज निज मस्तक पर बल डारा॥
गुस्से में चेहरे लाल हुये, सब लड़ने को आमादा थे।
था मान पिता की पदवी का, और सख्या में भी ज्यादा थे॥

नोहा—अनुचित चेष्टा सुतो की, देखी लक्ष्मण वीर।
बोले यों श्री राम से, लघु भ्रात रणधीर॥

क्रोध का परिणाम

गाना (तर्ज—पाप का परिणाम पापी भोगते)

देखिये भगवान शिशुगण, कैसे पागल हो गये।
तुच्छ पाकर पुण्य मर्यादा, से गाफिल हो गये॥ १॥
या इन्हों की खोटी शिक्षा, ऐसा फल लाई है यह।
रघुवंशियों में वश द्रोही, आके शामिल हो गये॥ २॥
स्वार्थियो ने लाभ हानि, को विचारा ही नहीं।
खान में सोने की लोहा, पीतल पैदा हो गये॥ ३॥
कैसे क्षेत्र कुसमय खोया है, गौरव वंश का।
कर्त्तव्य तज कर भाई का, भाई के दुश्मन हो गये॥ ४॥
लाड़ करते इन से खुद भी, रात दिन थकते न थे।
नीच बुद्धि कुल कलंकी, बिल मुकाबिल हो गये॥ ५॥
अन्याय करते मैं न देखूंगा, इन्हे अब इस तरह।
प्रेम प्याले थे जो अमृत, अब हलाहल हो गये॥ ६॥

अब लवण के चरणों में गिर के, बच सकते हैं यह ।
या मौत के इनको 'शुक्ल' परवाने हासिल हो गये ॥७॥

दोहा—चचेरे भाइयों का लखा, लवणांकुश ने जाश ।
नम्र वचन कहने लगे, तज भाषा के दोष ॥

लवणांकुश—जाति गौरव वंश का, करना चाहिये ध्यान ।
नीति विनय व्यवहार सब, समय क्षेत्र का ज्ञान॥

प्रथम तो निज पर का प्रश्न उदार चित्त नहीं लाते हैं ।
लाचार यदि आ भी जावे तो, फिर भी समय बचाते हैं ॥
शर्म धर्म भी दुनिया में, आत्म का रक्षक होता है ।
विपरीत इन्हों से चलने वाला, निज गुण सारा खोता है ॥
बुद्धिमान् को तनिक इशारा ही बतलाया जाता है ।
अब रघुवंशिन का पुण्य घटा, यह नजर सामने आता है ॥
बडवानल से तेज सुनो, भाइयो-द्वेपानल होती है ।
गौर व इज्जत क्या राज पाट, सुख जड़ामूल से होती है ॥

दोहा—देख मूर्खता सुतों की, चढ़ गया रोष अपार ।
पुत्रों को धिक्कारते, बोले वचन उचार ॥

गाना—बने सब आज निर्बुद्धि, शर्म तुमको न आई है ।
धूल में अपनी और कुल की, सभी इज्जत मिलाई है ॥१॥
लाज रघुकुल की रखने को, राम ने राज त्यागा था ।
तुच्छ एक आज वरमाला पे, तुमको तेजी आई है ॥२॥
प्रेम दुनिया से बढ़कर है, हमारे सारे भाइयों में ।
किन्तु तुमने यह कैसो आज, द्वेपानल दिखाई है ॥३॥
बड़े भाई की पत्नी को, सदा मैं माता कहता हूं ।
तुम्हे धिक लेना वरमाला, बड़ों से दिल में समाई है ॥४॥

तुम्हें अधिकार क्या उठने, का था बिन राम के पूछे।
दोष यह खून से बढ़कर, जो मर्यादा घटाई है ॥५॥
अंश रघुवंश के हो तो, क्षमा अब माग लो सारे।
नहीं तो राज मे रहना, तुम्हे मेरी मनाई है ॥६॥
राम का भय आन कुल की, 'शुक्ल' दिल मे समाई है।
तुम्हारी वरना छिन मात्र मे, कर देता सफाई है ॥७॥

दोहा—देख रहे थे राम जी, बैठे सभा मझार।
दिल ही दिल मे कर रहे थे इस तरह विचार ॥
अरिहन्त देव ने सब तरह, दिये जीव समझाय।
व्यवहार कसौटी से कोई, देखे यदि लगाय ॥

जहां सत्य प्रेम की वृद्धि हो, बस धर्म वहा पर बढ़ता है।
और क्षमा शील के होने से, आत्म का गुण नही घटता है।
क्रोध प्रेम का नाश करे, अभिमान विनय को खोता है।
वह मित्रता का वमन करे, जो फरेब नशे मे सोता है ॥
लोभ दुष्ट यह महा बुरा, सब ही कुछ नाश बना डारे।
संभूम चक्रवर्ती की तरह, ससार मे रुला रुला मारे ॥

दोह राम--सूर्यवंश मे आज तक, रहा अखड प्रेम।
अब आगे आता नजर, रहे न पूरा क्षेम ॥

जहा विनय नहीं वहां धर्म घटे, फिर दान पुण्य घटजाता है।
और गिरे हुए गौरव वालासे, सहसा मन फट जाता है ॥
द्वेपानल यह बुरी बला है, जिस जगह जरा सी आती है।
वहाँ फूट डालकर रूप भयंकर, सब कुछ नाश बनाती है ॥

दोहा— बुद्धिमान् होता वही, चले समय अनुसार।
समय देख श्रीराम जी बोले वचन उचार ॥

दोहा राम—क्या बच्चों की बात पर, रोष किया तूं वीर।
लखन आप को चाहिये, होना अति गम्भीर ॥

ऐसी बाते सब बालपन मे, प्रायः, पाई जाती हैं।
बेफिकर अवस्था यही तो, बिल्कुल अलमस्त अहाती है ॥
समझाना हो यदि बच्चो को तो, प्रेम से समझाना चाहिये
इस तरह रोष मे आकर के, दिलभी न मुर्झाना चाहिये ॥

दोहा—आज मर्म की बात एक, सुन ऐ लक्ष्मण वीर।
पुण्य सूर्यवंश का, हुवा आज आखीर ॥
ऐसा कह श्रीराम ने, झगड़ा दिया मिटाय।
अब अपना अपराध भी, सबने लिया क्षमाय ॥

अब खुशी-खुशी श्री राम लखन, सब पुरी अयोध्या आये हैं।
पर वासुदेव के पुत्र कुछ, अपने मन मे शर्माये हैं ॥
संसार से चित्त उदास हुआ, आज्ञा ले सयम धार लिया।
श्री मुनि महाबल से दीक्षा ले, आत्मकार्य सार लिया ॥

दोहा—भामंडल भूपाल जी, बैठे महल मंझार।
शुद्ध भावना भावते, ऐसा किया विचार ॥

वैताढ्य गिरि की दोनों श्रेणी, मैंने बस में करली हैं।
दुनिया के सुख भी भोग लिये, रानी भी कितनी वरली हैं ॥
किन्तु साथ मेरे दुनिया से, कुछ नहीं जाने वाला है।
और काल बुलावा एक दिवस, मुझको भी आने वाला है ॥

दोहा—इतना कहते ही पड़ी, विद्युत सिर पै आय।
भारत छोड पैदा हुआ, देवकुरु में जाय ॥
सजधज कर विमान मे, भ्रमण गये हनुमान।
वापिस आते को मिला, कारण ऐसा आन ॥

अस्ताचल को जा रहा, छिपने को रवि विमान,
हनुमान को उस समय, आया ऐसा ध्यान ॥

तरुण रवि था किस तरह, तेज क्रांतिवान् ।
नजर कोन था मेलता, जब था मध्य युवान ॥

अब सभी क्रान्ति क्षीण हुई, क्यों कि यह छिपने वाला है।
फिर निबड़ तम घोर अन्धेरा, यहा पर बिछने वाला है ॥
आयु के पूर्ण होने पर एक, दिन मैं भी छिप जाऊंगा ।
मिट गये अनन्ते मुझ जैसे, मैं भी ऐसे मिट जाऊंगा ॥
अष्ट महा शत्रु मेरे उन पर, न कुछ भी ध्यान दिया ।
औरों को शत्रु मान मान, निर्दोषों का घमसान किया ॥
क्रोध मान माया लालच, यह सब को ही भर्माते हैं ।
ऐसा महाजाल इन्हों का है, सत्पथ पर जाते शर्माते हैं ॥

दोहा—है निशंक ससार यह, निश्चय सभी असार ।
, चक्री तीर्थंकर सभी. तज गये आखिर कार ॥

छोड़ दूं संसार तबही, मोक्ष पद पाऊंगा मैं ।
वरना इस चक्कर से हरगिज, पार न पाऊंगा मैं ॥ १॥

नर्क तिर्यक मनुष्य क्या. सुरपुर मे पूर्ण सुखनहीं ।
अवसान में रोते सभी, चूका तो पछताऊंगा मैं ॥ २ ॥
जो भी कुछ आता नजर, पुद्गल की माया है सभी ।
अरिहन्त की कृपा से इस पर, अब न मुर्भाऊंगा मैं ॥ ३ ॥
शिक्षा जिनवर की 'शुक्ल' नस नस के अन्दर रम गई ।
अब तो सच्चिदानन्द ही, बन के दिखलाऊंगा मैं ॥ ४ ॥

दोहा—राजपाट दे पुत्र को, धर्म रत्न गुरु पास ।
उत्सव सहित सभी गये. दिल मे अति उल्लास ॥

ईशाण कोण की तर्फ बढ़े. सब केश लुंच कर डारे है।
मुखपत्ति मुख पर बाध, हस्त बाय में पात्र धारे हैं॥
यथा योग्य सब विधि पूर्ण करके, फिर सम्मुख आया है।
श्री धर्म रत्न गुरुराज ने तब, दीक्षा का पाठ पढ़ाया है॥

दोहा—चार महाव्रत धार के, किया ज्ञान अभ्यास।
फिर तप जप में लग गये, करने अरि का नाश॥

चौक०—पद्मसुरागादि रानी कइया ने. संयम भार लिया।
गुरुणी जी श्री लक्ष्मी की, आज्ञा को सिर पर धार लिया॥
मिश्री की मक्खी के मानिन्द, ऐसे नर नारी कहाते हैं।
दुनिया के विषय सुख छोड़ सभी, वह त्याग अवस्था चाहते हैं।

दोहा—नाश किया चारों कर्म, घनघाती बलवान्।
उसी समय हनुमान को. हो गया केवल ज्ञान॥

जिन को केवल ज्ञान हुआ सो, गये मोक्ष सुख पायेंगे।
अब राम लखन के प्रेम सम्बन्धी हाल अगाड़ी आयेंगे॥
कर्मों मे सबका महाराजा, एक मोहिनी कर्म कहाता है।
जिस समय उदय इसका होता, वह सब को ही भर्माता है॥

दोहा—हनुमान ने जिस समय. संयम व्रत लिया धार।
सुनते ही श्रीराम ने, ऐसे किया विचार॥

दोहा राम-किस कारण हनुमान ने, त्याग दिया ससार।
विषय सुख अनमोल तज, महा कष्ट लिया धार॥

दोहा— शक्रेन्द्र पहिले स्वर्ग, सभा सुधर्मा माय।
देख रहा था भारत को, निज उपयोग लगाय॥
रामचन्द्र के धर्म से, प्रतिकूल परिणाम॥
देख इन्द्र कहने लगा, सुन रहे देव तमाम॥

दोहा शक्रेन्द्र--रामचन्द्र जी कर रहे, उल्टा आज विचार।
आश्चर्य मुझको हुआ, अद्भुत आज अपार॥

चर्म शरीरी राम आज, उपहास्य धर्म का करता है।
इस राग द्वेष में बधा जाव, नहीं कर्म बध से डरता है॥
इस बात को अब मै समझ गया, कि प्रेम लखन पर भारी है
और प्रेम के वश मे हुये राम ने, उल्टी मति मन धारी है।

दोहा शक्रेन्द्र--राम लखन जैसा नही, प्रेम कहीं पर और।
भारत क्षेत्र सब छान कर, देख लिया चहुं ओर॥

मनुष्य मात्र क्या देव नहीं, कोई प्रेम उन्हो का हटा सके।
प्रपंच करो हजार चाहे पर, उनका दिल नहीं फटा सके॥
श्रीराम बिना श्री लक्ष्मण जी, एक क्षण भर नहीं रह सकते हैं
और एक वचन भी भाई के, प्रतिकूल नहीं सह सकते हैं।

दोहा—दो देवों के बात यह, दिल मे बैठी नाय।
शक्रेन्द्र को इस तरह, बोले सम्मुख आय॥

दों० दो देवता--मृत्यु लोक का प्रेम है, बच्चो जैसा खेल।
सोडे को चिकना पना, क्या दिखलावे तेल॥

सब देखो अब हम राम लखन का प्रेम तुडा कर आते हैं
इस बात की साक्षी सभी परिषदा, को करवा कर जाते हैं

प्रेम लखन का रामचन्द्र जी, से काफूर बना देंगे।
और एक से एक को प्रतिकूल कर, दोनो को बतला देंगे॥

दोहा—इतना कह कर चल दिये, अवध पुरी की ओर।
प्रेम तुड़ाने के लिये, खूब लगाया जोर॥

असल रंग पर नकल का, चढ़ा न किंचित रंग।
फिर ऐसी युक्ति करी, अन्त मे होकर तंग॥

अब था विचार यह देवों का, जाकर क्या मुख दिखलावेंगे।
यदि प्रेम नहीं टूटा इनका, तो शर्मिन्दे हो जावेंगे ॥
देवों ने फिर झूठी एक, माया ऐसी रच डारी है।
और मृतक तन एक बनाय राम का, रुदन मचाया भारी है।

दोहा—हा प्रीतम हा रामजी, हा बेटा हा बाप।
छोड़ हमें क्यों चल बसे, स्वर्ग धाम मे आप ॥
दुःख दायी यह शब्द जब, पडे लखन के कान।
चमके सहसा सुनन को, लाया अपना ध्यान ॥

इतने मे रोते सिर धुनते. सब भृत्य सामने आये हैं,
सब देख हाल यह अनुज सोच, सागर में और समाये हैं ॥
और ऊँचे स्वर से सब ने हो, दुःखदाई रुदन मचाया है।
फिर गद्गद् स्वर से भृत्यों ने, लक्ष्मण को बचन सुनाया है ॥

दोहा देवमायाभृत्यः—

महा शोक प्रलय हुई, हाय हाय सरकार।
आज राम परभव गये, देकर दगा अपार ॥
सोच के कुछ बाते करो, बकते मूढ गँवार।
शब्द अपशकुन का कहा, गर्दन लेऊँ उतार ॥
देखो तो वह सामने, पड़ी राम की लाश।
राज कुमर रानी सभी, रोते हैं तज आश ॥

शेर—आज सचमुच नाथ स्वामी, राम परभव चल दिये।
सब की आशाओं के अंकुरे विधि ने मल दिये ॥
क्या क्या हैं हैं मर गये. आज राम भगवान।
'जी हां' का प्रत्युत्तर पा, तजे लखन ने प्राण ॥

पत्थर की मूर्ति के मानिंद, सिंहासन पर थे पड़े हुवे।
और स्वर्ण हीरो के आलम्बन, पिछलों पर थे सिर धरे हुवे ॥

थे नेत्र दोनों मिंचे हुए, और कर गोढ़ों पर तने रहे।
दो सिंहासन के अग्रभाग मे, पांव जमीं पर जमे रहे॥
आयु का खेल तमाम हुआ, और श्वासोच्वास खत्म सारे।
यह देख हाल देवों के भी, मन मे हुये जख्म भारे॥
चौथी पृथ्वी पर जा पहुंच, उत्तर की दिशा धूम द्वारे।
कोई जैस प्राणी कर्म करे, वैसे सम्बन्ध मिलते सारे॥

दोहा—देख लखन की मृत्यु को, लगे देव पछतान।
जैसे हृदय मे लगे, जहर बुझे शत बाण॥
आज हमारे से हुवा, कैसा अनर्थ घोर।
अब होने वाला यहा, हाय हाय का शोर॥

यहां परीक्षा कारण हमने, महा पाप कर डारा है।
अब देख हाल उस का क्या, होगा जिसका भाई प्यारा है॥
निश्चय इन जैसा दुनियां मे, प्रेम नजर नहीं आया है।
जो इन्द्र ने बतलाया था, उस से भी प्रेम सवाया है॥

दोहा—सुरपुर को सुर चल दिये, होकर के लाचार।
पुरी अयोध्या मे लगा, होने हाहा कार॥

माताएं क्या सभी रानिया, ऊंचे स्वर मे रोने लगीं।
अधिकारी जन क्या सारी प्रजा, आंसुओं से मुंह धोने लगीं॥
रुदन भयकर सुनते ही, श्री रामचन्द्रजी आये हैं।
और कुछ तेजी में आकर के, मुख मे यों वचन सुनाये हैं॥

दोहा—क्यो तुम सब पागल हुवे, अपशकुन किया अपार।
जीता है भाई मेरा, मूर्च्छा है दु:ख्कार।

राजवैद्य क्या अन्य कई, श्रीराम ने तुरत बुलाये हैं।
और सिंहासन से शय्या पर, निज कर से लखन सुलाये हैं॥

कभी बुला कर ज्योतिषियों से, काल चक्र लगवाते हैं।
कभी सयानों को बुलवा कर, मन्त्र यन्त्र करवाते हैं॥
'मर गया' यदि कोई कहे शब्द, उस पर भुंझला कर पड़ते हैं।
मोह नशा देख श्री राम का, यहां सारे के सारे डरते हैं॥
हो गया असाध्य रोग कह करके, सभी ने जान बचाई है।
श्री रामचन्द्रजी उसी समय, झट गिरे मूर्छा आई है॥

दोहा—शीतलता कर राम को, दिया तुरत बैठाय।
हो सचेत फिर लखन को, बोले गले लगाय॥
क्यों भाई कुछ तो कहो, अपने दिल का हाल।
कौन रोग ने कर दिया, तेरा हाल निढाल॥

क्या तू मुझ से रूस गया, या कोई गुप्त बीमारी है।
या कोई चोट तेरे हृदय पर, लगी आन कर भारी है॥
जो कुछ हालत आज तुम्हे, लंका में यही बिमारी थी।
अमोघ विजय दशकधर ने, शक्ति हृदय मे मारी थी॥
अब भी तुम पर क्या कोई, शत्रु ने मन्त्र चलाया है।
क्या उसने आज तुम्हारे को, ऐसा लाचार बनाया है।

दोहा—लक्ष्मणजी का विरह रहा, सब का हृदय बिदार।
रामचन्द्रजी भी लगे, करने और विचार॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजी और, विभीषण वीर।
रामचन्द्र को इस तरह, लगे बंधाने धीर॥

दोहा—भगवन् इस तन में नहीं, जीव लखन का सार।
स्वामी जल्दी से करो, अब इसका सस्कार॥

सयोग लखन का इस भव का, जितना था उतना खतम हुआ।
इनके वियोग का हे स्वामी, सब के दिल भारी जखम हुआ॥

बांध धीर को धीरवान, औरों को धीर बन्धाओ तुम।
इस मृतक तन का यथा योग्य, अग्नि संस्कार कराओ तुम॥

दोहा—लगे राम को यह वचन, हृदय तीर समान।
उत्तर यों देने लगे, कुछ तेजी से आन॥

दोहा—बस बस बस बोलो जरा, अपनी जबान सम्भाल।
मूर्च्छा में लक्ष्मण पड़ा, वीर सुमित्रा लाल।

मर गये तुम्हारे कोई होंगे, जल्दी से उन्हें जलाओ तुम।
बस यहां बैठने का काम नहीं, अब बाहिर चले सब जाओ तुम॥
अपशब्द बोलते क्या तुम को, बिल्कुल ही शर्म नहीं आती।
और बदले में सुख देने के, सब जला रहे मेरी छाती॥

दोहा—रामचन्द्र जी हो रहे मोह, मे अति गलतान।
लवणांकुश कहने लगे, रामचन्द्र को आन॥
चचा साहिब की मौत का, सारे मचा कोल्हाल।
अवधपुरी का हो रहा, पिता हाल बेहाल॥

गाना—दरो दीवार से आती पिता, आवाज मातम की।
मौत आगे चले तद्बीर क्या, किसी वैद्य हाकिम की॥१॥

ठिकाना एक न इस जीव का, मानिन्द बिजली के।
कभी यहां पर कभी वहां पर, कहीं पर जा कभी चमकी॥२॥

छोड़ तन सुर असुर नर क्या, श्री अरिहन्त जाते हैं।
सिवा मिट्टी में मिलने के नहीं तजवीज इस तन की॥३॥

अनन्त यहां हो चुके त्रिखंडी, क्या छ खंड के मालिक।
निशां उनका यदि है तो सिर्फ, एक घास है वन की॥४॥

जीव से रहित तन मिट्टी, लिये क्यों आप बैठे हैं।
करो मृतक सभी क्रिया, चिता बनवा के चन्दन की॥५॥

दोहा—बस खबरदार इस अक्ल को, रक्खा अपने पास ।
मुझे नहीं मंजूर यह, महा बुरी दरखास ॥

गाना—

किसी ने आज क्या तुम को, नशा कोई चढाया है ।
इस कदर बोलने का, हौसला जिसने बढाया है ॥१॥
किसी को देख तकलीफ़ों मे, जो हासी उड़ाते है ।
वही पड़ करके सड़ते हैं, यह हमने आजमाया है ॥२॥
मौत का शब्द दुःखदाई, सदा हर एक प्राणी को ।
तीर सीने मेरे वोही आज, तुमने लगाया है ॥३॥
यदि तुम राज्य की खातिर, बुरा चाहते हा लक्ष्मण का ।
सभालो सब हुकूमत क्या, खजाने रत्न माया है ॥४॥
एक ही जन्म मे सब कुछ, मिले हर बार प्राणी का ।
सहोदरका "शुकल" मिलना, असभव ही बताया है ॥५॥

दोहा—पिता क्षमा कर दीजिये, यदि कुछ समझे और ।
एक हमारी विनती, पर कुछ कीजिये गौर ॥

अब आज्ञा हम को दे दीजे, दुनिया से चित्त उदास हुआ ।
तप संयम ध्यान लगाएंगे, वस यही इरादा खास हुआ ॥
इसी तरह से पिता एक दिन, काल हमारा आना है ।
और यहीसमययदि निकलगया, तो फिर पीछे पछताना है ॥

दोहा आज्ञा लेते समय भी, ताना रहे लगाय ।
उसी तरह का शब्द कह, मुझ को रहे जलाय ॥

जिस जिसको दीक्षा लेनी है, उन सब को आज्ञा मेरी है ।
इन्कार नहीं मुझ को कोई, लेने वालों की देरी है ॥
किन्तु भाई को छोड़ नहीं, दीक्षा दिलवाने जाऊगा ।
मैं विना वीर को खुशी किये, कुछ भी नहीं करने पाऊगा ॥

दोहा—प्रणाम कर के पिता को, लवणांकुश सुकुमार।
मोह जाल सब तोड़ कर, दोनों हुवे तय्यार॥

चौपाई—अमृत घोष मुनि पास सिधाये, लवणांकुशने शीश निमाये।
मुनि ने कर्म भेद बतलाये, सुन कर रोम राम उठ आये॥
सयम ले तप जप किया भारा, अष्ट कम दल को संहारा।
आप तरे औरों को तारा, सच्चिदानन्द सिद्ध पद धारा॥

दोहा—रामचन्द्र माह मे हुवे, फिरें अति गलतान।
कभी मनाते है कभी, करवाते स्नान॥
मौत अनुज की अन्य जन, सुन पाए नृप राग।
घी के दीपक बल गये, अरिजन के घर साय॥

इन्द्रजीत और सुन्द आदि के, सुत बलवान कहाते थे।
क्योंकि शत्रुता पुरानो थी, दिल मे सो लेना चाहते थे॥
और थे आज्ञा मे इनकी, शक्ति आगे शीश झुकाते थे।
जा चाहते थे दिल से करना, वह मौका कभी न पाते थे॥

कारणवश थे विभीषण, रामचन्द्र के पास।
पीछे से इन सभी ने, अवसर किया तलाश॥

बांध गोल अपना भारी, सब अवधपुरी पर आते हैं।
विमान गगन में घूम रहे, मानिन्द घटा के छाते हैं॥
विकट गड़ियें रथ संग्रामी, दारू गोलों का पार नहीं।
और बख्तर तन पर धारे जिन पर, शस्त्र करता वार नहीं॥

दोहा—उसी समय श्री राम ने, धनुष लिया कर धार।
जगी बिगुल बजा दिया, हुए शूर तैयार॥

सुग्रीव विभीषण आदि योद्धे, उसी समय चढ़ आते हैं।
प्रबन्ध सभी करके जल्दी, अपने विमान सजाते हैं॥

शत्रुघ्न वीर आदि का पहरा, लक्ष्मणजी पर भारी है।
और पुण्यवान का पुण्य, सहायक बने सदा हितकारी है॥

दोहा—देव जटायु का कंपा, सिंहासन तत्काल।
अवधि ज्ञान से अवध का, देखा सारा हाल॥

प्रत्युपकार करने की खातिर, उसी समय चल आये हैं।
विस्तार वैक्रिय फौज सुन्द, आदि सब मार भगाये हैं॥
इधर विभीषण आदि, योद्धाओं ने अरि दबाये हैं।
सन्धि का दिया निशान तुरत, क्योंकि शत्रु घबराये हैं॥
शर्म सार हो गये अति, दुनिया से चित्त उदास किया।
फिर सुन्दादिक ने संयम व्रत, मुनि अतिवेग के पास लिया॥

दोहा—मोह के वश श्रीराम ने, धरा भ्रात सिर हाथ।
लक्ष्मणजी को इस तरह, कहन लगे नरनाथ॥

तुम भाई मूर्च्छित हुवे, दे गये पुत्र जबाव।
शत्रु भी आकर लगे, करने बात खराब॥

राम-जटायु ने लखा, मोह में जब गलतान।
उदाहरण कर इस तरह, लगा आन समझान॥

कमल शिला पर रोप कर, सींचा सूखा वृक्ष।
बीज अकाले कल्लर मे, बीज रहा प्रत्यक्ष॥

वालू पील पील घानी मे, ऊपर पानी छिड़क रहा।
कभी जल मे डाल मधानी को, दोनों हाथोंसे रिड़क रहा॥
श्री रामचन्द्र का मूर्खता पर, ध्यान जिस समय आया है।
तब समझाने का रघुनन्दन ने, मुख से वचन सुनाया है॥

दोहा—स्याना होकर कर रहा, बच्चों वाला खेल।
निकला न निकलेगा कभी, वालू मे से तेल॥

कमल शिला पर खिले, नहीं, न सुखा वृक्ष हरा होवे।
कल्लर मे खेती बढ़े नहीं, चाहे नित्य नीर भरा होवे॥
जैसे पत्थर की मूरत से, अन्त मे फल कुछ नहीं पाता है।
यूँ खाली नीर बिलोने से, भाई मक्खन नहीं आता है॥

दोहा—यदि मेरे पुरुषार्थ यह, सब ही निष्फल जांय।
तो फिर मृतक लखन भी, जीने के कभी नांय॥

दोहा—अक्ल बोलने की तुझे, पापी बिल्कुल नांय।
कैसा खोटा शब्द तू, मुझ को रहा सुनाय॥

चल हट परे यहां से नहीं, तुझको परभव पहुँचा दूंगा।
उलट पुल्ट बाते करना यह, सारी अभी भुला दूंगा॥
सच कहा मूर्ख के समझाने मं, ज्ञान गाठ का खोना है।
विखिन्न चित्त वाले को जो, भी कुछ कहना सब रोना है॥

दोहा—देव जटायु के हुवे. निष्फल सभी उपाय।
कृन्तातदेव फिर इस तरह. आया रूप बनाय॥

एक मृतक स्त्री को लेकर, राम के सम्मुख आया है।
दो चार बात कुछ कह करके, उसको एक चीर उढाया है॥
देख हाल रघुकुल दिनेश, श्रीराम जरा मुस्काये हैं।
अनभिज्ञ मनुष्य कोई समझ, राम ने ऐसे वचन सुनाये हैं॥

दोहा राम—अय भाई यह मर चुकी. किसे रहा समझाय।
संस्कार इसका करो, अब जीने की नाय॥

दोहा कृ०—वचन अमगल मत कहो, मुख से हे सरकार।
दिल से कभी न उतरती, जीवित है मम नार॥

दोहा राम—प्यारे से प्यारा कभी, मरा न आवे कोय।
भूत भविष्यत् हाल क्या. देखो चहुदिशी जोय॥

दोहा क्र०—परोपदेश को चलत है, सबके हाथ जबान ।
निज कर्त्तव्यों पर नहीं, करते कुछ भी ध्यान ॥

जीता हुआ लखन को कहते, मृतक इसे बनाते हैं ।
तुम महापुरुष हो करके भी, यह क्या मुझसे बतलाते हैं ॥
पहिले अपने को देख भाल, फिर औरों को कहना चाहिये ।
यदि नहीं तो सबको मस्त भाव से, हे स्वामिन् रहना चाहिये ।

दोहा—श्री रामचन्द्र ने जब दिया, इन बातों पर ध्यान ।
लक्ष्मण जी के मरण का, हुआ यथार्थ-ज्ञान ॥

गाना

क्या आशा है जीवन की अब पत्ता पता वैरी हुआ अपना ।
मोड़ गये मुख वनपक्षी भी, हवा पलट गई एक दम ऐसी ॥
घटा गम की उठी घनघोर ॥१॥
भाग्य चन्द्र राहु ने ग्रस लीना कठिन कष्ट कर्मों ने दीना ।
यह कैसा काल कठोर ॥२॥

दोहा—राग सभी संसार का, होता क्षण भंगूर ।
बिन त्यागे इसको कभी, मिले न सुख भरपूर ॥
त्रिषष्ठिशलाका पुरुषों के, तन मे यह गुण बतलाया है ।
षट् मास तलक न बिगड सके, आकृति और शुभ काया है ॥
उसी समय दोनों देवों ने, चरणन शीश निवाया है ।
और अवध पुरी मे आने का अपना सब भेद बताया है ॥

दोहा—संस्कार मृतक सभी, किया राम लाचार ॥
मोह कर्म चांडाल के, दई धूल सिर डार ॥
दुनिया की अब राम को, रही न कुछ दरकार ।
पास बुला शत्रुघ्न को, बोले वचन उचार ॥

दोहा राम--भरत वीर त्यागी बने, लक्ष्मण कर गये काल।
राज करो यह आप सब, सुनो हमारा हाल ॥

ससार से चित्त उदास हुआ, सयम व्रत लेना चाहता हू।
और अवधपुरी का ताज भ्रात, यह तुमको देना चाहता हूँ ॥
काम यहां का आप बिना, नहीं कोई सम्भालने वाला है।
और तुम से बढ़कर काल भाव, को कौन जानने वाला है ॥

दोहा शत्रुघ्न--आप को जो अच्छा लगे, वही मुझे मजूर।
जिससे घृणा है तुम्हे, मै भी उससे दूर ॥

यदि राज भार अच्छा है तो, फिर आप क्या तजना चाहते हो।
और बुरा आपने समझा तो, क्यों हमको आप फंसाते हो ॥
ना साथ गया यह राज लखन के, साथ न मेरे जायेगा।
है कौन मुझे रखने वाला, जब काल बुलावा आयेगा ॥

दो० शत्रुघ्न—साथ आपके भ्रात मै, धारु सयम भार।
देख लिया है छान कर, सब ससार असार ॥

दोहा—लवण कुमर का पुत्र था, अनगदेव गुणवान्।
धीर वीर गभीर वर, धर्मी अति पुण्यवान ॥

अगदेव को राजतिलक कर, ताज शीश पर धारा है।
जयकारों के सहित राज्य, अभिषेक किया अति भारा है ॥
निवृत्त होकर इन कामो से, दीक्षा के लिए तैयार हुए।
थे साथ राम के मित्र भ्रात, प्रेमी राजा कई लार हुए ॥

दोहा - शत्रुघ्न सुग्रीव जी, और विभीषण वीर।
राजे सब श्रीराम सग, चले विराध रणधीर ॥

पटरानी परिवार सब, समवसरण के मार ॥
खुशी खुशी पहुंचे सभी, हरे ज्ञेय मन लार ॥

चौपाई—मुनि सुव्रत के शासन मांही, मुनिवर अरहदास सुखदाई ॥
चरण कमल में पहुँचे जाई, नमस्कार कर विनती सुनाई ॥

दोहा—चार गति संसार में, घूमें काल अनन्त ।
दुःख का कर सकती नहीं, जिह्वा सब वृत्तन्त ॥

(गाना—राम का मुनियों से प्रार्थना रूप स्तुति)

आज दुखियों की तरफ, ध्यान तो लगा लेना ।
दुष्ट कर्मों से प्रभु, आज तो छुड़ा देना ॥१॥

कर्म व्याधि को मिटाने के लिये वैद्य हो तुम ।
करे जो रोग निवारण, वो ही दवा देना ॥२॥

गतागति चक्र मे अनादि, से घूमाते हैं कर्म ।
दयानिधि करके दया, आप ही बचा लेना ॥३॥

राग और द्वेष ने, भव भव में रुला के मारा ।
अंश इनका भी प्रभु, आज से मिटा देना ॥४॥

संसार समुद्र की, लहरों मे बहे जाते हैं ।
इनसे बचा करके प्रभु, मोक्ष में पहुँचा देना ॥५॥

जन्म मरण से अनन्त, जीव बचाये जिसने ।
"शुक्ल" के दिल मे वही ज्ञान तो बसा देना ॥६॥

दोहा (अर्हदास मुनि)

आप ही करता भोगता, कर्म शुभा शुभ जीव ।
कारण दोनों के लिये, होते अमर सदैव ॥

जो सहित वासना कर्म करे, शुभ दुनिया के सुख पाते हैं ।
और अशुभ कर्म से निर्विवाद, यह प्राणी कष्ट उठाते हैं ॥
निरिच्छा शुभ कर्मों से बस, सदा निर्जरा होती है ।
निर्मल संयम वृत्ति इस, आत्म के मल को धोती है ॥

चार महा व्रत ग्रहण करो, संयम सत्रह विधि धारो तुम ।
पांच सुमति और तीन गुप्ति, गोपन स्वभाव यह डारो तुम ॥
सब बारह भेद कहे तप के, इन से, कर्मों को मारो तुम ।
धर्म "शुक्ल" दो ध्यान धरो, पहिले दो अशुभ निवारो तुम ॥
चार गुण सम दृष्टि के दश विध, यति धर्म को पालो तुम ।
द्रव्य क्षेत्र और काल भाव, समयानुसार सम्भालो तुम ।,
नव वाड़ सहित ब्रह्मचर्य व्रत, हृदय में उसे जमालो तुम ।
कपट क्रोध मद लाभ त्याग, पुद्गल से प्रेम हटालो तुम ॥
राग द्वेष दो कर्म बीज, भव भव दुःखदाई होते हैं ।
जो फसे इन्हों के फंदे मे, फिरते संसार में रोते है ॥

दोहा—मुनिराज के सुन वचन, चढा मजीठी रंग ।
ईशान कोण की तरफ कुछ, चढ़े सभी एक संग ॥

वस्त्र और आभूषण जो थे, तन पर सभी उतार दिये ॥
फिर केश पंच मुष्टि लुंचन, कर सिर के सारे डार दिये ॥
चादर पहिन चोलपट्टा, मुख पत्ति मुख पर धार लई ।
बाये कर झोली शोभ रही, दहिनी बाह तले पसार दई ॥

दोहा—रजो हरण बायीं बगल, सबने लिये दबाय ।
मस्तक ला कर जोड़ सब, बोले सन्मुख आय ॥

गाना—देख लिया संसार निराला ॥ टेक ॥

अंधकार में हाथ फैलाया, कहीं का कहीं अपने को पाया ।
प्रवचन मात की बैठ गोद मे, देखा रूप महा विकराला ॥टेक ॥१॥

मृग तृष्णा के मानिंद भटका, कहीं था वैभव कहीं था [illegible] ।
अज्ञान गया हुआ ज्ञान पसारा, निज मार्तण्ड किया उजियाला ॥२॥
विधि साध्य साधन को पाई, इष्ट आराधन युक्ति [illegible] ॥
झूठा माया जाल फुव्वारा, जाल नहा [illegible] [illegible] ॥टेक॥३॥

दोहा – दीक्षा देने की घड़ी, लगी जिस समय खास।
अर्हदास गणधर श्री, बोले ऐसे भाष्यं ॥

सब के सब सावद्य कारी, योगों का त्याग कराया है।
फिर मुनिराज ने विधि सहित, दीक्षा का पाठ पढ़ाया है ॥
चार महा व्रत धार सभी, साधु निर्ग्रन्थ कहाने लगे।
सब शक्ति के अनुसार नित्य तप संयम ध्यान लगाने लगे ॥

दोहा—साठ वर्ष गुरु चरण मे, रहे राम पुण्यवान् ।
चौदह पूर्व का पढ़ा, गुरु कृपा से ज्ञान ॥

षष्टम अष्टम आदि तप, श्रीराम ने किया अति भारी ।
थे विनय वान सब गुण पूर्ण, गुरु वचनों के आज्ञाकारी ॥
फिर दई अकेले विचरण की, आज्ञा गुरु ने परीक्षा करके।
पीठ ठोक हित शिक्षा दी, मस्तक पर अपना कर धरके ॥

दोहा—देश प्रान्त और नगर में, लगे विचरने राम।
बिना एक शुभ ध्यान के, और नहीं कुछ काम ॥

एक दिवस फिर लगा लिया, दृढ़ आसन कर ध्यान।
चौदह राजु लोक का, पाया अवधि ज्ञान ॥

अब जो कुछ है संसार में, सब नजर सामने आने लगा।
फिर अपने पूर्व जन्मों का उपयोग, राम मुनि लाने लगा ॥
धनदत्त और वसुदत्त का, भव नजर सामने आया है।
उस समय राम ने मन ही मन में, ऐसा ख्याल जमाया है ॥

दोहा राम–जिस भव में मै धनदत्त था, लक्ष्मण था वसुदत्त।
मेरे कारण था मरा, अटल कर्म की गत ॥
अब भी यहां आकर हुआ, भाई लक्ष्मण लाल।
चौथी पृथ्वी पर हुआ, पैदा करके काल ॥

कुमार अवस्था सौ वर्ष, मण्डलीक शत तीस ।
वर्ष लगे सब दिग विजय, करने में चालीस ॥

वासुदेव पदवी में बाकी, सारी उमर विताई है ।
और द्वादश सहस्र वर्ष सब, आयु धर्मदेव बतलाई है ॥
सर्वज्ञदेव ने, इसीलिए, संसार अनित्य बतलाया है ।
जिसने इसको त्याग दिया, अपवर्ग उन्होंने पाया है ॥

दोहा राम—अवृत्त मे कर्म कर, पहुंचा अजन द्वार ।
सम दम क्षम चित्त कर्म पर, चले न कोई वार ॥

ना टले कर्म ना टलते हैं यह, सोच ध्यान को मोड़ लिया ॥
फिर उसी तरह निज आत्म को, निज आत्म ने जोड़ लिया ।
चौदह भक्त पारणे कारण, मुनि नगर में आये हैं ।
स्पन्दनस्थल के नर नारी, सब दर्शन करने धाये हैं ॥

दोहा—सारे शहर में मच गया, भारी था एक शोर ।
उसी समय एक हो गई अद्भुत घटना और ॥

गजशाला से खुल गया, मस्त हुआ गजराज ।
यहाँ जनता भारी जमा, आ रहे यहां मुनिराज ॥

देख के हस्ती को घबराये नर नारी सब दौड़े हैं ।
और इस हलचल से चमक उठे, जो चनकन वाले घोड़े हैं ॥
जिसको जहाँ पर मिला रास्ता, भागे जान बचाने को ।
करुणा निधान श्रीराम मुनि, महाराज लगे पछताने को ॥

दोहा—देख दृश्य यह राम जी, वापिस गये पधार ।
अटवी में जा इस तरह करने लगे विचार ॥

प्रथम तो जनता को हुई, मेरे कारण त्रास ।
फिर जो मैं वापिस हुआ, सब ही हुए निराश ॥

बन मे ही यदि मिला आहार, तो बेशक भोजन पाऊँगा।
अब महा कष्ट पड़ने पर भी, मै बस्ती में नहीं जाऊँगा॥

निर्दोष जहाँ पर मिले मुझे, थोड़ा सो ही सुखदाई है।
जिसमें हो कष्ट किसी को कुछ, वह विष मुझको दुःखदाई है।
अनादि काल से प्रकृति को, नित्य प्रति खाता आया हू।
बस तब ही तो इस जन्म मरण से, छुटकारा नहीं पाया हूँ॥

किस कारण फिर निज पर को, मैं वृथा कष्ट देऊँ जा करके।
घनघातो कर्म खपावेगे, शुद्ध उत्तम-ध्यान लगा करके॥

दोहा—इसी तरह मुनि हो गये, शुद्ध विचार में लीन।
कर्म अरि भागन लगे, बन कर तेरह तीन॥
स्यन्दनस्थल का भूपति, अति नंदी शुभ नाम।
आकर पड़ाव वहा पर किया, जिस बन मे श्रीराम॥

अब लेने पारणा राम मुनीश्वर, इसी जगह पर आये हैं।
नृप खुशी हुआ देकर भोजन, फिर पांचों अङ्ग नवाये हैं॥
अहो सुपात्र दान महा-सुर, ऐसे शब्द सुनाने लगे।
गधोदक की वृष्टि कर के, तप सयम के गुण गाने लगे।

दोहा—मुनिराज ने फिर दिया, विविध धर्म उपदेश।
सर्व जनों संग सुन रहे, दत्त चित्त धर्म नरेश॥

सुन गृहस्त धर्म द्वादश प्रकार का, प्रतिनन्दी ने धारा है।
और सात कुव्यसन तजे सबने, महा मिथ्या भ्रम निवारा है
बस मुनिराज ने वापिस आकर, तप संयम में ध्यान दिया।
अतिनन्दी नृप ने भी वहां से, अगले दिन ही प्रस्थान किया॥

दोहा— भिन्न-भिन्न आसन किये, मुनि बहुत उपवास।
मास कभी दो मास और, कभी किये चौमास॥

दिन मे ताप रवि के सम्मुख, होकर के नित्य सहते है।
रात्रि में आसन लाकर के नित्य मेव ध्यान म रहते है ॥
अगुष्ठों के भार कभी, सयम मे ध्यान लगाते हैं।
और निज स्वभाव मे लीन हुए. कर्मों का अश मिटाते हैं ॥

दोहा—चौरासी आसन किये, इसी तरह ऋषिराज।
विचरत कोटि शिला पर, जा पहुँचे महाराज ॥

चौ०--निश्चल मन कर ध्यान लगाया, शुक्ल ध्यान शुभ चौथा पाया
अवसान कर्म चारों का आया, घातक जिनका नाम बताया ॥

दृढ़ ध्यान मे राम को, देखा है जिस वार।
उसी समय सीतेन्द्र ने, ऐसा किया विचार ॥

दोहा—श्री रामचन्द्र का हो गया, यदि निर्विघ्न ध्यान।
तो फिर लगती देर क्या, होने मे ब्रह्म ज्ञान ॥

कर्म काट फिर इसी जन्म से, सिद्ध अवस्था पावेंगे।
हम रहे यहां गोते खाते, वह मोक्ष धाम को जावेंगे ॥
बेहतर है श्री रामचन्द्र का, यह शुभ ध्यान चला लेऊं।
बस गिरा मोक्ष की श्रेणी से, अपना मैं नाथ बना लेऊँ ॥

दोह—उसी समय गये राम पे, सीतेन्द्र तत्काल।
वसन्त ऋतु सम कर दई, अद्भुत ऋतु कमाल ॥

गैंदा गुल दाड़िम गुलाव के हैं, फूल कहीं पर खिले हुवे।
और जूही वेल चमेली थे, अनुक्रम से सारे मिले हुवे ॥
थे निम्बू और नारंगी खिरनी, आम अनार का पार नहीं।
और इससे बढ़कर मृत्युलोक में, लगे और कहीं नार नहीं ॥
हैं चौदह लाख हरि की जाति, कहां तलक बतलावेंगे।
बस नन्दन वन से अधिक समझ, दे उदाहरण समझावेंगे ॥

दोहा—मलयाचल से आ रही, लेकर मरुत सुगन्ध।
कोयल शब्द सुना रही, भमरे करें आनन्द॥
सीता से बढ़कर किया, यौवन और शृंगार।
जो देखे उसके विना, समझे सभी असार॥

नल कुबेर कुमरी समान, सुन्दर स्वरूप बनाया है।
मानिंद मोर की गर्दन के नेत्रों, में सुरमा पाया है॥
और उदाहरण न मिले कहीं, ऐसे सब वस्त्र पहिने हैं।
इसी तरह से यथा योग्य, तन पर धारे सब गहने हैं॥

दोहा—मृत्यु लोक में न हुआ, न होगा ऐसा रूप।
सउ सुर धारण किया, सुन्दर रूप अनूप॥

जैसा साज बाज के सहित आन के, राम सामने खड़ी हुई।
था हार गले में हीरों का, चौंपें दांतों पर किली हुई॥
अग्रभाग में कानों के, नागिन की पट्टिये झुकी हुई।
सब रंग बिरंगी पंक्ति जवाहर, की साड़ी पर अड़ी हुई॥
थे छहुं राग छत्तीस रागनी, जसे कोयल कूक रही।
सब नाच रंग स्वर ताल गायन में, जरा मात्र न चूक रही॥

दोहा—उनंचास प्रकार के, बजे वादित्र सार।
नाटक तन मन किये, सब बत्तीस प्रकार॥
असली रंग पर चढ़ नहीं सकता नकली रंग।
राम चले नहीं ध्यान से, सीतेन्द्र हुआ दंग॥
रंग-रंग कहते जिन्हें, अन्तिम बने कुरंग।
ज्ञान श्री सर्वज्ञ का, असली एक सुरंग॥

यह रंग जिन्हों पर चढ़ा हुआ ना और उन्हों पर चढ़ता है।
वह अन्त मे सब होते फीके इसका नित्य गौरव बढ़ता है॥

वीतराग का ज्ञान रङ्ग चढ, गया सो ऋषि कहाते है।
बाकी दुनिया मे पेटु सब क्या, क्या नही ढौंग रचाते है॥

भेष भूप का धरे कई पर, भूप नहीं बन सकते है।
नारी का रूप अनेक धरे एक, पुत्र नहीं जन सकते है।
असली के सम्मुख आखिर मे, नकली का गौरव गिरता है।
सूर्य प्रकाशी कमल जिस तरह, रवि विना नहीं खिलता है॥

शुद्ध असली रङ्ग हजारों वारी, धोने से नहीं जाता है।
और किसी तरह भी उसके ऊपर, धव्बा दाग न आता है॥

जिन पर न असली रङ्ग चढ़ा, विपयो से वह भी हार गये।
रुल गये अनन्ते चक्कर मे, शुभ करनी खाक मे डार गये॥

स्वर्ण को जितना सेक लगे, उतना ही निर्मल पाता है।
और चोट हजारों लगने पर, बहुमूल्यवान बन जाता है॥

दोहा—राग द्वेष को राम ने, बिल्कुल दिया मिटाय।
काम वासना सब तरह धूल में दई मिलाय॥

वीतराग हुवे श्री राम, अब कौन हिलाने वाला है।
वज्र हीरे की हस्ती को, घन कौन मिटाने वाला है॥
जब सीतेन्द्र का नाच रग गायन, सब कुछ बेकार हुआ।
फिर मिष्ट वचन से सीता ने, हो कर के यो लाचार कहा॥

दोहा—पिछली जो गलती मेरी, क्षमा कीजिये नाथ।
फेर नहीं ऐसा करूं, रहूँ आप के साथ॥

उस समय आपकी आज्ञा न, मानी अज्ञान मे भूल गई।
शोभन सब उत्तम भोग तजे. क्या मेरी [illegible] भूल गई॥
अब के तुम मुझको अपनालो. फिर कभी न [illegible] जाऊंगी।
खुश करदो मन मेरा स्वामी. किंकर बन [illegible] [illegible]।

दोहा—दल बल भुज बल कुटुम्ब, बल क्यों छोड़े भरतार।
वर भोगों को त्याग कर, उठा लिया सिर भार॥
एक दूसरे से बढ़कर, संसार के सुख बतलाती है।
सब चटकमटक कर बात विषय की,काम जगाना चाहती है॥
पत्थर की मूर्त से भी क्या, कुछ कभी किसी ने पाया है।
इसी तरह सीतेन्द्र ने भी, अपना समय गवाया है॥

राम केवली

दोहा—निश्चय जब मुनिराज का, पूर्ण उतरा ध्यान।
कर्म चहुं घातक हने, प्रगटा केवल ज्ञान॥
था पूर्व दिशा से निकल रहा, भानु तमनाश करण हारा।
प्रारम्भ ध्यान मे रामचन्द्र ने, था पद्मासन को धारा॥
माघ सुदि शुभ द्वादशी के दिन, केवल प्रगटा आकर के।
तब उत्सव किया महा भारी, वहां सुर असुरों ने चाह करके॥

दोहा—सीतेन्द्र चरणों में गिरा, पांचों अंग निमाय।
प्रश्न इस तरह से किया, सब अपराध क्षमाय॥
किया आपने हे प्रभु! जन्म मरण का अन्त।
कितने भव मेरे सभी, कथन करो वृत्तान्त॥
शंबुक रावण लक्ष्मण का भी, हाल पूछना चाहते हैं।
राग द्वेष मे फॅसे जीव, कर कर्मबन्ध दुःख पाते है॥
वीतराग बिन कौन सभी, संशयों को मेटन हारा है।
सर्वज्ञ विना इस लोकालोक का, कोई न देखन हारा है॥

दोहा—जीव अनादि काल से, कर रहा उल्टा खेल।
राग द्वेष है जब तलक, छुटे न तब तक मैल॥
कोई निज के लिये कर्म करता, कोई अन्य की खातिर मरता है।
और मिश्रित कार्य करे कोई, संसार मे विपदा भरता है।

सत्य शील संतोष क्षमा, शुभ कर्मों से नित्य डरता
फिर क्रोध मान के वशीभूत हो, नीच गति जा पड़ता

दोहा—शम्बुक रावण लखन जी, करके द्वेष महान् ।
बल इन्द्र के जा बने, तीनों ही महमान ॥

चौथी पृथ्वी पर तीनों का, युद्ध परस्पर होता
और वैसा ही फल मिले, जिस तरह बीज आत्मा बोता
श्री लक्ष्मण रावण निकल वहां, से मर्त्यलोक में आवेंगे
यहां 'विजय पुरी' नगरी में दोनों, मनुष्य जन्म को पावेंगे

दोहा—विजयपुरी में 'सुनन्द' के, 'रोहिणी' नामा नार ।
जन्मेंगे यहां आन के, दोनों सुत सुखकार ॥

नाम 'सुदर्शन' लक्ष्मण का, रावण 'जिनदास' कहावेंगे
शुद्ध देशव्रत को पाल स्वर्ग, पहिले में दोनों जावेंगे
'विजया' नगरी में फिर दोनों, सुरपुर से चल कर आवेंगे
फिर 'हरिवास क्षेत्र' में जाकर, जन्म युगल शुभ पावेंगे

दोहा—युगल जन्म के भोग सुख, लेंगे सुरपुर जाय ।
आगे का वृत्तान्त भी, सुनलो कान लगाय ॥
'विजयापुर' का भूपति 'कुमार वर्ति' गुणखान ।
पटरानी 'लक्ष्मीवती' चौसठ कला निधान ॥

'जयप्रभ' और 'जय कान्त बनेंगे, लक्ष्मी के सुत आकर
वह संयम व्रत कर स्वर्ग छठा, लेंगे फिर दोनों जाकर
इस अवसर में स्वर्ग छोड़, तुम भरत क्षेत्र में आओगे
और 'सर्वरत्नमति चक्रवर्ति,' ऐसा शुभ नाम कहाओगे

दोहा—सुरपुर तज तेरा बने. रावण राज कुमार ।
'इन्द्रायुध' शुभ नाम से, होगा यश विस्तार ॥

लखन पुत्र बन 'मेघरथ', नाम लहे सुखकार।
प्रति पालक दुखी जनों, का धर्मी रूप अपार॥
चक्री तुम संयम लेकर के, वैजयंत स्वर्ग में जावोगे।
वहां एक तीस सागर आयुष्य का, अतुल स्वर्ग सुख पावोगे॥
उसी जन्म में इन्द्रायुध, तीर्थंकर गोत्र बांधेगा।
ज्ञान समाधि धार सभी, कर्मों पे तरकश साधेगा॥

दोहा—अगले भव मे आन फिर, जिन पद लेगा धार।
भव्य जीव होंगे कई, वाणी सुन भव पार॥

उसी समय वैजयंत छोड, तुम गणधर पदवी लेवोगे।
संसार तरोगे आप और, उपदेश तरण का देवोगे॥
घनघाती सब कर्म काट, केवल प्रकटेगा आकर के।
अंत मोक्ष पद पावोगे, सैलेशी भाव बना करके॥

दोहा—संयम लेकर मेघरथ, पहुंचे स्वर्ग मंझार।
आगे इसका भी सुनो, करके जरा विचार॥
पुष्कर नामक द्वीप है, पूर्व विदेह के मांय।
पदवी चक्री की लहे, मेघरथ वहां पर जाय॥

तीर्थंकर पद भोग उसी, भव में निर्वाण सिधारेंगे।
कर्म अरिदल का बिल्कुल ही, सर्वनाश कर डारेंगे॥
उसी दिवस से लक्ष्मणजी, सादि अनन्त कहलावेंगे।
शुभ अष्ट महागुण वाली पदवी, सिद्ध अवस्था पावेंगे॥

दोहा—सीतेन्द्र को सुन हुआ, सभी पदार्थ ज्ञान।
नमस्कार कर चल दिये, तीनों को समझान॥

जा देखा चौथी पृथ्वी पर, तो खूब परस्पर लड़ते हैं।
शंबुक रावण 'क्रोधातुर हो,' लक्ष्मण उपर जा पड़ते हैं॥

रूप वैक्रिय धार धार, आक्रमण परस्पर करते है।
'शुक्ल' कर्मना छूट सके सब, करनी के फल भरते हैं ॥

दोहा—जिह्वा कर सकती नहीं, सभी दु:खो का वयान।
देख हाल सुर यों लगा, तीनों को समझान ॥

दोहा—पिछले कर्मों से मिला, तुम्हे बुरा स्थान।
इस से आगे किस जगह, करना है प्रस्थान ॥

जन्मान्तर से तुम दोनों, आपस मे लड़ते आये हो।
अब तीन खण्ड का छोड ऐश्वर्य, वास यहा पर पाये हो ॥
द्वेष ईर्षा मे न कोई, हुआ, सुखी न होवेगा।
नर्क निगोदों में फिर फिर, यह जीव हमेशा रोवेगा ॥

गाना

कभी मिलता नहीं आराम, जीवों को लड़ाई में।
सदा रहता है आनन्द-प्रेम और दिल की सफाई मे ॥
द्वेष छल ईर्ष्या निन्दा, इन्हीं को नीच करते हैं।
जो उत्तम हैं वह रहते हैं, क्षमा और शीलताई मे ॥२॥
अनादि काल से यह जीव, लडते भिडते आये हैं।
इसी कारण तो फिरते है नर्क तिर्यंच-काई मे ॥३॥
क्रोध और मान मे आकर, अमोलक रत्न तन खोया।
यहां पर भी परस्पर लड रहे अज्ञानताई मे ॥४॥
पतित जीवों का दु:ख हरती, सदा सर्वज्ञ की शिक्षा।
तुम्हे कल्याण कारी, 'शुक्ल आकर के सुनाई मैं ॥५॥

दोहा—कथन राम सर्वज्ञ का, समझाया जिन यार।
शम्बुक रावण लखन ने, सुन्या किया विचार ॥

नियम अनादि अटल नहीं, टल सकता सारे भूमि फर्षों का।
अति महा बुरा है कारागार, यह घोर असख्यों वर्षों का॥
सीतेन्द्र के कहने से कुछ, इतना हुआ सुखाला है।
आपस में लड़ने भिड़ने का, सब ऊपर का दु ख टाला है॥
चौ०—दश विध क्षेत्र वेदना भारी, भुगत रहे कर्मन अनुसारी।
राग द्वेष ने करी ख्वारी, सीतेन्द्र ने गिरा उचारी॥

देख तुम्हारा कष्ट यह, मुझ को कष्ट अपार।
किन्तु अनादि नियम के, आगे हूँ लाचार॥

तुम सब को यहां से लेजा कर, पहुंचा दूं स्वर्ग ठिकाने में।
न हुआ न है न होगा। ऐसा, आगे किसी जमाने में॥
भ्रम मिटाने के लिये अभी, यह लो कर के दिखलाता हूँ।
अब स्वर्ग पुरी में ले जाने को, निज कर पर बिठलाता हूँ॥

दोहा—ऐसा कह सीतेन्द्र ने, तीनों लिये उठाय।
पारे की मानिन्द पड़े, ढलक तले को जाय॥

पुरुषार्थ किया उठाने को, फिर उसी जगह पर पाये हैं।
और उल्टी अधिक वेदना, होने से तीनों घबराये हैं॥
अशुभ कर्म के भोगे बिन, न हुआ कभी छुटकारा है।
लाचार फेर उन दुःखितों ने, तज आशा वचन उचारा है॥

शेर—रावण आदि

दिल तो समझता था विपत्ति, आज सारी जायेगी।
क्या खबर थी ऐसा करने से, अधिकतर आयेगी॥

दोहा—जो करता सो भोगता कर्म शुभा शुभ बन्ध।
टाल कोई सकता नहीं भाष गये भगवन्त॥

आप के करुणा करने मे, बिल्कुल न कोई कसर रही।
कर्मों का कर्जा दिये बिना छुट सकता सुर या बशर नहीं॥
फिर यह तो चौथी पृथ्वी है, चल सकती कोई अपील नहीं।
प्रपंच झूठ को चला सके, ऐसा कोई यहां वकील नहीं॥

दोहा—तुमने हम पर कर दिया, अद्भुत करुणा दान।
हमने देना है सभी, कर्मों का भुगतान॥

बस कारण हमारे तुमने भी, अपना सब सुख भुलाया है।
और भूत भविष्यत् के जन्मो का, आकर हाल सुनाया है॥
सुर पुर को प्रस्थान करो, अब विनती यही हमारी है।
ऊपर का दुःख हटाया कुछ, यह भी सब कृपा तुम्हारी है॥

दोहा—देवकुरू में फिर गये, सीतेन्द्र तत्काल
भामंडल के जीव को, बतलाया सब हाल॥
रावण शम्पूक लखन यह, तीनो बल के द्वार।
सीता सुख मे लीन है, अच्युत स्वर्ग मझार॥

श्रीराम ऋषि केवल ज्ञानी ने, दुनिया मे प्रचार किया।
संसार समुद्र से बेड़ा कर, भव्य जनो का पार किया॥
पच्चीस वर्ष तक केवल की, पर्याय जिन्होंने पाली थी।
चाली गती हस निराली सम, और छवि अति मतवाली थी॥

दोहा—पन्द्रह सहस्र वर्ष की, सब आयु का जोड़।
तप जप संयम से दिये, कर्म अनादि तोड़॥

स्थिर कर सब योग अयोगी बने फिर मोक्ष नगर जा वास किया॥
ना बाण काल का पहुंच सके, वह शुद्ध ठिकाना वास किया॥
रोग शोक का नाम नहीं, ना मृत्यु जन्म यहां पर है।
जैसा है परमानन्द वहां ऐसा, न कहीं जग पर है॥

दोहा—राम ऋषिवर हो गये, सादी और अनन्त।
काट मैल निर्मल बने, पूर्ण सच्चिदानन्द ॥

नमो नमो श्री राम ऋषिवर, अजर अमर पद पाया है।
अरिहन्त देव की शिक्षा ने ही, सच्चिदानन्द बनाया है ॥
जिनवाणी सुखदानी को, जो हृदय "शुक्ल" जमावेगा।
तो समझ लेवो सच्चिदानन्द, बन वही परम पद पावेगा ॥

गाना शिक्षा

शिक्षा दे रही जी हमको, रामायण सुखदाई ॥टेक॥

सीता सती ने पति धर्म पर, अपनी जान लगाई।
बनवास में गई पति संग, राज्य मोह छीटकाई ॥१॥

लालच और तलवार के डर से, जरा नहीं घबराई।
इसीलिये श्री रामन्द्र के, प्रथम दर्जे आई ॥२॥

रामचन्द्र ने पितु की आज्ञा, अपने शीश उठाई।
राज्य तिलक को छोड़ दिया, प्रतिज्ञा खूब निभाई ॥३॥

राम लखन का प्रेम था कैसा, दूध नीर सम भाई।
गये साथ मे रामचन्द्र के, सेवा खूब बजाई ॥४॥

सुग्रीव भूप की मित्रता ने सर्वस्व दिया लगाई।
पक्ष भूप रावण का छोड़ा, हुवा राम अनुयायी ॥५॥

स्वामी भक्ति मे हनुमत पूरा, न्याय नीति मन लाई।
विपत्त समय मे रामचन्द्र की, कीनी खूब सहाई ॥६॥

विभीषण की निष्पक्षता प्रसिद्ध जगत् मे भाई।
अन्यायी बधु को तज के, न्याय नीति चित्त लाई ॥७॥

बुद्धिमती मंदोदरी रानी, समझाया अधिकाई।
नरम गर्म कह वचन पति को, जरा नहीं घबराई ॥८॥

सिया हरण के समय जटायु, स्वामी भक्ति दिखलाई ।
गया रावण के सम्मुख लड़ने, अपनी जान गवाई ॥९॥
युद्ध वीरता मे था पूरा, हट धर्मी अधिकाई ।
राज काज मे लुब्ध था रावण, पहुँचा दुर्गति माई ॥१०॥
शूर्पनखा सी बनो न नारी, दुष्टन वन मे आई ।
विषय भोग की करी विनती, राम लखन ठुकराई ॥११॥
भरत राम ने राज तिलक की, कैसी गैंद बनाई ।
आज कल के मनुष्य सुनो, दोनो ने ठोकर लाई ॥१२॥
लाचार चतुर्दश वर्ष भरत ने, सेवा राज्य बजाई ।
फेर त्याग संसार "शुक्ल" तप जप से मुक्ति पाई ॥१३

गाना—अरिहन्त देव के सत्य धर्म पर, जो जन चित्त लगावेंगे ।
रामचन्द्र की तरह काट सब, कर्म मोक्ष पद पावेंगे ॥टेक॥
वचन पिता का पाला जिसने, राज्य निछावर कर डारा ।
बनवास का जिसने महाकष्ट, कैसा अपने सिर पर धारा ॥
सीता हर के दशकंधर ने, फिर किया जिगर पारा पारा ।
बांह पकड़े की लाज रक्खी, रघुवंशी नहीं धर्म हारा ॥
माता पिता गुरुजन के सेवक, अमर लोक में जावेंगे ॥१॥
लगा विभीषण को जब मारण, रावण शक्ति कर में तान ।
मित्र बचाया निज भाई को, दिया मौत के [illegible] में जान ॥
आपत्ति जो सही उस समय, दुनिया को है [illegible] [illegible] ।
किया वचन पूरा मित्र को, लंका का दिया [illegible] [illegible] ॥
पाले जो इस तरह मित्रता, वही परम सुख पावेंगे ॥२॥

तीन खंड की तज प्रभुताई, धार लिया फिर संयम भार।
केवल पाया धर्म दिपाया, तप जप कर आगम अनुसार ॥
अष्ट कर्म दल को संहारा, क्षमा खड्ग निज कर में धार।
गौरव पाया कर्म खपाया, तरे आप औरों को तार ॥
सम दम क्षम को धार हृदय में, सच्चिदानन्द कहावेंगे ॥३॥
कष्ट सहे पर शील न त्यागा, यह था निज शिक्षा का असर।
कर्म भोगने पडे सभी को, बच नहीं सकता कोई बशर
अग्नि कुंड मे पड़ी नीर हो गया सभी को पड़ा नजर ॥
स्वर्ग बारहवे पहुँच गई तप सयम मे न रक्खी कसर।
सत्य शील इस भव पर भव मे सुख अतुल्य दिखलावेंगे ॥४॥
दशरथ के पुत्रों में देखो कैसा प्रेम निराला था।
मानिन्द गैंद के अवधपुरी का राज तिलक कर डारा था ॥
प्राणों से भी बढ़ करके भाई का भाई प्यारा था।
तीन खंड को जीत तभी तो ताज शीश पर धारा था ॥
प्रेम शील सन्तोष 'शुक्ल' यह शुभ गुण सभी बढ़ावेंगे ॥ ५ ॥
श्री पुज्य श्री सोहनलाल जी भक्त जनों के तारन हार।
वर्तमान में परम पूज्य श्री काशीराम जी का आधार ॥
सांगीत पढ़ो श्रीरामचन्द्र का 'शुक्ल'मुनि शुभ हुआ तैयार।
भूल चूक रह गई सभी सज्जन गण गुण लख करे सुधार।
इस भव पर भव में सुखदाई जो जन पढ़े सुनावेंगे।
रामचन्द्र की तरह काट सब कर्म मोक्ष पद पावेंगे ॥ ६ ॥

दोहा—सम्वत् शुभ चौवीस सौ और पिछतर जान।
ठीक असल सम्वत् यहा प्रभु वीर निर्माण ॥

वासट उत्तर और चौबीस सो सम्वत् यह प्रचलित कहाता है।
उन्नीस सौ छत्तीस यहां पर सन लिखने में आता है ॥
१६३६ ई० स०

कार्तिक छब्बीस प्रविष्ठा यहां और दश तारीख नवम्बर है।
तिथि द्वादशी मंगलवारी शोभन शरद ऋतुवर है ॥

सम्वत् शशि ग्रह समझ यहां न्यून एक दिशि जान।
वह्नि अङ्क उत्तर धरो विक्रमादित्य प्रमाण

नहीं बुद्धि नहीं वचन बल साहित्य का नहीं ज्ञान।
क्षमा भूल सब कीजियो सुजन कवि गुणवान ॥

गुरु कृपा से होश्यारपुर किया प्रथम चौमास।
'शुक्लचन्द्र' चाहता सदा अदाय मोक्ष सुखवास ॥
सिद्ध हुए श्री राम जी कर्मों का कर अन्त।
गुरु कृपा से होगया आज समाप्त ग्रन्थ ॥



ओम् (ॐ) महिमा

(तर्ज—ओम् अनेक बार बोल)

ओम् में हो नित्य लीन प्रेम के पुजारी ।। टेक ।।
बीज मंत्र यही सार । प्राणी मात्र का आधार ।।
पांचों पदे इस में सार । शुद्ध निर्विकारी ओम् ।।१ ।।
सर्वज्ञ शास्त्र को पहिचान । अर्थ योजना व्याख्यान ।।
गाते गुण गण सुजान । कर्म विष हारी ।। ओम् ।।२।।
ध्यानी ध्याते हैं हमेश । काटने को सब क्लेश ।।
इसके वश मे है सुर सुरेश । काल पाश हारी । ओम् ।।३।।
मोक्ष गामी करते जाप । काटने को कर्म पाप ।।
आत्मा स्वयं ही आप, ओम् हित कारी ।। ओम् ।।४।।
प्राणी मात्र इसका नाम । जो जपे हो सिद्ध काम ।
अन्त पावे मोक्ष धाम । "शुक्ल" ध्यान धारी ।।ओम् ।।

—***—

शुक्ल मोती

मनुष्य जन्म अनमोल है, वीतराग गुण गाया कर ।
ज्ञानअमृत छिड़काव कर, आत्म गुण विकसाया कर । टेर

निज गुण तज कर अय प्राणी तू क्यो परगुण में राच रहा
नाशवान वैभव सग्रह कर, गरज मोरवत नाच रहा ।
झूठी ममता छोड़ कर, नर तन सफल बनाया कर ।। १ ।।

चौरासी कर पार मनुष्य, तन का पाना कोई खेल नही,
पूर्व सचित पुण्य उदय का, होता जब तक मेल नहीं,
दुर्गति भव जंजाल से, अपना आप बचाया कर ॥२॥

जननी-जन्भूमि-जिनवाणी, ने कितना उपकार किया,
सच बतला तूने भी कब, कितना सेवा सम्मान दिया,
कृतघ्नों की लाइन मे मत, अपना नाम लिखाया कर ॥३॥

देश धर्म सग गुरु सेवा बिन, तैंने मौज उडाई क्या,
स्वधर्मी भूखा अनाथ फिर, तैंने रोटी खाई क्या,
परमार्थ कुछ भी किये बिन, भोजन तू मत खाया कर ॥४॥

खेल तमाशा गायन सिनेमा, विषयों में गलतान रहा,
खान पान मञ्जन शृङ्गार कर, बाग सैर सुख मान रहा,
इन झगड़ों को छोड़ कर, सत्सग मे आया कर ॥५॥

छः द्रव्यों मे चेतन द्रव्य तू, निश्चय खास अनुपम है,
त्रियोग शुद्ध या शुभ वरताना, योगाभ्यास अनुपम है
तज विभाव को बावरे, निज स्वभाव में आया कर ॥६॥

करुणा प्रमोद मैत्री मध्यस्थ का, जिस घट में सचार नहीं,
दान शील तप भाव विना, होगा हरगिज भव पार नहीं,
रत्न त्रय आराध कर, दृष्टि सम वरताया कर ॥७॥

देख शास्त्र इतिहास छान कर, वैभव किसके साथ गया,
राव रक जिस जिसको देखा, अन्त पसारे हाथ गया,
पर परणति को त्याग कर, 'शुक्ल' ध्यान शुद्ध ध्याया कर ॥८॥

इति रामायणस्योत्तरार्ध समाप्त

ओं शान्ति शान्ति शान्ति

प्राप्ति स्थान

१—पूज्य श्री सोहनलाल
पुस्तक धर्मोपगरण सामग्री भण्डार अम्बाला शहर

२—लाला प्यारेलाल ओम्प्रकाश बीड़ी वाले
नया बांस देहली